नक्षत्र ज्योतिष

कस्पल इंटरलिंक्स एण्ड सब सब थ्योरी

एस.के. अनिल

सागर पब्लिकेशन्स
72 जनपथ, वेद मेन्शन, नई दिल्ली–110001
दूरभाष: 011 23320648, 011 23328245
ई–मेल: sagarpub@vsnl.com
वेबसाईट: www.sagarpublications.com

प्रथम संस्करण, 2017

लेजर टाइपसेटिंग :
देव ग्राफिक्स

सागर पब्लिकेशन्स के लिए **श्री सौरभ सागर**
72 जनपथ, वेद मेन्शन, नई दिल्ली–110 001
दूरभाषः 011 23320648, 011 23328245 द्वारा प्रकाशित

एवं

द आर्टवेव्स, दिल्ली–19, दूरभाषः 011 41609709 द्वारा मुद्रांकित

अनुक्रमणिका

लेखक की कलम से

आदिकाल से आधुनिक काल तक अनेक ज्योतिष विधायें प्रयोग में लायी जा रहीं है जैसे – पराशर ज्योतिष, जैमिनी ज्योतिष, काल चक्र, योगिनी दशा, अष्टक वर्ग, के. पी. सिस्टम, नाड़ी ज्योतिष जिसमें मुख्य रूप से पराशरी ज्योतिष का उपयोग सर्वाधिक हो रहा है। **इसी क्रम में एक अत्यंत सूक्षतम एवं आधुनिक ज्योतिषिय विधा का प्रचलन पिछले कुछ वर्षों से आरंभ हुआ है जिसे कलांमशा अर्थात CIL (कस्पल इंटरलिंक्स एण्ड सब सब थ्योरी) अथवा नक्षत्र ज्योतिष के नाम से जानते हैं।** यह ज्योतिषिय पद्धिति इतनी शूक्ष्म एवं सशक्त है कि एक ही स्थान पर कुछ क्षणों के अंतराल में जन्में बच्चों की कुंडलियाँ ना सिर्फ अलग अलग बना पाने में सक्षम है अपितु दोनो कुंडलियों में लग्न से अन्य 12 भावों के उप–उप नक्षत्र स्वामीयों द्वारा जातक के जीवन में घटित होने वाली घटनाओं के आश्वासन या यूं कहें कि क्या–क्या प्रतिज्ञाऐं (Promises) हैं ? आदि को स्पष्ट रूप से दर्शा पाने में सक्षम है।

पिछले कई वर्षों के अध्ययन एवं किये गये शोध से मेरे मन में एक ज्वलंत प्रश्न रह रह कर उठता है कि जब आदिकाल से पराशरी विधि सफलता पूर्वक भविष्य कथन कर पाने में सक्षम थी तो अन्य विधाओ की आवश्यकता क्यों पड़ी? संभवतः अलग–अलग स्थान के कारण अथवा अलग–अलग ऋषि–मुनियों ने अपने–अपने ज्ञान से भिन्न–भिन्न भविष्य कथन विधियों का विस्तार किया हो ? पराशर ज्योतिष में जातक के जीवन के अलग अलग पहलुओं के फलादेश हेतु विभिन्न षड्वर्गों का

उपयोग किया जाता है। इस संदर्भ में कुछ एक षडवर्गों का उल्लेख करूंगा जैसे – दाम्पत्य जीवन के लिये नवांश (3 अंश – 20 मि), भाई–बहन, साहस, पराक्रम हेतु द्रेष्काण (10 अंश), माता पिता के संबंध में विचार हेतु द्वादशांश (2 अंश – 20 मि) एवं कलह, क्लेश, दुख, आरिष्ट हेतु त्रिंशांश (एक राशि का 30वाँ भाग अर्थात 1 अंश) कुण्डली का उपयोग किया जाता है। हम सभी जानते है कि वर्तमान समय में प्रति क्षण जन्म दर है तथा पृथ्वी को 1 अंश पूरा करने में लगभग 4 मिनट लगते हैं। अब पाठक गण स्वयं अनुमान लगाये कि आज के युग में षडवर्ग से फलादेश क्या सही परिणाम दे पाने में सक्षम है? जहाँ किसी जातक के दाम्पत्य जीवन के बारे में नवांश कुण्डली से फलादेश करते समय लगभग 700–800 जातक, किसी के माता या पिता के संदर्भ में द्वादशांश कुण्डली से भविष्य कथन में 450–500 जातक या किसी जातक के आरिष्ट (त्रिंशांश कुण्डली) आदि के कथन में लगभग 240 जातकों के सम्मिलित होने की संभावना होगी। संभव है जिस काल में इस विधा से भविष्य कथन किया जाता होगा उस समय जन्म दर के अनुपात से यह विधि सटीक हो! संभव है आज भी यह विधा भविष्य कथन कर पाने में सक्षम हो क्योंकि कई षडवर्ग आज भी लगभग लुप्त है और उनका उपयोग कुछ लोग ही करना जानते हैं।

आइए दो और सशक्त माने जाने वाली ज्योतिषिय पद्धितियों “के.पी. ज्योतिष एवं नाड़ी ज्योतिष” की बात करते हैं। इस पद्धिति में नक्षत्र एवं उप नक्षत्रों द्वारा फलादेश किया जाता है। [उप नक्षत्र अर्थात एक नक्षत्र को जब 9 से भाग देते हैं तो प्राप्त भाग उप नक्षत्र कहलाता है]। एक नक्षत्र 13 अंश एवं 20 कला का होता है आप पहले से ही जानते हैं। उप नक्षत्रों की श्रृंखला में सूर्य का उप नक्षत्र 00:40:00 कला का होता है जो कि सबसे छोटा एवं शुक्र का उप नक्षत्र 2 अंश 13 कला 20 विकला

का जो कि सबसे बड़ा उप नक्षत्र है। सबसे छोटे उप नक्षत्र में 160 एवं बड़े उप नक्षत्र में लगभग 500 बच्चों का जन्म संभावित है। **एक और बात बताना चहुंगा नाड़ी ज्योतिष में जिस विधि से कुण्डलियों का निर्माण किया जाता है आप जान कर आश्चर्यचकित रह जायेंगे कि दिये गये जन्म समय में कई बार 1 से 24 मिनट तक समय के घटाये-बढ़ाये जाने से भी ग्रहों के कोऑर्डिनेट्स (ग्रहों द्वारा प्राप्त भाव) आदि में किसी भी प्रकार का कोई बदलाव नहीं होता अर्थात ग्रह के ना तो भाव बदलते हैं ना ही नक्षत्र और ना ही उप नक्षत्र, अर्थात दिये गये समय से 1 से 24 मिनट तक के मध्य जन्में सभी (लगभग 1440 बच्चे) बच्चों का भविष्य बिल्कुल एक जैसा होगा यानि एक डॉक्टर बनेगा तो बाकि अन्य भी डॉक्टर बनेंगे। एक अनपढ़ रहा तो दूसरा भी अनपढ़ ही रहेगा। पाठक गण स्वयं कल्पना करें क्या इस विधि से कुछ ही सेकण्ड के अंतराल में जन्में जुड़वें बच्चों की कुण्डली बना पाना संभव है ? क्या एक ही चिकित्सालय (हॉस्पिटल) के एक ही कक्षा (वार्ड) में कुछ सेकंण्ड के अंतराल में जन्मे दो बच्चों की कुण्डलियाँ इस विधि से बनाई जा सकती है ? नहीं ! अर्थात इस विधा में संशोधन की आवश्यकता है।** के.पी. ज्योतिष में भी उप नक्षत्र द्वारा फलादेश किया जाता है अर्थात पुनः ग्रहों द्वारा प्राप्त भावों में कोई परिवर्तन नहीं होगा- हाँ एक बात अवश्य है इस विधा में दशानाथ किस भाव का उप नक्षत्र स्वामी है उसका भी ध्यान रखा जाता है। स्मरण रहे कि इस विधा से फलदेश तभी संभव है जब जन्म समय शुद्धिकरण फलादेश से पूर्व किया जाए परंतु पुनः संशय यह उठता है कि उप नक्षत्रों की अवधि अधिकतम में 500 से न्यूनतम 160 जातकों से कम हो ही नहीं सकती क्यूँकि इस विधा में इससे सूक्षतम विभाजन है ही नहीं अर्थात जन्म शुद्धिकरण के पश्चात भी संशय बना रहेगा। अस्तु !

मैं क्षमा चहुंगा उन सभी बुद्धिजीवी एवं ज्योतिष के ज्ञाताओं से जिन्हें मेरी बातों से ठेस पहुंची हो। मेरा ध्येय किसी को आहत करने का कदापि नहीं था बल्कि मैं ज्योतिष प्रेमियों को इस सच्चाई से अवगत कराना चाहता था।

एस.के. अनिल
Email ID: skanilcil@gmail.com
Mobile – 9810928289, 9310028289

नक्षत्र ज्योतिष

ज्योतिष "वेद नेत्र"

आदिकाल से ऋषि–मुनियों ने ग्रहों तथा नक्षत्रों द्वारा मानव कल्याण हेतु भाग्य तथा भविष्य के गर्भ में छिपे कर्मों के फलों को वर्तमान से अवलोकन कर यह सिद्ध कर दिया था कि ज्योतिष एक वैज्ञानिक पद्धति है। ऐसा माना जाता है कि सृष्टिकर्त्ता (ईश्वर) जातकों के पूर्व जन्मों में किये गये कर्मों के फलस्वरूप उसके अगले जन्म स्थान का निर्धारण ग्रहों तथा नक्षत्रों की स्थितियों के अनुसार करते हैं अर्थात् प्रभु के कार्य करने की प्रणाली ही ज्योतिष विधा है।

ज्योतिष–स्वरूप परिवर्तन

आदिकाल से आधुनिक काल तक पराशरी ज्योतिष पद्धति सर्वाधिक प्रसिद्ध रही है तथा भविष्य कथन के लिए आज भी सर्वाधिक ज्योतिषियों द्वारा इस पद्धति का ही उपयोग हो रहा है। हाँलाकि आज के परिवेश में जहाँ प्रतिक्षण जन्म दर है इस पद्धति से प्रत्येक नवजात शिशुओं की कुण्डलियाँ अलग–अलग बना पाना असंभव हो गया है। तात्पर्य स्पष्ट है कि जब आप कुण्डली बना ही नहीं पा रहे तो फल कथन का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

मैं दावे से कहता हूँ कि मेरे इस पुस्तक के लिखने तक "नक्षत्र ज्योतिष अर्थात् कस्पल इंटरलिंक्स एण्ड सब सब थ्योरी" के अतिरिक्त किसी अन्य ज्योतिषीय विधाओं से कुछ क्षणों के अंतराल से एक ही स्थान पर

जन्म लेने वाले दो नवजात शिशुओं की कुण्डली अलग-अलग नहीं बनाई जा सकती।

परिवर्तन सृष्टि का नियम है एवं आवश्यकता आविष्कार की जननी है। जैसे नदियाँ स्वतः अपना मार्ग बना लेती हैं ठीक वैसे ही ज्ञानी लोग जन हित के कल्याण अथवा सहायतार्थ सार्थक प्रयास से मार्ग निकाल ही लेते हैं। पराशरी विधि से फलादेश, कम से कम आज के परिवेश में कर पाना टेढ़ी खरी है। इस विधा में ग्रहों से फल कथन षडवर्गों के माध्यम से किया जाता है। अतः षडवर्गों के बारे में थोड़ी जानकारी अवश्य होनी चाहिए ताकि कमियाँ समझ में आ सकें।

षडवर्गों के प्रकार-एक संक्षिप्त विवेचन

पराशरी ज्योतिष में ग्रहों का स्वभाव फल उसके जन्म कालीन राशियों, भावों तथा नक्षत्रों पर होने से विचार किया जाता है। अर्थात् ग्रह का फल लग्न की राशि से उसके अलग-अलग भावाधिपति होने से, उच्च नीच या शत्रु अथवा मित्र राशिस्थ होने से किया जाता है। इस विद्या में ग्रहों का फल सूक्ष्मता से ज्ञात करने हेतु षड्वर्गों का उपयोग किया जाता है। नक्षत्र ज्योतिष (कस्पल इंटरलिंक्स एण्ड सब सब थ्योरी) की चर्चा करने से पूर्व षडवर्ग की संक्षिप्त चर्चा कर ली जाए ताकि विद्यार्थियों को समझाया जा सके कि क्यों इनका उपयोग कर फलादेश करना टेढ़ी खीर है।

- राशि कुण्डली
- होरा कुण्डली
- द्रेष्काण कुण्डली
- नवांश कुण्डली

- द्वादशांश कुण्डली
- सप्तमांश कुण्डली
- त्रिंशांश कुण्डली
- होरा चक्र अर्थात् राशि का आधा भाग (अर्थात् $30^0 \div 2 = 15^0$) अब ध्यान दें 15^0 x 4 (पृथ्वी को 1^0 घुमने के लिए 4 मिनट लगता है) = 60 मिनट। आधुनिक काल में जहां प्रतिक्षण जन्म दर है वहां 60 मि. अर्थात् 3600 बच्चों का जन्म होरा कुण्डली के निर्माण के अंतरगत हो जाता है। ऐसे में होरा कुण्डली से फलादेश पर संदेश होना गलत नहीं है।
- इसी क्रम में द्रेष्काण कुण्डली अर्थात् 10^0 अंश (एक तिहाई भाग), सप्तमांश (अर्थात् 4^0–17^1) द्वादशांश अर्थात् 12वाँ भाग 2^0–20^1) तथा त्रिंशांश (अंश अर्थात् 30 वां भाग=1^0 अंश) अब ध्यान दे द्रेष्काण कुण्डली का उपयोग भाई–बहन के संबंधों के बारे में फलादेश हेतु किया जाता है। इसका अर्थ हुआ 10^0 x 4 = 40 मिनट x 60 (एक मिनट में 60 सेकण्ड) = 2400 अर्थात् एक द्रेष्काण कुण्डली के निर्माण में लगभग 2400 बच्चों का जन्म हो चुका होता है।

नवांश कुण्डली की महत्ता पराशरी में सर्वाधिक मानी गई है। ऐसा माना जाता है कि यदि कोई ग्रह जन्म कुण्डली में शुभ हो, उच्च का हो, स्वराशि हो परंतु नवांश कुण्डली के अशुभ हो, नीच राशिस्थ हो या शत्रु राशिस्थ हो तो ऐसे में ग्रह का फल स्वतः अशुभ/प्रतिकूल हो जाता है। इसके विपरित यदि ग्रह लग्न कुण्डली में अशुभ, नीच राशिस्थ हो परंतु नवांश कुण्डली में शुभ हो, उच्च राशिस्थ हो तो ऐसे में ग्रह अपना फल अनुकूल तथा शुभ देगा।

ध्यान दे–एक नवांश 3^0–20^1 का होता है (अर्थात् 3^0–20^1 x 4 मिनट= 13.33 मिनट x 60=799.8 जन्म) सीधे-सीधे गणित लगाया जाए तो कहेंगे कि नवांश कुण्डली के आरंभ से समाप्ति तक लगभग 800 बच्चों का जन्म हो चुका होता है।

अंतिम कुण्डली अर्थात् त्रिंशांश अर्थात् 30वाँ भाग से जातक के जीवन में आरिष्ट की स्थितियों की जाँच की जाती है। 30 वाँ भाग=1^0 क्योंकि 30^0 अंशों का एक भाव होता है। पुनः 1^0=4 मिनट अर्थात् 4 x 60=240 बच्चों के जन्म की संभावनाएँ बनती है।

आधुनिक युग में जहां प्रतिक्षण जन्म दर है वहाँ षड्वर्ग से फलादेश करना कितना सही है? पाठकगण स्वयं चिंतन करें, अस्तु।

त्रिंशांश–अर्थात् एक राशि का 30वां भाग उपयोगिता त्रिंशांश कुण्डली का उपयोग केवल कष्ट, क्लेश, आपदा, विपत्ति, दुःख तथा दुर्भाग्य आदि आरिष्ठ फलों को ज्ञात करने हेतु किया जाता है।

द्वादशांश–(2^0–40^1) - उपयोगिता–द्वादशांश से माता-पिता के संबंध में विचार किया जाता है।

नवांश–(3^0–20^1)– उपयोगिता–नवांश कुण्डली द्वारा दाम्पत्य जीवन का विचार किया जाता है।

द्रैष्काण–(10^0)–उपयोगिता–इस कुण्डली से भाई बहन, साहस, पराक्रम इत्यादि का विचार करते हैं।

होरा–(15^0)-उपयोगिता–जातक के रंग-रूप, स्वभाव, व्यवहार, आर्थिक स्थिति आदि का विचार करते हैं।

षडवर्ग से फलादेश में संशय

आप सभी जानते हैं कि आधुनिक काल में प्रति क्षण जन्म दर है। पृथ्वी को 1^0 अंश पूरा करने में लगभग 4 मिनट लगते हैं अर्थात् त्रिंशांश अवधि में लगभग 240 बच्चों का जन्म संभावित है। दूसरे शब्दों में 240 बच्चों का आरिष्ट एक समान होगा। द्वादशांश की बात करें तो ($2^0.20' \times 4$ = 560) लगभग 560 बच्चों के माता-पिता के संबंधों में लगभग एक जैसी भविष्यवाणी की जाएगी। इसी क्रम में नवांश से लगभग 800 बच्चों के वैवाहिक स्थिति एक जैसी होगी। ऐसा माना जा सकता है कि षडवर्गों का उपयोग आदिकाल में जन्म दर के हिसाब से सटीक रही होगी। परंतु आज के परिवेश में थोड़ी शंका अवश्य है।

कृष्णमूर्ति पद्धति

जैसा कि हम सभी मानते हैं कि कृष्णमूर्ति पद्धति में ग्रहों तथा षडवर्गों की बातें छोड़कर एवं नक्षत्रांशों से भविष्य कथन की बातें कही गई है। यह पद्धति पराशरी से ही विकसित की गई है। इस विधा में फलादेश ग्रहों की उपस्थिति उसके नक्षत्रों तथा नक्षत्रांशों से की जाती है जो पराशरी विधि से ज्यादा सटीक जान पड़ती है। ग्रहों का नक्षत्र तथा नक्षत्रांश स्वामी जिन-जिन भावों में गये होते हैं ग्रह अपनी दशा में उन-उन भावों का फल प्रदान करते हैं।

ग्रहों के नक्षत्रांश-गणना

प्रत्येक नक्षत्र 13^0-20^1 का होता है। जब इसे 9 भागों में विभाजित किया जाता है तो प्रत्येक नक्षत्रांशों के अलग-अलग 9 असमान अंशों की प्राप्ति होती है जो कि षडवर्गों से प्राप्त अंशों के मुकाबले काफी कम अंशों के होते हैं।

नक्षत्रों के विभाजन से प्राप्त सभी भागों को उप नक्षत्र की संज्ञा दी गई है। उप-नक्षत्र के अंश निम्न प्रकार से प्राप्त करते हैं :–

सूर्य उप–नक्षत्र अवधि = $\frac{800}{120} \times 6 = 00^0.40'.00''$

चंद्र उप–नक्षत्र अवधि = $\frac{800}{120} \times 10 = 1^0.46'.40''$

मंगल उप–नक्षत्र अवधि = $\frac{800}{120} \times 7 = 00^0.46'.40''$

बुध उप–नक्षत्र अवधि = $\frac{800}{120} \times 17 = 1^0.53'.20''$

गुरु उप–नक्षत्र अवधि = $\frac{800}{120} \times 16 = 1^0.46'.40''$

शुक्र उप–नक्षत्र अवधि = $\frac{800}{120} \times 20 = 2^0.13'.20''$

शनि उप–नक्षत्र अवधि = $\frac{800}{120} \times 19 = 2^0.06'.40''$

राहु उप–नक्षत्र अवधि = $\frac{800}{120} \times 18 = 2^0.00'.00''$

केतु उप–नक्षत्र अवधि = $\frac{800}{120} \times 7 = 00^0.46'.40''$

नोट–प्रत्येक नक्षत्र 13^0–20' का होता है अथात् जब इसे विकला में विभक्त करते हैं तो 800 विकला बनते हैं। (ग्रहों की दशाओं का कुल योग 120 वर्ष है अर्थात् सूर्य दशा 6 वर्ष, चंद्रमा–10 वर्ष, मंगल–7 वर्ष, बुध–17, गुरु–16 वर्ष, शुक्र–20 वर्ष, शनि–19 वर्ष, राहु–18 वर्ष तथा केतु–7 वर्ष।)

जब 800 विकला तथा ग्रहों की दशा वर्षों को 120 से विभाजित किया जाता है तो ग्रहों के उप नक्षत्रों की प्राप्ति होती है।

संदेह एवं असमर्थता

के.पी. सिस्टम से फलादेश, पराशरी के अपेक्षाकृत अधिक सुगमता तथा सफलता से किया जा सकता इसमें संदेह नहीं है। पराशरी ज्योतिष भी अपने-आप में एक संपूर्ण विधा है परंतु इसके संपूर्ण विस्तार को समझना तथा फलादेश करना टेढ़ी खीर है। मैं क्षमा चाहूँगा उन सभी ज्योतिषज्ञाताओं से जिन्हें मेरे कथन से ठेस लगी हो। विवेचन को पुनः आगे बढ़ाते हुए बताना चाहूँगा कि उप-नक्षत्रों की न्यूनतम अंशों से अधिकतम अंशों का समय अंतराल इतना सूक्ष्म नहीं है कि एक मिनट या कुछ क्षणों के अंतराल में जन्मे दो बच्चों की कुण्डलियाँ अलग-अलग बनाई जा सके।

शुक्र का उप-नक्षत्र 2^0-13'-20'' होता है अर्थात् लगभग 535 के आसपास बच्चों के जन्म की संभावना है। वहीं सूर्य का उप-नक्षत्र 00^0-40'-00'' है अर्थात् इस अवधि अंतराल में भी लगभग 160 बच्चों का जन्म संभावित है। दूसरे शब्दों में इस विधा में अभी भी संशोधन की आवश्यकता है।

नक्षत्र ज्योतिष (कस्पल इंटरलिंक्स एण्ड सब सब थ्योरी)

नक्षत्र ज्योतिष (कस्पल इंटरलिंक्स एण्ड सब सब थ्योरी) एक आधुनिक ज्योतिषीय विधा है जो अब तक की सबसे सशक्त माध्यम है। इस विधा को पढ़ने और सीखने से पूर्व इसकी उप-रेखा को समझ लेना आवश्यक है।

- यह पद्धति वैज्ञानिक तथा तार्किक स्तर पर खरी उतरती है।

- अकेली ऐसी विधा है जो उप–उप नक्षत्र पर सटीक कार्य करती है। (उप नक्षत्रों को पुनः विभाजित करने से उप–उप नक्षत्र की प्राप्ति होती है।)
- केवल इसी विधा से आप स्त्री एवं पुरुष की कुण्डलियाँ अगल–अलग बना पाते हैं।
- अकेली ऐसी सशक्त विधा है जो जुड़वों के अतिरिक्त एक ही स्थान पर दो माताओं से कुछ क्षणों के अंतराल में जन्मे बच्चों की कुण्डलियाँ भी भिन्न–भिन्न बना पाने में पूर्णतः सक्षम है।
- अकेली ऐसी विधा है जो जातक के जीवन में घटित होने वाली भावों से संबंधित प्रतिज्ञाओं या संभावनाओं की भविष्यवाणी कर पाने में समर्थ है।
- इस विधा में लग्न तथा भाव से संबंधित उप–उप नक्षत्र स्वामी घटनाओं के घटित होने या ना होने पर अपनी मुहर लगाते हैं।
- भावों के उप–उप नक्षत्र स्वामी जिस घटना को नकार देते हैं, वह घटना कदापि घटित नहीं होगी चाहे दशा नाथ उस घटना को दे पाने में कितना ही सक्षम क्यों ना हो।
- अकेली ऐसी विधा है जिसके उपयोग से पूर्व जन्म समय शुद्धिकरण किया जाना आवश्यक है।
- यह विधा इतनी सशक्त है कि जन्म से पूर्व आप शिशु की कुण्डली सही एवं सटीक बना पाते हैं।

नक्षत्र ज्योतिष अर्थात् कस्पल इंटरलिंक्स एण्ड सब सब थ्योरी एक मात्र ऐसी आधुनिक ज्योतिषिय विधा है जिसमें स्त्री तथा पुरुष की कुण्डलियाँ भिन्न–2 बनाई जाती है तथा इस विधा को वैज्ञानिक विधि से श्रृंखलाबद्ध किया गया है।

श्री एस.पी. खुल्लर जी ने इस विधा का निर्माण कर यह सिद्ध कर दिया है कि प्रत्येक जातक की कुण्डली ना सिर्फ अलग-अलग प्रकार से बनाई जा सकती है अपितु उनका भविष्य कथन भी शुक्षमता से किया जा सकता है। प्रतिक्षण तक की गणना के लिए सर्वप्रथम श्री एस.पी. खुल्लर जी ने उप नक्षत्र को पुनः उप-उप नक्षत्र में विभाजित कर एक ऐसी वैज्ञानिक पद्धति से फल कथन प्रणाली का निर्माण किया है जिसके लिए भविष्य में ज्योतिष प्रेमी युगों-युगों तक उनका स्मरण श्रद्धा से करेंगे।

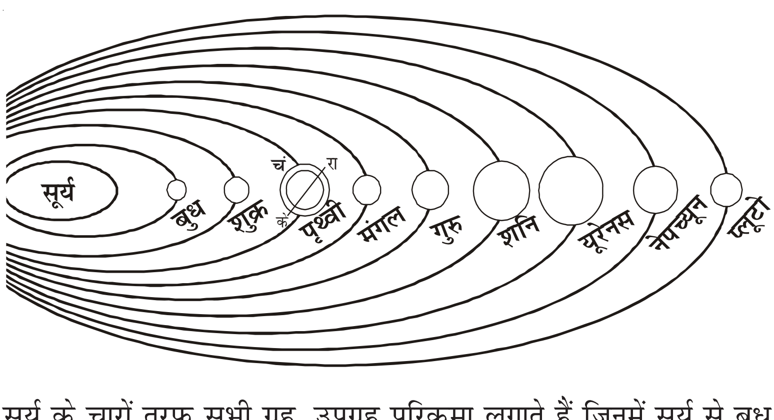
मैं श्री एस.पी. खुल्लर जी का हृदय से आभार प्रकट करते हुए बधाई देता हूँ कि उन्होंने ऐसी सशक्त तथा वैज्ञानिक ज्योतिषीय पद्धति को विकसित किया तथा हमें इस विधा की शिक्षा दी।

ॐ श्री गुरवे नमः

आरंभ

ज्योतिष सिखने के इच्छुक नये विद्यार्थियों के सहायतार्थ नीचे कुछ अत्यंत सामान्य ज्ञान की बातें लिख रहा हूँ ताकि अगले अध्यायों में नये विद्यार्थियों को कठिनाई ना हों।

हमारे ब्रह्माण्ड की भौगोलिक स्थिति कुछ ऐसी है कि सभी ग्रह, उपग्रह सूर्य के चारों तरफ परिक्रमा लगाते रहते हैं। सूर्य के निकटतम परिक्रमा लगाने वाले ग्रहों की गति अपेक्षाकृत तीव्र होती है, उनके जो सूर्य से अन्य ग्रहों की अपेक्षा बाद वाली कक्षाओं में परिक्रमा लगाते हैं। इनका एक रेखाचित्र आपके अवलोकन हेतु नीचे दिया जा रहा है।

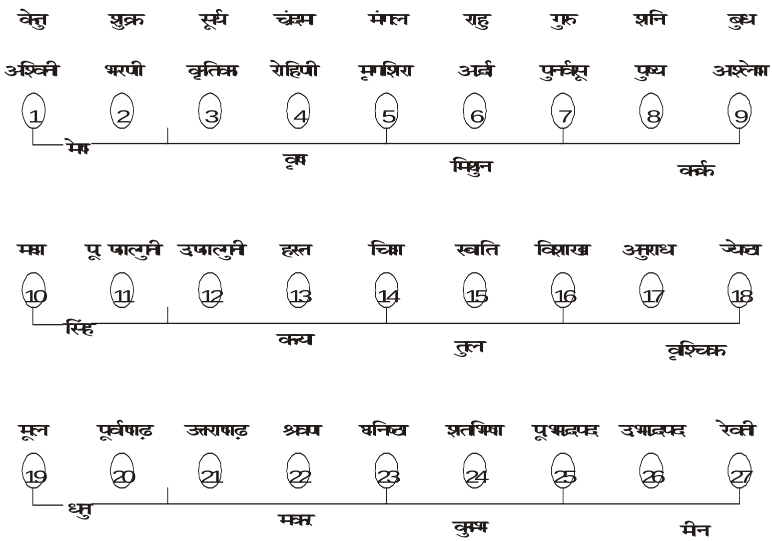


सूर्य के चारों तरफ सभी ग्रह, उपग्रह परिक्रमा लगाते हैं जिनमें सूर्य से बुध सर्वाधिक निकट है उसके पश्चात् क्रमशः शुक्र, पृथ्वी, मंगल, गुरु, शनि, यूरेनश, नेपच्यून तथा प्लूटो परिक्रमा लगाते हैं। पृथ्वी के चारों तरफ चंद्रमा परिक्रमा करता है तथा दोनों परिधि (पृथ्वी और चंद्रमा) के संधि स्थान के उत्तर में राहु तथा दक्षिण में केतु (छाया ग्रह) की उपस्थिति मानी गयी है।

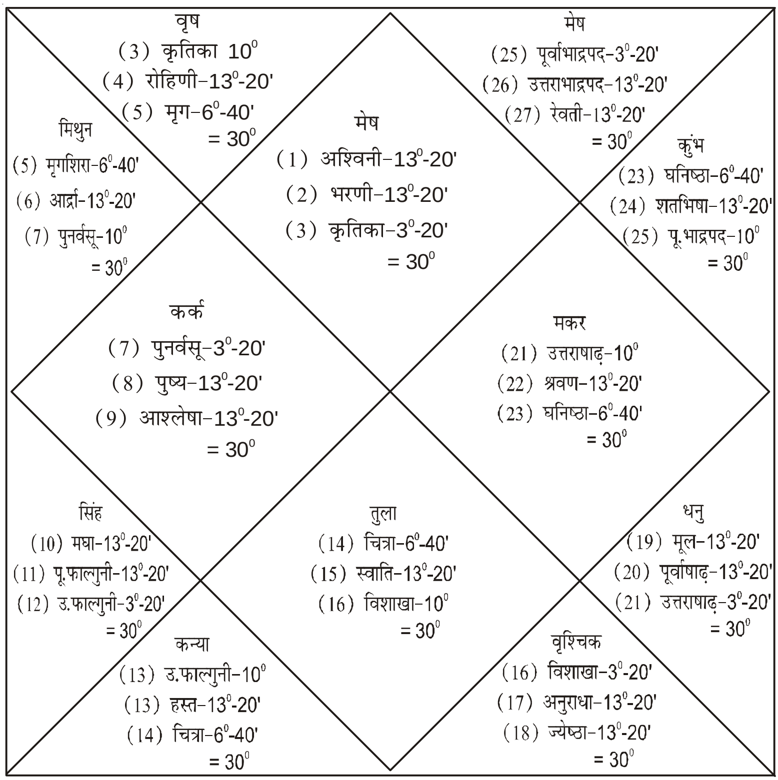
प्रत्येक ग्रह की गति एवं कक्षा भिन्न-भिन्न है इस कारण ग्रहों की परिक्रमा अवधि भी एक सी नहीं है।

नक्षत्र एवं अधिपतिः

नक्षत्र का शाब्दिक अर्थ है "नहीं हिलने वाला"। नक्षत्रों की कुल संख्या 27 है तथा मेषादि 12 राशियों में सभी 27 नक्षत्र स्थित होते हैं। आपके सहायतार्थ नक्षत्रों की तालिका नीचे दी जा रही है।



हमारा ब्रह्माण्ड अनंताकार एवं वृत्ता कार है। इसे ज्योतिषिय दृष्टिकोण से 12 भागों में बराबर-बराबर विभाजित किया गया है। अर्थात् $360^0 \div 12 = 30^0$ अर्थात् $30^0 - 30^0$ अंशों के 12 भाव बनाए गए जो जातक के जीवन को (भूत-वर्तमान तथा भविष्य) 12 प्रकार से विश्लेषण करने में सहायक है। नीचे पाठकों के सहायतार्थ राशियों पर नक्षत्रों की अंश एवं कला आदि का विवरण दिया जा रहा है।



ऊपर दिए गए तालिका ध्यान से पढ़ें तो पता चलता है कि प्रत्येक भाव में सवा दो नक्षत्र अर्थात् 2 नक्षत्र तथा तीसरे नक्षत्र के एक चरण का समावेश है। जैसा कि बताया जा चुका है प्रत्येक भाव 30^0 का होता है उसी प्रकार सवा दो नक्षत्रों का कुल योग भी 30^0 का होता है।

याद रखने योग्य बाते–

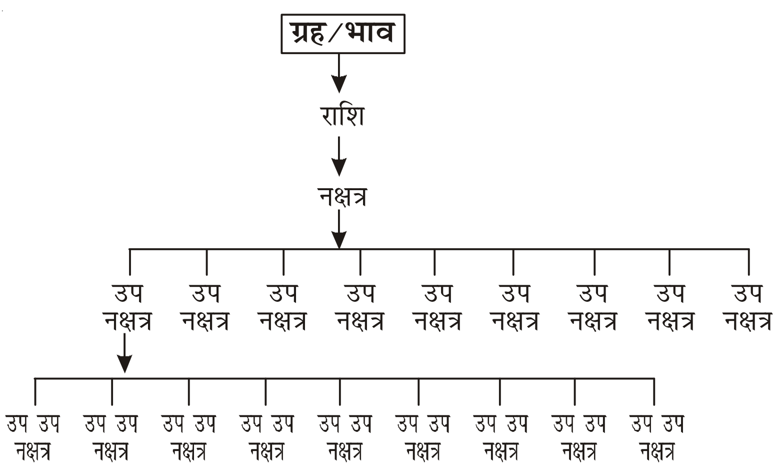
अभी तक आपने पढ़ा–

- नक्षत्र एवं इनके स्वामी ग्रह।

- जातक के जीवन को 12 भागों में विभाजित किया गया है ठीक वैसे ही जैसे ब्रह्माण्ड को ($360^0 \div 12=30^0$) 30^0-30^0 अंशों में विभाजित किया गया है।
- प्रत्येक नक्षत्र 13 अंश तथा 20 मिनट का होता है। जिसे चार–चार भागों (3^0-20^0) में विभाजित किया गया है।

रूपरेखा एवं ग्रहों का भावों से संबंध विचार–

पराशरी ज्योतिष में आवश्यकतानुसार विस्तार कर उसे आधुनिक जगत में लगभग प्रतिक्षण के गणित से कुण्डली निर्माण कर पाने की क्षमता तक सुधार कर दी गई है। इस तकनीक से फलादेश करने से पूर्व इसकी रूप–रेखा तथा नियमों का उल्लेख आवश्यक है। इस पद्धति में नक्षत्रों को विशेष महत्त्व दिया गया है। प्रत्येक नक्षत्र को 9–9 असमान भागों में विभक्त करने के पश्चात् पुनः प्रत्येक उप नक्षत्रों को 9–9 असमान भागों विभाजित कर उसे उप उप नक्षत्र की संज्ञा दी गई है। नीचे दिए गए तालिका आपके सहायतार्थ दी जा रही है।



प्रत्येक ग्रह तथा भाव जन्म के समय अथवा दिए गए समय, स्थान आदि रेखांश–अक्षांश के हिसाब से किसी ना किसी राशि/नक्षत्र/उप नक्षत्र तथा उप–उप नक्षत्र पर अवश्य होते हैं। नीचे दिए गए ग्रह एवं भाव तालिका का अवलोकन करें।

ग्रह तालिका

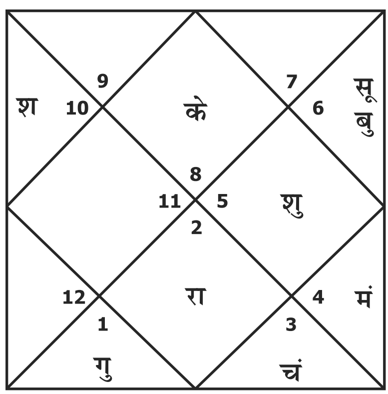
ग्रह	राशि	D-M-S	RL	STL	SL	SSL	Dir.	PS
सूर्य	तुला	11.22.07	शुक्र	राहु	शनि	शुक्र		
चंद्र	कर्क	14.09.49	चंद्र	शनि	राहु	केतु		P
मंगल	सिंह	01.47.30	सूर्य	केतु	शुक्र	राहु		
बुध	तुला	19.15.34	शुक्र	राहु	मंगल	मंगल		P
गुरु	मेष	29.50.01	मंगल	सूर्य	राहु	शनि	R	P
शुक्र	कन्या	02.46.04	बुध	सूर्य	गुरु	राहु		P
शनि	कुंभ	05.00.07	शनि	मंगल	सूर्य	मंगल	R	
राहु	मिथुन	00.54.23	बुध	मंगल	बुध	चंद्र		
केतु	धनु	00.54.23	गुरु	केतु	शुक्र	शुक्र		P

भाव तालिका

ग्रह	राशि	D-M-S	RL	STL	SL	SSL	Arc%
I	वृश्चिक	18.14.18	मंगल	बुध	बुध	गुरु	92.74
II	धनु	18.49.27	गुरु	शुक्र	राहु	शनि	46.27
III	मकर	22.04.24	शनि	चंद्र	शुक्र	शनि	57.71
IV	कुंभ	26.07.06	शनि	गुरु	केतु	राहु	14.16
ट	मीन	27.21.49	गुरु	बुध	गुरु	सूर्य	92.42
VI	मेष	24.17.04	मंगल	शुक्र	बुध	केतु	15.28

VII	वृष	18.14.18	शुक्र	चंद्र	बुध	शुक्र	26.25
VIII	मिथुन	18.49.27	बुध	राहु	चंद्र	बुध	41.31
IX	कर्क	22.04.24	चंद्र	बुध	सूर्य	केतु	03.07
X	सिंह	26.07.06	सूर्य	शुक्र	केतु	चंद्र	24.05
XI	कन्या	27.21.49	बुध	मंगल	गुरु	सूर्य	92.42
XII	तुला	24.17.04	शुक्र	गुरु	बुध	शुक्र	05.64

चलित कुण्डली



ग्रह तालिका से अवलोकन करने पर ज्ञात होता है–

- सूर्य तुला राशि के 11–22–07 अंशों पर होने से राशि स्वामी शुक्र नक्षत्र स्वामी राहु, उप नक्षत्र स्वामी शनि तथा उप-उप नक्षत्र स्वामी पुनः शुक्र है।
- चंद्रमा कर्क राशि के 14–9–49 अंशों पर होने से राशि स्वामी स्वयं चंद्रमा, नक्षत्र स्वामी शनि, उप नक्षत्र स्वामी राहु तथा उप-उप नक्षत्र स्वामी हेतु है।
- इसी प्रकार अन्य ग्रहों की स्थितियों का अवलोकन करें।

भाव तालिका का अवलोकन करें।

- प्रथम भाव अर्थात् लग्न में वृश्चिक राशि है तथा लग्न 18–14–18 अंशों पर स्थित है अर्थात् लग्न राशि स्वामी मंगल, लग्न नक्षत्र स्वामी बुध, लग्न उप–उप नक्षत्र स्वामी पुनः बुध तथा लग्न उप–उप नक्षत्र स्वामी गुरु है।
- इसी क्रम में प्रत्येक भाव में कोई ना कोई ग्रह आवश्यक रूप से राशि स्वामी, नक्षत्र स्वामी, उप नक्षत्र स्वामी एवं उप–उप नक्षत्र स्वामी के रूप में उपस्थित रहते हैं।
- ग्रहों का संबंध उसके नक्षत्र स्वामी द्वारा जिस–जिस भावों से होता है ग्रह अपनी दशा में उन सभी भावों का फल प्रदान करते हैं अर्थात् ग्रह के नक्षत्र स्वामी भाव तालिका में जिस–जिस भाव में राशि स्वामी, नक्षत्र स्वामी, उप या उप–उप नक्षत्र स्वामी होकर उपस्थित होंगे उन्हीं उन्हीं भावों का फल अपनी दशा में देंगे।

उदाहरण

दिए गए ग्रह तालिका का अवलोकन करें–

- चंद्रमा शनि नक्षत्र में है। जहाँ शनि भाव तालिका में 2रे, 3रे, 4थे भाव में एवं निरायन भाव चलित कुण्डली के 3रे भाव में उपस्थित है। अतः चंद्रमा अपनी दशा में 2रे, 3रे, 4थे भावों का फल प्रदान करेगा।
- गुरु की दशा में गुरु 5, 7, 10, 11 वें भाव का फल देगा। क्योंकि गुरु सूर्य के नक्षत्र में हैं एवं सूर्य–5, 11वें भावों का उप–उप स्वामी है, 9वें भाव का उपस्वामी तथा 10वें भाव का राशि स्वामी

है एवं निरायन भाव चलित कुण्डली के जिस (11) भाव में स्थित है।

- इसी क्रम में शुक्र का फल सूर्य से देखेंगे क्योंकि शुक्र का नक्षत्र स्वामी भी सूर्य है। अर्थात् गुरु की ही भांति शुक्र भी 5, 7, 10 एवं 11वें भावों का फल देगा।

ग्रह दो प्रकार से अपना फल देते हैं–

- ग्रह अपने नक्षत्र स्वामी की 12 भावों के साथ-साथ निरायन भाव चलित कुण्डली के द्वारा।
- ग्रह अपने स्वाबलंबन की स्थिति के कारण भाव तालिका एवं निरायन भाव चलित कुण्डली के जिस भाव में बैठा हो–उन सभी भावों का फल देते हैं।

ग्रह स्वाबलंबन की चार स्थितियाँ होती हैं जिसका वर्णण अगले अध्यायों में की जाएगी।

विशेष

ऐसा संभव है कि दो या दो से अधिक ग्रहों का नक्षत्र स्वामी कोई एक ही ग्रह हो। तो क्या वे सभी ग्रह अपनी-अपनी दशाओं में एक सा फल देंगे? नहीं। ग्रह के नक्षत्रों द्वारा संबंधित भावों का फल ग्रह के उप स्वामी द्वारा नियंत्रित होता है अर्थात् ग्रह के नक्षत्र स्वामी के भावों का फल उस ग्रह के उप नक्षत्र स्वामी के विभिन्न भावों में उपस्थितियों पर निर्भर करता है। तात्पर्य यह कि फल शुभ होगा या अशुभ यह ग्रह के उप नक्षत्र स्वामी पर निर्भर करता है।

- ग्रह के उप नक्षत्र स्वामी की उपस्थिति भाव तालिका के जिस–जिस भावों में होगी उनका सम्मिलित फल नक्षत्र स्वामी के भावों के साथ मिलाकर निर्धारित किया जाता है।

उदाहरण : विवाह

विवाह के लिए प्रारंभिक/नैसर्गिक भाव 7वाँ तथा सहायक भाव 5वाँ (प्यार/लगाव/स्नेह) तथा 11वाँ (इच्छापूर्ति) भाव है।

ग्रह का नक्षत्र स्वामी जिस–जिस भाव में होगा उसे प्रारंभिक भाव मानें तथा उप नक्षत्र स्वामी जिस–जिस भाव में हो उसे सहायक भाव माने। यदि नक्षत्र स्वामी 7वें भाव में हो तो फल 7वें भाव से (विवाह, व्यापार, साझेदारी इत्यादि) कहेंगे। विवाह के लिए उप नक्षत्र स्वामी का सहायक भाव अर्थात् 5, 11 में जाना आवश्यक है।

ग्रह के नक्षत्र स्वामी के भावों से उप नक्षत्र स्वामी के भावों का फल शुभ या अशुभ अथवा अनुकूल या प्रतिकूल होगा इसकी चर्चा अगले अध्यायों में की जाएगी।

- उप–उप नक्षत्र स्वामी के भावों का संबंध ग्रहों के नक्षत्र स्वामी के भावों से जैसा होगा अंततः फल वैसा ही प्राप्त होगा। यदि नक्षत्र स्वामी विवाह की बात कर रहा हो। (अर्थात् 7वां भाव) और उप नक्षत्र स्वामी सहायक भावों (5,11) में हो तो विवाह संभावित है बशर्ते उप उप नक्षत्र स्वामी विवाह को नकारता ना हो।

ग्रह स्वाबलंबन एवं राहु–केतु

पिछले अध्याय में आपने पढ़ा ग्रह अपना फल दो प्रकार से देते हैं–

(1) अपने नक्षत्र स्वामी द्वारा तथा

(2) अपने स्वाबलंबन द्वारा।

ग्रह के स्वाबलंबन होने से तात्पर्य है–ग्रह अपने नक्षत्र स्वामी की तरह स्वयं का फल भी दे पाने में सक्षम होगा।

ग्रह चार प्रकार से स्वाबलंबी हो सकते हैं यदि ग्रह नीचे दिए गए स्थितियों को दर्शाए–

(1) ऐसा ग्रह जो स्वयं के नक्षत्र पर हो उसे स्वाबलंबन की स्थिति प्राप्त होगी।

(2) ऐसा ग्रह जिसके नक्षत्रों पर कोई अन्य ग्रह ना बैठा हो उसे स्वावलंबन प्राप्त होता है।

(3) दो ग्रह एक दूसरे के नक्षत्र पर बैठे हो तो ऐसे स्थिति में दोनों ग्रहों का स्वावलंबन प्राप्त होगा।

(4) यदि कोई ग्रह राहु या केतु के नक्षत्र में बैठा हो तथा राहु या केतु उस ग्रह की राशि पर हों ऐसी स्थिति में केवल ग्रह को स्वाबलंबन की स्थिति प्राप्त होगी।

ऊपर दिए गए चारों संयोग ग्रहों को स्वावलंबी बनाएंगे तथा ऐसा ग्रह अपने नक्षत्र स्वामी के भावों के साथ-साथ अपने भावों का फल भी प्रदान करेगा। इन संयोगों को ठीक से समझाने हेतु नीचे कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं–

नक्षत्र तालिका

ग्रह	राशि	अंश	RL	STL	SL	SSL	Dir.	PS
सूर्य	तुला	11.22.07	शुक्र	राहु	शनि	शुक्र		
चंद्र	कर्क	14.09.49	चंद्र	शनि	राहु	केतु		P
मंगल	सिंह	01.47.30	सूर्य	केतु	शुक्र	राहु		
बुध	तुला	19.15.34	शुक्र	राहु	मंगल	मंगल		P
गुरु	मेष	29.50.01	मंगल	सूर्य	राहु	शनि	R	P
शुक्र	कन्या	02.46.04	बुध	सूर्य	गुरु	राहु		P
शनि	कुंभ	05.00.07	शनि	मंगल	सूर्य	मंगल	R	
राहु	मिथुन	00.54.23	बुध	मंगल	बुध	चंद्र		
केतु	धनु	00.54.23	गुरु	केतु	शुक्र	शुक्र		P

ऊपर दिए गए ग्रह तालिका में चंद्रमा बुध गुरु शुक्र तथा केतु को स्वाबलंबन प्राप्त है। इसे देखने हेतु नक्षत्र पंक्ति का अवलोकन करें।

चंद्रमा, बुध, गुरु, शुक्र के नक्षत्रों पर अन्य कोई ग्रह उपस्थित नहीं है। नियम संख्या (2) देखें। अतः ऐसी स्थिति में चंद्र, बुध, गुरु तथा शुक्र स्वावलंबन की स्थिति प्राप्त है।

केतु–स्वयं के नक्षत्र पर होने से स्वावलंबी है। नियम संख्या–(1) देखें।

उदाहरण–4

नीचे दिए गए ग्रह तालिका में सूर्य, गुरु, शुक्र, शनि तथा केतु को स्वावलंबन की स्थिति प्राप्त है।

ग्रह तालिका

ग्रह	राशि	अंश	RL	SL	SL	SSL	Dir.	PS
सूर्य	कुंभ	18.25.13	शनि	राहु	चंद्र	राहु		P
चंद्र	वृष	04.04.25	शुक्र	सूर्य	शनि	शुक्र		
मंगल	धनु	29.52.58	गुरु	सूर्य	राहु	शनि		
बुध	कुंभ	05.03.34	शनि	मंगल	सूर्य	राहु		
गुरु	मिथुन	07.08.56	बुध	राहु	राहु	गुरु		P
शुक्र	मकर	05.46.12	शनि	सूर्य	बुध	शुक्र		P
शनि	धनु	28.34.30	गुरु	सूर्य	मंगल	राहु		P
राहु	मकर	22.29.46	शनि	चंद्र	शुक्र	बुध		
केतु	कर्क	22.29.46	चंद्र	बुध	चंद्र	राहु		P

सूर्य–राहु के नक्षत्र में है तथा राहु शनि की राशि एवं चंद्रमा के नक्षत्र पर है। राहु और केतु जिस ग्रह के नक्षत्र एवं राशि पर स्थिति होते हैं उनके गुण और स्वभाव जैसा व्यवहार करते हैं। (राहु और केतु के स्वभाव के बारे में विस्तार से चर्चा इसी अध्याय में की जाएगी।) अर्थात् राहु शनि है एवं राहु चंद्रमा है। या यूँ कहें कि राहु=राहु, राहु=चंद्रमा तथा राहु=शनि।

अब आप संयोग संख्या (3) देखें। यहां राहु अर्थात् चंद्रमा, सूर्य के नक्षत्र है तथा सूर्य राहु के नक्षत्र में है अतः सूर्य को स्वावलंबन प्राप्त है।

शनि, गुरु एवं केतु को स्वावलंबन प्राप्त है क्योंकि इनके नक्षत्र पर अन्य कोई ग्रह नहीं है अतः दोनों ग्रहों को स्वावलंबन प्राप्त है।

शनि एवं केतु को स्वावलंबन प्राप्त है क्योंकि इनके नक्षत्र पर कोई ग्रह नहीं है।

उदाहरण–(5)

ग्रह तालिका

ग्रह	राशि	अंश	RL	STL	SL	SSL	Dir.	PS
सूर्य	कुंभ	29.36.36	शनि	गुरु	चंद्र	राहु		P
चंद्र	सिंह	13.05.15	सूर्य	केतु	बुध	शनि		P
मंगल	मीन	25.50.49	गुरु	बुध	राहु	चंद्र		P
बुध	कुंभ	02.05.15	शनि	मंगल	केतु	सूर्य		P
गुरु	सिंह	04.43.21	सूर्य	केतु	चंद्र	सूर्य	R	
शुक्र	कुंभ	04.05.49	शनि	मंगल	शुक्र	शनि		P
शनि	मीन	19.08.35	गुरु	बुध	केतु	शनि		P
राहु	मीन	25.26.22	गुरु	बुध	राहु	शुक्र		P
केतु	कन्या	25.26.22	बुध	मंगल	राहु	शुक्र		

- सूर्य, चंद्रमा, शुक्र एवं शनि–के नक्षत्रों पर कोई भी ग्रह नहीं है अतः चारों ग्रहों को स्वावलंबन प्राप्त है।
- नक्षत्र पंक्ति ध्यान से देखें, मंगल बुध के नक्षत्र पर तथा बुध मंगल के नक्षत्र पर है अतः दोनों ग्रहों को स्वाबलंबन प्राप्त है।

विशेष

(1) जब कोई ग्रह राहु या केतु के नक्षत्र पर हो तथा राहु या केतु उस ग्रह की राशि पर हो या राहु/केतु के राशि स्वामी तथा नक्षत्र स्वामी द्वारा कोई ग्रह स्वाबिलम्बी बनें तो यहां राहु या केतु को स्वावलंबन प्राप्त नहीं होगा। उदाहरण संख्या–4 देखें यहाँ राहु को स्वावलंबन प्राप्त नहीं है।

(2) बाह्य ग्रह अर्थात् हर्षल, नेपच्यून एवं प्लुटों को फलादेश हेतु नहीं लिया गया है। आधुनिक नक्षत्र ज्योतिष में इनको कोई स्थान नहीं दिया गया है।

स्वभाव-राहु/केतु :

राहु और केतु एक छाया ग्रह है। विज्ञान में इसकी परिभाषा भिन्न है। सरल भाषा में समझे और समझाये तो पुछेंगे– क्या आपने कभी किसी धागे में बाँधा पत्थर घुमाया है? यदि हाँ तो पत्थर दूर क्यों नहीं चला जाता? क्यों धागे से बंधा पत्थर जब चारों तरफ घुमता है तो एक तनाव बाहर की तरफ आप अपने उँगलियों पर अनुभव करते हैं? सोचिए यदि पत्थर बिना धागे के आपके ऊँगलियों के चारों तरफ घुमे और एक तनाव या अपनी ऊँगलियों पर अनुभव करें। इसे चुम्बकीय आकर्षण कहते हैं। राहु और केतु वास्तव में एक धागे सा चुम्बकीय आकर्षण है जो चंद्रमा को पृथ्वी की ओर तथा सूर्य के चारों तरफ पृथ्वी की परिक्रमा की धूरी पर नियंत्रण रखता है। अस्तु!

राहु और केतु के स्वभाव की चर्चा करना आवश्यक है। कैसे राहु और केतु दूसरे ग्रहों के फलों को दे भी पाते हैं? वास्तव में राहु और केतु जिस ग्रह के नक्षत्र और राशि पर होते हैं उसी के स्वामी बन जाते हैं। इसके अलावा राहु/केतु अपने राशि स्वामी तथा नक्षत्र स्वामियों के स्वामियों का फल भी प्रकट करते हैं। इसे सरल रूप से समझाने के लिए कहेंगे कि राहु/केतु दो प्रकार से अपना फल प्रकट करते हैं।

(1) दशानाथ होकर एवं

(2) राहु/केतु दशानाथ के नक्षत्र, उप एवं उप-उप नक्षत्र स्वामी बनकर।

राहु/केतु (दशानाथ)

राहु या केतु की दशा चल रही हो तो फल 5 प्रकार से प्रकट करते हैं। इसे समझना अत्यंत आवश्यक है। नीचे पाँचों प्रकार से राहु–केतु भावों का फल कैसे देते इसका वर्णण दिया जा रहा है।

(1) राहु/केतु अपनी दशा में अपने भावों का तथा निरायन भाव चलित कुण्डली (NBC) में जहाँ बैठे होते हैं उनका फल देते हैं जब वह स्वाबलंबन की स्थिति (PS=Positional Status) में होते हैं अन्यथा नहीं।

(2) राहु–केतु अपने राशि स्वामी का फल तभी दे पाते हैं जब राशि स्वामी स्वाबलंबन (PS) की स्थिति में हों।

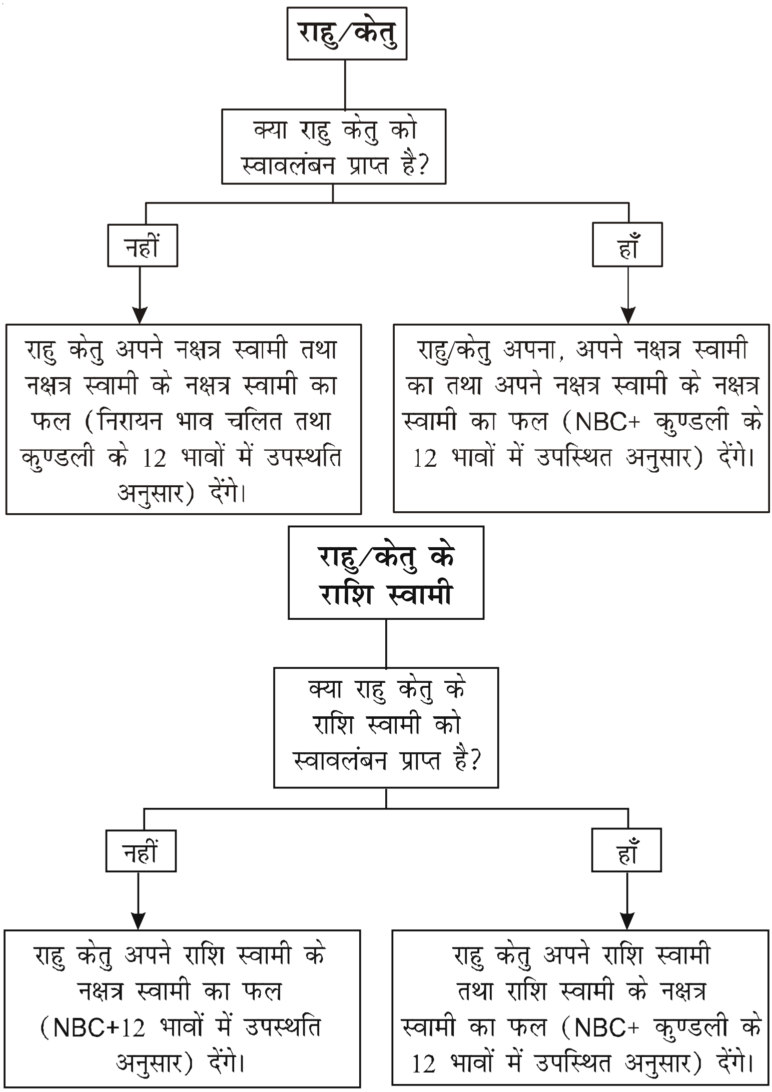
(3) राहु–केतु अनिवार्य रूप से अपने नक्षत्र स्वामी का फल देते हैं। अर्थात् राहु/केतु के नक्षत्र स्वामी NBC तथा भाव तालका के 12 भावों में अपनी उपस्थिति द्वारा उन भावों का फल प्रदान करेंगे।

(4) राहु केतु अपने राशि स्वामी के नक्षत्र स्वामी का फल भी अनिवार्य रूप से देते हैं।

(5) राहु केतु अपने नक्षत्र स्वामी के नक्षत्र स्वामी का फल भी अनिवार्य रूप दे देते हैं।

अर्थात् राहु केतु जब दशानाथ हो तो राहु केतु अपना और अपने राशि स्वामी का फल तभी दे पाने में समर्थ होंगे जब उन्हें स्वाबलंबन की स्थिति प्राप्त होगी।

इसके अतिरिक्त राहु/केतु अपने नक्षत्र स्वामी, नक्षत्र स्वामी के नक्षत्र स्वामी तथा राशि स्वामी के नक्षत्र का फल NBC+12 भावों में उनकी उपस्थितियों के अनुसार देंगे।


राहु/केतु
क्या राहु केतु को स्वावलंबन प्राप्त है?
नहीं
हाँ
राहु केतु अपने नक्षत्र स्वामी तथा नक्षत्र स्वामी के नक्षत्र स्वामी का फल (निरायन भाव चलित तथा कुण्डली के 12 भावों में उपस्थति अनुसार) देंगे।
राहु/केतु अपना, अपने नक्षत्र स्वामी का तथा अपने नक्षत्र स्वामी के नक्षत्र स्वामी का फल (NBC+ कुण्डली के 12 भावों में उपस्थित अनुसार) देंगे।
राहु/केतु के राशि स्वामी
क्या राहु केतु के राशि स्वामी को स्वावलंबन प्राप्त है?
नहीं
हाँ
राहु केतु अपने राशि स्वामी के नक्षत्र स्वामी का फल (NBC+12 भावों में उपस्थति अनुसार) देंगे।
राहु केतु अपने राशि स्वामी तथा राशि स्वामी के नक्षत्र स्वामी का फल (NBC+ कुण्डली के 12 भावों में उपस्थित अनुसार) देंगे।

(2) राहु, केतु (नक्षत्र, उप एवं उप-उप नक्षत्र स्वामी) :

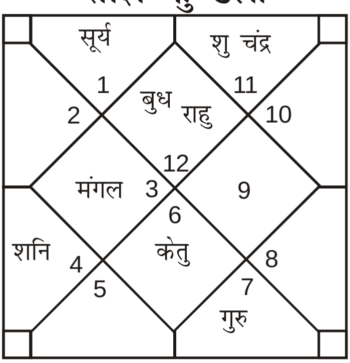
राहु–केतु जब किसी ग्रह के नक्षत्र स्वामी हो तो अपना फल निम्न प्रकार दे देते हैं–

(1) NBC तथा कुण्डली के 12 भावों में अपनी उपस्थिति के अनुसार।

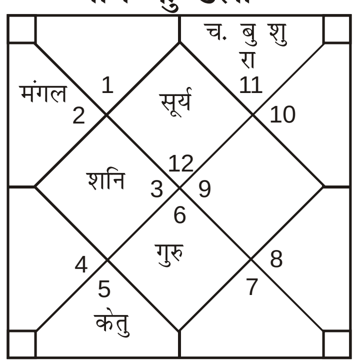
(2) राहु/केतु अपने राशि स्वामी की उपस्थिति (कुण्डली के 12 भावों में) के अनुसार फल देंगे। ध्यान रखें यदि राशि स्वामी को PS (स्वाबलंबन) प्राप्त हो तो ऐसे में राशि स्वामी NBC (निरायन भाव चलित कुण्डली) के जिस भाव में बैठा होगा उस भाव का फल भी देगा अन्यथा नहीं।

(3) राहु–केतु अपने नक्षत्र स्वामी की (कुण्डली के 12 भावों तथा NBC में) उपस्थिति अनुसार अपना फल देंगे।

राशि कुण्डली



भाव कुण्डली



राहु / केतु के भाव फल किस प्रकार से लें इसका अभ्यास आवश्यक है।

ग्रह तालिका का अवलोकन करें। सूर्य, केतु के नक्षत्र में है तथा सूर्य को स्वाबलंबन (PS) प्राप्त है। अतः सूर्य अपनी दशा में जिन–जिन ग्रहों का फल देगा वे हैं–सूर्य, केतु, बुध–चंद्र (क्योंकि केतु बुध की राशि एवं चंद्रमा के नक्षत्र में है)।

ग्रह तालिका

ग्रह	राशि	अंश	RL	STL	SL	SSL	Dir.	PS
सूर्य	मेष	09.41.53	मंगल	केतु	शनि	बुध		P
चंद्र	कुंभ	17.06.08	शनि	राहु	शुक्र	बुध		
मंगल	मिथुन	11.48.34	बुध	राहु	शनि	चंद्र		P
बुध	मीन	16.37.37	गुरु	शनि	गुरु	राहु		P
गुरु	तुला	21.23.22	शुक्र	गुरु	गुरु	चंद्र	R	P
शुक्र	कुंभ	25.26.27	शनि	गुरु	बुध	गुरु		P
शनि	कर्क	10.44.13	चंद्र	शनि	सूर्य	शनि		P
राहु	मीन	10.10.03	गुरु	शनि	शुक्र	बुध		
केतु	कन्या	10.10.03	बुध	चंद्र	चंद्र	राहु		

भाव तालिका

ग्रह	राशि	D-M-S	RL	STL	SL	SSL	Arc%
I	मीन	24.50.12	गुरु	बुध	राहु	शनि	50.15
II	मेष	28.06.04	मंगल	सूर्य	चंद्र	बुध	76.08
III	वृष	24.41.45	शुक्र	मंगल	राहु	शनि	05.70
IV	मिथुन	19.01.15	बुध	राहु	चंद्र	शुक्र	21.18
V	कर्क	14.58.50	चंद्र	शनि	गुरु	गुरु	38.72
VI	सिंह	16.21.56	सूर्य	शुक्र	चंद्र	मंगल	78.39
VII	कन्या	24.50.12	बुध	मंगल	राहु	शनि	50.15
VIII	तुला	28.06.04	शुक्र	गुरु	शुक्र	शनि	34.04
IX	वृश्चिक	24.41.45	मंगल	बुध	राहु	शनि	05.70
X	धनु	19.01.15	गुरु	शुक्र	राहु	बुध	09.27
XI	मकर	14.58.50	शनि	चंद्र	गुरु	शुक्र	73.48
XII	कुंभ	16.21.56	शनि	राहु	शुक्र	गुरु	04.65

सूर्य द्वारा प्राप्त भाव–

ग्रह	निरायन भाव	लग्नादि भाव
सूर्य	1	2, 6
बुध	12	1, 2, 4, 7, 9, 10
चंद्र	12	2, 4, 5, 6, 11
केतु	6	–
अर्थात् सूर्य अपनी दशा में 1, 2, 4, 5, 6, 7, 9, 10, 11 एवं 12वें भाव का फल देगा		

चंद्रमा, राहु के नक्षत्र में होने से राहु, गुरु एवं शनि का फल देने में समर्थ होगा। यहाँ चंद्रमा अपना फल नहीं दे पाएगा क्योंकि चंद्रमा को स्वाबलंबन (PS) की स्थिति प्राप्त नहीं है।

चंद्रमा द्वारा प्राप्त भाव–

ग्रह	निरायन भाव	लग्नादि भाव
चंद्रमा राहु	12	1, 3, 4, 7, 9, 10, 12
गुरु	7	1, 5, 8, 10, 11, 12
शनि	4	1, 3, 5, 7, 8, 9, 11, 12
अर्थात् चंद्रमा अपनी दशा में 1, 3, 4, 5, 7, 8, 9, 10, 11 एवं 12वें भावों का फल प्रदान करेगा।		

विशेष–राहु, गुरु एवं शनि क्रमशः 12, 7, एवं 4थे भाव का फल इसलिए दे पा रहे हैं क्योंकि तीनों ग्रहों को स्वाबलंबन प्राप्त है। किसी ग्रह

के नक्षत्र स्वामी को छोड़कर अन्य सभी ग्रहों के निरायन भाव चलित कुण्डली भावों को केवल तभी लेना है जब उस ग्रह को स्वालंबन से प्राप्त हो। दशानाथ ग्रह के नक्षत्र स्वामी को (NBC) + भावों में उपस्थितिनुसार लेना अनिवार्य है चाहे नक्षत्र स्वामी को स्वाबलंबन (PS) प्राप्त हो या ना हो।

राहु द्वारा प्राप्त भाव–

ग्रह	**निरायन भाव**	**लग्नादि भाव**
राहु	–	1, 3, 4, 7, 9, 10, 12
गुरु	7	1, 5, 8, 10, 11, 12
शनि	4	1, 3, 5, 7, 8, 9, 11, 12
गुरु को स्वाबलंबन (PS) प्राप्त है। अत: NBC भाव लेना अनिवार्य है।		

विशेष–ऊपर दिए गए तालिका में 'शनि' को यदि स्वावलंबन नहीं होता तो भी निरायन भाव चलित में चौथा भाव लेना था क्योंकि ग्रह के नक्षत्र स्वामी का स्वावलंबन देखे बिना उसकी उपस्थिति निरायन भाव चलित कुण्डली से लेना अनिवार्य है।

शनि को स्वावलंबन प्राप्त है। अत: (निरायन भाव चलित से) चौथे भाव का फल भी अनिवार्य रूप से प्राप्त होगा। उसके उपरांत पाठकों के सहायतार्थ नीचे दशानाथ ग्रह के नक्षत्र स्वामी (STL), उप नक्षत्र स्वामी (SL) तथा उप-उप नक्षत्र (SSL) स्वामी के भावों को दर्शाया गया है ताकि ग्रहों के नक्षत्र स्वामी, उप एवं उप उप नक्षत्र स्वामी के भावों को ठीक से समझा जा सके।

- ध्यान दे गुरु को स्वावलंबन प्राप्त है क्योंकि गुरु स्वयं के नक्षत्र में है अतः 1, 5, (7) 8, 10, 11, 12 भावों का फल प्रदान करेगा ऐसे भाव प्रारंभिक भाव माने जाएंगे।
- गुरु गुरु के उप नक्षत्र में है अतः पुनः 1, 5, (7) 8, 10, 11, 12 भाव लिए गए है।
- गुरु चंद्रमा के उप उप नक्षत्र में है अतः 2, 4, 5, 6 एवं 11 वाँ भाव लिया गया है। यहाँ चंद्रमा को स्वावलंबन प्राप्त नहीं है अतः उसे निरायन भाव चलित कुण्डली से नहीं लिया गया है।

पाठकगण इसी प्रकार अधिक से अधिक अभ्यास करें ताकि निपुण हो सकें।

- शुक्र को स्वावलंबन प्राप्त है तथा शुक्र, गुरु के नक्षत्र में है अतः शुक्र अपना एवं गुरु का फल देगा जहाँ शुक्र NBC के 12वें भाव में तथा गुरु 7वें भाव में है।
- शुक्र (PS) 3, 4, 6, 8, 10, 11, 12 तथा STL गुरु द्वारा 1, 5, 8, 10, 11 एवं 12वाँ भाव इस प्रकार शुक्र 1, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 10, 11 एवं 12वें भावों का फल देगा। शुक्र का उप नक्षत्र स्वामी बुध को स्वावलंबन प्राप्त होने से (12)वें (निरायन भाव चलित) तथा 1, 2, 4, 7, 9, 10वें भाव का फल प्रदान करेगा। पुनः गुरु शुक्र का उप उप नक्षत्र स्वामी है अतः 1, 5, 7, 8, 10, 11, 12 का फल देगा। ध्यान रहे चूंकि गुरु को स्वावलंबन प्राप्त है। अतः 7वें भाव का फल भी प्राप्त होगा।

ग्रह	NBC	नक्षत्र स्वामी	SL NBC	उप ग्रह	नक्षत्र उप नक्षत्र स्वामी	SSL NBC	ग्रह	उप उप नक्षत्र स्वामी
गुरु (PS)	7	–1, 5, 8, 10, 11, 12	7	गुरु	1, 5, 8, 10 11, 12	–	चंद्र	2, 4, 5, 6, 11
शुक्र PS	12	3, 4, 6, 8, 10, 11, 12	12	बुध	1, 2, 4, 7, 9, 10	7	गुरु	1, 5, 8, 10 11, 12

- राहु या केतु यदि एक दूसरे के नक्षत्र स्वामी, बने तो इनके भाव भी ठीक उसी प्रकार से ले जैसे अलग–अलग राहु–केतु के भावों को लेना बताया गया है।

ग्रह फल विचार

ग्रह के नक्षत्र स्वामी द्वारा प्राप्त भावों से उसके कारकत्वों का विचार करते हैं। ग्रह अपने स्वावलंबन एवं नक्षत्रों द्वारा जिस–जिस भावों में गया होता है अपनी दशा में उन्हीं–उन्हीं भावों का फल प्रकट कर सकता है। मान ले कोई ग्रह अपने नक्षत्र स्वामी के द्वारा 2, 4, 7 एवं 10वें भाव में गया हो तो इसका अर्थ है ऐसा ग्रह अपनी दशा में

– दूसरा भाव अर्थात् धन, कुटुम्ब, वाणी, दाहिनी, आँख इत्यादि से संबंधित फल देगा।

– चौथा भाव माता/वाहन/अचल संपत्ति/गृह सुख से संबंधित फल देगा।

– सातवाँ भाव अर्थात् दामपत्य जीवन, विवाह, व्यापार, साझेदारी आदि का फल देगा।

– दसवाँ भाव अर्थात् मान–सम्मान, राज्य, कर्म इत्यादि का फल देगा।

फल अच्छा या बुरा होगा इसका विचार ग्रह के उप नक्षत्र तथा उप-उप नक्षत्र स्वामी से करते हैं।

उप नक्षत्र फल विधा

ग्रहों के स्वाबलंबन (PS) तथा नक्षत्रों द्वारा प्राप्त भावों का शुभाशुभ फल, ग्रह के उप नक्षत्र स्वामी तथा उप-उप नक्षत्र स्वामी द्वारा निर्धारित होता है। नक्षत्र स्वामी द्वारा प्राप्त भावों को यदि उप नक्षत्र स्वामी समर्थन दे तो उस भाव का फल शुभ एवं अनुकूल होता है परंतु नाकार दे तो उस भाव का फल समाप्त हो जाता है। यदि प्रतिकूल भावों में जाए तो फल बाधित या विलम्ब से प्राप्त होते हैं।

नियम

(1) यदि उप नक्षत्र स्वामी, नक्षत्र स्वामी के भावों से 1, 3, 5, 9 एवं 11वें भावों में हो तो नक्षत्र स्वामी के भावों का फल अनुकूल होगा।

(2) यदि उप नक्षत्र स्वामी स्वावलंबन ग्रहों द्वारा प्राप्त भावों से 1, 3, 5, 9, 11वें हो तो प्राप्त भावों का फल अनुकूल होता है।

(3) यदि ग्रह के स्वावलंबन एवं नक्षत्र स्वामी द्वारा प्राप्त भावों से उप नक्षत्र स्वामी 2, 6 या 10वें हो तो ऐसे में ग्रहों के भावों का फल सामान्यतः शुभ एवं अनुकूल होगा क्योंकि ऐसी अवस्था में उप स्वामी तट्स्थ रहता है।

(4) यदि उप नक्षत्र स्वामी, ग्रहों के स्वावलंबन एवं नक्षत्र स्वामी द्वारा प्राप्त भावों से 4, 7 या 8,वें हो तो उस भाव का फल बाधायुक्त तथा विलम्ब से प्राप्त होंगे।

(5) यदि उप नक्षत्र स्वामी, ग्रहों के स्वावलंबन एवं नक्षत्र स्वामियों (STL) द्वारा प्राप्त भावों से 12वें हों तो उस भाव का फल समाप्त हो जाता है। ऐसी स्थिति में उस भाव का फल प्राप्त नहीं होगा।

संगत एवं संबंधित भाव

जब किसी घटना के घटित होने के लिए उप नक्षत्र स्वामी द्वारा प्राप्त सहायक भाव आवश्यक हो चाहे उसकी स्थिति नक्षत्र स्वामी के भाव से 4थे, 7वें, 8वें या 12वें ही क्यों न हो तो ऐसी स्थिति में घटना घटित होगी। इसे संगत या संबंधित भाव संयोग कहते हैं।

विशेष

प्रारंभिक/नैसर्गिक भाव–ग्रहों के स्वावलंबन एवं नक्षत्रों द्वारा प्राप्त भावों को प्रारंभिक/नैसर्गिक भाव कहते हैं।

सहायक भाव–घटना के घटित होने के लिए प्रारंभिक भावों को सहायक भावों की आवश्यकता होती है। उप नक्षत्र स्वामी की उपस्थिति नक्षत्र भाव को समर्थन देने वाले भावों में हो तो उसे सहायक भाव कहते हैं।

संबंधित या संगत भाव–घटना के घटित होने के लिए उप नक्षत्र स्वामी की उपस्थिति नक्षत्र स्वामी के भावों से बेशक प्रतिकूल 4, 7, 8, या 12वें भावों में हो परंतु घटना के घटित होने के लिए ऐसे भाव आवश्यक हो तो इसे संबंधित या संगत भाव कहते हैं।

उदाहरण

	घटना	प्रारंभिक भाव	सहायक भाव
(1)	विवाह	7	5, 11
(2)	संतान (प्रथम)	5	2, 11
(3)	प्रकाशन व्यवसाय	3	2, 10, 11
(4)	विक्रय (संपत्ति, वाहन)	4	3, 5, 10
(5)	बैंक द्वारा कर्ज प्राप्ति	7	6, 2, 11
(6)	अचानक धन लाभ	8	2, 11

विवेचन :

विवाह

(1) विवाह हेतु प्रारंभिक भाव 7वाँ है तथा सहायक भाव 5वाँ (जहाँ 5वाँ प्यार एवं स्नेह है) तथा 11वाँ इच्छापूर्ति भाव है। किसी भी घटना के घटित होने के लिए प्रारंभिक भावों को सहायक भावों की आवश्यकता होती है।

संतान

(2) 5वाँ भाव प्रथम संतान का कारक भाव है तथा 2रा एवं 11वाँ भाव क्रमशः परिवार एवं इच्छा पूर्तिभाव है। इस घटना में 11वाँ भाव 5वें से 7वाँ है फिर भी 5वें भाव के लिए बाधा कारक ना हो कर सहायक है क्योंकि 11वां भाव इच्छापूर्ति एवं लाभ का भाव होने से संतान प्राप्ति में सहायक है अर्थात् उप नक्षत्र का यह भाव संबंधित एवं संगत भाव है।

प्रकाशन-व्यापार

(3) प्रकाशन का विचार तीसरे भाव से करते हैं। यदि ग्रह अपने नक्षत्र स्वामी अथवा स्वावलंबन द्वारा तीसरे भाव में चला जाए तथा उप नक्षत्र स्वामी द्वारा 2, 10, 11वें भाव में जाए तो ऐसी स्थिति में प्रकाशन से लाभ रहेगा ना कि हानि या बाधा। यहाँ उप नक्षत्र का 2रा तथा 10वाँ भाव बेशक 3रे भाव से 12वाँ तथा 8वाँ है परंतु यह भाव प्रकाशन से लाभ दर्शाते हैं। अतः उप नक्षत्र द्वारा दिए गए भाव प्रकाशन आदि व्यापार से लाभ के द्योतक हैं। यहां 3रे भाव के लिए 2रा एवं 10वाँ भाव संबंधित या संगत भाव कहलाएँगे।

विक्रय (संपत्ति/वाहन)

(4) चौथा भाव अचल संपत्ति अथवा वाहन आदि का प्रारंभिक भाव है। यदि किसी ग्रह का नक्षत्र स्वामी अथवा ग्रह स्वयं स्वावलंबी होकर चतुर्थ भाव में चला जाए तथा ग्रह का उप नक्षत्र स्वामी 3रे, 5वें तथा 10वें भाव में चला जाए तो ऐसा ग्रह अपनी दशा में संपत्ति वाहनादि के विक्रय में सहायक होगा। यहाँ चतुर्थ भाव से तृतीय भाव बारहवाँ हैं परंतु यह भाव संगत अथवा संबंधित भाव है बिना तीसरे भाव के चौथे का व्यय या समाप्ति संभव ही नहीं है। पुनः 10वाँ भाव, चौथे से 7वाँ होता है जो कि बाधाकरक होना चाहिए परंतु ऐसा नहीं है। यदि आप अपनी संपत्ति बेच रहे हैं तो कोई तो उसे खरीद रहा है अर्थात् 7वाँ भाव आपकी संपत्ति को खरीदने वाला है उससे चौथा भाव (10वां) खरीदने वाले व्यक्ति का चौथा भाव है संपत्ति भाव है अतः 10वाँ भाव आवश्यक है। 7वें से 5वाँ भाव 11वाँ होता है अतः आपका 5वाँ भाव 7वें का इच्छापूर्ती भाव (11वां) है।

बैंक द्वारा ऋण प्राप्ति

(5) ग्रह के नक्षत्र स्वामी की उपस्थिति 7वें भाव में तथा उप नक्षत्र स्वामी की उपस्थिति 6, 2, 11वें भाव में होने से बैंक से ऋण प्राप्त होने को दर्शाता है। जहाँ 7वाँ भाव बैंक है तथा 6ठा भाव कर्ज/ऋण का कारक भाव है। 2रा भाव आपका धन भाव है तथा 11वाँ भाव आपकी इच्छा पूर्ति का भाव है। ध्यान दे नक्षत्र स्वामी 7वें भाव में तथा उप नक्षत्र स्वामी 6ठें भाव में है। पुनः ध्यान दे नक्षत्र स्वामी के भाव 7वें से उप नक्षत्र स्वामी 6ठें भाव में है अर्थात् 12वें है परंतु यहां 7वें भाव को नाकारा नहीं जा रहा। ऋण का भाव 6ठा ही है अतः यह भाव बैंक अर्थात् 7वें का संगत या संबंधित भाव है। दूसरा भाव 7वें भाव से 8वां है। परंतु यह भाव ऋण से प्राप्त धन का भाव है। अतः संगत या संबंधित भाव है।

अचानक धन लाभ

(6) ग्रह स्वावलंबन अथवा अपने नक्षत्र स्वामी द्वारा अष्टम (8वाँ) भाव को दर्शाए तथा उप नक्षत्र स्वामी 2, 11 दर्शाए तो अचानक लाभ प्राप्त होगा। यहाँ आपको धन का लाभ होना अर्थात् दूसरे भाव का फल मिलना है। पुनः ध्यान दे 8वें से दूसरा भाव 7वां होता है एवं 8वें से 11वाँ भाव 4था होता है जो कि बाधा एवं विलम्बकारक होना चाहिए परंतु ऐसा नहीं हैं। यहाँ, 2रा, 11वाँ भाव संगत भाव है। यदि किसी को हानि हुई हैं तो निश्चय ही

किसी को लाभ अवश्य हुआ है। ऐसी स्थिति में 2रा तथा 8वें भावों के साथ 11वें भाव का आना आवश्यक है।

सब्य/अपसब्य क्रम

(7) जब कोई ग्रह अपने स्वावलंबन (PS) या नक्षत्र स्वामी द्वारा किसी भाव से संबंधित होता तथा ग्रह का उपनक्षत्र स्वामी उस भाव से संबंधित फल का समर्थन करता है अथवा नाकाराता है, तो इसे सब्य क्रम कहते हैं। मान ले ग्रह अपने स्वावलंबन अथवा नक्षत्र स्वामी द्वारा 7वें (विवाह भाव) भाव में चला जाए तथा ग्रह का उप नक्षत्र स्वामी विवाह के सहायक भावों में उपस्थित हो अर्थात् 5वें एवं 11वें भाव में हो तो इसे सब्य अर्थात् सीधा/प्रत्यक्ष संबंध कहेंगे। इसके विपरित यदि ग्रह स्वावलंबन अथवा नक्षत्र स्वामी द्वारा सहायक भाव 5वें तथा 11वें भाव में चला जाए तथा उपनक्षत्र स्वामी द्वारा विवाह के प्रारंभिक भाव (7वाँ) में गया हो ऐसे में अपसब्य क्रम होंगे। ऐसे दोनों स्थिति में संयोगों में विवाह संभावित होगा।

उदाहरण

ग्रह	स्वावलंबन/नक्षत्र भाव	उप नक्षत्र भाव	क्रम	फल
सूर्यादि कोई भी ग्रह	7	5, ⑪	सब्य	विवाह
	5, ⑪	7	अपसब्य	विवाह
	5	2, 11	सब्य	संतान
	2, 11	5	अपसब्य	संतान

विशेष

- अपसब्य क्रम में ध्यान देने योग्य मुख्य बातें हैं ग्रह के नक्षत्र स्वामी का 11वें भाव से संबंध होना। 11वाँ भाव इच्छा पूर्ति का भाव है। यदि कोई ग्रह अपने स्वावलंबन अथवा नक्षत्र स्वामी द्वारा 11वें भाव में जाए तो ऐसे में उप नक्षत्र स्वामी द्वारा दर्शाए गए भावों का फल प्राप्त हो जाता हो।
- किसी घटना के घटित होने में ग्रहों के स्वावलंबन, नक्षत्र स्वामी एवं उप नक्षत्र स्वामी की उपस्थिति क्रमशः प्राथमिक एवं सहायक या सहायक एवं प्राथमिक भावों में हो सकती है। क्रम चाहे सब्य हो या अपसब्य इससे ग्रह की क्षमता से कोई लेना देना नहीं है।
- ग्रह यदि अपने स्वावलंबन या नक्षत्र स्वामी तथा उप नक्षत्र स्वामी द्वारा किसी घटना से संबंधित सभी अच्छे भावें में गया हो साथ ही वह उस भाव को नकारने वाले तथा बाधित करने वाले भावों से मुक्त हो तो ऐसा ग्रह उस घटना को घटित कर पाने में पूर्णतः सक्षम होता है।
- यदि कोई ग्रह अपने स्वावलंबन या नक्षत्र स्वामी एवं उप नक्षत्र स्वामी के द्वारा किसी घटना को दर्शा रहा है परंतु उसे बाधित या नकारने वाले भावों से भी युक्त हो तो वह निर्बल माना जाएगा।

प्रथम भाव

कारकत्व:

व्यक्तित्व, स्वभाव, आचरण, शारीरिक संरचना, स्वास्थ्य, आयु, प्रसिद्धि, जीवन संघर्ष, नैतिक धर्म, सदाचार, गुण, जीवन की बाधायें एवं जीवन के विभिन्न आयाम, कर्म, भौतिक सुख, ज्ञान, स्वप्न, जीवन शैली, उपलब्धि, मानसिक अवस्था, शत्रु या प्रतिद्वंदियों पर विजय इत्यादि का विचार प्रथम भाव से किया जाता है। इसके अतिरिक्त जातक के जीवन में घटित होने वाली सभी घटनाओं जैसे आयु, मृत्यु, रोग, शिक्षा, व्यापार, व्यवसाय, विवाह, संतान, आरिष्ठ इत्यादि को सर्वप्रथम लग्न के उप-उप नक्षत्र स्वामी से देखा जाता है।

लग्न महत्व:

जीवन के आरंभ से अंत तक की घटनाओं का आंकलन जन्म कुंडली के प्रथम भाव से किया जाता है। इसमे कोई संदेह नहीं कि कुंडली में लग्न का महत्व सर्वाधिक है। लग्न से जातक का रंग रूप, कद काठी, स्वभाव, आचरण तथा सुखः-दुखः का विचार करते हैं। वस्तुतः लग्न में सभी 12 भावों का समावेश होता है। लग्न कुंडली से जीवन के समस्त घटनाओं, परिस्थितियों एवं उप्लब्धियों का विचार किया जाता है। लग्नादि बारहों भावों में उपस्थित राशि, नक्षत्र, उप नक्षत्र तथा उप-उप नक्षत्र स्वामियों की स्थिति अनुसार जातक के जीवन का विश्लेषण किया जाता है। लग्नादि बारहों भावों में स्थित राशि से बली नक्षत्र, नक्षत्र से बली उप

नक्षत्र तथा उप नक्षत्र से बली उप-उप नक्षत्र स्वामी होता है। प्रत्येक भाव के उप-उप नक्षत्र स्वामी अपने स्वाबलंबन, नक्षत्रों, उप नक्षत्रों तथा उप-उप नक्षत्रों के द्वारा अपने अपने भावों का फल निर्धारित करते हैं। प्रत्येक (1-12) भावों के उप-उप नक्षत्र स्वामियों द्वारा दर्शाये या निर्धारित किये गये अपने अपने भावों का फल, उस भाव का अंतिम फल होता है। इसे उस भाव के उप-उप नक्षत्र स्वामी की प्रतिज्ञा अथवा आश्वासन समझे जिसे अन्य कोई ग्रह बदल नहीं सकता। **उदाहरण स्वरूप मान लें लग्न या पंचम भाव के उप-उप नक्षत्र स्वामी यदि संतान को नकार देते हैं तो ऐसी स्थिति में कोई अन्य ग्रह जो संतान दे पाने में समर्थ है, अपनी दशा में संतान दे पाने में असमर्थ ही रहेगा।**

प्रथम भाव से सम्बंधित अन्य घटनाओं की चर्चा करने से पूर्व ग्रहों तथा राशियों के मान निर्धारित करना चाहुंगा। हम राशियों के लिये RL, ग्रह स्वाबलम्बन के लिये PS, नक्षत्रों के स्वामियों लिये STL, उप नक्षत्रों के स्वामियों के लिये SL तथा उप-उप नक्षत्रों के स्वामियों के लिये SSL का उपयोग करेंगे।

राशि	**ग्रह स्वाबलम्बन**	**नक्षत्र**	**उप नक्षत्र**	**उप-उप नक्षत्र**
RL	PS	STL	SL	SSL

विशेषः

1. प्रथम भाव का SSL ग्रह अपने PS/STL द्वारा जिस जिस भावों में उपस्थित होगा उन सभी भावों के फल जातक को प्राप्त हो सकते हैं। फल शुभ होंगे या अशुभ, अनुकूल होंगे या प्रतिकूल इसका निर्णय प्रथम भाव के SSL के SL/SSL के भावों से करते हैं।

2. प्रथम भाव का SSL जिस भाव के किसी एक फल को नकार देता है पूरे जीवन जातक को उस भाव संबंधित फल की प्राप्त नहीं होती है ! हाँ दैनिक एवं छोटे फलों की प्राप्ति संभावित है।

3. प्रथम भाव का SSL यदि किसी भाव के फल को नकार दे तो इसका तात्पर्य यह नहीं है कि उस भाव जनित कोई भी फल जातक को प्राप्त नहीं होगा। मान लें – प्रथम भाव का SSL अपने PS अथवा STL के द्वारा पंचम (5वे) भाव में तथा SL द्वारा 1, 2, 4, 6, 8, 10 में चला जाये तो ऐसे समीकरण केवल संतान को बाधित करेंगे ना कि 5वे भाव से लाभ (ध्यान से देखें SL का 2, 4, 6 तथा 10वे भाव में जाना 5वें भाव से लाभ को भी दर्शाता है।)

एक अन्य उदाहरण से समझने का प्रयास करते हैं / नीचे दिये गये समीकरण का अवलोकन ध्यान से करें-

घटना	**प्रारंभिक भाव**	**सहायक भाव**	**नकारात्मक/बाधक भाव**
संतान प्राप्ति संयोग	5	2, 11	4 / 1, 10, 8, 12
अपसब्य संतान संयोग	11	2, 5	4 / 1, 10, 8, 12

1. 4था भाव 5वे भाव से 12वाँ भाव है अत: 5वें भाव का नकारात्मक भाव है इसी क्रम में 2रे से 1ला भाव 12वाँ है, पुन: 11वें से 10वाँ भाव 12वाँ है तथा 8वाँ और 12वाँ भाव क्रमश: 5वें से 4था एवं 8वाँ होता है जो कि बाधाकारक हैं। एक मुख्य बात बताना चाहुंगा यदि नकारात्मक भाव 4 के साथ भाव 5 भी SL या SSL के साथ उपस्थित हो तो 5वाँ भाव वापस सबल हो जायेगा। ऐसे में 5वे भाव का फल विलम्ब से ही सही परंतु अवश्य

प्राप्त होगा। पुनः एक मुख्य बात और बताना चहुंगा। यदि SL के 4थे भाव के साथ 5वाँ भाव आ जाये परन्तु SSL के पास केवल और केवल भाव 4 हो तो अंततः 5वें भाव का फल पुनः बाधित हो जायेगा क्योंकि SSL का फल अंतिम होता है। अस्तु !

अपसब्य संयोग अर्थात उल्टा संयोग। 11वाँ भाव इच्छा पूर्ति का भाव है। अतः यह भाव जिस किसी भाव से युक्त होगा उसी भाव से इच्छा (कार्य) पूरी हो जायेगी। एक उदाहरण लें- अचल संपत्ति हेतु ग्रह संयोगः 4th SSL अपने PS/STL द्वारा 4थे भाव में तथा SL द्वारा 11वें भाव में चला जाये तो जातक को अचल संपत्ति का लाभ संभावित है। इसी क्रम में यदि SSL अपने PS/STL द्वारा 11वें भाव तथा SL की 4थे भाव में उपस्थिति भी संपत्ति के लाभ को दर्शायेगा।

संपत्ति संयोग	**PS/STL**	**SL**	**SSL**	**फल**
सब्य	4	11	4 या 11	संपत्ति लाभ
अपसब्य	11	4	4 या 11	संपत्ति लाभ

इससे पूर्व कि मैं लग्न तथा अन्य भावों से संबंधित संभावित घटनाओं की चर्चा करूं कुछ अति महत्वपूर्ण नियमों का उल्लेख करना आवश्यक है -

1. यदि किसी भाव का SSL अपने PS/STL द्वारा स्वयं के भावों से 4, 7, 8 एवं 12वें चला जाये तो ऐसे में उस भाव का फल स्वयं प्रतिकूल हो जाता है। यहां SL जिन-जिन भावों में उपस्थित होगा उन्हीं भावों से प्रतिकूल फल दर्शायेगा।

2. यदि किसी भाव के SSL का PS/STL अपने भाव से सभी अनुकूल भावों में हो तो ऐसे में उस भाव का फल उत्तम होगा

बशर्ते SL तथा SSL भी PS/STL के भावों को समर्थन दे रहे हों अर्थात PS/STL के भावों से 4, 7, 8 या 12वें ना हों।

3. यदि किसी घटना के घटित होने के लिये कोई भाव आवश्यक (SL/SSL द्वारा प्राप्त भाव) हो बेशक ऐसे सहायक भाव, प्राथमिक भाव (PS/STL द्वारा प्राप्त भाव) से 4थे, 7वें, 8वें या 12वें ही क्यों ना हो, घटना को घटित करने में सहायक बना रहेगा, इसे संबंधित भाव (Relevant Cusp) संयोग कहते है।

4. कोई भी घटना जातक के पक्ष में या उसके लिये अनुकूल तभी होगी जब PS/STL भाव से SL/SSL की उपस्थिति PS/STL के भावों के साथ साथ लग्न से भी अनुकूल होगी। मान ले PS/STL द्वारा प्राप्त भाव 4था है तथा SL/SSL द्वारा प्राप्त भाव 6, 8, 12 है तो ? यहाँ 4थे भाव से 6, 8, 12 क्रमशः 3, 5, 9वाँ भाव बनता है जो कि अनुकूल है परंतु लग्न से त्रिक भाव होने के कारण ऐसे संयोग का फल जातक के लिये प्रतिकूल ही होगा।

SL या SSL की भूमिका एक शिल्पकार या कुम्हार की तरह होती है। जैसे एक शिल्पकार या कुम्हार, पत्थर या मिट्टी को अपने हुनर से अलग अलग रूप दे देता है ठीक उसी प्रकार SL/SSL की विभिन्न भावों में उपस्थिति PS/STL के भावों का फल एवं स्वरूप निर्धारित करता है। मान ले PS/STL द्वारा प्राप्त भाव 7वाँ हो तो क्या समझें ? विवाह ? साझेदारी ? तलाक ? बैंक संबंधी फल ? व्यापार या व्यवसाय ? पति या पत्नी के संबंधित अच्छे या बुरे फल ? यहां SL या SSL की भूमिका शिल्पकार या कुम्हार की तरह फल निर्धारित करने में सहायक है। मान ले SL या SSL की उपस्थिति 5वे एवं 11वे भावों में है तो यहां घटना विवाह से संबंधित होगी, यदि 6, 12 भावों में हो तो तलाक,

2, 3, 4, 6, 10 एवं 11वे भावों में हो तो व्यापार में लाभ का फल प्राप्त होगा– अस्तु !

लग्न एवं जीवन की विभिन्न घटनायें:

आयु:

जन्म कुण्डली के प्रथम, तृतीय एवं अष्टम भाव को आयु कारक भाव माना गया है। यदि इन भावों के SSL अपने PS/STL तथा SL/SSL द्वारा नीचे दिये गये समीकरण दर्शायें तो जातक कि आयु का अनुमान सहज रूप से लगाया जा सकता है। आयु की तीनो अवस्थाओं की गणना नीचे दिये गये समीकरण के अनुसार करें –

अ) दीर्घायु संयोग,

ब) अल्पायु संयोग तथा

स) मध्यम आयु संयोग।

समीकरण अ)

दीर्घायु योग:

भाव	**PS/STL**	**SL**	**SSL**
1^{st}, 3^{rd} एवं 8^{th} SSL	1, 11	5, 9	1या 5 या 9 या 11
1^{st}, 3^{rd} एवं 8^{th} SSL	5, 9	1, 11	1या 5 या 9 या 11
1^{st}, 3^{rd} एवं 8^{th} SSL	1, 5, 9 11	1, 5, 9, 11	1या 5 या 9 या 11

ऊपर दिये गये संयोगों को समझने का प्रयास करेंगे। ध्यान दें 5वाँ भाव 6ठे भाव से 12वाँ होने के कारण रोग का नाश करता है अतः आयु कारक है। 5वाँ भाव लग्न से त्रिकोण भाव है अतः शुभ है। इसी क्रम में 9वाँ भाव 8वें से दूसरा अर्थात आयु को बढ़ानें वाला है तथा लग्न से त्रिकोण भाव होने से भी अति शुभ है। 11वाँ भाव लाभ तथा इच्छा पूर्ति का भाव है अतः शुभ है। कुल मिला कर ऐसे तीनो भाव आयु कारक हैं।

समीकरण ब)

अल्पायु योगः

भाव	**PS/STL**	**SL**	**SSL**
1st, 3rd एवं 8th SSL	1, 8	2, 7 + बाधकेश	2 या 7 या 8 बाधकेश
1st, 3rd एवं 8th SSL	2, 8	1, 7 + बाधकेश	2 या 7 या 8 बाधकेश
1st, 3rd एवं 8th SSL	1, 2, 7, 8	2, 8 + बाधकेश	2 या 7 या 8 बाधकेश

अल्पायु की गणना करने के लिये 1ले SSL, 3रे SSL एवं 8वे SSL का PS/STL एवं SL/SSL के द्वारा 1, 2, 7, 8 तथा बाधक भावों में जाना आवश्यक है। भाव 1 इस लिये कि मृत्यु तो शरीर की ही होनी है। 2रा भाव 3रे से 12वाँ एवं 7वाँ भाव 8वें भाव से 12वाँ है अतः आयु की समाप्ति को दर्शाता है। 8वें भाव की उपस्थिति मृत्यु के लिये आवश्यक है क्योंकि यहां घटना आयु से संबंधित है।

बाधकेश क्या है ?

बाधकेश अपना अशुभ प्रभाव केवल और केवल रोग तथा मृत्यु के समय दिखाते हैं। इसके अतिरिक्त इनका कोई अन्य कार्य नहीं है। बाधकेश की गणना तीन प्रकार से करते हैं। लग्न में चर राशि (1, 4, 7, 10) हो तो 11वाँ भाव, स्थिर राशि (2, 5, 8, 11) हो तो 9वाँ भाव एवं द्विस्वभाव राशि (3, 6, 9, 12) हो तो 7वें भाव के सभी (RL/STL/SL/SSL) स्वामी बाधकेश बनते हैं। इसके अतिरिक्त बाधक भाव में बैठने वाला ग्रह भी बाधकेश होता है।

समीकरण स)

मध्यम आयुः

यदि 1, 3, 8वें भाव के SSL अपने अपने PS/STL तथा SL/SSL द्वारा समीकरण अ) तथा ब) के संयोग एक साथ दर्शायें तो जातक मध्यम आयु प्राप्त करेगा।

आयु के संदर्भ में कहा जाये तो भारत वर्ष में औसत आयु लगभग 55-58 वर्ष है। तो क्या इसे ही पूर्णायु माना जाये ? विचारणीय बात यह है कि इसी देश में कुछ व्यक्तियों की आयु 100 वर्षों से भी अधिक होती है। तात्पर्य यह कि आयु की गणना केवल व्यक्ति (पात्र) विशेष की कुंडली से करनी चाहिये ना कि देश और काल से। आयु निर्धारण के संबंध में मैं केवल इतना ही कहुंगा कि अल्पायु योग होने पर 33 वर्षों तक या इसके आस पास मारक दशाओं से, मध्यम आयु योग में 33 से 66 वर्षों के आस पास मारक दशाओं से एवं पूर्णायु योग होने पर 66 से 100 वर्षों या उसके पश्चात आने वाली मारक दशाओं की गणना कर फलादेश करें या अल्पायु होने पर प्रथम मारकेश, दीर्घायु होने पर अंतिम मारकेश तथा

मध्यम आयु होने पर प्रथम और अंतिम मारकेश में मध्य में आने वाले मारकेश ग्रह की दशा से फल कथन कहना चाहिये।

लग्न एवं रोगः

कुंडली में 6ठा, 8वाँ तथा 12वाँ भाव रोग तथा आरिष्ठ कारक कहे गये है। यदि प्रथम भाव का SSL अपने PS/STL द्वारा 6ठें या 8वें भाव में चला जाये तथा SL/SSL के द्वारा 1ले, 6ठे, 8वें या 12वें भाव में हो साथ ही बाधक भाव की भी उपस्थिति हो तो जातक निश्चय ही रोगी होगा। यहां एक बात सदैव स्मरण रखे कि लग्न के SSL द्वारा यदि रोग दर्शाया जा रहा हो तो आवश्यक है कि 6ठे भाव के SSL द्वारा भी रोग का दर्शाया जाना आवश्यक है। इसी क्रम में यदि 6ठे भाव के SSL द्वारा रोग दर्शाया जाये तो लग्न के SSL द्वारा भी रोग का दर्शाया जाना आवश्यक है। यदि इन दोनों भावों के SSL में से किसी एक ने भी रोग नहीं दर्शाया तो रोग नहीं होगा। रोग के विभिन्न संयोग दिये जा रहे है।

साधारण रोग संयोगः

साधारण रोग	PS/STL	SL	SSL
1st SSL	6	1	1 या 6, बाधक भाव
1st SSL	बाधक भाव	1, 6	1 या 6 या बाधक भाव

स्पष्ट है यदि प्रथम भाव का SSL केवल 6ठे भाव से युक्त हो तो ऐसे में जातक को साधारण रोग की ही संभावना रहेगी। **प्रथम भाव के SSL का SSL यदि केवल और केवल रोग कारक भावों से युक्त हो तो बीमारी चाहे छोटी ही क्यों ना हो, ठीक नहीं होगी। इसके विपरीत यदि 5, 9, 11 जैसे भावों से युक्त हो तो बीमारी अवश्य ठीक हो**

जायेगी। यदि SSL शुभ एवं अशुभ दोनों भावों से युक्त हो तो बीमारी के ठीक होने के पश्चात पुनः होने की पूर्ण संभावना रहेगी।

लग्न एवं असाध्य रोगः

कुण्डली का 8वाँ भाव गंभीर रोग को दर्शाता है। यदि प्रथम भाव का SSL अपने PS/STL के द्वारा 8वें भाव में तथा SL/SSL के द्वारा लग्न से अशुभ (त्रिक) भावों में चला जाये तो जातक को गंभीर रोग होने की संभावना होगी। रोग अंततः ठीक होगा या नहीं ? क्या जातक आजीवन रोगी रहेगा ? इसके लिये नीचे दिये गये समीकरण का अवलोकन करें –

असाध्य रोग	PS/STL	SL	SSL
1st SSL समीकरण (1)	8	1, 6, 8, 12	1 या 6 या 8 या 12
1st SSL समीकरण (2)	6, 8, 12	6, 8 या बाधकेश	5, 9, 11
1st SSL समीकरण (3)	6, 8, 12 +बाधकेश	6, 8, 12+ 5, 9, 11	6, 8, 12+ 5, 9, 11

यदि प्रथम भाव का SSL अपने PS/STL द्वारा 6, 8, 12 तथा बाधकेश जैसे भावों चला जाये तो स्पष्ट है कि जातक गंभीर रोग का शिकार हो सकता है यदि SL ने रोग के भावों को अपना समर्थन दिया तो जातक निश्चय ही गंभीर रोग का शिकार होगा यहां असाध्य तभी कहेंगे जब प्रथम भाव के SSL का SSL केवल और केवल रोग (6, 8, 12) तथा बाधक भावों को दर्शाये। ऐसे संयोग तथा समीकरण होने पर रोग असाध्य होगा तथा जातक जीवन भर असाध्य रोग से पीड़ित रहेगा। इसके विपरीत

यदि प्रथम भाव के SSL का SSL केवल और केवल सभी आरोग्य अर्थात 1, 5, 9, 11वें भावों से युक्त हो तो चाहे बीमारी कैसी भी हो अंततः ठीक हो ही जयेगी। इसी क्रम में SSL का SSL यदि शुभ तथा अशुभ दोनों भावों से युक्त हो तो मिले-जुले सा फल प्रदान करेगा अर्थात जातक के जीवन में स्वास्थ संबंधित परेशानियाँ आती जाती रहेंगी।

अचानक मृत्युः

प्रथम भाव से अचानक मृत्यु के कुयोग स्पष्ट देखे जा सकते है। यदि ग्रह संयोग नीचे दिये गये समीकरण दिखाये तो समझें जातक अकाल मृत्यु को प्राप्त हो सकता है।

अकाल मृत्यु संयोग	**PS/STL**	**SL**	**SSL**
1st SSL	1, 8	2, 7+बाधकेश	2 या 7 या 8 या बाधक भाव
1st SSL	1	8+बाधकेश	मारक या बाधक भाव
1st SSL	1	8+बाधकेश	1, 5, 9, 11

पाठक गण ध्यान से ऊपर दिये गये समीकरण समझे, किसी भी ग्रह या भाव के SSL का निर्णय अंतिम होता है। यदि प्रथम भाव के SSL का SSL घटना से संबंधित किसी भी भाव में ना जाए एवं घटना के भावों से नाकारत्मक भावों (अर्थात 4, 7, 8 एवं 12वें भावों) में गया हो तो घटना घटित ही नहीं हो पायेगी बशर्ते ऐसा भाव सहायक भाव का संबंधित (आवश्यक) भाव ना हो। स्पष्ट रूप से समझें तो कहेंगे घटना तभी घटेगी जब SSL घटना के सहायक भावों में होगा इसके विपरीत घटना बाधित रहेगी जब SSL घटना को नकार दे अर्थात SSL बजाय

मारक (1, 2, 7, 8 एवं बाधक) भावों में जाने के सभी आयु कारक (1, 5, 9, 11) भावों में चला जाए।

ऊपर दिये गये (प्रथम दो समीकारणों मे) PS/STL द्वारा घटना के संयोग अकाल मृत्यु को दर्शाते है। जहाँ तीसरे अथवा अंतिम समीकरण में SSL द्वारा अकाल मृत्यु को नकार दिया गया है क्योंकि 1, 5, 9 एवं 11वाँ भाव आयु कारक है। चूँकि SSL का निर्णय अंतिम होता है अतः यहाँ अकाल मृत्यु का फल प्राप्त नहीं होगा।

लग्न तथा धन संयोगः

भौतिक जगत में जीवन यापन हेतु धन अति आवश्यक वस्तु है। इसके बिना जीवन की कल्पना करना कठिन है। जातक के जीवन में धन का संयोग कैसा होगा ? क्या जीवन में धन का अभाव रहेगा या व्यक्ति धनवान होगा ? जीवन में धन की स्थिति लग्न के SSL का 2रे अर्थात धन भाव के आपसी संबंधों पर निर्भर करता है। लग्न का संबंध जिस-जिस भाव से होगा, जातक को उन्हीं भावों का फल प्राप्त होता है। फल अनुकूल होगा या प्रतिकूल इसका निर्णय लग्न के SSL के SL/SSL पर निर्भर है।

स्मरण रहे - लग्न का संबंध जिस भाव से प्रत्यछ या अप्रत्यछ रूप से नहीं होगा उस भाव का फल जातक को अत्यंत साधारण रूप में प्राप्त होता है। इसी क्रम में लग्न का संबंध जिस भाव से प्रतिकूल या नकारात्मक होगा उस भाव का फल जातक को प्राप्त नहीं होगा। हाँ छोटे तथा दैनिक फलों की प्राप्ति होती रहेगी।

नीचे दिये गये समीकरण द्वारा जातक के जीवन में धन की स्थिति समझें –

धन संयोग (अ)	**PS/STL**	**SL**	**SSL**	**फल**
1st SSL	2	2, 4, 6, 10 या 11	2, 4, 6, 10 या 11	धनवान योग
1st SSL	11	2, 4, 6, 10 या 11	2, 4, 6, 10 या 11	धनवान योग

लग्न का SSL अपने PS/STL द्वारा 2रे भाव में तथा SL/SSL द्वारा 2रे भाव से सभी धनकारक एवं सहायक भावों में है अतः जातक धनवान होगा।

इसके विपरीत यदि 1ले SSL अपने PS/STL द्वारा निचे दिये गये समीकरण दिखाये तो जातक निर्धन होगा एवं उसके जीवन में धन का सर्वथा अभाव रहेगा –

धन संयोग (ब)	**PS/STL**	**SL**	**SSL**	**फल**
1st SSL (ब–1)	2	1, 5, 8, 9 या 12	1, 5, 8, 9 या 12	धन हानि
1st SSL (ब–2)	1, 5, 8, 9 या 12	1 या 5 या 8 या 9 या 12	1 या 5 या 8 या 9 या 12	निर्धनता

धन संयोग (ब) / (ब–1) में 1ले SSL के PS/STL की उपस्थिति 2रे भाव में तथा SL की उपस्थिति 2रे भाव से सभी विपरीत भावों में होना धन की हानि अथवा निर्धनता को दर्शाता है। यहाँ पाठक गण ध्यान दें कुण्डली में 1ले SSL के PS/STL द्वारा 2रे भाव में जाने से जातक के जीवन में धन तो होगा परंतु SL के 1, 5, 8, 9 या 12 भावों में जाने से अंततः धन का संपूर्ण नाश हो जायेगा।

धन संयोग (ब) / (ब–2) में 1st SSL के PS/STL का पहले ही 2रे भाव से सभी विपरीत भावों (1, 5, 8, 9 तथा 12वों) में उपस्थिति इस बात का सूचक है कि जातक अपने जीवन के आरंभ से ही निर्धन अथवा दरिद्र होगा। यहां SL/SSL की उपस्थिति जिन जिन भावों में होगी उन्हीं भावों से धन की हानि होगी।

विशेषः

- **यदि किसी भाव का SSL अपने PS/STL द्वारा अपने ही भाव से प्रतिकूल अर्थात 4, 7, 8 तथा 12वें चला जाये तो उस भाव का फल स्वयं अशुभ अथवा प्रतिकूल हो जाता है ऐसे में SL/SSL जिस जिस भावों में होगा उसी भाव जनित कारकों से हानि अथवा प्रतिकूल फलों की प्राप्ति होगी।**
- **यदि लग्न का SSL अपने PS/STL द्वारा 2रे (धन) भाव में तथा SL/SSL केवल और केवल 2रे भाव से –**

  1) प्रतिकूल भावों में हो तो धन की हानि,

  2) अनुकूल भावों में हो तो धन लाभ तथा

  3) पुनः अनुकूल तथा प्रतिकूल दोनों भावों में हो तो हानि एवं लाभ दोनों के अवसर मिलेंगे।

लग्न - मान-सम्मान अथवा मान-हानिः

लग्न कुण्डली में 1ला एवं 10वाँ भाव मान तथा सम्मान का भाव माना गया है। जहां 11वाँ भाव इच्छा पूर्ति तथा 1ले एवं 10वे भाव का सहायक भाव है। यह भाव जिस किसी भाव के साथ जुड़ जायेगा उस भाव के मान सम्मान अथवा कारकत्व को बढ़ा देगा। उदाहरण के लिये नीचे दिये गये समीकरण का अवलोकन करें -

मान सम्मान (क)	**PS/STL**	**SL**	**SSL**	**फल**
1st SSL (क)	1	10, 11	1 या 10 या 11	**मान-सम्मान**
मान हानि (ख)	PS/STL	SL	SSL	फल
1st SSL	8	1, 12	8 या 12	**मान हानि**

उदाहरण (क) के समीकरण ध्यान से देखें, प्रथम भाव का SSL अपने PS/STL द्वारा 1 अर्थात लग्न में तथा SL/SSL द्वारा मान सम्मान भाव अर्थात 10, 11वें में गया है अतः जातक ऐसे ग्रह संयोग द्वारा मान-सम्मान पाये तो क्या संदेह। इसके विपरीत उदाहरण (ख) के समीकरण का अवलोकन करें तो समझ पायेंगे कि प्रथम भाव का SSL अपने PS/STL द्वारा 8वें भाव में तथा SL/SSL द्वारा 1, 12वें भाव में चला गया है, जहां 8वाँ भाव अपमान आदि का द्योत्तक है तथा 12वाँ भाव लग्न से 12वाँ तथा 8वें भाव का सहायक भाव है। ऐसे में मान हानि हो तो कोई आश्चर्य नहीं।

लग्न तथा रोज़गार:

जातक का व्यापारिक तथा व्यवसायिक जीवन कैसा होगा ? क्या जातक अपने व्यापारिक या व्यवसायिक जीवन में सफलता प्राप्त करेगा अथवा उसका व्यापारिक एवं व्यवसायिक जीवन असफल रहेगा ? व्यापारिक तथा व्यवसायिक जीवन में सफलता अथवा असफलता हेतु प्रथम भाव, 6ठा तथा 10वें भाव का विचार किया जाता है। प्रथम भाव के SSL द्वारा व्यापार तथा व्यवसाय से संबंधित कुछ समीकरण नीच दिये जा रहे है –

व्यापारिक तथा व्यवसायिक समीकरण	PS/STL	SL	SSL	फल
1st SSL (क)	6 या 10	2, 6, 10, 11	2, 6 या 10 या 11	उत्तम व्यवसाय
1st SSL (ख)	5, 9	5, 9, 12	5 या 9	असफल व्यवसायिक जीवन
1st SSL (ग)	6 या 10	5, 6, 9, 10, 11, 12	5, 6 या 9, 10	बाधायुक्त व्यवसाय
1st SSL (घ)	6 या 10	5, 6, 9, 10, 11, 12	5, 8, 12	असफल व्यवसाय
1st SSL (न)	6, 10	5, 8, 12+2	2, 6, 10, 11	अंततः सफलता

ऊपर दिये गये सभी पाँचों समीकरण व्यापार व्यवसाय के अलग अलग फलों को दर्शाते है।

समीकरण (क) :

1st SSL अपने PS/STL द्वारा 6 या 10 में गये है जो कि व्यवसाय तथा कर्म को दर्शाते हैं एवं SL/SSL द्वारा लाभ, सफलता आदि सभी अच्छे भावों में है अतः ऐसे ग्रह संयोग व्यापार-व्यवसाय हेतु उत्तम फल दायक है।

समीकरण (ख) :

व्यापार-व्यवसाय के लिये जहां 2, 6, 10, 11वें भाव अच्छे हैं वहीं 5, 9 तथा 12वाँ भाव प्रतिकूल एवं असफलता दायक है, क्योंकि 5वाँ भाव 6ठे से 12वाँ तथा 9वाँ भाव 10वे से 12वाँ एवं 12वाँ भाव प्रथम भाव से 12वाँ होता है। अतः यह संयोग असफलता दायक है। ऐसे में जातक का व्यापारिक एवं व्यवसायिक जीवन असफल ही रहेगा। यदि इस पूरे समीकरण में PS/STL तथा SL/SSL में भाव 2 या 6 या 10 आदि में से किसी एक भाव का संयोग हो तो ऐसे में जातक का व्यापार व्यवसाय उथल-पुथल के साथ संभावित है।

समीकरण (ग) :

जातक के जीवन में व्यापार-व्यवसाय के प्राथमिक एवं सहायक भावों के साथ हानि तथा अन्य अनुकूल भावों का संयोग हो तो जातक की व्यापारिक-व्यवसायिक स्थिति अस्थायी होगी एवं जीवन में व्यापारिक एवं व्यवसायिक उतार चढ़ाव लगे रहेंगे।

समीकरण (घ) :

प्रथम भाव के SSL अपने PS/STL द्वारा 6 या 10 अच्छे भावों को दर्शा तो रहा है परंतु SL द्वारा मिले-जुले से फल दे रहा है। ऐसे समीकरण से जातक थोड़ी कठिनाइयों के साथ अपना व्यापार-व्यवसाय करेगा परंतु यदि प्रथम भाव के SSL के SSL द्वारा केवल और केवल 5, 8, 12 जैसे भावों को लिये हुये हो तो ऐसे में जातक अंततः अपने व्यापार-व्यवसाय में हानि, बाधा तथा अन्य कारणों से निसंदेह असफल हो जायेगा।

समीकरण (न) :

इस समीकरण में SL स्तर पर हानि तथा असफलता (5, 8, 12) के साथ धन (2) भाव तथा SSL स्तर पर सफलताओं वाले सभी भावों को दर्शाया गया है। ऐसी स्थिति में जातक अंततः अवश्य सफल होगा। **समीकरण (न) में एक आवश्यक भाव (2) SL स्तर पर सम्मिलित किया गया है। यदि SL स्तर पर असफलता वाले भावों (5, 8, 12) के साथ अन्य कारक भाव (2 या 6 या 10) नहीं होंगे तो यहाँ प्रथम भाव के SSL के SSL द्वारा प्राप्त सभी सफलतओं वाले भाव अपना पूर्ण सामर्थ दिखा पाने में असफल रहेंगे। पाठकगण ऐसे समीकारणों में अपने अनुभव से फलादेश करें।**

लग्न एवं विवाह विचारः

जातक के जीवन में विवाह की प्रतिज्ञा (promises) अथवा आश्वासन है या नहीं ? इसका विचार प्रथम एवं 7वें भाव के **SSL** से करते हैं। यदि प्रथम भाव का **SSL** अपने PS/STL द्वारा 7वें भाव को दर्शाता हो तथा **प्रथम भाव के SSL का** SL/SSL भी 7वें भाव को सहयोग कर रहे हों तो ऐसे में जातक के विवाह की पूर्ण संभावाना है, परंतु यदि प्रथम

भाव के SSL का SL/SSL, 7वें भाव से प्रतिकूल (4, 7, 8वें) भावों में गया हो तो विवाह में बाधा एवं विलम्ब संभावित है इसी क्रम में यदि SSL का SL/SSL केवल और केवल 6ठे भाव को दर्शाये तो जातक आजीवन अविवाहित ही रहेगा। हाँ अन्यंत्र शारीरिक संबंधों की संभावना हो सकती है। **नीचे विवाह से संबंधित कुछ अनुकूल एवं प्रतिकूल संयोग दिये जा रहे है** -

विवाह संयोग	**PS/STL**	**SL**	**SSL**	**फल**
1st SSL (1)	7	5, 11	5 या 7 या 11	वैवाहिक सुख
1st SSL (2)	11	5, 7	5या 7 या 11	वैवाहिक सुख
विवाह बाधा संयोग	**PS/STL**	**SL**	**SSL**	**फल**
1st SSL (3)	7	5, 11 और 6, 12	5 या 7 या 11	अंततः वैवाहिक सुख सामान्य हो
1st SSL (4)	7	4, 5, 6, 11, 12	6, 12	तलाक
1st SSL (5)	4, 6, 10, 12	4 या 6 या 12	4 या 6 या 12	अविवाहित जीवन

समीकरण संयोग (1)

ऊपर पांच प्रकार से वैवाहिक ग्रह संयोग दर्शाये गये हैं। समीकरण संयोग (1) की बात करें तो स्पष्ट रूप से पता चल रहा है कि प्रथम भाव का SSL अपने PS/STL तथा SL/SSL द्वारा विवाह से सभी अनुकूल (7 – 5, 11) भावों में गया हुआ है तथा प्रतिकूल भावों से किसी प्रकार का कोई सम्बंध नहीं है अतः ऐसे संयोग शीघ्र एवं सुखी वैवाहिक जीवन दर्शाते हैं।

समीकरण (2)

इस समीकरण में 11वें भाव के महत्व को दर्शाया गया है। नियमानुसार यदि SSL अपने PS/STL द्वारा किसी भाव में उपस्थित हो एवं SL 11वाँ भाव दर्शाये तो ऐसे में PS/STL द्वारा दर्शाये गये भाव का फल प्राप्त होता है, इसी क्रम में अपसब्य (उल्टा) रूप से PS/STL द्वारा 11वाँ भाव तथा SL द्वारा 7 (विवाह), 5 (प्रेम) भावों में उपस्थिति भी सुखी वैवाहिक जीवन को दर्शाता है।

समीकरण (3)

इस समीकरण में SL द्वारा विवाह अर्थात 7वें भाव के दो विपरीत भाव (6, 12) दिखाये गये है। जहां 6ठा भाव 7वें भाव का 12वाँ है अर्थात यदि 7वें भाव से विवाह की बात करें तो 6ठा भाव तलाक का सूचक है तथा 12वाँ भाव लग्न से 12वाँ है अतः स्वयं संबंध विच्छेद का सूचक है। समझने की बात है यदि SL द्वारा प्राप्त 5, 11 (प्रेम एवं जोड़ने की बात करे) तथा 6, 12 (तलाक और अलगाव) भावों की बात करें तो ऐसे संयोग से जातक का वैवहिक जीवन निश्चय ही वैचारिक मतभेद, आपसी कलह तथा कलेश वाला रहेगा। यहां प्रथम भाव के SSL के SSL की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि SSL 5 या 7 एवं 11 में

हो तो जातक का वैवहिक जीवन अंतः किसी तरह जीवन साथी के साथ व्यतीत हो ही जाता है।

समीकरण (4)

इस समीकरण में PS/STL द्वारा 7 (विवाह) तथा SL द्वारा दर्शाये गये 5, 11 तथा 4, 6, 12 भाव वैवाहिक जीवन में विसंगतियों का द्योत्तक है। पुनः यहां प्रथम भाव के SSL के SSL की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। इस समीकरण में SSL द्वारा 6ठा तथा 12वाँ भाव दर्शाया गया है जो कि विवाह के टूटने अर्थात तलाक का सूचक है।

समीकरण (5)

इस समीकरण में प्रथम भाव के SSL के PS/STL तथा SL/SSL के द्वारा 7वें (विवाह) भाव से सभी प्रतिकूल (बाधक, नाकारत्मक) भावों को दर्शाया गया है। 4था भाव 5वें का 12वाँ है अर्थात प्यार तथा लगाव को नकारने वाला भाव है, 6ठा भाव 7वें का 12वाँ भाव है जो कि वैवाहिक संबंधों के विच्छेद (तलाक) अथवा विवाह को नकारने का भाव है, 10वाँ भाव 7वें से 4था एवं 11वें से 12वाँ होता है। आप समझ गये होंगे कि यदि प्रथम भाव का SSL विवाह के प्रारंभिक एवं सहायक भावों में ना जाये साथ ही साथ 7वे से सभी विपरीत भावों को दर्शाये तो जातक आजीवन अविवाहित ही रहेगा।

सूत्र एवं नियम :

प्रथम भाव से संबंधित कुछ आवश्यक सूत्र नीचे दिये जा रहे हैं जैसे – प्रथम भाव के SSL द्वारा विभिन्न संभावित घटनायें जो प्रतिज्ञा (promise) की गयी हैं उसे कैसे पढ़ें? इन सूत्रों का उपयोग फलादेश हेतु कैसे करें? फलादेश करने से पूर्व किन–किन बातों का ध्यान रखे? इत्यादि !

1. प्रथम भाव के SSL के PS/STL तथा SL/SSL द्वारा प्राप्त 1 से 12 भावों के घट्नाओं को दर्शाने का अर्थ यह कदापि नहीं है कि घटना अवश्य घटित होगी। नीचे एक उदाहरण से समझने का प्रयास करेंगे –

संतान	PS/STL	SL	SSL
1^{st} SSL	5	2, 11	2 या 5 या 11

ऊपर दिये गये समीकरण में संतान संबंधित भावों के संयोगों [प्रारंभिक (5) एवं सहायक भाव (2, 11)] की उपस्थिति दर्शायी गई हैं, जहां 5वाँ भाव (प्रथम संतान), 2रा भाव (परिवार का बढना) तथा 11वाँ भाव (इच्छा पूर्त्ती) को दर्शाता है। अब इन भावों के अन्य कारकों को ध्यान में रखते हुए विवेचन करते हैं। 5वाँ भाव (शेयर, होटल, खेल–कूद, अभिनय इत्यादि का कारक भाव भी है), 2रा भाव (धन) तथा 11 (इच्छा पूर्ति) आदि का भाव है। **पाठ्क गण स्वयं विचार करें कि क्या 5–2, 11 भावों के संयोग से केवल संतान का ही विचार करना कहाँ तक उचित है ? क्या यहां 5वें भाव से लाभ की बात संभावित नहीं ? अस्तु !**

2. प्रथम भाव का SSL जिस भाव के **किसी एक** फल को नकार दे, जातक उस फल से आजीवन वंचित रहेगा।

3. प्रथम भाव के SSL के SSL का फल अंतिम होता है।

4. यदि प्रथम भाव के SSL के PS/STL द्वारा प्राप्त भाव, प्रथम भाव से संबंधित सभी शुभ, अनुकूल तथा सहायक हो साथ ही साथ SL द्वारा समर्थन प्राप्त कर रहे हों तो जातक अपने जीवन में सफल एवं सुखी होता है। इसी क्रम में यदि SSL के PS/

STL द्वारा प्राप्त भाव प्रथम से अशुभ, प्रतिकूल एवं बाधक हो तथा SL भी लग्न से प्रतिकूल भावों में चला गया हो तो ऐसे में जातक का जीवन परेशानियों, अभावों तथा क्लेश में व्यतीत करता है। दूसरे शब्दों में कहें तो समझेंगे कि SL घटना को स्वरूप प्रदान करता है। मान लें PS/STL द्वारा प्राप्त भाव 7वाँ हो तो क्या समझें ? विवाह होगा या तलाक ? व्यापार या साझेदारी या व्यापार में लाभ या हानि? दूसरी संतान संबंधित बातें ? यहाँ दिशा निर्देश SL के भावों से लेते हैं। यदि SL 5, 11वे भावों में हो तो यहाँ घटना विवाह से संबंधित है, 4, 6, 10, 12 या 6, 12 में हो तो तलाक, 2, 3, 4, 6, 10, 11वे/ 2, 10, 11 या 2, 11 आदि भावों में हो तो व्यापारिक लाभ को दर्शायेगा। इसके विपरीत 5, 8, 12/ 6, 8, 12 आदि भावों में हो तो व्यापार, व्यवसाय में हानि को दर्शायेगा। आप मेरे मतानुशार SL को शिल्पकार समझ सकते हैं जो पत्थर को जैसे तराश कर मुर्तियों का रूप दे देता है ठीक उसी प्रकार PS/STL द्वारा प्राप्त भावों को SL अपने भावों से अलग अलग घटनाओं का स्वरूप दे देता है।

5. **लग्न से अनुकूल एवं शुभ भावः**

क) 2, 3, 4, 6, 10 एवं 11 आर्थिक, व्यापारिक, व्यवसायिक समृद्धि हेतु अनुकूल एवं शुभ है।

ख) 1, 4, 9, 11 तथा 7 शिक्षा हेतु अनुकूल एवं कारक है अतः शुभ है।

ग) 1, 5, 9, 11 स्वास्थ हेतु अनुकूल है अतः शुभ है।

घ) 1, 6, 11 सार्थक प्रयास से सफलता कारक है अतः शुभ है।

लग्न से प्रतिकूल एवं अशुभ भाव -

क) 5, 8, 12 हानि एवं असफलता कारक है अतः प्रतिकूल है।

ख) 6, 8, 12 रोग, क्लेश, विवाद, असफलता एवं अस्वस्थता सूचक है अतः प्रतिकूल है।

ग) 3, 8, 12 राज्य भय, जेल, अशिक्षा दर्शाता है अतः प्रतिकूल है।

घ) 5, 12 असफलता, पराजय, विफलता को दर्शाता है अतः प्रतिकूल है।

ङ) 1, 8, 2, 7 + बाधक - मारक। मृत्यु आदि का सूचक है अतः अशुभ एवं प्रतिकूल है।

लग्न के अन्य भावों से संबंध फलः

PS/ STL	SL	प्रथम भाव का अन्य भावों से सामान्य संबंध फल विचार
1	1	स्वास्थ्य लाभ, वैचारिक स्वतंत्रता, आत्म विश्वास तथा पुरुषार्थ एवं कार्य सिद्धि
1	2	सार्थक प्रयास से धन लाभ, परिवारिक सुख
1	3	सहोदर, संचार, छोटी यात्रा, आत्म विश्वास तथा लेन-देन से लाभ
1	4	प्रारंभिक शिक्षा, चल-अचल संपत्ति लाभ, माता एवं गृह सुख, रुखापन

1	5	प्रेम संबंध, संगीत, अभिनय, खेल, बुद्धि, प्रथम संतान, शेयर बाज़ार
1	6	प्रतियोगिता, संघर्षपूर्ण जीवन, रोग, रोज़गार संबंधित बातें
1	7	जीवन साथी, प्रतिद्वंदी, सामाजिक कार्य, ईर्ष्या भावना
1	8	अप्रत्याशित घटना, अरिष्ट, मानसिक उद्वेग, उदासीनता
1	9	उच्च शिक्षा, पिता, पुनर्विवाह, अनैतिक संबंध, लम्बी यात्रा
1	10	मान सम्मान, व्यापार-व्यवसाय, पद, प्रतिष्ठा
1	11	इच्छा पूर्ति, व्यवसायिक गतिविधियाँ, प्रयासों में सफलता
1	12	निवेश, विदेश, व्यय, व्यवसाय परिवर्तन, आयात-निर्यात

प्रथम भाव से संबंधित विभिन्न संयोगः

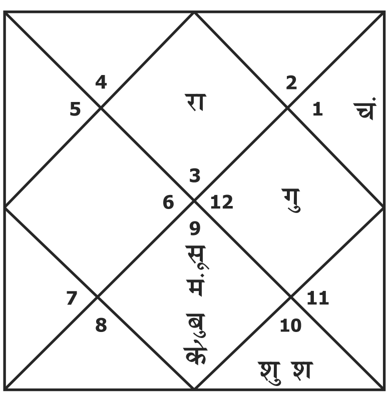
विभिन्न संयोग	**प्रारंभिक भाव**	**सहायक एवं संबंधित भाव**
रोग	1	6, 8, 12
आकस्मिक मृत्यु	1, 8	2, 7, बाधक भाव तथा 12
दुर्घटना	1, 8	4 (वाहन), 12 अस्पताल
सार्थक प्रयासों में सफलता	1, 6	11
मान सम्मान	1	10, 11

उदाहरण एवं अभ्यास संख्या 1

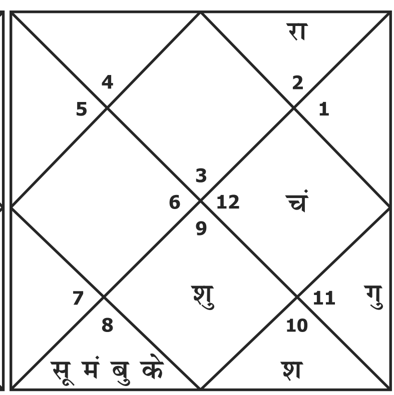
कुण्डली में लग्न की महत्ता इसी बात से लगाया जा सकता है कि लग्न जिस घटना को नकार देता है वह घटना जातक के जीवन में घटित नहीं होती। नीचे एक ऐसे जातक की कुण्डली दी जा रही है जो अविवाहित है। इस कुण्डली में लग्न द्वारा विवाह को सीधे–सीधे नकार दिया गया है परिणाम स्वरूप जातक का विवाह नहीं हुआ हाँलाकि 7वें भाव के SSL द्वारा विवाह की पूर्ण संभावना दर्शायी गयी है।

नाम : उदाहरण संख्या 1। दिनांक – 25.12.1963, समय – 18:59:26, स्थान – मान्सा, पंजाब।

राशि कुण्डली



भाव कुण्डली



ग्रह तालिका

ग्रह	राशि	D-M-S	RL	STL	SL	SSL	PS
सूर्य	धनु	09-41-01	गुरू	केतु	शनि	बुध	PS
चंद्र	मेष	02-11-03	मंगल	केतु	शुक्र	गुरू	PS
मंगल	धनु	22-06-05	गुरू	शुक्र	शनि	शनि	
बुध	धनु	27-19-38	गुरू	सूर्य	सूर्य	शुक्र	
गुरू	मीन	16-53-03	गुरू	बुध	बुध	बुध	PS
शुक्र	मकर	08-51-00	शनि	सूर्य	शुक्र	राहू	
शनि	मकर	26-26-14	शनि	मंगल	गुरू	शनि	PS
राहू	मिथुन	17-52-59	बुध	राहू	सूर्य	बुध	PS
केतु	धनु	17-52-59	गुरू	शुक्र	मंगल	शुक्र	

भाव तालिका

भाव	राशि	D-M-S	RL	STL	SL	SSL	Arc%
I	मिथुन	29-02-40	बुध	गुरू	सूर्य	गुरू	43.82
II	कर्क	21-42-33	चंद्र	बुध	सूर्य	राहू	25.90
III	सिंह	17-41-44	सूर्य	शुक्र	मंगल	शनि	78.40
IV	कन्या	18-42-09	बुध	चंद्र	बुध	चंद्र	87.41
V	तुला	23-32-21	शुक्र	गुरू	शनि	राहू	78.42
VI	वृश्चिक	27-57-42	मंगल	बुध	शनि	शनि	21.74
VII	धनु	29-02-40	गुरू	सूर्य	मंगल	शुक्र	42.90
VIII	मकर	21-42-33	शनि	चंद्र	शुक्र	गुरू	45.61
IX	कुंभ	17-41-44	शनि	राहू	सूर्य	गुरू	26.32
X	मीन	18-42-09	गुरू	बुध	केतु	शुक्र	78.28
XI	मेष	23-32-21	मंगल	शुक्र	शनि	राहू	43.33
XII	वृष	27-57-42	शुक्र	मंगल	शनि	शनि	21.74

इस जातक की कुण्डली में प्रथम भाव के SSL ने विवाह को नकार दिया है फल स्वरूप जातक का विवाह नहीं हो पाया है। नीचे दो महत्वपूर्ण संकेत दिये गये हैं इन्हें सदैव स्मरण रखें –

- प्रथम भाव का SSL अपने PS/STL द्वारा यदि किसी भाव से संबंधित घटना के सभी प्रतिकूल या नकारात्मक भावों में चला जाये एवं PS/STL और SL उस नैसर्गिक (घटना से संबंधित भाव) भाव में ना जाये तो जातक अपने पूरे जीवन में उस घटना से वंचित रहता है चाहे घटना से संबंधित भाव का SSL उस घटना को दे पाने में पूर्णतः समर्थ ही क्यों ना हो।
- किसी ग्रह या भाव के SSL के PS/STL द्वारा प्राप्त भाव से उसके SL/SSL सभी नकारात्मक भावों में चले जायें तो PS/STL द्वारा प्राप्त भावों का फल पूर्ण रूप से प्रतिबंधित हो जाता है।

आइये जाने कैसे करते हैं कुण्डली का विश्लेषण। प्रथम भाव का SSL गुरु अपने (PS) द्वारा 1, 5, 7, 8, 9 एवं 10वें भाव **(भाव तलिका में गुरु प्रथम भाव का STL एवं SSL है, 5वें भाव का STL है, 7वें तथा 10वें भाव का RL है एवं 8, 9वें भाव का SSL है)** में तथा STL (बुध) के द्वारा 1, 2, 4, 6 एवं 10वें भाव **(भाव तालिका में बुध 1, 4, 6ठे भाव का RL है, 2, 6, 10वें भाव का STL है, 4थे भाव का SSL है।)** में गया हुआ है। अतः हम कह सकते हैं कि PS/STL द्वारा 7वें तथा 5वें भाव में उपस्थिति, विवाह की संभावना दर्शाता है परंतु प्रथम भाव के SSL (गुरु) का SL/SSL विवाह से संबंधित किसी भी नैसर्गिक या सहायक भावों में नहीं गया है साथ ही साथ सभी नाकारत्मक [1, 2, 4, 6, 10वें (जहाँ – 2रा भाव 7वें से 8वाँ है, 4था भाव 5वें से 12वाँ है, 6ठा भाव 7वे से 12वाँ है तथा 10वाँ भाव

7वे से 4था है) भावों में है। **गुरु का SL/SSL बुध है तथा बुध भाव तालिका में 1, 4, 6ठे भाव का RL है, 2, 6, 10वें भाव का STL है, 4थे भाव का SSL है।** अतः लग्न ने विवाह के ना होने पर अपनी मुहर लगा दी है। अब आप इस कुण्डली के सप्तम भाव के SSL (शुक्र) की प्रतिज्ञा पढ़ें। SSL (शुक्र) अपने STL (सूर्य) के द्वारा 1, 2, 3, 6, 7 एवं 9वे भाव में जाने से विवाह संभावित है तथा SL/SSL द्वारा भी 5, 7, 11वें भावों (पाठकों से अनुरोध है कि सूर्य की उपस्थिति भाव तालिका में स्वयं देखने की चेष्टा करें) को दर्शा रहा है फिर भी लाख प्रयासों के पश्चात भी विवाह नहीं हो पाया। आप लग्न की क्षमता का अनुमान इसी बात से लगा सकते हैं। इसी क्रम में बताना चहुंगा कि यदि शुक्र प्रथम भाव का एवं गुरु सप्तम भाव का SSL होता तो भी विवाह नहीं हो पाता क्योंकि किसी घटना के घटित होने के लिये प्रथम एवं नैसर्गिक दोनों भावों के SSL द्वारा घटना को दर्शाया जाना आवश्यक है या कम से कम उस घटना को इन दोनों भावों के SSL द्वारा नकारा नहीं जाना चाहिये।

द्वितीय भाव

जीवन के विभिन्न आयामों को 12 भागों में विभाजित किया गया है जिसे हम और आप भाव के नाम से जानते है। जातक के जीवन की सभी घटनाओं को इन्हीं 12 भावों में निहित करना मानो गागर में सागर भरने जैसा है। एक एक भाव के अनेक एवं अनगिनत कारकत्व निर्धारित किये गये है। इसी क्रम में द्वितीय भाव से संबंधित कारकों का महत्व जातक के जीवन में अत्यंत महत्व पूर्ण है। आधुनिक युग में धन अति आवश्यक वस्तु है। इसके बिना जीवन की कल्पना करना कठिन ही नहीं अपितु असंभव सा लगता है। द्वितीय भाव से अनेकों अनेक कारकों का विचार किया जाता है। इनमे से कुछ एक का उल्लेख नीचे किया जा रहा है।

कारकत्व :

धन, अर्थ, वित्त, रत्न, स्वर्ण, रजत, आभूषण, आर्थिक स्थिति, पारिवारिक संबंध, परंपरा, जीवन शक्ति, जीवन-मृत्यु चक्र, ज्ञान, छात्र वृत्ति, संकल्प, मित्रता, भोजन, कपड़े, वाणी, सच, झूठ, जिह्वा, नाखून, दांत, दाहिनी आँख, होंठ, ईत्र, इत्यादि।

आर्थिक स्थिति :

कुण्डली में आर्थिक स्थितियों का अवलोकन लग्न एवं द्वितीय दोनों भावों से करना चाहिये। 1ले SSL एवं 2रे भाव के SSL अपने अपने PS/STL तथा SL/SSL द्वारा 2रे भाव से सभी सहायक एवं लग्न से शुभ भावों में होने पर जातक धनवान होगा। इसके विपरीत यदि 2रे भाव से

सभी प्रतिकूल भावों में हो तो जातक के जीवन में धन का सर्वथा अभाव रहेगा। इसी क्रम में यदि इन भावों के SSL अनुकूल तथा प्रतिकूल दोनों भावों को दर्शायें तो फल मिले-जुले सा जाने। नीचे 2रे भाव के सहायक एवं बाधा कारक भाव दर्शाये जा रहे है।

धन भाव	**अनुकूल भाव**	**तटस्थ भाव**	**प्रतिकूल भाव**
2	2, 4, 6, 10 एवं 12	3, 7, 11	1, 5, 8, 9

ऊपर दिये गये समीकरण में 2, 4, 6, 10 एवं 12वाँ भाव 2रे भाव से अनुकूल भाव है अर्थात धन कारक है। यदि 2रे भाव का SSL अपने PS/STL द्वारा अनुकूल एवं तटस्थ भावों को दर्शाये तथा SL/SSL द्वारा समर्थन दे तो निश्चय ही जातक की आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। इसके विपरीत यदि 2nd SSL अपने PS/STL द्वारा प्रतिकूल भावों अर्थात 1, 5, 8, 9वाँ भाव दर्शाये तो जातक की आर्थिक स्थिति खराब होगी अर्थात जातक धन से रिक्त होगा। ध्यान दें नियमानुसार 2रे भाव का SSL यदि अपने PS/STL द्वारा 1, 5, 8, 9वें अर्थात अपने ही भाव से विपरीत/प्रतिकूल (4, 7, 8 एवं 12वें) भावों में चला जाये तो उस भाव जनित फल स्वत: प्रतिकूल हो जाते है। ऐसे संयोगों में SL/SSL द्वारा प्राप्त भाव से केवल और केवल धन की हानि अथवा व्यय के ही संकेत मिलेंगे। इसकी चर्चा विस्तार से की जाएगी। नीचे दिये गये तालिका में धन संबंधित लाभ-हानि, अनुकूल-प्रतिकूल समीकरण पाठकों के सहायतार्थ दिये जा रहे है।

धन संयोग	**PS/STL**	**SL**	**SSL**	**फल**
2nd SSL (1)	2	2, 3, 4 6, 7, 10 11, 12	2, 3, 4 6, 7, 10 11, 12	उत्तम धनदायक

2^{nd} SSL (2)	2, 3, 4 6, 7, 10 11, 12	2, 3, 4, 6, 7, 10 11, 12	2, 3, 4 6, 7, 10 11, 12	धनाढ्य संयोग

ऊपर दिये गये समीकरण एवं संयोग धन कुबेर सा धनाढ्य योगों को दर्शाता है। संयोग (1) एवं (2) में काफी अंतर है। इसी कारण संयोग (1) को उत्तम धनदायक तथा संयोग (2) को धन कुबेर सा धनाढ्य बताया गया है। क्या कारण है ? इसे समझना आवश्यक है।

संयोग (1) :

2^{nd} SSL (अपनी दशा में) अपने PS/STL द्वारा केवल और केवल 2रे भाव के कारकों द्वारा ही धन की उपलब्धी करायेगा इसके अतिरिक्त अन्य भावों के कारकों द्वारा लाभ नहीं मिल सकेगा। हाँ यहाँ SL/SSL द्वारा प्राप्त भावों के कारकत्वों के आंशिक योगदान से पूर्ण धन लाभ संभावित है।

संयोग (2) :

इस समीकरण में सबसे महत्व पूर्ण संयोग यह है कि 2^{nd} SSL अपने PS/STL द्वारा 2रे भाव के साथ साथ सभी अनुकूल तथा भौतिक सफलता वाले भावों से युक्त होकर अपने SL/SSL द्वारा पूर्ण समर्थन दे रहा है। इस संयोग में धन भाव का अधिपति (2^{nd} SSL) सभी शुभ भावों से युक्त होकर उनके कारकत्वों द्वारा धन प्राप्ति के अति सुंदर योग निर्मित कर रहा है। ऐसे समीकरण से निश्चय ही अतुलनीय धन संपदा की प्राप्ति होगी। अस्तु !

धन संबंधी प्रतिकूल योग :

धन बाधा योग	PS/STL	SL	SSL	फल
2^{nd} SSL (3)	2	1, 5, 8, 9	1 या 5 या 8 या 9	धन हानि
2^{nd} SSL (4)	1, 5, 8, 9	1 या 5 या 8 या 9	1 या 5 या 8 या 9	निर्धन योग

समीकरण (3) :

इस समीकरण में 2^{nd} SSL का अपने PS/STL द्वारा 2रे भाव में जाने से तात्पर्य है कि जातक के जीवन में धन संभावित है परंतु SL/SSL द्वारा 2रे भाव से सभी बाधक एवं नकारात्मक भावों में उपस्थिति धन हानि दर्शा रहा है अतः ऐसे समीकरण के कारण जातक अंतः निर्धन हो जायेगा।

समीकरण (4) :

इस समीकरण को ध्यान से देखें यहां 2^{nd} SSL का अपने PS/STL द्वारा 2रे भाव में ना जाकर केवल और केवल 2रे भाव से सभी हानि, बाधा कारक एवं प्रतिकूल भावों में गया हुआ है अतः ऐसी स्थिति में जातक जीवन के आरंम्भ से ही धन से रिक्त अर्थात निर्धन होगा।

विशेष :

1. कुण्डली के अन्य सभी 11 भावों के SSL अपने PS/STL द्वारा 2रे भाव से युक्त हों तो इसका अर्थ है कि ऐसा ग्रह अपने भाव जनित कारकों द्वारा धन संबंधी फल देगा। पुनः स्मरण दिलाना

चाहुंगा कि फल का शुभ या अशुभ होना SL/SSL पर निर्भर करेगा।

2. ऐसे ग्रह जो किसी भी भाव के SSL नहीं हैं, अपने PS/STL द्वारा जिस किसी भाव में जायेंगे, उसी भाव से संबंधित फल देगें, अच्छा या बुरा इनके SL/SSL पर निर्भर करेगा। यदि ऐसा ग्रह अपने PS/STL द्वारा 1, 5, 8, 9वें भावों में चला जाये तो क्या 2रे भाव का फल प्रतिकूल हो जायेगा ? क्या ऐसा ग्रह अपने PS/STL स्तर पर प्राप्त भावों द्वारा किसी अन्य भाव का फल स्वत: अशुभ या प्रतिकूल कर पाने में समर्थ है ? कदापि नही। किसी भाव का फल PS/STL स्तर पर केवल और केवल तभी प्रतिकूल होगा जब ग्रह स्वयं उस भाव का SSL होगा। ऐसे ग्रह जो किसी भाव के SSL नहीं हैं अपनी दशा में केवल PS/STL द्वारा प्राप्त भाव के फलों को देने वाले होते हैं इनका किसी भाव से सीधे-सीधे कोई संबंध नहीं होने से वे अपने (PS/STL) स्तर पर किसी भाव से संबंधित फलों को अनुकूल या प्रतिकूल कर पाने में असमर्थ होते हैं। इसे एक उदाहरण से समझने का प्रयास करेंगें –

धन भाव	**PS/STL**	**SL**	**SSL**	**फल**
2nd SSL (क)	2, 4, 6, 10, 11	6, 11	2 या 6 या 11	धन लाभ
2nd SSL (ख)	1, 5, 8, 9	6, 11	2 या 6 या 11	धन का व्यय
ग्रह जो किसी भाव	2, 4, 6, 10, 11	6, 11	2 या 6 या 11	धन लाभ

का SSL नहीं है (ग)				
ग्रह जो किसी भाव का SSL नहीं है (घ)	1, 5, 8, 9	2, 6, 11	2 या 6 या 11	PS/STL भाव जनित धन लाभ

समीकरण (क) :

इस समीकरण के धन लाभ कहा गया क्योंकि 2nd SSL अपने PS/STL तथा SL/SSL द्वारा सभी धन कारक भावों में चला गया है इसलिये धन कारक कहा।

समीकरण (ख) :

इस समीकरण में 2^{nd} SSL अपने PS/STL द्वारा पहले ही अपने भाव से प्रतिकूल भावों में चला गया है अतः धन का व्यय कहा गया है। यहां SL/SSL अच्छे भावों (2, 6, 11) में होने के पश्चात भी धन भाव के फल को लाभ में परिवर्तित कर पाने में असमर्थ है। ध्यान से देखें तो पता चलेगा कि SL/SSL स्तर पर सभी भाव एक जैसे हैं फिर भी फल कथन में धन का व्यय ही बताया गया है। पाठकों के सहायतार्थ 2रे भाव के SSL के PS/STL के संबंध 1 से 12 भावों से होने पर SL/SSL द्वारा फल कथन विस्तार से दिया गया है।

समीकरण (ग) :

इस समीकरण में PS/STL स्तर पर सभी धन कारक भावों का समावेश है एवं SL/SSL स्तर पर सभी सहायक भावों की उपस्थिति है अतः इस संयोग से धनागमन अथवा धनलाभ कहा गया है।

समीकरण (घ) :

इस समीकरण में PS/STL स्तर पर सभी (1, 5, 8, 9वाँ) भाव एकांकी या अलग-अलग स्वतंत्र रूप से अपना अपना फल देंगे। यहां प्राप्त भावों (1, 5, 8, 9) का फल शुभ तथा अनुकूल ही होगा। समझने की बात है कि कोई अकेला भाव कभी स्वयं में शुभ या अशुभ नहीं होता। जीवन के सभी आयामों में प्रत्येक भाव का अपना अपना महत्व है। कुंडली के 6ठे, 8वें तथा 12वाँ भाव त्रिक अर्थात अशुभ कहे गये है परंतु यह पूर्ण सत्य नहीं है। इसके मैं दर्जनों उदाहरण प्रस्तुत कर सकता हूं। मै यहां एक उदाहरण अवश्य प्रस्तुत करना चाहुंगा। मान लें प्रथम भाव का SSL अपने PS/STL द्वारा 6ठा भाव (जो रोग, झगड़े आदि का द्योत्तक है) दर्शाता है परंतु अपने SL/SSL द्वारा 2, 6, 10 एवं 11 भावों में गया हुआ है तो ऐसी स्थिति में जातक रोज़गार में सफलता तथा धन, मान यश तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा।

द्वितीय भाव के SSL द्वारा 1 से 12 अलग अलग भावों से संबंध होने तथा अन्य भावों के SSL द्वारा 2रे भाव से संबंध स्थापित होने पर विभिन्न फलों की विवेचना नीचे विस्तार से दी जा रही है।

1. द्वितीय भाव के SSL के PS/STL के संबंध प्रथम भाव से स्थापित होने पर SL द्वारा प्राप्त विभिन्न 12 भावों का सामान्य फल नीचे दिये जा रहे हैं। स्मरण रहे यदि किसी भी भाव का SSL अपने PS/STL द्वारा अपने ही भाव से प्रतिकूल भावों (4, 7, 8 एवं 12वें) में चला जाए तो ऐसे में उस भाव का फल स्वतः प्रतिकूल हो जाता है तथा उसका SL जिस भाव में होगा उसी भाव से प्रतिकूल फलों को दर्शायेगा।

2रे भाव का संबंध प्रथम भाव से :

PS/ STL	**SL**	**फल**
1	1	जातक धन का उपयोग (व्यय) अपने स्वास्थ्य तथा मान-सम्मान हेतु करेगा।
1	2	सार्थक प्रयास से अर्जित धन अपने परिवार पर व्यय करेगा।
1	3	आत्म विश्वास तथा ट्रेडिंग से कमाया धन छोटी-2 यात्राओं एवं अनुज पर व्यय करेग।
1	4	प्रारंभिक शिक्षा, वाहन तथा अचल संपत्ती पर व्यय करेगा।
1	5	जुआ, सट्टा, शेअर बाज़ार, मनोरंजन, फिल्मों में पैसा बर्बाद करेगा।
1	6	रोग, परिवारिक विवादों एवं मुक्कदमेबाज़ी से धन हानि।
1	7	जीवन साथी या व्यापार-व्यवसाय से कमाया धन सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्ति हेतु व्यय।
1	8	धन का व्यय/हानि गंभीर रोग, दुर्घटना अथवा अनैतिक व असमाजिक कार्यों पर हो।
1	9	पिता, दूसरी पत्नी या अनैतिक सम्बन्धों पर धन का व्यय।
1	10	व्यापार-व्यवसाय से कमाया धन मान-सम्मान प्राप्ति हेतु व्यय।

1	11	स्वयं के सार्थक प्रयास से कमाया गया धन अपने और अपने मित्रों पर व्यय।
1	12	धन का व्यय अतिथि सत्कार, विदेश या गुप्त रूप से व्यय।

ऊपर दिये गये सभी व्यक्तव्यों में धन के व्यय तथा हानि की ही बातें कहीं गयी है। कारण मात्र एक है जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है कि यदि किसी भी भाव का SSL अपने PS/STL द्वारा अपने ही भाव से प्रतिकूल भावों (4, 7, 8 एवं 12वें) में चला जाए तो ऐसे में उस भाव का फल स्वतः प्रतिकूल हो जाता है तथा SL की उपस्थिति जिस भाव में होगी उसी भाव से प्रतिकूल फल प्राप्त होंगे।

ऊपर दिये गये तालिका में SL द्वारा केवल एक-एक भाव दर्शाये गये हैं। SL स्तर पर एक से अधिक भावों की उपस्थिति होने पर फलों की गंभीरता बढ़ जायेगी अतः फलादेश करते समय ध्यान रखे कि यदि SL द्वारा 5, 8, 12 / 6, 8, 12 / 7, 8, 12 / 5, 8 / 5, 12 / 8, 12 इत्यादि भावों को दर्शाया जा रहा हो तो फल अत्यधिक अशुभ एवं प्रतिकूल होंगे। इसी क्रम में द्वितीय भाव के SSL के SSL की उपस्थिति भी इन्हीं भावों को दर्शाये तो समझना जातक निश्चित रूप से व्यय अथवा हानि उठायेगा।

2. द्वितीय भाव के SSL के PS/STL के संबंध स्वयं द्वितीय भाव से हो तो यह एक अच्छा संयोग है। ऐसे में SL की उपस्थिति जिस-जिस भावों में होगी वहीं से धन लाभ की संभावना होगी। नीचे SL की उपस्थिति विभिन्न भावों में होने पर फल निम्न प्रकार से समझें।

2रे भाव का संबंध 2रे भाव से :

PS/ STL	**SL**	**फल**
2	1	सार्थक प्रयास से धन अर्जित करने में समर्थ एवं स्वयं पर व्यय।
2	2	अच्छा संयोग है। जातक धन संचय करेगा तथा आर्थिक रूप से समर्थ होगा।
2	3	अनुज, लेन-देन तथा तीसरे भाव के कारक वस्तुओं से धन लाभ।
2	4	चल-अचल संपत्ति लाभ तथा उत्पादन, वाहन एवं 4थे भाव के कारक तत्वों से धनलाभ
2	5	धन का व्यय जुआ, सट्टा, शेयर बाज़ार, मनोरंजन या प्रथम संतान पर हो।
2	6	व्यवसाय, ऋण तथा जमा धन राशि पर मिलने वाले ब्याज से धन लाभ।
2	7	व्यापार एवं साझेदारी अथवा जीवन साथी से लाभ।
2	8	झगड़े, अचानक धन हानि एवं असमाजिक कार्यों पर धन का व्यय।
2	9	धन का व्यय यात्रा, पिता, दूसरी पत्नी या पति, अनैतिक संबंधों या धार्मिक कार्यों पर हो।
2	10	व्यापार-व्यवसाय से धन लाभ।

2	11	व्यवसायिक कार्यों तथा मित्रों से धन लाभ तथा आर्थिक स्थिति सबल हो।
2	12	निवेश से या विदेश से या 2रे भाव के कारक वस्तुओं से धन लाभ।

ऊपर दिये गये तालिका में SL द्वारा केवल एक-एक भाव दर्शाये गये हैं। SL स्तर पर एक से अधिक अनुकूल भावों की उपस्थिति होने पर फलों की शुभता बढ़ जायेगी अतः फलादेश करते समय ध्यान रखें कि यदि SL द्वारा 2, 3, 4, 6, 7, 10 या 11वाँ भाव दर्शाया जा रहा हो तो फल अत्यधिक शुभ एवं धन कारक होंगे। इसी क्रम में SSL की उपस्थिति भी इन्हीं भावों को दर्शाये तो जातक निश्चित रूप से विशेष धन लाभ प्राप्त करेगा। इसके विपरीत SL का 5, 8, 12 / 5, 12 / 8, 12 या 5, 8 भावों में उपस्थिति होना धन के व्यय/हानि को दर्शायेगा। यदि SSL की उपस्थिति भी इन्हीं भावों को दर्शाये तो जातक निश्चित रूप से व्यय या हानि उठायेगा।

द्वितीय भाव के SSL के PS/STL के संबंध 3रे भाव से हो तो यह भी एक अच्छा संयोग है। ऐसे में जातक 3रे भाव के कारक वस्तुओं से धन लाभ प्राप्त करेगा। SL की उपस्थिति जिस-जिस (4थे, 7वें, 8वें एवं 12वें भाव छोड़ कर) भाव में होगी वे सभी भाव अपने कारक वस्तुओं द्वारा धन लाभ दिलाने में सहायक होंगे। SL की उपस्थिति विभिन्न भावों में होने पर फल निम्न प्रकार से समझें।

3. 2रे भाव का संबंध 3रे भाव से :

PS/ STL	SL	फल
3	1	जातक अपने साहस एवं आत्म विश्वास से तीसरे भाव के कारक तत्वों द्वारा जैसे – लेन–देन, लेखन, छपाई, पत्रकारिता, विपणन आदि से धन लाभ प्राप्त करेगा
3	2	अनुज, सूचना एवं संचार, यात्रा, रत्न एवं गहनों के क्रय–विक्रय से धन लाभ।
3	3	साहस एवं सार्थक प्रयास से तीसरे भाव के कारक तत्वों का लाभ।
3	4	शिक्षा संस्थान, वाहन, परिवहन, उत्पादन, ठेकेदारी, निर्माण आदि कार्यों से धन लाभ।
3	5	अभिनय, कविता, कहानियों के लेखन एवं खेल कूद तथा सांस्कृतिक कार्यों से लाभ।
3	6	3रे भाव के कारकों के व्यापार–व्यवसाय तथा अनुबंधन आदि से ऋण लाभ।
3	7	बैंक एवं निजी या वित्तीय या सामाजिक संस्थाओ को सूचना या संचार अथवा कागज़ी छपाई एवं सेवा से संबंधित अन्य अनुबंधों द्वारा धन लाभ।
3	8	3रे एवं 8वें भाव की युति मानसिक तनाव उत्पन्न करती है। अतः लेखन, सूचना एवं छपाई आदि कार्यों में मानसिक तनाव के कारण धन लाभ प्राप्त करने में बाधाकारक।

3	9	पैत्रिक संपत्ति संबंधित कागज़ात एवं स्वयं के द्वारा लेखन, अनुबंधन अथवा लेन-देन, लम्बी यात्रा, मीटिंग एवं उच्च शिक्षण संस्थानों से धन लाभ।
3	10	3रे भाव के कारक तत्वों से व्यापारिक-व्यवसायिक सफलता एवं लाभ।
3	11	विज्ञापन एवं 3रे भाव जनित कारकों द्वारा विशेष धन लाभ।
3	12	लेन-देन, विदेश तथा निवेश से अल्प अथवा अप्रयाप्त धन लाभ।

ऊपर दिये गये समीकरण में 2रे भाव से 3रा भाव, 2रा होता है अतः सहायक अर्थात धन को बढ़ाने वाला भाव है। फिर भी ध्यान से फलों को पढ़ें तो पता चलता है कि वो भाव जो 2रे या 3रे भाव से 4, 7, 8 तथा 12वें हैं वो भी अनुकूल फल दे पाने में समर्थ हैं क्योंकि 3रे भाव से 4था, 7वाँ, 8वाँ एवं 12वाँ भाव क्रमशः 6ठा, 9वाँ, 10वाँ एवं 2रा होता है जो कि लग्न एवं 3रे भाव से लाभ तथा अनुकूल भाव है। हाँ छोटे अनुज के लिये अशुभ अथवा आरिष्ठ कारक हो सकता है। इसी क्रम में SSL की उपस्थिति यदि 2, 4, 6, 10 या 11वें भावों में हो तो विशेष धन लाभ रहेगा इसके विपरीत 5, 8, 12 / 3, 8, 12 भावों में उपस्थिति हानि या विसंगतियां उत्पन्न करतीं हैं।

4. द्वितीय भाव के SSL के PS/STL यदि 4थे भाव से संबंधित तो यह अतुलनीय धन संयोग है तथा किसी बड़े लाभ को दर्शाते है। ऐसे में जातक 4थे भाव के कारक वस्तुओं से धन लाभ प्राप्त करेगा। ऐसे में SL की उपस्थिति जिस-जिस भाव में होगी वे

सभी भाव अपने कारक वस्तुओं द्वारा धन लाभ दिलाने में सहायक होंगे। SL की उपस्थिति विभिन्न भावों में होने पर फल निम्न प्रकार से समझें।

नोट – 2रे भाव का संबंध 4थे भाव से होने पर अतूल्नीय धन कहा जाना उचित है क्योंकि 4था भाव अचल संपत्ति का कारक भाव है तथा 2रे भाव से 3रा होने के कारण धन (2रे भाव) को दर्शाता है।

2रे भाव का संबंध 4थे भाव से :

PS/ STL	**SL**	**फल**
4	1	चल–अचल, भूमि, वाहन, किसी वस्तु के उत्पादन एवं निर्माण आदि से धन, मान, यश तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति।
4	2	4थे भाव के कारकों से विशेष लाभ।
4	3	चल–अचल संपत्ति के क्रय–विक्रय से लाभ, परिवहन, भवन निर्माण आदि से लाभ। सीधे–सीधे कहें तो 4थे भाव के कारक तत्वों के व्यापार–व्यवसाय से विशेष लाभ।
4	4	चल–अचल संपत्ति, वाहन, जमीन–जायदाद एवं उत्पादन आदि कार्यों से बड़े लाभ।
4	5	होटेल, रेस्टॉरेंट, सिनेमा हॉल, मनोरंजन, खेल–कूद, जूआ, शेयर बाज़ार आदि से लाभ।
4	6	चल–अचल संपत्ति, वाहन आदि के किराये या व्यवसाय एवं उत्पादन से लाभ।

4	7	चल-अचल संपत्ति, वाहन, उत्पादन इकाइयों/उद्योग हेतु बैंक से ऋण अथवा निजी इकाइयों, बैंकों को दिये गये वाहन, भवन आदि से किराया लाभ।
4	8	दुर्घटना या चिकित्सा बीमा से प्राप्त धन राशि अथवा 4थे भाव जनित कार्यों में बाधायें।
4	9	चल-अचल संपत्ति पर प्राप्त होने वाली धन राशि।
4	10	4थे भाव के कारक वस्तुओं के व्यापार-व्यवसाय से धन लाभ।
4	11	4थे से 11वाँ भाव 8वाँ होता है अतः विवादास्पद भूमि, वाहन, फ्लैट, उत्पादन इकाइयों से लाभ संभावित। यहां 11वाँ भाव 4थे का संबंधित एवं सहायक भाव है अतः कारक भाव है।
4	12	चल-अचल संपत्ति, वाहन, उत्पादन, भवन निर्माण आदि में निवेश से लाभ।

पाठकगण ऊपर दिये गये सभी भावों के युति के फलों को ध्यान से पढ़ें तो समझ सकेंगे कि एक बार यदि द्वितीय भाव का SSL अपने भाव से शुभ एवं अनुकूल भावों में चला जाये तो SL की अन्य सभी 12 भावों में उपस्थिति (4थे, 7वें, 8वें एवं 12वें भाव छोड़ कर) शुभ तथा अनुकूल फल ही देती है। इसी क्रम में यदि SL और SSL सभी धन (2रे), ट्रेडिंग (3रे), चल-अचल संपत्ति (4था), व्यापार-व्यवसाय तथा लाभ (6, 7-11) भावों में हो तो जातक बड़े-बड़े लाभ अर्जित करता है।

5. द्वितीय भाव के SSL के PS/STL का संबंध पंचम भाव से हो तो यह एक प्रतिकूल संयोग है। 5वाँ भाव 2रे से 4था होता है अतः ऐसे में जातक पंचम भाव के कारक वस्तुओं से धन संबंधी प्रतिकूल फल प्राप्त करेगा ऐसे में SL की उपस्थिति जिस-जिस भाव में होगी वे सभी भाव अपने कारक वस्तुओं द्वारा धन की हानि या अपव्यय करायेंगे। SL की उपस्थिति विभिन्न भावों में होने पर फल निम्न प्रकार से समझें।

2रे भाव का संबंध 5वे भाव से :

PS/STL	SL	फल
5	1	जुआ, शेयर बाज़ार, खेल-क्रीड़ा, स्वयं के मनोरंजन आदि पर धन का व्यय।
5	2	संगीत, अभिनय, गायन आदि सीखने हेतु धन का व्यय।
5	3	इंटेरनेट, मोबाइल, टी.वी, मनोरंजन, खेलकूद या छोटी-2 यात्राओं पर धन का व्यय।
5	4	आर्ट एण्ड क्राफ्ट, छोटे उद्योग आदि के हुनर सीखने हेतु धन का व्यय।
5	5	कला प्रदर्शन, सांस्कृतिक कार्यक्रमों पर धन का व्यय।
5	6	5वें भाव से संबंधित इकाइयों में नौकरी पाने हेतु धन का व्यय।
5	7	जनसाधारण हेतु खेल-क्रीड़ा तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन पर धन व्यय।

5	8	वासना युक्त नश्त्य, फुहड़ एवं अनैतिक शारीरिक संबंधों पर धन व्यय।
5	9	लम्बी यात्रा, पिता, दूसरी पत्नी अथवा अनैतिक संबंधों पर व्यय अथवा धार्मिक कार्यों जैसे - तीर्थ यात्रा आदि पर धन का व्यय।
5	10	5वे भाव से संबंधित कारकों से व्यापार-व्यवसाय पर धन का व्यय।
5	11	मित्रों के मनोरंजन पर धन का व्यय।
5	12	वैश्यावृति, व्यभिचार अथवा विदेश में मनोरंजन आदि पर व्यय।

ऊपर दिये गये SL के सभी भावों से युति के फल धन की हानि अथवा व्यय से की गयी है। यदि SL एवं SSL एक से अधिक शुभ भावों से संयोग करे तो फलों में सुधार एवं 5वें भाव से संबंधित कारकों से आंशिक सफलता की संभावना रहेगी। इसके विपरीत अशुभ एवं प्रतिकूल भावों से युति होने पर धन हानि, अपव्यय की पूर्ण संभावना है।

2nd SSL	PS/STL	SL	SSL	फल
ग्रह	5	1, 5, 8, 9, 12	1, 5, 8, 9, 12	धन नाश

इस समीकरण में SL और SSL द्वारा प्राप्त सभी भाव 2रे तथा लग्न से प्रतिकूल भावों में दिखाये गये है अत: ऐसे संयोग धन की हानि तथा अपव्यय ही दर्शायेंगे। SSL की उपस्थिति यदि 2, 3,

4, 6, 10 एवं 11वे भाव में हो तो धन की हानि या अपव्यय पर थोड़ा अंकुश संभवित है।

2nd SSL	PS/STL	SL	SSL	फल
ग्रह	5	2, 3, 4, 6, 10, 11	2, 3, 4, 6, 10, 11	व्यवस्थित व्यय एवं आंशिक लाभ

ऊपर दिये गये समीकरण में SL/SSL द्वारा प्राप्त भावों के संयोग 2रे भाव तथा लग्न के सहायक भाव है अत: धन हानि ना कह कर व्यवस्थित व्यय कहा गया है। जातक 5वे भाव से लाभ प्राप्त करने की इच्छा रखेगा परंतु पूर्ण लाभ प्राप्त कर पाने में असफल ही रहेगा अथवा आंशिक लाभ से ही संतुष्ट रहना पड़ेगा। शुभ एवं अशुभ भावों की युति होने पर लाभ की संभावना नहीं रहेगी। हाँ! धन का व्यय अपेक्षाकृत कम हो सकता है।

6. द्वितीय भाव के SSL के PS/STL यदि 6ठे भाव से संबंधित तो यह व्यापार-व्यवसाय से धन लाभ के संयोग है। ऐसे में जातक 6ठे भाव के कारक वस्तुओं से धन लाभ प्राप्त करेगा। SL की उपस्थिति जिस-जिस भाव में होगी वे सभी भाव अपने-अपने कारक वस्तुओं द्वारा धन लाभ दिलाने में सहायक होंगे। SL की उपस्थिति विभिन्न भावों में होने पर फल निम्न प्रकार से समझें। [नीचे दिये गये फल कथन में केवल लाभ (6ठे भाव से 4थे, 7वें, 8वें एवं 12वे भाव को छोड़ कर) की बातें कहीं जायेंगी क्योंकि 6ठा भाव 2रे से 5वाँ अर्थात शुभ एवं अनुकूल है]।

2रे भाव का संबंध 6ठे भाव से :

PS/ STL	SL	फल
6	1	ऋण लाभ तथा व्यापार व्यवसाय से मान सम्मान एवं संतुष्टि या सिर, नेत्र एवं मुख रोग संभावित
6	2	रत्न, स्वर्ण, ऋण आदि व्यवसाय से लाभ एवं नेत्र या वाणी दोष संभावित।
6	3	सूचना एवं संचार अथवा पत्रकारिता के माध्यम से धन लाभ।
6	4	परिवहन, शिक्षा, निर्माण कार्यों से धन लाभ।
6	5	खेल-क्रीड़ा, फिल्मी उद्योग, कला एवं सांस्कृतिक संस्था या स्टॉक मार्केट से हानि/व्यय।
6	6	ऋण, ब्याज, चिकित्सा अथवा बीमा संबंधित व्यवसाय से धन लाभ।
6	7	निजी इकाइयों, बैंक आदि में नौकरी से धन लाभ।
6	8	अत्यधिक ऋण भार से मानसिक तनाव।
6	9	आयात-निर्यात या कानून संबंधी व्यवसाय, पिता या अपरिचित से ऋण लाभ।
6	10	नौकरी, व्यापार-व्यवसाय से धन लाभ।
6	11	व्यवसायिक इकाइयों में नौकरी, बड़े सहोदर से ऋण लाभ, कार्यों में सफलता।

6	12	स्वास्थ उपचार अथवा निवेश, विदेश गमन या विदेश में व्यवसाय हेतु ऋण।

7. द्वितीय भाव के SSL के PS/STL यदि 7वें भाव से संबंधित हों तो यह व्यापार-व्यवसाय से धन लाभ के संयोग है। ऐसे में जातक 7वे भाव के कारक वस्तुओं से धन लाभ प्राप्त करेगा। SL की उपस्थिति जिस-जिस भाव में होगी वे सभी भाव अपने-अपने कारक वस्तुओं द्वारा धन लाभ दिलाने में सहायक होंगे। नीचे दिये गये फल कथन में केवल लाभ (4थे, 7वें, 8वें एवं 12वें भाव छोड़ कर) की बातें कहीं जायेंगी क्योंकि 7वं भाव 2रे से 6ठा अर्थात शुभ एवं अनुकूल है। SL की उपस्थिति विभिन्न भावों में होने पर फल निम्न प्रकार से समझें।

2रे भाव का संबंध 7वे भाव से :

PS/ STL	**SL**	**फल**
7	1	जीवन साथी, साझेदारी अथवा स्वयं के सार्थक प्रयास से व्यापार-व्यवसाय से धन लाभ।
7	2	जीवन साथी या व्यापार में साझेदारी से धन लाभ।
7	3	3रे भाव के कारकों जैसे - छोटी यात्रा, संचार, ट्रेडिंग, छपाई आदि से व्यापारिक लाभ।
7	4	4थे भाव के कारकों जैसे - परिवहन, चल-अचल संपत्ति निर्माण, उत्पादन आदि व्यापारिक कार्यों से धन लाभ।

7	5	अभिनय, फिल्म, भोजनालय, खेल, शेयर बाज़ार, कला एवं सांस्कृतिक कार्यों से लाभ।
7	6	बैंक से ऋण लाभ अथवा साझेदार, जीवन साथी या नौकरों से लाभ।
7	7	जीवन साथी, साझेदारी, निजी इकाइयों, बैंक आदि से व्यापारिक लाभ।
7	8	दुर्लभ, पुरानी व कीमती वस्तुओं के व्यापार अथवा जीवन साथी एवं साझेदारी से लाभ।
7	9	आयात-निर्यात, शिक्षा संस्थान, पिता, दूसरी पत्नी या पति से धन लाभ।
7	10	व्यापार-व्यवसाय एवं साझेदारी से लाभ।
7	11	व्यवसायिक एवं बड़े सहोदर अथवा स्त्री धन लाभ।
7	12	विदेश में/से व्यापार-व्यवसाय से लाभ।

8. द्वितीय भाव के SSL के PS/STL का संबंध 8वें भाव से हो तो यह एक प्रतिकूल संयोग है। 8वाँ भाव 2रे भाव से 7वाँ भाव होता है अत: ऐसे में जातक 8वें भाव से संबंधित कारकों तथा SL की उपस्थिति जिस-जिस भाव में होगी वे सभी भाव अपने कारक वस्तुओं द्वारा धन की हानि या अपव्यय करायेंगे। SL की उपस्थिति विभिन्न भावों में होने पर फल निम्न प्रकार से समझें।

2रे भाव का संबंध 8वे भाव से :

PS/ STL	SL	फल
8	1	रोग, चिकित्सा अथवा बीमा आदि पर धन का व्यय अथवा अचानक हानि हो।
8	2	दिये गये धन की वापसी अथवा बीमा राशि से धन लाभ।
8	3	छोटी यात्रा, छोटे सहोदर, पत्रकारिता पर व्यय। धन संबंधी मामलों में तनाव।
8	4	4थे भाव के कारक तत्वों जैसे - मकान, दुकान, वाहन आदि पर व्यय।
8	5	कई प्रकार से धन का व्यय हो जैसे - जुआ, शेयर बाज़ार, मनोरंजन, अनैतिक शारीरिक संबंधों पर अपव्यय, दिये गये उधार का ढूब जाना इत्यादि।
8	6	अप्रत्याशित दुर्घटना, गंभीर रोग अथवा विवाद में धन का अपव्यय।
8	7	गबन आदि से धन ढूब जाये अथवा जीवन साथी एवं साझेदार पर धन का व्यय।
8	8	धन संबंधी विवाद अथवा अप्रत्याशित रूप से धन नष्ट हो।
8	9	लम्बी यात्रा, पिता, अज्ञात कारणों से अथवा दूसरी पत्नी या अनैतिक संबंधों पर व्यय से आर्थिक तंगी एवं मानसिक तनाव।

8	10	अनैतिक अथवा जोखिम से व्यापार में धन हानि या 8वें भाव जनित व्यापार।
8	11	बड़े सहोदर, मित्र तथा व्यवसायिक व्यय।
8	12	असमाजिक एवं अनैतिक कार्यों जैसे दुराचार, व्यभिचार आदि पर धन का अपव्यय।

2रे भाव के SSL के PS/STL के संबंध 8वें भाव से हो तो यह स्पष्ट है कि धन की हानि होगी। परंतु थोड़ी सुधार की आशा करेंगे जब 2रे भाव के SSL के SL केवल 2, 3, 4, 6, 10 एवं 11वे जैसे भावों में जाये। इसी क्रम के यदि SL केवल 5, 8, 12 / 6, 8, 12 / 3, 8, 12 / 5, 8 / 5, 12 / 8, 12 इत्यादि भावों से युक्त हो तो धन हानि आदि फलों को प्रबलता से कहें।

9. द्वितीय भाव के SSL के PS/STL का संबंध 9वें भाव से हो तो यह एक प्रतिकूल संयोग है। 9वाँ भाव 2रे भाव से 8वाँ भाव होता है अतः ऐसे में जातक 9वें भाव से संबंधित कारकों एवं SL की उपस्थिति जिस-जिस भाव में होगी वे सभी भाव अपने कारक वस्तुओं द्वारा धन की हानि या अपव्यय करायेंगे। SL की उपस्थिति विभिन्न भावों में होने पर फल निम्न प्रकार से समझें।

2रे भाव का संबंध 9वें भाव से :

PS/ STL	**SL**	**फल**
9	1	उच्च शिक्षा, पिता, दूसरी पत्नी/पति अथवा अनैतिक संबंधों पर धन का व्यय।

9	2	बाधा एवं विलंब से छात्रवृति से धन लाभ। पिता के स्वास्थ पर व्यय अथवा पिता से धन लाभ की आशा।
9	3	यात्रा, मीटिंग, लिखित समझौते इत्यादि पर व्यय।
9	4	अचल संपत्ति, वाहन, पिता के स्वास्थ्य या उच्च शिक्षा पर धन का व्यय।
9	5	पिता या दूसरी पत्नी के धार्मिक यात्रा व मनोरंजन या किसी अज्ञात व्यक्ति के कारण सौदेबाज़ी, शेयर बाज़ार आदि से धन हानि व आर्थिक तंगी।
9	6	पिता, दूसरी पत्नी के व्यापार-व्यवसाय पर धन का व्यय।
9	7	पिता की इच्छा पूर्ति हेतु अथवा दूसरी शादी पर धन का व्यय।
9	8	8वाँ भाव 9वे से 12वाँ है अतः जातक पिता, दूसरी पत्नी के लिये निवेश या विदेश भ्रमण पर व्यय करेगा एवं आर्थिक समस्याओं में घिरेगा।
9	9	धर्म-कर्म, तीर्थयात्रा, पिता या उच्च शिक्षा पर व्यय से आर्थिक तंगी।
9	10	पिता, पत्नी या 9वे भाव के कारकों से व्यापार पर धन का व्यय।
9	11	उच्च शिक्षा, पिता या दूसरी पत्नी के छोटी यात्रा या मोबाइल इत्यादि पर व्यय।

9	12	आयात-निर्यात, पिता की संपत्ति, वाहन आदि पर धन का व्यय।

PS/ STL	**SL**	**फल**
10	1	सार्थक प्रयास एवं व्यापार-व्यवसाय से धन एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति।
10	2	रत्न, स्वर्णादि अथवा 2रे भाव के कारकों से व्यापार-व्यवसाय में निरंतर लाभ।
10	3	छपाई, पत्रकारिता, सूचना एवं संचार इत्यादि के व्यापार-व्यवसाय से लाभ।
10	4	चल-अचल संपत्ति, उत्त्पादन, निर्माण आदि 4थे भाव के कारकों द्वारा व्यापार व्यवसाय से धन लाभ।
10	5	5वे भाव के कारकों से व्यापार व्यवसाय में बाधा एवं कठिनाई।
10	6	6ठे भाव के व्यापार-व्यवसय से धन लाभ एवं पदोन्नति तथा सफलता।
10	7	व्यापार, साझेदारी, बैंक अथवा 7वे भाव से संबंधित व्यवसाय से धन लाभ।
10	8	8वे भाव के कारकों से धन लाभ, व्यवसायिक बकाया धन राशि की प्राप्ति यदि SSL द्वारा 2, 6, 11 दर्शाया

		जाय तो लाभ तथा सफलता एवं 5, 8, 12 दर्शाये तो हानि।
10	9	व्यवसाय से अवकाश प्राप्ति के बाद अनुदान राशि एवं पेंशन आदि से धन लाभ।
10	10	व्यापार व्यवसाय से धन, मान, यश तथा पद प्राप्ति।
10	11	व्यापार, व्यवसाय से धन लाभ अथवा राज्य धन की प्राप्ति।
10	12	विदेश या व्यवसाय परिवर्तन से धन लाभ।

द्वितीय भाव के SSL के PS/STL यदि 10वें भाव से संबंधित तो यह व्यापार द्वारा धन लाभ के संयोग है। ऐसे में SL की उपस्थिति जिस-जिस भाव में होगी वे सभी भाव अपने कारक वस्तुओं द्वारा व्यापार से धन लाभ दिलाने में सहायक होंगे। SL की उपस्थिति विभिन्न भावों में होने पर फल निम्न प्रकार से समझें। नोट - 2रे भाव का संबंध 10वें भाव से होने पर जातक व्यापार-व्यवसाय से धन लाभ प्राप्त करेगा यदि SL की उपस्थिति सभी आर्थिक तथा लाभ भावों से युक्त हो। बाधा या प्रतिकूल भावों से युक्त होने पर व्यापारिक क्षति की पूर्ण संभावना रहेगी।

11वां भाव इच्छा पूर्ति एवं लाभ भाव है। इस भाव का संबंध जिस भाव से हो उसी भाव से लाभ की संभावित है। द्वितीय भाव के SSL के PS/STL यदि 11वें भाव से संबंधित हो तो यह व्यापारिक मामलों, मित्रों, बड़े सहोदर द्वारा धन के लाभ का संयोग है। ऐसे में SL की उपस्थिति जिन-जिन भाव में होगी वे सभी भाव अपने कारक वस्तुओं द्वारा व्यापारिक गतिविधियों से धन

लाभ दिलाने में सहायक होंगे। SL के विभिन्न भावों में होने पर फल निम्न प्रकार से समझें –

2रे भाव का संबंध 11वें भाव से :

PS/ STL	SL	फल
11	1	स्वयं एवं सार्थक प्रयास से धन लाभ हो।
11	2	व्यापारिक एवं व्यवसायिक गतिविधियों से धन संग्रह।
11	3	3रे भाव के कारकों जैसे – छोटे सहोदर, लेन–देन, सूचना, संचार, छपाई कार्य विज्ञापन एवं अनुबंधन आदि से धन लाभ।
11	4	चल–अचल, उत्पादन, वाहन अथवा निर्माण आदि कार्यों से लाभ।
11	5	5वें भाव के कारकों से धन लाभ जैसे – खेल, मनोरंजन, होटल, शेयर बाज़ार, फिल्म, कला, अभिनय, संस्कृतिक कार्य इत्यादि।
11	6	व्यापार–व्यवसाय से धन लाभ एवं सफलता।
11	7	निजी इकाइयों, व्यापार, जीवन साथी या मित्र की सहायता से धन लाभ।
11	8	शोध कार्य, लाटरी, मित्रों अथवा पैत्रिक संपत्ति आदि से धन लाभ।

11	9	पिता, आयात–निर्यात, लम्बी यात्रा, शिक्षण संस्थान से धन लाभ।
11	10	व्यापार–व्यवसाय से धन लाभ।
11	11	वाणिज्य, कमर्शियल कार्यों से अथवा मित्रों कि सहायता से धन लाभ।
11	12	विदेश, निवेश इत्यादि कार्यों से धन लाभ।

2रे भाव का संबंध यदि 12वें भाव से हो तो स्पष्ट है कि धन का निवेश या व्यय होगा। अब प्रश्न यह उठता है कि किए गये निवेश या व्यय से लाभ प्राप्त होगा अथवा हानि ? इसका निर्णय SL की विभिन्न भावों में उपस्थिति पर निर्भर करेगा। यदि SL की उपस्थिति लग्न एवं 2रे भाव से अनूकूल हो तो धन लाभ इसके विपरीत 2रे भाव से प्रतिकूल एवं 7वे भाव से अनुकूल भावों में हो तो निवेश या व्यय से हानि होगी।

2रे भाव का संबंध 12वे भाव से :

PS/ STL	SL	फल
12	1	जातक स्वयं के सार्थक प्रयासों से निवेश आदि से धन लाभ प्राप्त करेगा।
12	2	यह एक अच्छा संयोग है जातक निवेश एवं विदेश से धन अर्जित करेगा।
12	3	3रे भाव के कारकों से धन लाभ प्राप्त करेगा।

12	4	चल-अचल संपत्ति में निवेश।
12	5	लिए गये कर्ज़ का भुगतान, प्रथम संतान पर व्यय।
12	6	निवेश या व्यय हेतु कर्ज़ लेना।
12	7	निजी व्यापार मे, जीवन साथी के स्वास्थ्य पर या इन्हें ऋण प्रदान करना।
12	8	अचानक धन हानि।
12	9	आयात-निर्यात, पिता तथा लम्बी यात्रा अथवा धार्मिक कार्यों पर व्यय।
12	10	निवेश, आयात-निर्यात आदि व्यापारिक-व्यवसायिक कार्यों से धन लाभ।
12	11	निवेश आदि से धन संग्रह।
12	12	धन का व्यय एवं निवेश। यहां लाभ अथवा हानि हेतु SL एवं SSL की अन्य भावों की उपस्थिति देखे।

विशेष :

ऊपर दिये गये सभी समीकारणों को ध्यान से पढ़ने पर ज्ञात होता है कि 2रे भाव के SSL के PS/STL यदि अपने ही भाव से अर्थात 2रे भाव से 4, 7, 8 एवं 12वें भाव (अर्थात 5, 8, 9 एवं 1ले भाव) में चले जाए तो धन की हानि निश्चित है। इसी क्रम में यदि 2रे भाव के SSL के PS/STL अपने भाव से अच्छे भावों में अर्थात 5वे, 8वे, 9वे एवं 1ले भावों में ना जा कर 2रे, 3रे, 4थे, 6ठे, 7वे, 10वे, एवं 11वे भावों में चले जाये तो धन लाभ तथा धन से संबंधित अच्छे परिणाम प्राप्त होते है। यहां मैं फल कथन में थोड़ा सुधार करना चाहुंगा। मान लें 2रे भाव का SSL

अपने PS/STL द्वारा धन भाव (2रे भाव) से सभी अच्छे भावों अर्थात 2, 3, 4, 6, 7, 10, 11 भावों में हो तथा SL की उपस्थिति लग्न एवं 2रे भाव से पूर्णतः प्रतिकूल भावों में (अर्थात 5, 8, 12 / 6, 8, 12 / 7, 8, 12 / 5, 8 / 5, 12 / 8, 12 इत्यादि) हो तो क्या फिर भी फल लाभ से संबंधित ही कहेंगे ?। क्या यहां जातक को धन की हानि बिल्कुल भी नहीं होगी ? निश्चय ही ऐसे में जातक को हानि होगी तथा ऐसे संयोगों से निश्चय ही धन से संबंधित अच्छे परिणाम भी प्रतिकूल फलों में परिवर्तित हो जाएंगे। इसी क्रम में यदि 2रे भाव के SSL के PS/STL यदि अपने ही भाव से अर्थात 2रे भाव से सभी प्रतिकूल भावों अर्थात 1ले, 5वें, 8वें तथा 9वे भाव में चला जाये तो क्या ऐसे में जातक को केवल और केवल हानि ही होगी ? मान ले यदि SL की उपस्थिति 2, 3, 4, 6, 10 एवं 11वे भावों में हो तो क्या फलों में सुधार की आशा नहीं की जा सकती है ? क्या यहां हानि की संभावना क्षीण नहीं होगी ? संभव है कि ऐसे समीकारणों से फलों में सुधार अवश्य होगा। फिर भी नियमानुसार फल प्रतिकूल ही रहेंगे। अस्तु !

पहली बात – अभी तक आपने पढा 2रे भाव के SSL के अन्य भावों से अनुकूल एवं प्रतिकूल संबंध। दूसरी बात – आवश्यक नहीं है कि धन संबंधी लाभ या हानि का विचार केवल 2रे भाव के SSL द्वारा ही करेंगे। धन संबंधी लाभ–हानि के समीकरण वे ग्रह अथवा अन्य भाव के SSL भी दर्शायेगे जो अपने PS/STL/SL/SSL द्वारा 2रे भाव से संबंध स्थापित करेंगे। 1ले एवं 3रे से 12 भावों के SSL अथवा वे ग्रह जो अपने PS/STL/SL/SSL द्वारा 2रे भाव से संबंध स्थापित करते हैं वे सभी ग्रह अपनी अपनी दशाओं में धन संबंधी फल अवश्य देंते हैं। इसी क्रम में 1ले तथा 3रे से 12वे भावों के SSL के PS/STL/SL के संबंध 2रे भाव से होने पर क्या क्या फल संभावित हो सकते हैं इसका एक संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है –

1. प्रथम भाव का संबंध यदि 2रे भाव से हो तो यह एक अच्छा संयोग है क्योंकि धन के बिना आज़ के युग में जीवन कठिन है। प्रथम भाव के SSL के PS/STL द्वारा 2रे भाव से संबंध होने पर धन लाभ तो रहेगा परंतु SL द्वारा प्रभावित अवश्य होगा। यदि SL की उपस्थिति 2रे भाव से 4, 7, 8 एवं 12वे अर्थात 5, 8, 9 एवं 1ले भावों में हो तो जातक अपने धन का व्यय इन्हीं भाव जनित कारकों द्वारा करेगा। उदाहरण के लिये यदि SL की उपस्थिति 5वे भाव (जो कि 2रे से 4था है) में हो तो जातक धन का व्यय शेयर मार्केट, जुआ, मनोरंजन, खेल या प्रथम संतान आदि पर करेगा। 8वे में हो तो अनुदान देकर, जोखिम उठाकर, दूसरे को कर्ज़ देकर, अनैतिक, असमाजिक अथवा खोज़ कार्यों पर एवं अपने जीवन साथी पर धन का व्यय कर सकता है। 9वे भाव में हो तो यह संयोग भी व्यय को दर्शाता है क्योंकि 9वाँ भाव 2रे से 8वाँ होता है। ऐसे में जातक 9वे भाव के कारक तत्वों पर धन का व्यय करेगा। उदाहरण के लिये पिता पर, दूसरी पत्नी या अनैतिक संबंधों पर, लम्बी यात्राओं पर, धार्मिक कार्यों पर, आयात-निर्यात करके या उच्च शिक्षा आदि पर। प्रथम भाव में होने पर जातक स्वयं पर विभिन्न कारणों से व्यय करेग। इसके अतिरिक्त SL के अन्य किसी भी भाव में होने पर जातक धन लाभ प्राप्त करेगा। जिस-जिस भावों में SL उपस्थिति होगी वे सभी भाव धन लाभ में सहायक होंगे उदाहरण हेतु 2रे में SL की उपस्थिति से जातक को धन से धन, रत्न, आभूषण अथवा पारिवारिक व्यापार से लाभ रहेगा। 3रे भाव में हो तो सूचना एवं संचार से, प्रकाशन से, लेन-देन (ट्रेडिंग) एवं अनुबंधन आदि से लाभ रहेगा। 4थे भाव में हो तो चल-अचल संपत्ति से, वाहन या परिवहन से, माता से, उत्पादन अथवा निर्माण कार्यों से धन लाभ रहेगा। 6ठे भाव में हो

तो नौकरी, सार्थक प्रयास या सेवा इत्यादि कार्यों से धन लाभ प्राप्त करेगा। 7वे भाव में होने पर व्यापार, साझेदारी, निजी इकाइयों से धन लाभ रहेगा। 10वे भाव में होने पर जातक अपने व्यापार-व्यवसाय से धन लाभ प्राप्त करेगा। 11वे भाव में SL के होने पर जातक अपनी इच्छा तथा सार्थक प्रयासों से, मित्रों से, बड़े सहोदर से या कमर्शियल कार्यों से धन लाभ प्राप्त करेगा। 12वे भाव में हो तो जातक को मिले-जुले फल प्राप्त होंगे। यह भाव विदेश, व्यय, निवेश इत्यादि का भाव है। यहां धन का लाभ रहेगा या व्यय ? यदि 1ले भाव के SSL के SSL की उपस्थिति लाभ वाले भावों में हो अर्थात - 2, 3, 4, 6, 7, 10 या 11 या इनमे से एक या दो भावों में भी हो तो लाभ रहेगा। इसके विपरीत 5, 8, 9 या 1ले भाव में हो तो निश्चय ही हानि होगी।

3रे भाव का संबंध यदि 2रे भाव से हो तो धन या अर्थिक दशष्टिकोण से अनुकूल है। (संभव है छोटे सहोदर के लिये उतने अच्छे ना हों। यहां धन संबंधी बाते कहीं जा रही है अतः इसी संदर्भ में बातें करूंगा)। अब पुनः यह प्रश्न उठता है कि 2रा भाव 3रे से तो 12वाँ होता है फिर लाभ कैसा ? जैसा कि आरंभ में बताया जा चुका है कि यदि किसी घटना के घटित होने के लिये कोई आवश्यक सहायक भाव, नैसर्गिक या प्राथमिक भाव से बेशक 4, 7, 8 या 12वाँ हो जाये तो भी, ऐसा भाव सहयक बना रहेगा। 3रे भाव से यदि व्यापार-व्यवसाय हो रहा हो तो उसके फलस्वरूप जातक धन ही तो कमायेगा ! हम सभी जानते है कि धन का नैसर्गिक या प्राथमिक भाव 2रा है। 3रे भाव के SSL की उपस्थिति उसके PS/STL/SL/SSL द्वारा 2रे भाव से हो तो अच्छे एवं बुरे परिणाम नीचे दिये गये वाक्यों द्वारा समझे।

2. 3रे भाव का संबंध 2रे भाव से :

3रे भाव के SSL के PS/STL का संबंध यदि 2रे भाव से हो एवं SL/SSL की उपस्थिति लग्न एवं 2रे भाव से सभी धन कारक या आर्थिक (2, 4, 6, 7, 10 एवं 11वें) भावों में हों तो जातक 3रे भाव के कारक तत्वों से धन लाभ प्राप्त करता है। इसके विपरीत यदि SL/SSL की उपस्थिति लग्न या 2रे भाव से प्रतिकूल भावों में चला जाये तो जातक 3रे भाव जनित कार्यों, व्यापार–व्यवसाय से हानि उठाता है। इसे एक तालिका के माध्यम से समझने का प्रयास करते है।

3रे SSL	PS/STL	SL	SSL	फल
समीकरण (अ)	2	2, 3, 4, 6, 7, 10, 11, 12	2, 3, 4, 6, 7, 10, 11	विशेष धन लाभ
समीकरण (ब)	2	5, 8, 12/5, 8/8, 12/1, 5, 8, 9, 12	5, 8, 12/6, 8, 12 1, 5, 8, 9, 12	विशेष धन हानि
समीकरण (स)	2	2, 3, 4, 6, 10, 11+5, 8, 12/6, 8, 12/1, 5, 8, 9, 12	2, 3, 4, 6, 10, 11+5, 8, 12/6, 8, 12 1, 5, 8, 9, 12	मिले–जुले फल

समीकरण (अ–1)	2	2, 3, 4, 6, 7, 10, 11, 12	5, 8, 12/5 8/8, 12/1, 5, 8, 9, 12	अंततः धन हानि
समीकरण (ब–2)	2	5, 8, 12/5, 8/8, 12/1, 5, 8, 9, 12/ +2	2, 3, 4, 6, 7, 10, 11, 12	अंततः धन लाभ

ऊपर दिये गये समीकरण (अ), (ब), (स), (अ–1) एवं (ब–2) में 3रे SSL के द्वारा सभी में PS/STL स्तर पर 2रा भाव दर्शाया गया है जहां समीकरण (अ) में SL की उपस्थिति सभी धन कारक एवं 2रे तथा लग्न से अच्छे भावों में दिखाये गये है जो धन लाभ के सूचक है। वहीं समीकरण (ब) में SL की उपस्थिति सभी प्रतिकूल भावों में दर्शाये है। इसी क्रम में समीकरण (स) में SL तथा SSL की उपस्थिति सभी अनुकूल एवं प्रतिकूल भावों में दर्शाए गये है। परिणाम आप समझ पा रहे है। अब समीकरण (अ–1) एवं समीकरण (ब–2) की बात करते है। समीकरण (अ–1) में SSL सभी प्रतिकूल एवं हानिप्रद भावों में है अतः इस समीकरण में अंततः हानि कहा गया है जिससे स्पष्ट होता है कि SSL का निर्णय अंतिम होता है। इसी क्रम में समीकरण (ब–2) में SSL की उपस्थिति सभी अनुकूल एवं लाभ भावों में दर्शाये गये है जो की अंततः हानि के पश्चात पुनः लाभ को दर्शाता है। यहां एक बात ध्यान में रखे SL के भावों में

एक या दो अनुकूल भाव (दर्शाया गया है) का होना आवश्यक है अन्यथा लाभ के होने में संदेह है।

3रे SSL

PS/ STL	SL	फल
2	1	सार्थक प्रयास से कमाया गया धन स्वयं पर व्यय करेगा।
2	2	छोटे सहोदर, लेन-देन (ट्रेडिंग), लेखन, प्रकाशन कार्य तथा सूचना एवं संचार माध्यम से धन लाभ प्राप्त करेगा। इसके अतिरिक्त रत्न, जवाहरात एवं 2रे भाव के अन्य कारकों द्वारा भी धन लाभ संभावित है।
2	3	2रे एवं 3रे भाव के कारक तत्वों से धन लाभ रहेगा।
2	4	चल-अचल संपत्ति, वाहन, परिवहन, निर्माण कार्यों से अथवा शिक्षण संस्थान आदि से धन लाभ रहेगा।
2	5	जातक खेल-कूद, कला एवं मनोरंजन अथवा सौंदर्य प्रसाधन आदि से धन अर्जित करने के प्रयासों में असफल रहेगा यदि SSL 2रे भाव से अनुकूल हो तो अल्प धन लाभ संभावित है।
2	6	ट्रेडिंग, व्यापार-व्यवसाय, रत्न एवं गहनों से अथवा व्यापारिक अनुबंधन से धन लाभ रहेगा।
2	7	व्यापार से, बैंक, सूचना एवं संचार आदि सेवाओं से धन लाभ संभावित।

2	8	2रे/3रे एवं 8वे भाव जनित कारकों द्वारा हानि तथा मानसिक कष्ट या तनाव।
2	9	यह संयोग आर्थिक हानि को दर्शाता है। 2रे/3रे एवं 9वें भाव के कारकों से आर्थिक संकट।
2	10	लेखन, प्रकाशन, ट्रेडिंग, सूचना एवं संचार तथा 2रे/3रे भाव के अन्य कारकों से व्यापारिक अथवा व्यवसायिक लाभ रहेगा।
2	11	धन लाभ के अच्छे संयोग है। लेखन अथवा प्रकाशन, लेन-देन एवं अनुबंधन से धन लाभ।
2	12	छोटे सहोदर के द्वारा लेन-देन में हानि। 2रे एवं 3रे भाव जनित वस्तुओं से विदेश या सुदूर स्थान पर किये गये कार्यों से धन लाभ संभावित।

3. 4थे भाव का संबंध 2रे भाव से :

4थे भाव का संबंध 2रे भाव से होने का अर्थ है विशेष धन लाभ। ऐसे संयोग से जातक 4थे भाव के कारकों द्वारा विशेष धन लाभ प्राप्त करेगा। पाठक गण ध्यान से देखे तो SL के एक से बारह भावों में उपस्थिति इस संयोग पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं दे पायेंगे क्योंकि 4थे भाव से 4, 7, 8 एवं 12 क्रमशः 7, 10, 11 एवं 3रा भाव होता है। यहां 4थे भाव से लाभ हेतु (4, 7, 8 एवं 12) सभी भाव संबंधित (त्मसमअंदज) एवं आवश्यक भाव बनेगे। अतः स्पष्ट है कि SL की उपस्थिति 1 से 12 सभी भावों में धन दायक बना रहेगा।

PS/ STL	SL	फल
2	1	4थे भाव के कारक तत्वों जैसे- चल-अचल संपत्ति, वाहन, फैक्टरी, उत्पादन कार्यों पर व्यय हो।
2	2	2रे एवं 4थे भाव के कारक तत्वों के व्यापार-व्यवसाय से विशेष धन लाभ प्राप्त हो।
2	3	ज़मीन-जायदाद, परिवहन, वाहन, आदि कार्यों से दस्तूरी अथवा क्रय-विक्रय से धन लाभ।
2	4	4थे भाव के कारक वस्तुओं से धन लाभ जैसे - अचल संपत्ति, फैक्टरी, वाहन, भवन निर्माण, उत्पादन, खेती-बाड़ी इत्यादि।
2	5	4थे भाव के कारकों से व्यापार-व्यवसाय जैसे - शिक्षण संस्थान, कला एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों, अभिनय, फिल्म, थियेटर, फिल्मादि में उपयोग की वस्तुयें जैसे - कैमेर, सेट्स आदि पर व्यय।
2	6	चल-अचल संपत्ति, वाहन, उत्पादन, फैक्टरी आदि के व्यापार-व्यवसाय से धन लाभ।
2	7	4थे भाव के कारक वस्तुओं के लिये ऋण प्राप्ति अथवा इनके कारक वस्तुओं के व्यवसाय जैसे वाहन, मकान, फैक्टरी आदि के सेवाओं के बदले धन लाभ।

2	8	यह संयोग धन संबंधी मामलों में मानसिक तनाव एवं उद्वेग उत्पन्न करेगा जैसे - बकाया धन प्राप्ति अथवा वाहन आदि के दुर्घटना से प्राप्त होने वाली बीमा राशि विलम्ब से प्राप्त होगी।
2	9	उच्च शिक्षण संस्थानों, धार्मिक स्थलों एवं यात्राओं हेतु 4थे भाव के कारकों जैसे - वाहन, परिवहन, निर्माण कार्य अथवा पिता के स्वास्थ आदि सेवाओं पर व्यय।
2	10	2रे, 4थे तथा 10वे भाव के कारकों द्वारा व्यापार-व्यवसाय से धन, मान, यश आदि की प्राप्ति।
2	11	चल-अचल संपत्ति एवं वाहन आदि कमर्शियल कार्यों से धन लाभ। यहां विवाद के पश्चात 4थे भाव के कारक वस्तुओं का लाभ संभावित।
2	12	4थे भाव के कारक वस्तुओं जैसे - चल-अचल संपत्ति, वाहन इत्यादि पर निवेश।

4. 5वे भाव का संबंध 2रे भाव से :

किसी भी भाव का संबंध 2रे भाव से हो तो स्पष्ट है कि उस भाव से धनार्जन संभव है। 5वाँ भाव प्रथम संतान, खेल (sports), सट्टेबाज़ी (speculation), फिल्म, अभिनय, गायन, सौंदर्य प्रसाधन, मनोरंजन, होटल इत्यादि का कारक भाव है। 5वे भाव का संबंध (PS/STL द्वारा) 2रे भाव से तथा SL की उपस्थिति विभिन्न भावों से होने पर फल निम्न प्रकार समझना चाहिये।

PS/ STL	SL	फल
2	1	सट्टेबाज़ी, शेयर, मनोरंजन, खेल, संस्कृतिक कार्यों पर स्वयं इच्छा से व्यय या हानि।
2	2	5वें भाव के कारक तत्वों से धन लाभ जैसे - सट्टेबाज़ी, शेयर, खेल, गायन, होटल, फिल्म इत्यादि।
2	3	नाटक एवं फिल्मी कहानियों, कविताओं, गायन लिखने से या चित्रकारी से धन लाभ।
2	4	सिनेमा हॉल, कसीनो अथवा कलाकारों को वाहन आदि सेवाओं से, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में आर्ट एण्ड क्राफ्ट अथवा सेट आदि लगाने से धन लाभ।
2	5	5वे भाव के कारक तत्वों अर्थात खेल-कूद, कलाकारी, चित्रकारी, सट्टेबाज़ी आदि पर व्यय।
2	6	5वे भाव के कारक वस्तुओं के व्यापार-व्यवसाय से लाभ।
2	7	सांस्कृतिक कार्यक्रमों, मनोरंजन, संगीत, खेल इत्यादि के आयोजन से धन लाभ।
2	8	भद्दे मनोरंजन पर व्यय।
2	9	प्रेम प्रसंग, अनैतिक संबंधों अथवा पिता एवं दादा पर व्यय।
2	10	खेल, कलाकारी, चित्रकारी, फिल्म अथवा अभिनय आदि के व्यवसाय से धन लाभ।

2	11	शेयर बाज़ार से, सट्टे से, खेल या कलाकारी से अचानक एवं अप्रत्याशित धन लाभ।
2	12	प्रथम संतान के व्यापार-व्यवसाय पर व्यय या निवेश अथवा देह व्यापार से अर्थ लाभ।

5. 6ठे भाव का संबंध 2रे भाव से :

यह एक अच्छा संयोग है। ऐसे संयोग से जातक ऋण संबंधी कार्य, रत्न, आभूषण, औषधि, चिकित्सा संबंधी कार्यों से लाभ प्राप्त करेगा। नीचे दिये गये सारिणी से SL की उपस्थिति विभिन्न भावों में होने पर फल कथन कैसे करे समझाया जा रहा है।

PS/ STL	SL	फल
2	1	स्वास्थ लाभ हेतु स्वयं पर व्यय एवं 6ठे भाव से संबंधित कार्यों से लाभ संभावित।
2	2	ऋण लाभ, चिकित्सा अथवा वित्तीय संबंधित कार्यों से लाभ।
2	3	अनुबंधन, संचार, सूचना, पत्रकारिता इत्यादि से लाभ।
2	4	वाहन, चल-अचल संपत्ति अथवा उत्पादन, निर्माण एवं शिक्षण संस्थानों से लाभ।
2	5	5वे भाव से संबंधित कार्यों जैसे -शेयर, सट्टा, कला, खेल आदि कार्यों से हानि अथवा ऋण हो।
2	6	6ठे भाव से संबंधित कार्यों से लाभ।

2	7	वित्तीय इकाइयों या बैंक आदि से ऋण लाभ अथवा ऋण संबंधित कार्यों से लाभ।
2	8	ऋण की अधिकता अथवा ब्याज भुगतान अथवा ब्याज भुगतान हेतु ऋण।
2	9	पिता, दूसरी पत्नी या पति अथवा 9वे भाव के कारक व्यक्तियो से ऋण प्राप्ति।
2	10	बैंक, वित्तीय विभागों में कार्यरत, ऋण संबंधी व्यापार-व्यवसाय से धन लाभ।
2	11	बड़े सहोदर, मित्रों से ऋण लाभ, प्रतियोगिता अथवा 6ठे भाव से संबंधित कार्यों से लाभ।
2	12	12वे भाव से संबंधित कार्यों जैसे – विदेश से, निवेश से, जेल में भोजन आदि के व्यवस्थाओं से लाभ अथवा ऋण आदि से उक्त कार्यों से लाभ।

6. 7वे भाव का संबंध 2रे भाव सेः

7वे भाव का संबंध 2रे भाव से व्यापार-व्यवसाय आदि के लिये अच्छा है परंतु जीवन साथी के लिये शुभ नहीं है। यहां 7वे भाव से 2रा भाव 8वां होता है फिर भी 2रा भाव अनुकूल है क्योंकि 2रा भाव धन का कारक भाव है अतः व्यापार-व्यवसाय का संबंधित भाव है परंतु जीवन साथी के लिये 8वाँ भाव आरिष्ठ भाव है अतः अशुभ है।

PS/ STL	SL	फल
2	1	स्वयं के सार्थक प्रयास से व्यापार-व्यवसाय करना। जीवन साथी को आरिष्ट।
2	2	व्यापार-व्यवसाय, साझेदारी से लाभ। जीवन साथी को मृत्यु भय।
2	3	लेन-देन (ट्रेडिंग), पत्रकारिता, अनुबंधन, सूचना एवं संचार से अथवा बैंक आदि वित्तीय इकाइयों के साथ 3रे भाव के कारक तत्वों के व्यवसाय से लाभ।
2	4	4थे भाव के कारक तत्वों जैसे- वाहन, परिवहन, उद्योग, उत्पादन, निर्माण कार्य, चल-अचल संपत्ति अथवा शिक्षण संस्थान इत्यादि कार्यों से धन लाभ।
2	5	5वे भाव के कारकों से धन हानि जैसे - शेयर बाज़ार, सट्टा, होटल इत्यादि कार्यों से।
2	6	6ठे एवं 7वे भाव के कारक तत्वों के व्यापार-व्यवसाय एवं ऋण संबंधित कार्य।
2	7	वित्तीय विभाग या बैंक आदि संस्थानों में कार्य अथवा व्यापार हेतु ऋण।
2	8	8वे भाव संबंधी कार्यों से अचानक धन हानि या विवाद।
2	9	पिता, दूसरी पत्नी/पति, अनैतिक संबंधों के कारण आर्थिक तंगी या धर्मिक यात्राओं पर व्यय

2	10	व्यापार - व्यवसाय से धन लाभ।
2	11	बड़े सहोदर, मित्रो की सहायता से कमर्शियल कार्यों तथा व्यापार-व्यवसाय से लाभ।
2	12	व्यापार-व्यसाय में चोरी अथवा साझेदारी से धन हानि।

7. 8वे भाव का संबंध 2रे भाव से :

8वाँ भाव 2रे भाव से 7वाँ होता है अतः यह संबंध विशेष संवेदनशील है। 2रा एवं 8वाँ भाव क्रमशः आपके और आपके प्रतिद्वंदी का धन स्थान है। 8वाँ भाव अचानक धन लाभ या हानि का भाव है, मुफ्त या उपहार में मिला धन है। यदि 8वे भाव का SSL अपने PS/STL द्वारा 2रे भाव में तथा SL द्वारा लग्न एवं 2रे भाव से सभी अनुकूल एवं आर्थिक भाव जैसे - 2, 3, 6, 10 एवं 11वें भाव दर्शाये तो जातक धन लाभ प्राप्त करेगा इसके विपरीत यदि 5, 7, 8, 9, 12वें भावों में जाये तो धन हानि उठानी पड़ेगी।

PS/ STL	**SL**	**फल**
2	1	अचानक धन संबंधित कारणों से धन तथा प्रतिष्ठा की हानि।
2	2	पैत्रिक संपत्ति, स्वर्ण, आभूषण, रत्नादि से अचानक धन लाभ।
2	3	बीमा, एफ.डी, छोटे सहोदर, यात्रा, रत्न अथवा सूचना-संचार आदि से लाभ।

2	4	अचानक चल-अचल संपत्ति या वाहन लाभ।
2	5	5वे भाव अर्थात - शेयर, सट्टा, कसिनो, फिल्म, होटल आदि कार्यों में अचानक धन हानि।
2	6	अचानक ऋण या नौकरी में भत्ता लाभ अथवा कलह-क्लेश, झगड़े या रोग संभावित।
2	7	व्यापार-व्यवसाय में अचानक धन लाभ, दुर्घटना अथवा मृत्यु भय।
2	8	धन हानि, बीमा से प्राप्त होने वाली धन राशि अथवा धन का फंस जाना, झगड़े, नेत्र रोग
2	9	आर्थिक तंगी, अनैतिक कार्यों जैसे अवैध संबंध अथवा पैत्रिक संपत्ति की हानि।
2	10	8वे भाव के कारक तत्वों से अथवा व्यापार-व्यवसाय से अचानक धन लाभ।
2	11	बड़े सहोदर, मित्र अथवा लॉटरी आदि से विशेष धन लाभ।
2	12	8वे एवं 2रे भाव के कारक तत्वों पर निवेश या व्यय से हानि।

8. 9वे भाव का संबंध 2रे भाव से :

9वे भाव का संबंध 2रे भाव से हो तो यह एक अच्छा संबंध है क्योंकि 9वे से 2रा भाव 6ठा होता है। 9वे भाव के कारक तत्वों अर्थात पिता, धार्मिक कार्यों, धार्मिक लम्बी यात्राओं, उच्च शिक्षा,

आयात–निर्यात अथवा अज्ञात विशिष्ट लोगों के सहयोग से धन लाभ प्राप्त होने की संभावना रहेगी।

PS/ STL	SL	फल
2	1	9वे भाव के कारक अर्थात – पिता, दूसरी पत्नी/पति, अनैतिक संबंधों, उच्च शिक्षा, धार्मिक यात्रा अथवा कार्यों पर स्व इच्छा से धन का व्यय।
2	2	9वे भाव के कारकों द्वारा धन लाभ।
2	3	9वे एवं 2रे भाव के कारक तत्वों से धन लाभ जैसे – धर्मिक कार्यों, पिता, रत्नादि के क्रय विक्रय, उच्च शिक्षा के हेतु पुस्तक अथवा फार्मादि की छपाई आदि से धन लाभ।
2	4	पिता, दूसरी पत्नी या पति को स्वास्थ हानि अथवा चल अचल संपत्ति या वाहन लाभ।
2	5	पिता पर धर्मिक खर्च अथवा अभिनय, कला, खेल आदि व्यवसायिक शिक्षण हेतु धन का व्यय।
2	6	9वे भाव के कारक तत्वों जैसे– उच्च शिक्षण संस्थान, आयात–निर्यात आदि के व्यापार व्यवसाय से धन लाभ।
2	7	उच्च शिक्षा हेतु छात्र वशत्ति, 9वे भाव के तत्वों से व्यापरिक व्यवसायिक धन लाभ।
2	8	अचानक धन हानि, पिता एवं दूसरी पत्नी/पति के स्वास्थ पर व्यय।

2	9	9वे भाव के कारकों द्वारा धन की हानि अथवा आर्थिक संकट।
2	10	9वे भाव के कारक तत्वों द्वारा व्यापार–व्यवसाय आदि से धन, मान, यश, पद एवं प्रतिष्ठा प्राप्त हो।
2	11	9वे भाव के कारक तत्वों द्वारा इच्छा पूर्ति एवं धन लाभ।
2	12	विदेश में उच्च शिक्षा हेतु व्यय, आयात–निर्यात अथवा विदेश से लाभ।

9. 10वे भाव का संबंध 2रे भाव से:

दोनों भाव आर्थिक भाव हैं। एक दूसरे के पूरक हैं अतः धन तथा व्यापार व्यवसाय के कारक भाव हैं। 10वे भाव का SSL अपने PS/STL के द्वारा 2रे भाव में तथा SL द्वारा विभिन्न भावों से होने पर फल निम्न प्रकार से समझे।

PS/ STL	**SL**	**फल**
2	1	धन, मान, यश तथा प्रतिष्ठा प्राप्त हो। अर्जित धन का उपयोग जातक स्वयं पर करेगा।
2	2	व्यापार–व्यवसाय से धन लाभ।
2	3	3रे भाव के व्यापार–व्यवसाय से जैसे – पत्रकारिता, सूचना एवं संचार, छपाई कार्य, लेन–देन (ट्रेडिंग) इत्यादि से धन लाभ।

2	4	उत्पादन, अचल संपत्ति, उद्योग, कल-पुर्ज़े अथवा वाहन आदि ईंजिनिरिंग कार्यों से लाभ।
2	5	2रे एवं 5वे भाव के कारक तत्वों के व्यापार-व्यवसाय से धन हानि अथवा बाधा।
2	6	व्यापारिक एवं व्यवसायिक सफलता, उन्नति एवं लाभ।
2	7	निज़ी व्यापार से लाभ।
2	8	यह संयोग थोड़ा भ्रमित करनेवाला है। यहां दो बातें संभावित है। अ) व्यापार-व्यवसाय में रुका पैसा, भत्ता आदि की प्राप्ति या। ब) 2रे भाव के कारकों द्वारा धन की हानि अथवा घूस आदि से व्यापारिक लाभ।
2	9	व्यापार-व्यवसाय में कठिनाई एवं धन हानि अथवा आर्थिक संकट।
2	10	2रे भाव के कारक तत्वों से व्यापार-व्यवसाय में धन लाभ एवं मान सम्मान।
2	11	धन, मान, यश तथा प्रतिष्ठा प्राप्त हो।
2	12	विदेश या दूसरे व्यापार-व्यवसाय में निवेश। पुनः स्मरण रहे - यदि भाव 12 के साथ अन्य अच्छे भाव जैसे 2, 3, 4, 6, 10 या 11 भाव SL या SSL द्वारा दर्शाये जाए तो निश्चय ही धन लाभ होगा इसके विपरीत यदि 5, 8, 12 / 6, 8, 12 / 5, 8 या 8, 12 जैसे भाव हों तो धन हानि। मिले-जुले भाव हो तो फल उसी अनुसार कहें।

10. 11वे भाव का संबंध 2रे भाव से :

11वे भाव का संबंध 2रे भाव से होने पर धन संबंधी इच्छाऐं पूर्ण होंगी। कमर्शियल कार्यों से धन लाभ के मार्ग प्रसस्त होंगे। 11वे भाव का SSL अपने PS/STL के द्वारा 2रे भाव में तथा SL द्वारा विभिन्न भावों से होने पर फल निम्न प्रकार से समझे।

PS/STL	SL	फल
2	1	स्वयं के इच्छा से अपने ऊपर धन का व्यय।
2	2	धन संग्रह।
2	3	कमर्शियल, कीमती वस्तुओं अथवा 3रे भाव के कारक तत्वों के क्रय-विक्रय (ट्रेडिंग) या आदान प्रदान से धन लाभ।
2	4	कमर्शियल कार्यों अथवा स्वयं की इच्छा पूर्ति हेतु वाहन, चल-अचल संपत्ति आदि का क्रय।
2	5	मनोरंजन, खेल, कला अथवा कसीनो आदि में धन का व्यय।
2	6	व्यवसायिक कार्यों हेतु ऋण प्राप्ति अथवा कमर्शियल कार्यों से धन लाभ।
2	7	दूसरों की सम्पत्ति का लाभ या पति/पत्नी अथवा साझेदारी से व्यापारिक-व्यवसायिक लाभ।
2	8	मित्रों या बड़े सहोदर को उधार देने से अथवा दान द्वारा धन का व्यय।

2	9	2रे, 9वे तथा 11वे भाव के कारक तत्वों द्वारा धन हानि या धन संबंधी चिंता।
2	10	कमर्शियल अथवा रत्न, आभूषण आदि के व्यापार- व्यवसाय से धन लाभ।
2	11	धन लाभ।
2	12	विदेश या व्यापार-व्यवसाय में धन का अथवा 2रे भाव के कारक तत्वों का निवेश। पुनः स्मरण रहे - यदि भाव 12 के साथ अन्य अच्छे भाव जैसे 2, 3, 4, 6, 10 या 11 भाव SL या SSL द्वारा दर्शाए जाय तो निश्चय ही धन लाभ होगा इसके विपरीत यदि 5, 8, 12 / 6, 8, 12 / 5, 8 या 8, 12 जैसे भाव हों तो धन हानि। मिले-जुले भाव हो तो फल उसी अनुसार कहें।

11. 12वे भाव का संबंध 2रे भाव से :

12वाँ भाव 2रे से 11वाँ परंतु लग्न से 12वाँ होता है अतः धन संबंधी मामलों में तटस्थ होता है। यदि SL एवं SSL के पास 2रे एवं लग्न से अनुकूल भाव हों तो लाभ अन्यथा निश्चित रूप से हानि होगी।

PS/ STL	SL	फल
2	1	विदेश या निवेश आदि से प्राप्त धन का उपयोग स्वयं के लिये करेंगे।

2	2	विदेश, निवेश अथवा दिये गये ऋण से धन लाभ।
2	3	विदेश आदि में/से मूल्यवान वस्तुओं के विक्रय अथवा सूचना एवं संचार आदि के द्वारा धन लाभ।
2	4	देश – विदेश में चल-अचल संपत्ति अथवा वाहनादि के क्रय पर व्यय।
2	5	2रे एवं 5वे भाव के कारक वस्तुओं अथवा अन्य कारणों जैसे ऋण किस्त से धन हानि।
2	6	विदेश में निवेश हेतु ऋण अथवा कठिनाइयों से धन लाभ।
2	7	विदेश में निवेश या व्यापारिक धन के ज़ब्त या छिन जाने से धन हानि।
2	8	धन का क्षय होना या दिये गये धन की वापसी में कठिनाई या धन का अटक जाना।
2	9	ऋण अथवा विदेश में निवेश से धन हानि अथवा आर्थिक संकट।
2	10	दूसरे व्यापार या विदेश में व्यापार-व्यवसाय से धन लाभ।
2	11	दिये गये ऋण के ब्याज या निवेश से धन लाभ।
2	12	विदेश या निवेश से अर्जित धन को पुनः निवेश करना।

सारांश :

जातक के जीवन में 2रे भाव का विशेष महत्व है। ऊपर दिये गये सभी भावों से 2रे भाव का संबंध तथा अन्य भावों का 2रे भाव से संबंध आदि

का फल आपने अभी तक पढा। जातक के जीवन में धन की स्थिति अच्छी या बुरी, कैसी होगी इसका अनुमान मात्र दो बातों से लगायें –

1) 2रे या अन्य भाव के SSL अपने-अपने PS/STL के द्वारा धन (2रे) भाव तथा धन भाव से अनुकूल भाव दर्शायें एवं SL द्वारा 2रे भाव को समर्थन दे रहे हों तो जातक धनवान होगा। जितने भावों के SSL द्वारा ऐसे संयोग दर्शाये जायेंगे जातक उतना ही धनवान होगा।

2) इसके विपरीत यदि 2रे या अन्य भाव के SSL अपने-अपने PS/STL के द्वारा धन (2रे) भाव से प्रतिकूल भावों में तथा उनके SL भी सभी धन कारक भावों से प्रतिकूल भावों में चले जाये तो जातक धन से रिक्त होगा अर्थात गरीब होगा।

विशेष :

धन भाव (2रे) या अन्य भावों के SSL यदि PS/STL द्वारा 2रा भाव दर्शाये एवं SL 5, 8, 12 / 6, 8, 12 / 7, 8, 12 / 5, 8 / 8, 12 जैसे भावों में जाये तो धन की हानि से अथवा ऐसे संयोग से जातक को आर्थिक तंगी देने वाले होंगे या जातक धनहीन होगा। जितने ग्रह ऐसे संयोग दर्शायेगे जातक उतना ही निर्धन होगा।

इसके विपरीत धन भाव (2रे) या अन्य भावों के SSL यदि अपने-अपने PS/STL द्वारा 2रा भाव दर्शाये एवं SL द्वारा सभी कारक भावों (जैसे - 2, 3, 4, 6, 10 एवं 11वें) में जाये तो जातक धनवान होगा। जितने ग्रह ऐसे संयोग दर्शायेगे जातक उतना ही धनवान होगा।

धन का लाभ कैसे एवं किस प्रकार से होगा इसका अनुमान ऊपर दिये गये समीकरण से ज्ञात करने का प्रयास करें।

धन संयोग :

प्रारंभिक/ नैसर्गिक भाव	सहायक/ संबंधित भाव	फल
2	6, 11	धन लाभ
2	5, 8, 12	धन हानि
5	2, 6, 11	शेयर, सट्टा, कला, खेलादि से लाभ
5	8, 12	शेयर, सट्टा, कला, खेलादि से धन हानि
2, 12	2, 6, 10, 11	विदेश, निवेश व दूसरे व्यवसाय से लाभ
2, 12	7, 8, 12	निवेश व संपत्ति का ज़ब्त होना
2	6, 8, 12 / 8, 12	आँख, नाक, गले में रोग व धन हानि
8	2, 11	दुर्घटना बीमा
6, 8	2, 11	चिकित्सा बीमा
2, 3	6, 11	बैंक खाता खोलना

विशेष :

जो ग्रह चाहे वो किसी भाव का SSL हो या ना हो अपने नक्षत्र स्वामी द्वारा धन स्थान में होने से धन संबंधी फल दे सकता है। यदि 5वे भाव का SSL अपने नक्षत्र स्वामी द्वारा 2रे भाव में जाय तथा SL द्वारा 11वे में जाये इसका अर्थ हुआ कि जातक 5वे भाव के कारकत्व से अर्थात खेल कूद, भोजनालय, अभिनय या शेयर बाज़ार अथवा सट्टा से धन

लाभ लेगा इसी क्रम में यदि SL 8, 12वे भाव में हो तो 5वे भाव के इन्हीं कारकत्व से अर्थात खेल कूद, भोजनालय, अभिनय या शेयर बाज़ार अथवा सट्टा से धन की हानि उठायेग। कहने से तात्पर्य यह है कि जो भी ग्रह धन भाव से जुड़ेगा वह माध्यम बनेगा धन संबंधी फलों की प्राप्ति का। पाठकों से आग्रह करूंगा कि धन स्थान का संबंध जिस जिस भाव से हो तथा अन्य भावों का संबंध धन भाव से होने पर इस सभी भावों के कारकत्वों को ध्यान में रख कर ठीक उसी प्रकार करे जैसे बताया गया है।

तृतीय भाव

कारकत्व :

तृतीय भाव के मुख्य कारक तत्व हैं - छोटे सहोदर, छोटी यात्रा, स्थान परिवर्तन, साहस, विश्वास, याददाश्त, रूझान, शिक्षा-विषय का चुनाव, सूचना एवं संचार, विज्ञापन, अफवाह, पत्रकारिता, अनुबंधन, छपाई कार्य, लेन-देन (ट्रेडिंग), मोल-भाव, लेखन कार्य, दस्तावेज़, अकाउंट्स, मध्यस्थता, आवेदन इत्यादि।

तृतीय भाव का संबंध जिस भाव से हो उस भाव के कारक तत्वों के साथ मिलकर अथवा एक से 12 भावों का संबंध 3रे भाव से होने पर दोनों भावों के कारक तत्व आपस में मिलकर भिन्न-भिन्न घटनाओं को घटित करते हैं। उदाहरण के लिये मान लें 3रा भाव यदि 2, 6, 10 एवं 11वे भावों से संबंध स्थापित करे तो जातक 3रे भाव के कारक (ऊपर दिये गये कारकों द्वारा) तत्वों के व्यापार-व्यवसाय से धनार्जन करेगा। इसी क्रम में 3रा भाव यदि 6, 8, 12 भावों से संबंध बनाये तो जातक को 3रे भाव के कारकों से असफलता, हानि, झगड़े, कोर्ट-कचहरी, राज्य भय, जेल, कैद आदि का भय रहेगा। एक अन्य उदाहरण लें यदि 3रे भाव का संबंध 9, 12वे भाव से हो तो विदेश यात्रा, आयात-निर्यात आदि के योग संभावित है।

3रे भाव से अनुकूल/प्रतिकूल एवं तट्स्थ भाव :

अनुकूल भाव	1, 3, 5, 7 एवं 11वाँ भाव
प्रतिकूल भाव	2, 6, 9 एवं 10वाँ
तटस्थ भाव	4, 8 एवं 12वाँ

ऊपर दिये गये समीकरण को समझने में कोई दुविधा ना हो इसके लिये नियमों को पुनः दोहराने की आवश्यकता है। पिछले अध्याय में बताया जा चुका है कि किसी भी भाव से 1, 3, 5, 9 एवं 11वाँ भाव अनुकूल होते हैं, 4, 7, 8 एवं 12वाँ भाव प्रतिकूल तथा 2, 6, 10वाँ भाव तटस्थ होते हैं।

ऊपर दिये गये तालिका को ध्यान से देखे तो 1ला भाव 3रे से 11वाँ, 3रा भाव 3रे से 1ला, 5वाँ भाव 3रे से 3रा, 7वाँ भाव 3रे से 5वाँ एवं 11वाँ भाव 3रे से 9वाँ है अतः अनुकूल है।

3रे भाव से 2, 6, 9 एवं 10वाँ भाव प्रतिकूल इस लिये है क्योंकि 3रे भाव से 2रा भाव 12वाँ, 6ठा भाव 4था, 9वाँ भाव 7वाँ तथा 10वाँ भाव 8वाँ होता है।

इसी क्रम में 4, 8 एवं 12वाँ भाव 3रे भाव से तटस्थ है क्योंकि 4था भाव 3रे से 2रा, 8वाँ भाव 3रे से 6ठा एवं 12 भाव 3रे से 10वाँ होता है। ज्ञात रहे किसी ग्रह के PS/STL भाव से SL/SSL द्वारा प्राप्त भाव 4, 7, 8 या 12वें मात्र हो जाने से ही उस भाव जनित फल प्रतिकूल नहीं हो जायेगे। यदि SL/SSL द्वारा प्राप्त भाव, घटना के लिये आवश्यक भाव या संबंधित भाव हो तो ऐसे में SL/SSL द्वारा प्राप्त भाव घटना के लिये सहायक ही होगा ना कि प्रतिकूल।

उदाहरण के लिये 2रा भाव 3रे से 12वाँ होता है जो कि नियमानुसार 3रे भाव का प्रतिकूल भाव है। परंतु यदि जातक 3रे भाव जनित व्यापार या व्यवसाय करे तो ? ऐसे में जातक फलस्वरूप धन ही तो कमायेगा !!! पुनः 3रे भाव से 6ठा, 9वाँ एवं 10वे भाव क्रमशः 4, 7 एवं 8वाँ है। तो क्या किसी ग्रह के PS/STL द्वारा 3रा भाव एवं SL/SSL द्वारा 6, 9 एवं 10वाँ भाव दर्शाये तो क्या ऐसे भाव, 3रे भाव का फल बाधित करेंगे ? क्या फल प्रतिकूल प्राप्त होंगे ? कदापि नहीं। यदि जातक 3रे भाव जनित कार्य करे तो SL/SSL द्वारा प्राप्त भाव 6 (व्यवसाय में सहायक), 9 (आयात-निर्यात, मीटिंग, अनुबंधन, परिवहन संबंधी कार्य आदि) तथा 10वाँ (3रे भाव जनित व्यापार व्यवसाय से धन, मान एवं सफलता) भाव 3रे भाव का संबंधित एवं सहायक भाव बन कर अच्छे परिणाम देंगें। हाँ! छोटे सहोदर को वाहन आदि से चोट, दुर्घटना अथवा रोग आदि से कष्ट संभावित है क्योंकि 6ठा भाव 3रे से 4था (वाहन कारक), 9वाँ भाव, 7वाँ (मारक) तथा 10वाँ भाव 3रे से 8वाँ तथा 2रा भाव 3रे से 12वाँ होने के कारण (3रे को - 4, 7, 8, 12) वाहन दुर्घटना का कारक है।

विशेष :

ऐसा अनुभव में आया है कि ग्रह के PS/STL द्वारा प्राप्त किसी भाव से SL/SSL ऐसे भावों में चले जायें जो आर्थिक लाभ, सफलता तथा समृद्धि देते हो परंतु यह संभव है कि वह उस भाव जनित जातक के बन्धु-बांधवों, रिश्तेदारों, माता-पिता, भाई-बहन, पत्नी या पति अथवा संतान आदि के लिये अशुभ अथवा कष्टकारी हो। उदाहरण के लिये मान लें कोई ग्रह अपने नक्षत्र द्वारा 3रे भाव में गया हो तथा अपने उप एवं उप नक्षत्र द्वारा 2रा भाव दर्शाये जायें जो की 3रे से 12वाँ है परंतु 2रा भाव धन कारक भाव है जो कि जातक के लिये धन संबंधी मामलों के लिये अच्छा है यहां 2रा भाव जातक के छोटे सहोदर के लिये 12वाँ होने से

हानि, व्यय प्रधान है ना कि स्वयं जातक के लिये। इसी क्रम में यदि 10वाँ भाव दर्शाया जाये तो यह भाव 3रे से 8वाँ होने से जातक के अनुज के लिये तो आरिष्ठ कारक है परंतु जातक के लिये व्यापार व्यवसाय का द्योतक है।

3रे भाव से संबंधित घटनाऐं :

3रे भाव से संबंधित कुछ घटनाओं एवं संयोगों की चर्चा करना आवश्यक है ताकि 3रे भाव जनित विभिन्न प्रश्नो एवं समीकारणों को समझा जा सके। नीचे 3रे भाव से संबंधित कुछ घटनाओं के संयोग दिये जा रहे है ताकि आप सरलता से घटनाओं के घटित होने में PS/STL तथा SL/SSL द्वारा प्राप्त भावों के संयोगों को समझ सकें।

- आयु एवं 3रा भाव।
- छोटे सहोदर का स्वास्थ्य, रोग एवं व्यापार-व्यवसाय।
- मानसिक स्थिति एवं यादास्त।
- 3रे भाव से संबंधित व्यापार-व्यवसाय से लाभ या हानि ?
- यात्रा, स्थान परिवर्तन अथवा तबादला - अनुकूल/प्रतिकूल ?
- मिटिंग, मोल-भाव, लिखित परीक्षा या प्रतियोगिता में सफलता या असफलता ?
- शिक्षा हेतु विषय चयन।

आयु के तीन कारक भाव माने गये है जिनमे 3रा भाव एक है। आयु की गनणा एक कठिन कार्य है। फिर भी नीचे दिये गये समीकरण आयु निर्णय में सहायक हैं।

3rd SSL	PS/STL	SL	SSL	फल
ग्रह	1, 3, 5, 9, 11	5, 9	1 या 5 या 9	पूर्णायु
ग्रह	1, 8	2, 7 + बाधकेश	कोई एक भाव मारक या बाधक	अल्पायु
3rd, 5th, 10th SSL	3, 10	4, 9 + बाधकेश	कोई एक भाव मारक या बाधक	छोटे सहोदर-अल्पायु
3rd, 5th, 10th SSL	3, 7, 11, 1	7, 11 या 1	7 या 11 या 1	छोटे सहोदर - दीर्घायु

आयु कारक भाव तथा मारक भाव यदि दोनों मिले हुये हों तो मध्यम आयु को दर्शाते है। आयु की तीनों अवस्थाओं की चर्चा प्रथम भाव में की जा चुकी है। इसी क्रम में अंतिम दो समीकारणों में छोटे सहोदर के अल्पायु एवं दीर्घायु होने के समीकरण प्रस्तुत किये गये हैं। आयु संबंधित भावों का विवेचन नीचे दिये गये हैं। फिर भी पाठकों से आग्रह है कि स्वयं इन भावों के संयोग पर विचार करे ताकि संशय ना रहे।

छोटे सहोदर की आयु एवं रोग विचार :

जिस प्रकार लग्न से जातक के आयु (1, 5, 9, 11वाँ) भाव, मृत्यु (1, 2, 7, 8 + बाधकेश) एवं रोग (6, 8, 12वाँ) आदि का विचार करते हैं ठीक उसी प्रकार छोटे भाई-बहन के आयु, मृत्यु तथा रोगादि के लिये 3रे भाव को लग्न मान कर अन्य भावों की गणना करें। अर्थात 3रे भाव

से आयु कारक (3, 7, 11 एवं 1ला), मारक भाव (3, 4, 9 एवं 10 + बाधकेश) तथा रोग कारक (8, 10, 2) भाव मान कर फलादेश करें। थोडे में पूरी बात समझें तो कहेंगे कि किसी भी भाव से संबंधित जातक या जातिका (जैसे – 5वाँ भाव प्रथम संतान, 7वाँ भाव जीवन साथी, 9वाँ भाव पिता या दूसरी पत्नी या पति, 11वाँ भाव बड़े सहोदर इत्यादि के लिये) के संबंध में फलादेश करना हो तो उसी भाव को लग्न मान कर घटनाओं के समीकरण अनुसार अन्य भावों को सुनिश्चित करें। उदाहरण के लिये मान लें – अनुज (छोटे सहोदर) के व्यापार में सफलता अथवा असफलता ज्ञात करना हो तो 3रे से 6ठा भाव (8वाँ भाव) एवं 3रे से 10वें (12वाँ भाव) भाव का संयोग देखेंगे। अर्थात यदि 3रे भाव का SSL अपने PS/STL द्वारा 8वाँ (3रे से 6ठा) या 12वाँ (3रे से 10वाँ) भाव दर्शायें तथा SL/SSL द्वारा 4था, 1ला भाव दर्शाये जहां 3रे से 4था एवं 1ला भाव क्रमशः 2रा एवं 11वाँ होता है जो की धन लाभ एवं इच्छा पूर्ति का भाव है अर्थात अनुज (छोटे सहोदर) के व्यापार में सफलता दिलाने में सहायक है। इसी क्रम में SL/SSL द्वारा 7, 10 एवं 2रा भाव असफलता के सूचक होंगे क्योंकि 3रे से 7, 10, 2रा भाव क्रमशः 5, 8, 12वें होते है। इसी प्रकार अन्य घटनाओं के लिये 3रे भाव को लग्न मान कर 3रे से अन्य सभी भाव ऐसे समझें– 4थे को 2रा, 5वें को 3रा, 6ठे को 4था, 7वें भाव को 5वाँ माने एवं इसी क्रम में भावों की गणना करते हुये फलादेश करें। अस्तु !

मानसिक स्थिति :

जातक की मानसिक स्थिति अच्छी होगी या तनावपूर्ण ? स्मरण शक्ति कैसी होगी ? 3रा भाव मानसिक स्थिति का नैसर्गिक भाव है। अच्छी मानसिक स्थिति के लिये 1, 5, 9, 11वाँ भाव सहायक होते हैं तथा 6,

8, 12वाँ भाव मानसिक स्थिति के प्रतिकूल भाव हैं। नीचे दिये गये समीकरण देखें।

3rd SSL	PS/ STL	SL	फल
ग्रह	3	1, 8	मानसिक चिंता, तनाव।
ग्रह	3	6, 8, 12	मानसिक रोग, उन्नमाद, मानसिक विछिप्तता।
ग्रह	3	1, 3, 5, 9, 11	अच्छी स्मरण शक्ति, संतुलित व्यवहार एवं मानसिक शुकून।

3रे भाव से संबंधित व्यापार व्यवसाय :

PS/ STL	SL	SSL	फल
3	6, 11	3 या 6 या 11	3रे भाव से संबंधित सभी कार्यों से सफलता
3	6, 8, 12/5, 8, 12	6 या 8 या 12	3रे भाव से संबंधित सभी कार्यों से असफलता एवं हानि।
3	2, 6, 10 एवं 11	2 या 10 या 11	3रे भाव के व्यापार में सफलता एवं धन लाभ

3, 10	6, 10, 11	2 या 6 या 10 या 11	पत्रकारिता, छपाईकार्य, अनुबंधन, ट्रेडिंग व्यवसाय आदि में सफलता एवं लाभ।
3, 4	3, 6, 10, 11	2 या 6 या 10	चल-अचल संपत्ति के क्रय-विक्रय, परिवहन आदि से लाभ।
4	6, 8, 12/ 5, 8, 12	8 या 12	4थे भाव से संबंधित कार्य जैसे - प्रापर्टी, वाहन, परिवहन, उत्पादन, निर्माण कार्य आदि व्यापार-व्यवसाय से हानि, बाधा तथा असफलता।
3, 5	2, 6, 11	3 या 6 या 11	5वे भाव जैसे - कला, साहित्य, अभिनय, होटल आदि व्यापार-व्यवसाय से लाभ।
3+5	8, 12	8 या 12	3रे+5वें भाव से संबंधित कार्यों में अड़चन-हानि।
3+9	2, 6, 10, 11	2 या 6 या 10 या 11	3+9वें भाव जैसे - उच्च शिक्षण संस्थान, आयात निर्यात, धार्मिक कार्यों अथवा अनुबंधन से धन लाभ तथा सफलता
3+9	5, 8, 12/6, 8, 12	8 या 12	3+9वें भाव से संबंधित कार्यों में असफलता।

ऊपर दिये गये समीकारणों में 3रे भाव से संबंधित व्यापार-व्यवसाय आदि कार्यों में सफलताओं एवं असफलताओं को दर्शाया गया है। पाठकों से

अनुरोध है कि ऊपर दिये गये समीकारणों द्वारा दर्शाये गये फलों का विश्लेषण तार्किक रूप से समझें तभी आप सही–सही फलादेश कर पायेंगे। 3रे भाव के SSL या किसी ग्रह के PS/STL द्वारा प्राप्त भावों का फल अनुकूल या प्रतिकूल होना SSL ग्रह के SL/SSL के द्वारा प्राप्त भावों पर निर्भर होता है। जैसा कि ऊपर के समीकारणों में दर्शाया गया है। किसी भी भाव का फल अनुकूल तभी होगा जब SL/SSL की उपस्थिति प्राथमिक भाव तथा लग्न दोनों से अनुकूल होंगे। मान लें PS/STL द्वारा 3रा भाव एवं SL/SSL द्वारा 5, 8, 12 भाव दर्शाया जाये तो क्या 3रे भाव का फल अनुकूल होगा ? नियमानुसार PS/STL भाव से SL/SSL के केवल 4, 7, 8 एवं 12वे जाने से फल प्रतिकूल होता है। यहां 3रे भाव से 5, 8, 12 क्रमशः 3, 6, 10वाँ भाव है इसी क्रम में 3रे भाव से 6, 8, 12 क्रमशः 4 (संबंधित भाव) 6 एवं 10वाँ भाव है फिर भी फल बुरा क्यों ? क्योंकि 5, 8, 12 तथा 6, 8, 12 लग्न से अशुभ एवं प्रतिकूल भाव हैं। यहां इस कथन की पुष्टि हो जाती है कि अच्छे परिणाम के लिये SL/SSL की उपस्थिति प्राथमिक एवं लग्न दोनों भावों से अनुकूल होने ही चाहिये। अस्तु !

3रे भाव के SSL या किसी ग्रह के PS/STL द्वारा 3रा भाव एवं SL/SSL द्वारा लाभ या आर्थिक भाव दर्शाये जाये तो 3रे भाव के सभी तत्वों या कारकों द्वारा लाभ संभावित है जैसे – पत्रकारित, ट्रेडिंग, छपाई कार्य, मिटिंग, अनुबंधन अथवा कागज़ात संबंधित कार्य परंतु संभव है उन भाव जनित रिश्तेदारों के लिये ऐसे संयोग अशुभ अथवा प्रतिकूल हो। जैसे – 3रे भाव के SSL के PS/STL द्वारा 3रा भाव एवं SL/SSL द्वारा 2, 8, 9, 10 जहां 2, 8, 9, 10वाँ भाव 3रे के लिये क्रमशः 1, 2, 6, 7, 8वाँ भाव है जो कि 3रे भाव अर्थात छोटे भाई–बहन का मारक एवं रोग कारक भाव है। अस्तु !

3रे भाव के SSL के PS/STL द्वारा 1 से 12 भावों से संबंध स्थापित करने का तात्पर्य है कि दोनों भाव मिलकर किसी एक फल की ओर इशारा कर रहे हैं मान लें - 3रे भाव का संबंध 4थे से हो तो चल-अचल संपत्ति, वाहन इत्यादि के क्रय-विक्रय, परिवहन, फैक्टरी, लघु उद्योग, उत्पादन, निर्माण आदि कार्यों से संबंधित फल संभावित है। इसी क्रम में यदि SL/SSL का संबंध 2, 6, 10, 11 आदि भावों से हो जाये तो लाभ, इसके विपरीत 5, 8, 12 या 6, 8, 12 या 5, 12 या 8, 12 आदि भावों से हो तो हानि होती है।

- **यात्रा, स्थान परिवर्तन अथवा तबादला अनुकूल या प्रतिकूल?**

  1ले एवं 3रे भाव के SSL के PS/STL/SL/SSL द्वारा यदि किसी भाव से संबंधित फलों के घटित होने की पूर्ण संभावना हो तो इसे 3रे भाव की प्रतिज्ञां या वादा कहेंगे। इसी क्रम में यदि 1ले या 3रे भाव के SSL के PS/STL/SL/SSL के द्वारा किसी घटना को नकारा जाना भी उस भाव जनित वादा या प्रतिज्ञां माना जायेगा। ऐसे में भाव जनित वह घटना जातक के पूरे जीवन में कभी भी घटित नहीं होगी। हां दैनिक एवं छोटी-मोटी घटनायें संभावित हैं। पाठकों के सहायतार्थ 3रे भाव से संबंधित कुछ घटनाओं के समीकरण नीचे दिये जा रहे हैं आपसे अनुरोध है कि इनका तार्किक व्याख्यान समझने का प्रयास करें।

3rd SSL	**PS/ STL**	**SL**	**SSL**	**फल**
3rd SSL	3	9	3 या 9	अंतर्राजीय यात्रा
3rd SSL	3	9, 12	3 या 9 या 12	विदेश यात्रा

3^{rd} SSL	3	11	3 या 11	3रे भाव से इच्छा पूर्ति
3^{rd} SSL	4	3, 11	3 या 11	स्थान परिवर्तन अनुकूल
3^{rd} SSL	4	3, 8, 12	8 या 12	स्थान परिवर्तन प्रतिकूल अथवा हानिप्रद
3^{rd} SSL	3	5, 9, 11	3 या 9 या 11	यात्रा आरंभ
3^{rd} SSL	10	3, 9, 12	3 या 9 या 12	व्यापार–व्यवसाय स्थानांतरण विदेश में
3^{rd} SSL	3, 10	2, 6, 11	2 या 6 या 11	व्यवसाय स्थानांतरण से उत्थान एवं लाभ
3^{rd} SSL	3, 10	5, 8, 12	8 या 12	व्यवसाय स्थानांतरण से हानि अथवा अवनति

ऊपर दिये गये प्रथम समीकरण में 3रा भाव छोटी यात्रा को तथा 9वाँ भाव लम्बी यात्रा का सूचक होने से अंतर्राजीय यात्रा कहा गया हैं। यहाँ 3रे एवं 9वे भाव का फल मीटिंग भी कहा जा सकता है क्योंकि 3रा भाव जहाँ आपके मीटिंग का भाव है वहीं 7वे से 3रा भाव 9वाँ भाव होता है जो आपके साथ मीटिंग करने वाले का 3रा भाव है अतः मीटिंग कहा। इसी क्रम में 12वे भाव की युति विदेश यात्रा का सूचक बनेगा क्योंकि 12वाँ भाव विदेश का भाव है। 3रे भाव का SSL ग्रह अपने नक्षत्र स्वामी द्वारा 4था भाव एवं SL द्वारा 3रा एवं 11वाँ भाव दर्शाये तो ऐसे में स्थान

परिवर्तन अनुकूल होगा इसके विपरीत यदि 3, 8, 12वाँ भाव दर्शाया गया हो तो यात्रा में दुर्घटना या स्थान परिवर्तन प्रतिकूल होगा। कारण 3, 8, 12वाँ भाव लग्न का प्रतिकूल भाव है।

- **साक्षात्कार (मिटिंग), मोल-भाव, लिखित परीक्षा या प्रतियोगिता में सफलता या असफलता ?**

3रा भाव मिटिंग अर्थात मुलाकात, लिखित परीक्षा एवं लिखित प्रतियोगिता, व्यापारिक लेन-देन (मोल-भाव) आदि का भाव है। जातक ऐसे ही किसी मुलाकात, लिखित परीक्षा एवं लिखित प्रतियोगिता, व्यापारिक मोल-भाव में सफलता या असफलता किस प्रकार प्राप्त करेगा इसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिये जा रहे हैं।

3rd SSL	**PS/ STL**	**SL**	**SSL**	**फल**
3rd SSL	3	6, 11	3 या 6 या 11	लिखित परीक्षा में सफलता
3rd SSL	6	11	6 या 11	प्रतियोगिता में सफलता
3rd SSL	3, 9	6, 11	3 या 6 या 11	मिटिंग, मोल-भाव में सफलता
3rd SSL	3, 9	2, 8	2 या 8	मिटिंग, मुलाकात का रद्द होना
3rd SSL	3 या 6	5, 12/6, 8, 12	8 या 12	परीक्षा या प्रतियोगिता में असफलता अथवा पराजित या हानि

3^{rd} SSL	3 या 6	5, 12 एवं 6, 11	6, 11	परीक्षा या प्रतियोगिता में अंततः सफलता
3^{rd} SSL	3 या 6	5, 12 एवं 6, 11	5, 12	परीक्षा या प्रतियोगिता में अंततः असफलता

ऊपर दिये गये समीकारणों में 3रा भाव साक्षातकार, लेखन, 6ठा भाव प्रतियोगिता एवं 9वाँ भाव आपके प्रतिद्वंदी के साक्षातकार (9वाँ भाव 7वे से 3रा भाव है जैसा की आपके लग्न से 3रा भाव है) का है। यदि PS/STL द्वारा 3, 9 या 6ठा भाव दर्शाया जाय एवं SL के द्वारा 6, 11 तो यह संयोग आपके सफलता का सूचक है क्योंकि 6ठा भाव 7वे [आपके प्रतिद्वंदी का] 12वाँ (पराजय) भाव है एवं 11 भाव लग्न का इच्छा पूर्ति भाव है। इसी क्रम में यदि SL के द्वारा 5, 12 दर्शाया जाये तो ऐसा संयोग आपके असफलता अथवा पराजय का द्योत्तक है क्योंकि 5वाँ एवं 12वाँ भाव 7वे का 6, 11 है अर्थात आपके प्रतिद्वंदी के सफलता का सूचक है।

विशेष :

जिस दिन परीक्षा या प्रतिस्पर्धा होनी हो या हो चुकी हो उस दिन के शूक्ष्मा एवं प्राणा स्वामी यदि अपने PS/STL द्वारा 3 या 6 एवं SL/SSL द्वारा 6, 11 भाव दर्शाये तो सफलता प्राप्त होती है इसके विपरीत 5, 12 या 6, 8, 12 दर्शाये तो उस दिन के कार्यों में असफलता रहेगी।

3रे भाव से संबंधित कुछ अन्य संयोग एवं समीकरण :

PS/ STL	SL	SSL	फल
3	6, 11	6 या 11	दस्तावेज़ संबंधित कार्यों जैसे –कोर्ट केस, अनुबंधन आदि करना सफलता एवं अच्छे परिणाम देगी
3	5, 8, 12	5 या 8 या 12	दस्तावेज़ संबंधित कार्यों जैसे–कोर्ट केस, अनुबंधन आदि में असफलता
3	6, 11+9	6 या 11	दस्तावेज़ जैसे–पासपोर्ट, विसा, ग्रीन कार्ड, डिग्री, डिप्लोमा प्राप्त होना
3	9+5, 12	5 या 12	दस्तावेज़ जैसे–पासपोर्ट, विसा, ग्रीनकार्ड, डिग्री, डिप्लोमा प्राप्ति में असफलता
3	8	3 या 8	मानसिक तनाव, चिंता
3	8, 12	8 या 12	मानसिक तनाव, जालसाजी, मुकद्दमा, जेल, कोर्ट केस

ऊपर दिये गये समीकारणों को ध्यान से समझें। 3रा भाव दस्तावेज़ का भाव है तथा 6, 11 सफलता (6ठा भाव 7वे से 12वाँ होने से 7वे को समाप्त कर देता है या यूं कहें कि हरा देता है) दर्शाता है वहीं SL/SSL द्वारा 5, 8, 12 या 6, 8, 12वें भाव का दर्शाया जाना असफलता या विफलता को दर्शाता है क्योंकि ये सभी लग्न से प्रतिकूल भाव हैं।

शिक्षा एवं विषय :

आधुनिक युग में शिक्षा का महत्व सर्वाधिक है। शिक्षा वास्तव में जीवन जीने की शैली सीखाती है। शिक्षा ज्ञान है जो हमे समाज में सभ्य रूप से रहने, व्यवहार करने तथा उन्नती करने में सहायक की भूमिका निभाती है परंतु आधुनिक युग में शिक्षा को अलग अलग कसौटी पर परखा जाता है। आज के युग में शिक्षा का मापदंड चिकित्सक, अभियंता इत्यादि के प्रमाणपत्र से है।

तृतीय भाव से शिक्षा एवं संबंधित विषय में रुझान का विचार करते हैं। प्रत्येक नक्षत्र अपने अपने स्वभावानुशार भिन्न-भिन्न विषयों को दर्शाते हैं। पाठकों के सहायतार्थ नीचे नक्षत्रों से संबंधित कुछ विषयों को दर्शाया गया है ताकि पाठकगण लाभांवित हो सकें :

नक्षत्र एवं शिक्षा :

अश्विनी :

विद्धुत संबंधित कार्य या विद्धुत से चलने वाले यंत्र संबंधित शिक्षा। रसायन, अभियंता, कानून संबंधित, गणित, ललित कला, शिल्प कला, जीव जंतु विज्ञान एवं पेड़ पौधों से संबंधित शिक्षा। रेडियोलॉजी, फोटोग्राफी, स्पेस संबंधित शिक्षा इत्यादि।

भरणी :

कम्प्यूटर, रसायन एवं सिविल अभियंता संबंधित शिक्षा, औषधि संबंधित, बिज़ली संबंधित, बी.ए, आर्ट्स, गृह विज्ञान, पाक शास्त्र, अकाउंट्स, वाणिज्य, बैंक संबंधित शिक्षा, कानून एवं विदेशी भाषा से संबंधित शिक्षा।

कृतिका :

साहित्य, ज्योतिष, विदेशी भाषा, प्रकाशन अथवा छपाई, शिक्षा, चिकित्सा संबंधी विषय जैसे आँख, नाक, गला अथवा दंत चिकित्सा से संबंधित विषय, औषधि, रसायन एवं सिविल अभियंता तथा विमान संबंधित शिक्षा इत्यादि।

रोहिणी :

नेत्र तथा दंत चिकित्सा संबंधित विषय, पशु चिकित्सा, औषधि संबंधी शिक्षा, पाक शास्त्र, इवेंट मैनेज़मेण्ट, भुगर्भ शास्त्र, कानूनी पढ़ाई, डर्मैटोलोज़ी, इंटीरीयर डेकोरेटर, जल संबंधी विषय इत्यादि।

मृगशिरा :

कानूनी पढ़ाई, टेक्सटाइल संबंधित शिक्षा, विद्युत एवं ध्वनि, मशीन से संबंधित शिक्षा, बोन मैरो, हड्डी, आँख, दंत, शल्य चिकित्सा संबंधित विषय एवं चलचित्र निर्माण, भवन निर्माण आदि से संबंधित विषय।

आर्द्रा :

ईलेक्ट्रिकल, इलेक्ट्रोनिक्स, रेडियोलॉजी, फोटोग्राफी, परमाणु संबंधित विषय, वैज्ञानिक, रबड़, ऐग्रिकल्चर और परिवहन संबंधित विषय या टूर एण्ड ट्रैवल, पर्यटन संबंधी विषय, पत्रकारिता, वैद्य या चिकित्सक इत्यादि विषय।

पुनर्वसु :

कानूनी पढ़ाई, दर्शन शास्त्र, विदेशी भाषा के साहित्य, कॉमर्स, राजनिति शास्त्र, लेखा परिक्षक (ओडिटर), व्यवसायिक एवं वित्तीय प्रबंधक संबंधित विषय, बीमा तथा ज्योतिष संबंधित विषय।

पुष्य :

पेट्रोलियम एवं भुगर्भ शास्त्र, वाणिज्य शास्त्र, अर्थशास्त्र, गणित, जलीय विषय संबंधित शिक्षा, कृषि संबंधित विषय, बी.ए अथवा एम.ए।

आश्लेषा :

वेद, तर्क शास्त्र, कानूनी शिक्षा, गणित, पत्रकारिता, जल संबंधी विषय, औषधि, सेल परचेज़ मैनेज़मेंट, मार्केटिंग मैनेज़मेंट, सिविल अभियंत, मशीन (अभियंता) संबंधित विषय, परिवहन अथवा पर्यटन संबंधित विषय।

मघा :

स्पेस सॉइंस, रेडियोलॉजी, औषधि संबंधी विषय, आयुर्वेद संबंधी विषय, शल्य चिकित्सा, इतिहास।

पुर्वा फाल्गुनी :

रसायन शास्त्र, कृषि संबंधित विषय, पशु चिकित्सा, बी.एड, एम.बी.ए., कम्प्यूटर इंज़िनिरिंग, एम.टेक, बिज़िनेस मैनेज़मेंट, स्त्री रोग विषेशज्ञ, रेडिओलॉजी, चिकित्सा संबंधी शिक्षा इत्यादि।

उत्तरा फाल्गुनी :

भुगर्भ शास्त्र, रसायन शास्त्र, पर्यटन, बी.एड, एम.एड, विद्युत अभियंता, हृदय चिकित्सा, छाती रोग विषेशज्ञ, शल्य चिकित्सा, पशु चिकित्सा संबंधित शिक्षा, एम.टेक, हड्डी रोग विशेषज्ञ, चिकित्सालय प्रबंधक।

हस्त :

टेक्सटाइल, मनोचिकित्सक, रसायन शास्त्र, जलीय विशेषज्ञ, कुष्ठ रोग विशेषज्ञ, माईनिंग ईंजिनियरिंग, फोरेंसिक मेडीसीन, वेनेरिओलोज़ी, ज़बड़ा एवं दंत चिकित्सक, चिकित्सालय प्रबंधन।

चित्रा :

सिविल इन्जीनियरिंग, सर्जन, आयुर्वेद की शिक्षा, औषधि, कृषि विज्ञान, मतस्य उत्त्पादन से संबंधित शिक्षा, पर्यवरण से संबंधित शिक्षा, साहित्य, कानूनी शिक्षा तथा बी.ए।

स्वाती :

रेडिओलोजी, स्पेस साईंस, खगोल शास्त्र, पुस्तकालय प्रबंधन संबंधी शिक्षा, एम.ए., एम.बी.ए., उच्च स्तरीय शल्य चिकित्सा संबंधी शिक्षा, स्त्री रोग विशेषज्ञ, नशों (वेनेरोलोजी) से संबंधित शिक्षा, डर्मैटोलोजी तथा ओब्सटेट्रिक्स।

विशाखा :

राजनिति शास्त्र, दर्शन शास्त्र, कानूनी शिक्षा, बैकिंग, रेडिओलोजी, आर्किटेक्ट की शिक्षा, होमियोपैथी औषधि संबंधी शिक्षा, कपड़ा (टेक्सटाईल) उद्योग संबंधित शिक्षा, बी.एस.सी, अभियंता शिक्षा, शल्य चिकित्सा संबंधी शिक्षा।

अनुराधा :

इन्डस्ट्रियल, पेट्रोलियम, खनन, सिविल एवं कृषि संबंधित अभियंता की शिक्षा, कानूनी शिक्षा, पैथोलोजी।

ज्येष्ठा :

गणित, पत्रकारिता, प्रचार, साहित्य, चिकित्सक, आयुर्वेद तथा औषधि संबंधी शिक्षा, शल्य चिकित्सा से संबंधित शिक्षा, पर्यावरण संबंधी शिक्षा, अकाउंट्स, सी.ए, एवं अभियंता संबंधित विषय।

मूल :

रेडिओलोजी, फोटोग्राफी, इलेक्ट्रिक एवं इलेक्ट्रोनिक तथा कम्प्यूटर संबंधी शिक्षा, सिविल अभियंता, वाणिज्य से संबंधित शिक्षा, रसायन शास्त्र, इतिहास।

पुर्वाषाढ़ :

डेरी फार्मिंग, टेक्सटाईल संबंधी शिक्षा, प्लास्टिक, रसायन अभियंता, गणित, दूरभाष, अकाउंट्स, बी.ए।

उत्तराषाढ़ा :

औषधि, रसायन, भुगोल शास्त्र, बी.ए., अर्थशास्त्र, अभियंता, कम्प्यूटर, आर्ट्स, दन्त चिकित्सक।

श्रवण :

टेक्सटाईल, रसायन शास्त्र, जल अभियंता, मनोचिकित्सक, औषधि, शल्य चिकित्सा, छाती रोग विशेषज्ञ, एनिसथिसिया, बी.एड., एम.टेक., बी.बी.ए., हाईड्रोलिक संबंधित शिक्षा।

धनिष्ठा :

मेकेनिकल एवं सिविल इंजिनियर, आर्किटेकचर, भौतिक शास्त्र, साहित्य, नर्सिंग, टेक्सटाइल, चिकित्सालय प्रबंधन, एम.बी.ए., बी.ए., बैंक प्रबंधन।

शतभिषा :

रेडिओलोजी, एक्स रे, चिकित्सा संबंधी शिक्षा जैसे स्त्री रोग, दंत रोग, औषधि, माईक्रोलोजी, इलेक्ट्रोनिक्स, तकनिकि शिक्षा, रडार संबंधी शिक्षा, कृषि संबंधी शिक्षा।

पुर्वाभाद्रपद :

प्रसाशनिक शिक्षा, दर्शन शास्त्र, अंतर्राष्ट्रीय कानून, व्यापार प्रबंधन, बैंकिंग, रेडिओलोजी, इलेक्ट्रोलोजी, औषधि संबंधी शिक्षा, आट्र्स की शिक्षा, बी. एड, एम.एस.सी।

उत्तराभाद्रपद :

रिफाईनरी तकनिकि शिक्षा, अभियंता संबंधी शिक्षा जैसे सिविल, इलेक्ट्रोनिक, भुगर्भ शास्त्र, टेक्स्टाईल, तथा औद्योगिक इत्यादि, मेरिन संबंधी शिक्षा, कॉमर्स, व्यापार प्रबंधन, दंत चिकित्सक।

रेवती :

गणित, पत्रकारित, विज्ञापन संबंधी शिक्षा, अभियंता संबंधी शिक्षा जैसे औद्योगिक, इलेक्ट्रोनिक्स, रसायन, सिविल एवं पोलिमर इत्यादिण, औषधि चिकित्सक, ललित कला, छपाई तकनीक।

विषेश : विषय का चयन किस प्रकार करना चाहिये इसका उल्लेख 9वें अध्याय में किया गया है।

चतुर्थ भाव

कारकत्व :

माता की आयु एवं स्वास्थ्य, सुख-दुखः इसके अतिरिक्त जातक की प्रारंभिक शिक्षा, चल-अचल संपत्ति, वाहन, उत्त्पादन, गृह सुख, कृषि कार्य, जीवन साथी का व्यापार-व्यवसाय, शस्त्र, छाती एवं पाताल आदि का विचार 4थे भाव से करते है।

4थे भाव से संबंधित कुछ संभावित प्रश्न।

- माता का स्वास्थ्य
- माता की आयु (पूर्णायु, मध्यम आयु अथवा अल्पायु) ?
- प्रारंभिक शिक्षा
- शिक्षा हेतु विषय चयन।
- वाहन, जमीन जायदाद आदि के संयोग।
- 4थे भाव से संबंधित व्यापार-व्यवसाय में सफलता अथवा असफलता?
- संपत्ति के क्रय-विक्रय संयोग।
- अचल संपत्ति निर्माण कार्य।
- वाहन आदि का खोना-पाना।

मातृ आयु गणना :

जिस प्रकार लग्न से जातक की आयु की गणना करते हैं उसी प्रकार माता की आयु गणना हेतु 4थे भाव को लग्न मान कर मारक एवं बाधक भावों को निर्धारित करें। नीचे दिये गये समीकरण माता की आयु निर्धारण करने में सहायक है।

4थे, 6ठे, 11वें भावों के SSL	**STL/ PS**	**SL**	**SSL**	**फल**
4थे, 6ठे, 11वें भावों के SSL	4, 11	5, 10 + बाधकेश	5 या 10 या 11 या बाधकेश	अल्पायु
4थे, 6ठे, 11वें भावों के SSL	8, 12	4, 2	2 या 4 या 8 या 12	पूर्णायु

ऊपर दिय्र गये समीकरण में 11वाँ, 5वाँ एवं 10वाँ भाव 4थे से क्रमशः 8, 2 एवं 7वाँ भाव है जो की 4थे (माता) भाव के मारक भाव हैं। इसी क्रम में 2रा, 8वाँ एवं 12वाँ भाव 4थे से क्रमशः 11वाँ, 5वाँ एवं 9वाँ भाव है जो की माता की आयु के सहायक भाव हैं। यदि अल्पायु एवं पूर्णायु भावों की युति हो तो माता की आयु मध्यम होगी। स्मरण रहे किसी भी भाव से 1ला, 3रा एवं 8वाँ भाव आयु निर्णय में सहायक होता है तथा भाव 1, 2, 7, 8 एवं बाधकेश मारक होते है। पुनः स्मरण दिलाना चाहुंगा कि SSL का निर्णय अंतिम होता है जहाँ SSL द्वारा घटना से संबंधित कम से कम एक भाव अवश्य होने चाहिए।

मातृ स्वास्थ्य विचार :

4^{th} SSL	STL/PS	SL	SSL	फल
ग्रह (अ)	4, 11	9 या 11	9 या 11 या 3	असाध्य रोग
ग्रह (ब)	4, 9 या 11	9 या 11 या 3	8 या 12	रोग अंततः ठीक हो
ग्रह (स)	9 या 11 या 3	4 या 8 या 12	9, 11, 3	रोग अंततः ठीक नहीं होगा
ग्रह (ह)	4, 8, 12, 2	4 या 8 या 12	4 या 8 या 12	उत्तम स्वास्थ्य
ग्रह	समीकरण अ+स	समीकरण अ+ब	समीकरण अ+ब	मिला जुला स्वास्थ्य

जिस प्रकार 1ले भाव से 6ठा भाव रोग, 8वाँ भाव गंभीर रोग, असाध्य रोग, दुर्घटना, शल्य चिकित्सा आदि का भाव है उसी प्रकार 4थे भाव से 9वाँ भाव साधारण रोग एवं 11 भाव गंभीर रोग को दर्शाता है। समीकरण (अ) में दर्शाये गये सभी भाव माता के लिये रोग कारक हैं एवं रोग मुक्ति के भावों का सर्वथा अभाव है अतः यहां असाध्य रोग कहा गया है। समीकरण (ब) में SSL द्वारा केवल 8वाँ एवं 12वाँ भाव (जो की 4थे भाव से क्रमशः 5वें एवं 9वें है) दर्शाया गया है जो की रोग से मुक्ति दिला पाने में सक्षम हैं। समीकरण (स) में SSL द्वारा केवल और केवल 9, 11, 3 भाव जो की 4थे भाव से क्रमशः 6, 8 एवं 12वें है अतः रोग का अंततः ठीक नहीं होगा कहा गया है।

विशेष :

स्मरण रहे कि यदि प्रथम भाव के SSL ने किसी घटना की संभावना को दर्शाया हो तो उस घटना से संबंधित भाव के SSL को भी उस घटना को दर्शाना चाहिये अन्यथा घटना घटित नहीं होगी। मान लें 4थे भाव के SSL ने 9, 11 एवं 3रा भाव दर्शाया हो तो यह संयोग माता के रोगी होने का सूचक है परंतु यदि 9वें या 11वें भाव के SSL अपने PS/STL/SL/SSL द्वारा रोग भाव अर्थात 9वें और 11वें अथवा 4थे भाव में जाये ही ना तो ऐसे में माता रोगी नहीं होंगी। इसी क्रम में यदि 4थे भाव का SSL अपने PS/STL/SL/SSL द्वारा रोग भाव में जाये ही ना तो भी माता रोग मुक्त रहेंगीं चाहे 9वे अथवा 11वें भाव के SSL अपने PS/STL/SL/SSL द्वारा रोग क्यों ना दर्शायें।

प्रारंभिक शिक्षा :

जातक की प्रारंभिक शिक्षा कैसी होगी ? क्या जातक निर्विघ्न अपनी शिक्षा पूरी करेगा या शिक्षा में बाधा, विलम्ब अथवा असफलता के कारण शिक्षा अधूरी रहेगी। नीचे शिक्षा से संबंधित सफलता अथवा असफलता के संयोग दिये जा रहे है।

4th SSL	PS/STL	SL	SSL	फल
ग्रह	4	11	4 या 11	प्रारंभिक शिक्षा में सफलता
ग्रह	4, 2, 5, 9 एवं 11	5, 9 या 11	4 या 5 या 11	निर्विघ्न शिक्षा में सफलता
ग्रह	4	3, 8, 12	3 या 8 या 12	शिक्षा में असफलता

ग्रह	3, 8, 12	3, 8, 12	3 या 8 या 12	जन्म से अशिक्षित
ग्रह	4, 2, 5, 9 एवं 11	5, 9 या 11	3, 8 या 12	शिक्षा में अंततः असफलता
ग्रह	4	3, 8, 12 + 4	5, 9 या 11	बाधा एवं विलंब से सफलता

शिक्षा में सहायक एवं सफलता दायक भाव हैं – 4 (प्रारंभिक शिक्षा), 2 (ज्ञान), 5 (बुद्धि), 9 (उच्च शिक्ष), 11 (इच्छा पूर्ति) इसके विपरीत शिक्षा में असफलता दायक भाव है – 3, 8, 12 / 6, 8, 12 जहां 3रा एवं 6ठा भाव तटस्थ होते है परंतु भाव 8, 12 के साथ इनका संयोग बाधा कारक एवं असफलता दायक हो जाते हैं। इसी क्रम में उच्च शिक्षा में सहायक भाव हैं – 11 (इच्छा पूर्ति), 2 (ज्ञान), 5 (बुद्धि) एवं 7वाँ (9वे से 11वाँ अर्थात लाभ भाव), यहां 4, 8, 12 या 3, 8, 12 भावों की उपस्थिति उच्च शिक्षा में बाधा एवं असफलता दायक होंगे क्योंकि 4था भाव 9वें से 8वाँ है एवं 3, 8, 12 क्रमशः 7वाँ, 12वाँ एवं 4था भाव है जो कि शिक्षा के नकारात्मक भाव हैं।

चल अचल संपत्ति संयोग :

4थे भाव का SSL अपने PS/STL एवं SL/SSL द्वारा 4थे भाव से संबंधित अच्छे संयोग दर्शायें तो जातक को चल अचल संपत्ति का लाभ रहेगा इसके विपरीत बुरे संयोग से चल अचल संपत्ति की हानि या प्राप्ति में बाधा रहेगी। नीचे चल-अचल संपत्ति जैसे – भवन, मकान,

जमीन–जायदाद, वाहन आदि से संबंधित कुछ विभिन्न संयोग दर्शाये जा रहे है।

4^{th} SSL	PS/STL	SL	SSL	फल
समीकरण (1)	4	11, 12	4 या 11	अचल संपत्ति लाभ
समीकरण (2)	11, 10	9 + 4, 12	4 या 11	अचल संपत्ति की खरीद/प्राप्ति
समीकरण (3)	10	9, 4, 11, 12	4 या 11	संपत्ति क्रय
समीकरण (4)	4	3, 5, 10	10 या 5	संपत्ति विक्रय
समीकरण (5)	4	3, 5, 10 + 2, 6, 11	2 या 11	संपत्ति विक्रय से लाभ
समीकरण (6)	4	3, 5, 10 + 8, 12	5 या 8 या 12	संपत्ति विक्रय में हानि
समीकरण (7)	4, 8	11, 12	4 या 11 या 12	संपत्ति निर्माण पर व्यय/बाधा

समीकरण (1) एवं (2) में 4 एवं 11वें भाव की उपस्थिति संपत्ति, वाहन आदि के लाभ को दर्शाता है। वहीं समीकरण (3) में PS/STL द्वारा 10वाँ भाव एवं SL द्वारा 9, 4, 11 एवं 12वाँ भाव का दर्शाया जाना

दूसरे की संपत्ति के क्रय के संयोग को दर्शाता है, जहां SL द्वारा भाव 9 में जाना 10वें का 12वाँ अर्थात दूसरे की संपत्ति का व्यय/हानि दर्शाता है तथा 4, 11 जातक को संपत्ति लाभ एवं 12वाँ भाव संपत्ति के क्रय पर व्यय/खर्च को दर्शाता है। समीकरण (4) में PS/STL द्वारा भाव 4 तथा SL द्वारा 3, 5, 10वाँ भाव संपत्ति के विक्रय को दर्शाता है जहां 3रा भाव 4थे का 12वाँ है अर्थात 4थे (संपत्ति) का व्यय है तथा भाव 5 एवं 10 क्रमशः आपकी संपत्ति खरीदने वाले (7वाँ भाव) का 11वाँ (इच्छा पूर्ति) एवं 10वाँ (4था भाव) है। समीकरण (5) में 2, 6, 11 के संयोग संपत्ति के विक्रय से लाभ को दर्शाता है तथा समीकरण (6) में 8, 12 का संयोग विक्रय से हानि को दर्शाता है। अन्तिम निर्णय के लिये SSL की उपस्थिति दिये गये समीकरण के अनुसार होना आवश्यक है।

वाहन खोना-पाना :

4th SSL	PS/STL	SL	SSL	फल
समीकरण (1)	4 (7)	3, 10, (7)	10 या 3 (7)	वाहन चोरी या खोना
समीकरण (2)	4 (7)	3, 10+5, 12 (7)	3 या 10 या 5, 12 (7)	चोरी वाहन प्राप्त नहीं होगी
समीकरण (3)	10	9, 4, 11	9 या 4 या 6, 11	चोरी या गुम वाहन प्राप्ति

ऊपर दिये गये समीकरण (1) का अवलोकन करें तो स्पष्ट रूप से पता चलता है कि PS/STL द्वारा प्राप्त भाव 4 जातक के वाहन को दर्शाता

है तथा SL द्वारा 3रा भाव (जो की 4थे का 12वाँ है अर्थात वाहन के खोने या चोरी होना दर्शाता है), 10वाँ भाव [जो की चोर (7वें) का 4था अर्थात उसके वाहन का भाव है] एवं SSL द्वारा केवल और केवल 7वें (चोर) भाव से अनुकूल एवं 4थे से प्रतिकूल भाव का दर्शाया जाना वाहन के खोने अथवा चोरी को दर्शाते हैं। इसके विपरीत यदि SSL द्वारा भाव 4, 9, 11 दर्शाये जाते तो वाहन के खोने अथवा चोरी होने की संभावना समाप्त हो जाती या चोरी अथवा गुम हुई वस्तु पुनः प्राप्त हो जाती। इसी क्रम में समीकरण (2) में PS/STL द्वारा 4था भाव तथा SL की उपस्थिति 3, 10 के साथ 5, 7, 12वें भावों में एवं SSL द्वारा केवल और केवल 4थे भाव से प्रतिकूल एवं 10 (7वें) से सभी भाव अनुकूल दर्शाये जाने से तात्पर्य है कि चोरी हुआ वाहन प्राप्त नहीं होगा। समीकरण (3) में PS/STL द्वारा 10वाँ भाव एवं SL/SSL द्वारा 9वाँ भाव (10वें से 12वाँ भाव), 4था (जातक के वाहन का भाव) एवं 11वाँ (इच्छा पूर्ति भाव) को दर्शाया जाना अनुकूल संयोग है। दूसरे शब्दों में कहें तो ऐसे समीकरण चोरी हुये वाहन की पुनः प्राप्ति के संयोग हैं।

4था भाव एवं व्यापार-व्यवसाय :

4था भाव कृषि, अचल संपत्ति, वाहन, उत्पादन, निर्माण कार्य, मशीनरी कार्य, परिवहन आदि का कारक भाव है। किसी ग्रह के या 4थे भाव के SSL के PS/STL द्वारा 4था भाव एवं SL/SSL द्वारा लाभ भाव दर्शाये जाने से लाभ तथा हानि वाले भावों को दर्शाने से हानि होती है। नीचे 4थे भाव के व्यापार-व्यवसाय से संबंधित कुछ लाभ-हानि के संयोग दिये जा रहे हैं।

4^{th} SSL	PS/STL	SL	SSL	फल
समीकरण (1) 4th SSL	4	2, 6, 10, 11	2 या 6 या 10	4थे भाव से संबंधित व्यापार-व्यवसाय से लाभ
समीकरण (2) 4th SSL	1-12 भाव संबंधित कार्य	6, 11	2 या 10 या 11	1-12 भावों से संबंधित सभी व्यापार-व्यवसाय से लाभ
समीकरण (3) 4th SSL	1-12 भाव संबंधित कार्य	5, 8, 12	5 या 8 या 12	1-12 भावों से संबंधित सभी व्यापार-व्यवसाय से हानि।

4थे भाव का संबंध यदि किसी अन्य भाव से हो तो दोनों भावों के कारकों द्वारा व्यापार-व्यवसाय की संभावना बनेगी। उदाहरण के लिये मान लें 4थे भाव का संबंध 10वें भाव से हो जाये तथा SL द्वारा लाभ (2, 6, 11) भाव दर्शाये जाये तो ऐसे संयोग से जातक शिक्षक की नौकरी, अभियंता उत्त्पादन इकाइयों आदि से जीविका चलायेगा। एक अन्य उदाहरण लेते हैं। मान ले 4थे भाव का संबंध 3रे एवं 10वें भाव से हो

तथा SL द्वारा पुनः लाभ (2, 6, 11) भाव दर्शाये जाये तो ऐसे संयोग से जातक परिवहन से, चल अचल संपत्ति के क्रय-विक्रय अथवा दस्तुरी (दलाली) आदि व्यापार-व्यवसाय से जीविका चलायेगा।

पंचम भाव

कारकत्व :

पंचम भाव से प्रथम संतान, प्रजनन शक्ति, बुद्धि, खेल, दौड़, अभिनय, नृत्य, संगीत, उत्तसव, नाटक, चल-चित्र, प्रेम प्रसंग, शेयर बाज़ार, सट्टा, होटल, मनोरंजन, आदत आदि का विचार किया जाता है।

पंचम भाव से संबंधित कुछ मुख्य प्रश्नों के संभावित उत्तर नीचे दिये जा रहे हैं। पाठकगण ऐसे सभी प्रश्नों के उत्तर हेतु प्रारंभिक/नैसर्गिक भाव एवं सहायक भावों का तार्किक रूप से फल कथन का विचार करें।

- संतान संयोग, निर्वंश (बॉन्झपन या संतान का नहीं होना) योग।
- जुड़वां बच्चे।
- गर्भपात।
- प्रथम संतान की आयु, स्वास्थ्य।
- प्रेम संबंधों में सफलता/असफलता।
- शेयर बाज़ार, सट्टा आदि से लाभ अथवा हानि।
- 5वाँ भाव एवं व्यापार-व्यवसाय - लाभ अथवा हानिप्रद।

संतान संयोग :

5वाँ भाव प्रथम संतान का नैसर्गिक भाव है तथा 2रा भाव परिवारिक सदस्यों की वृद्धि एवं 11वाँ भाव इच्छा पूर्ति का भाव है जो कि नैसर्गिक

(संतान) भाव के फलों की पूर्ति में सहायक है। इसके विपरीत भाव 1, 4, 10 संतान लाभ के सभी सहायक भावों (2, 5, 11) का नकारात्मक भाव है।

किसी घटना के घटित होने के लिये लग्न एवं घटना से संबंधित नैसर्गिक भावों के SSL का घटना को समर्थन देना आवश्यक है। इसके विपरीत इन भावों के SSL यदि घटना को नकार दें तो घटना घटित नहीं होगी। हाँ भाव जनित छोटी घटनायें संभावित हैं। नीचे संतान संबंधित कुछ साकारात्मक एवं नकारात्मक संयोग दिये जा रहे हैं।

5th SSL	**PS/STL**	**SL**	**फल**
योग (1)	5	2, 11	संतान लाभ संयोग
योग (2)	11	2, 5	संतान लाभ संयोग
योग (3)	5, 2, 11	1, 4, 10	संतान बाधा संयोग
योग (4)	1, 4, 10	1, 4, 10	संतान नकारात्मक (निर्वंश) संयोग
योग (5)	5	4, 8, 12	गर्भपात

5वें भाव के SSL अपने PS/STL द्वारा 5वें भाव में तथा SL द्वारा 2रे एवं 11वें भाव में हो साथ ही साथ SSL द्वारा समर्थन भी प्राप्त करे तो ऐसे संयोग संतान प्राप्ति में पूर्णतः सहायक होंगे। इसके विपरीत SL यदि संतान से संबंधित सभी नकारात्मक भावों में (जैसे 1, 4, 10) जाये तो संतान प्राप्ति पूर्णतः बाधित होगा। ऐसे में संतान लाभ तभी संभावित है जब 1, 4, 10 भावों के साथ साथ संतान प्राप्ति में सहायक भावों (2, 5, 11) की भी युति हो तथा 5थे भाव के SSL का SSL भी संतान लाभ का समर्थन करे क्योंकि किसी भी ग्रह या भाव के SSL के SSL

का निर्णय अंतिम होता है। योग (4) में दर्शाये गये संयोग से स्पष्ट पता चलता है कि जातक संतान लाभ से वंचित रहेगा क्योंकि 1, 4, 10 भाव संतान लाभ के सभी नैसर्गिक एवं सहायक भावों 2, 5, 11 के नकारात्मक भाव हैं। योग (5) –यदि किसी महिला की कुंडली में हो तो गर्भपात की पूर्ण संभावना रहेगी क्योंकि भाव 4, 8, 12 महिला के 5वें भाव से क्रमशः 12वाँ, 4था एवं 8वाँ भाव है। स्मरण रहे किसी भाव से 12वाँ भाव उसका नकारात्मक भाव है एवं 4था एवं 8वाँ भाव क्रमशः बाधा तथा अप्रत्याशित घटनाओं का द्योत्तक है अतः गर्भपात का सूचक है।

संयोग - जुड़वां बच्चे :

नीचे दिये गये ग्रह संयोग प्रमाणिक रूप से जुड़वें बच्चों के जन्म को दर्शाने में पूर्णतः समर्थ नहीं है। स्पष्ट है कि इस क्षेत्र में अभी शोध होना बाकी है। वर्तमान समय में प्रत्येक 10,000 जन्में बच्चों में मात्र 35–36 जुड़वें बच्चों की संभावना होती है। जुड़वां बच्चों के जन्म से संबंधित कुछ सूत्र दिये जा रहे हैं जिनकी चर्चा आवश्यक है। जुड़वें बच्चों के माता–पिता की कुंडलियों में ऐसे संयोगों की पूर्ण संभावना होगी –

- जुड़वें बच्चों के संयोग, पति–पत्नी दोनों की कुंडलियों में होना आवश्यक है।
- प्रथम भाव के SSL का संबंध अपने PS/STL/SL द्वारा 5वें भाव के साथ साथ 7वें भाव से भी होना चाहिये तथा
- 5वें भाव के SSL का संबंध भी अपने PS/STL/SL द्वारा 5वें भाव के साथ साथ 7वें भाव से होना चाहिये। ध्यान रहे 7वाँ भाव 5वें भाव का विविध या बढ़ा हुआ रूप है अतः एक से अधिक संख्या को दर्शाते हैं। इसी क्रम में यदि प्रथम एवं पंचम भाव के

SSL एवं SSL का PS या STL बुध अथवा गुरु हों तो जुड़वें की संभावना प्रबल होगी क्योंकि दोनों ग्रह नैसर्गिक रूप से अपने-अपने अधिपत्य वस्तुवों की बढ़ोत्तरी करते है।

- बुध या गुरु यदि प्रथम भाव एवं पंचम भाव के SSL हों तथा एक दूसरे के ही STL एवं SL हों साथ ही साथ 1, 2, 3, 5, 7, 11 भावों को दर्शायें अर्थात संतान से संबंधित सभी सहायक भावों में हों तो जुड़वें बच्चों की संभावना प्रबलतर होगी।
- राहु या केतु - बुध या गुरु की राशि अथवा नक्षत्र पर हों एवं राहु, केतु, गुरु तथा बुध 1, 5वें भावों के SSL हों तो भी जुड़वें बच्चों की संभावना प्रबलतर होगी।

जातक की कुण्डली में संतान लाभ संभावित है या नहीं इसके लिये प्रथम भाव एवं पंचम भाव के उप-उप नक्षत्र स्वामी का संतान से संबंधित सभी अनुकूल भावों में जाना आवश्यक है अर्थात 1ले एवं 5वे भाव के उप-उप नक्षत्र स्वामी अपने नक्षत्र स्वामी के द्वारा 5वे भाव में जाये तथा उप एवं उप-उप नक्षत्र द्वारा 2रे तथा 11वे भावों में जायें। यह समीकरण अप्रत्यक्ष भी हो सकता है जैसे नक्षत्र स्वामी का 11वे भाव में तथा उप एवं उप-उप नक्षत्र स्वामी का 2रे तथा 5वे भाव में जाना।

यदि 1ले या 5वे भाव के उप-उप नक्षत्र स्वामी में से किसी एक के द्वारा भी संतान को नकार दिया जाय तो संतान बाधित होगी अर्थात संतान नहीं होगी। संतान बाधित होने के नियम हैं :

यदि किसी भाव के उप-उप नक्षत्र स्वामी अपने नक्षत्र स्वामी द्वारा अपने भाव से संबंधित किसी भी घटना से सर्वथा प्रतिकूल भावों में चले जाये तथा उप एवं उप-उप नक्षत्र द्वारा प्रथमिक भाव में ना जायें तो वह घटना कभी भी जातक के जीवन में घटित नहीं होगी।

मान ले संतान की संभावना देखनी हो तो आवश्यक है कि 1ले एवं 5वे भाव के उप–उप नक्षत्र स्वामी अपने नक्षत्र, उप एवं उप–उप नक्षत्र स्वामीयो द्वारा 5, 2, 11 में उपस्थित हो परंतु यदि 1ले या 5वे भाव के उप–उप नक्षत्र स्वामी में से कोई एक भी अपने नक्षत्र स्वामी द्वारा 1, 4 एवं 10वे भाव में चला जाये और 5वे भाव में ना जाये तथा अपने उप एवं उप–उप नक्षत्र स्वामी द्वारा 5वे भाव में उपस्थित ना हो तो ऐसे में जातक आजीवन संतान से वंचित रहेगा।

संतान, पुत्र या कन्या संतति ?

जातक की प्रथम संतान लड़का या लड़की होगी ? भारत में यह एक ज्वलंत प्रश्न है। प्रत्येक माता पिता की इच्छा होती है कि उसे पुत्र संतती प्राप्त हो। भारत वर्ष में जन्म से पहले बच्चे का भ्रुण पता करना 1994 ऐक्ट के अनुसार गैरकानूनी करार कर दिया गया है।

पाठकों से अनुरोध है कि इस विषय पर चर्चा करने हेतु या इस ज्योतिषीय विधा को सीखने हेतु आप सीधे मुझसे संपर्क कर सकते हैं। दूरभाष 9810928289, 9310028289। Email ID & skanilcil@gmail.com

प्रथम संतान की आयु एवं स्वास्थ्य विचार :

कुंडली के 5वें भाव से प्रथम संतान का विचार करते है। जिस प्रकार लग्न से जातक के स्वास्थ्य एवं आयु का विचार करते है उसी प्रकार पंचम भाव को लग्न मान कर 1 से 12 भावों के SSL द्वारा प्राप्त भावों से प्रथम संतान के जीवन के विभिन्न घटनाओं का विचार करें। प्रथम संतान की आयु गणना 5वें, 7वें एवं 12वें भाव से करते हैं जो की 5वें भाव से क्रमशः 1, 3 एवं 8वाँ है।

5^{th} SSL	PS/ STL	SL	फल
योग (1)	5, 12	6, 11 + बाधकेश	5, 7, 12वे SSL ऐसे भाव दर्शाये तो संतान अल्पायु होगी।
योग (2)	1, 3, 5, 9	1, 3, 5, 9	5, 7, 12वें SSL ऐसे भाव दर्शाये तो संतान दीर्घायु होगी।
योग (3)	योग (1+2)	योग (1+2)	मिले-जुले भाव मध्य आयु दर्शायेंगे।

प्रत्येक भाव से 1, 8 / 2, 7 तथा बाधकेश मारक भाव तथा 1, 5, 9 एवं 11वाँ भाव आयु कारक माने गये हैं। इसी क्रम में 5वें भाव से 5, 12 तथा 6, 11 एवं बाधकेश मारक भाव तथा 5, 9, 1 एवं 3 आयु कारक भाव निर्धारित किये गये हैं। पंचम भाव से आयु कारक भाव (5, 7, 12) यदि मारक एवं आयु कारक दोनों भावों में हों तो प्रथम संतान की आयु मध्यम होगी।

स्वास्थ्य - प्रथम संतान :

5^{th} SSL	PS/STL	SL	फल
योग (4)	10 या 12	5 या 10 या 12	रोगी संतान
योग (5)	9 या 1	5 या 9 या 1, 3	निरोगी संतान

योग (4) में दर्शाये गये भाव 10वाँ, पंचम भाव से 6ठा भाव है तथा 12वाँ भाव पंचम से 8वाँ है। किसी भी भाव से 6ठा भाव साधारण रोग

एवं 8वाँ भाव गंभीर रोग तथा शल्य चिकित्सा को दर्शाता है। यदि 5th SSL के SL द्वारा PS/STL के भावों (10, 12, 3) को समर्थन प्राप्त हो रहा हो अर्थात SL की उपस्थिति भी पंचम भाव से रोग (10, 12 या बाधकेश में हो) वाले भावों में हों तो ऐसे में प्रथम संतान के रोगी होने की पूर्ण संभावना रहेगी। इसी क्रम में एक आवश्यक नियम सदैव ध्यान में रखें कि 10वे या 12वें भावों के SSL भी रोग दर्शाने चाहिये अन्यथा रोग की संभावा धूमिल रहेगी।

प्रेम संबंध :

पंचम भाव से प्रेम संबंधों का विचार करते हैं। वर्तमान समय में ज्योतिषियों को प्रेम प्रसंगों से संबंधित बड़े अट्पटे प्रश्नों का सामना करना पड़ता है। नीचे कुछ प्रेम प्रसंग से संबंधित समीकरण दर्शाये जा रहे है।

5th SSL	**PS/ STL**	**SL**	**फल**
योग (1)	5	11	सच्चा प्रेम एवं प्रेम संबंध में सफलता।
योग (2)	11	5	महिला या पुरुष मित्र से सच्चा प्रेम।
योग (3)	5	11, 8+12	वासनायुक्त प्रेम।
योग (4)	5, 7	11	प्रेम विवाह में सफलता।
योग (5)	5, 7, 11	5, 6, 12	प्रेम विवाह में असफलता।
योग (6)	5, 11	4, 10	असफल प्रेम प्रयास।

योग (7) 11th SSL	5	7, 12	महिला या पुरुष मित्र से प्रेमवश शारीरिक संबंध।

5th SSL यदि **योग (1) एवं (2)** में दिये गये संयोग दर्शायें तो यह प्रेम में सफलता या प्रेम संबंधों को दर्शाता है। जहां 5वाँ भाव प्रेम तथा 11वाँ भाव इच्छा पूर्ति का भाव है। चूंकि इस संयोग में 5, 8, 12 / 7, 8, 12 / 7, 12 या 8, 12 आदि के संयोग नहीं है अतः प्रेम सच्चा है। **योग (4)** में 5th SSL द्वारा संयोग 5, 7 के साथ 11 दर्शाया जाना निर्विघ्न प्रेम विवाह को दर्शाता है क्योंकि इस संयोग में 5वें या 7वें भाव के नकारात्मक भाव 4 या 6 सम्मिलित नहीं है। **योग (5)** में PS/STL द्वारा 5, 7, 11 भावों को दर्शाया जाना प्रेम विवाह में सफलता का द्योत्तक है परंतु SL द्वारा भाव 6, 12 का होना प्रेम विवाह में असफलता का कारण है वहीं **योग (6)** में SL द्वारा प्राप्त भाव (4, 10) प्रेम में सफलता वाले भावों (5, 11) का नकारात्मक भाव है अतः यह संयोग प्रेम संबंध बनाने हेतु चल रहे प्रयासों में असफलता देगा। **योग (7)** में 11th SSL (जो कि मित्र का भाव है) अपने PS/STL के द्वारा 5वाँ भाव [जो कि 11वें का 7वाँ भाव (संभोग/सहवास भाव) है] एवं SL द्वारा भाव 7 एवं 12 दर्शा रहे हैं, जो कि लग्न (जातक) का 7वाँ तथा 12वाँ भाव है। अतः महिला या पुरुष मित्र से प्रेमवश शारीरिक संबंध कहा गया है। पुनः दोहराने की आवश्यकता नहीं है कि किसी भाव के SSL के SSL का निर्णय अंतिम होता है।

सट्टा या शेयर बाज़ार - लाभ या हानि ?

5वाँ भाव शेयर, सट्टा आदि का भाव है। शेयर, सट्टा आदि से लाभ या हानि की संभावनाओं को 5th SSL के PS/STL तथा SL के भावों द्वारा समझा जा सकता है। नीचे दिये गये समीकरण से आप सहज़ ही सट्टा शेयर बाज़ार से लाभ या हानि का अनुमान लगा सकते हैं।

5th SSL	**PS/ STL**	**SL**	**फल**
योग (1)	5	2, 11	शेयर, सट्टा आदि से धन लाभ।
योग (2)	2	11	शेयर, सट्टा आदि से धन लाभ।
योग (3)	2	5, 8, 12/8, 12	शेयर, सट्टा आदि से धन हानि।

योग (1) एवं (2) में शेयर एवं सट्टे से लाभ के संयोग है क्योंकि 5th SSL अपने PS/STL द्वारा 2 (धन भाव) तथा 5 (शेयर/सट्टा) भाव दर्शा रहा है तथा SL 2, 11 या 11 में जा कर भाव 2 एवं 5 को समर्थन दे रहे हैं अर्थात शेयर/सट्टे से लाभ दे रहे हैं। योग (3) में SL 2रे भाव से सभी हानि वाले भावों (5, 8, 12/ 8, 12) में गया हुआ है अतः ऐसे योग शेयर अथवा सट्टे से धन की हानि देगा।

पंचम भाव एवं व्यापार-व्यवसाय :

पंचम भाव से खेल-क्रीड़ा, चल-चित्र व्यवसाय जैसे - अभिनयशाला, नाट्यशाला (सिनेमा थियेटर), अभिनय, मनोरंजन, शेयर बाज़ार, सट्टा इत्यादि का विचार किया जाता है। नीचे पंचम भाव से कुछ व्यापारिक हानि-लाभ के संयोग दिये जा रहे हैं।

5th SSL	PS/STL	SL	SSL	फल
योग (1)	5	2, 6, 10, 11	6 या 10	पंचम भाव के सभी कारकों के व्यवसाय से लाभ
योग (2)	5, 3	2, 6, 10, 11	3 या 10	घर के अंदर खेले जाने वाले खेलों (जैसे–चेस, कैरमबोर्ड, बैड्मिंटन, टेबल–टेनिस, वॉलिबॉल) में सफलता एवं लाभ।
योग (3)	5, 3	2, 6, 11	6 या 11	चित्रकारिता, मॉडलिंग, सिनेमा, विज्ञापन–व्यवसाय या फिल्मी गीत/

				कहानियों के लेखन व्यवसाय से लाभ।
योग (4)	5, 2	6, 11	6 या 11	गायक कलाकार अथवा गायकी आदि व्यवसाय।
योग (5)	3, 7, 9	2, 11	3 या 7, 11	विवाह कराने वाली व्यवसायिक इकाइयाँ
योग (6)	3, 11	2, 11	3 या 11	दावत, भोज, उत्त्सव की व्यवस्था आदि का व्यवसाय।
योग (7)	3, 12	6, 11	6 या 11	गुप्त अथवा अनैतिक दलाली व्यवसाय।

योग (8)	5	4, 8, 12/6, 8, 12	8 या 12	पंचम भाव से संबंधित व्यापार–व्यवसाय में असफलता।

योग (2) एवं (3) में 5वें भाव के साथ साथ 3रे भाव की युति हाथ एवं शारीरिक अंगों से कार्य, खेल–क्रीड़ा को दर्शाता है। यहाँ एक बात बताना चहुंगा कि घटना यदि 5th SSL द्वारा दर्शायी जा रही हो तो PS/STL द्वारा भाव 5, 3 के स्थान पर केवल भाव 3 भी दर्शाया जाये तो किसी भी प्रकार से कोई अंतर नहीं होगा। योग (5) में 3रा भाव (लग्न का 7वे से भेंट या मुलाकात का भाव है) तथा 9वाँ भाव (सप्तम भाव का लग्न से भेंट या मुलाकात का भाव है)

योग (8) में SL द्वारा दिखाये गये सभी भाव, पंचम एवं लग्न से प्रतिकूल भाव हैं। ध्यान दें 5वें भाव से संबंधित सभी घटनायें चाहे वे व्यापारिक हो चाहे व्यवसायिक, आवश्यक नहीं की 5वें भाव जनित सभी घटनाओं की विफलता हेतु SL द्वारा सभी प्रतिकूल भाव दर्शायें जायें। दो या दो से अधिक भावों के प्रतिकूल होने पर भी भाव जनित फल बाधित हो जाते है। इसके विपरीत यदि प्रतिकूल भावों के साथ साथ अनुकूल भावों की भी युति हो तो फल बाधा एवं विलम्ब से प्राप्त होगा।

षष्ठ भाव

छठा भाव लग्न का तटस्थ भाव है। इस भाव की युति शुभ एवं कारक भावों के साथ हो तो उत्तम फल प्राप्त होते है इसके विपरीत छठे भाव की युति अशुभ या अकारक भावों के साथ हो तो अशुभ एवं बुरे फलों की प्राप्ति होती है।

कारकत्व :

नौकरी, रोजगार, व्यवसाय, रोग, ऋण, कष्ट एवं कठिनाई, शत्रु, विजय, मुक्कदमा, संघर्ष, प्रतियोगिता, प्रतिस्पर्धा, अधिनस्थ कर्मचारी, विरोध, नौकर, पालतु पशु अथवा जानवर, किराया-भाड़ा, चोरी, जीवन साथी अथवा साझेदारी में संबंध-विच्छेद, छोटे मामा-मौसी इत्यादि का कारक भाव है।

आप सभी जानते हैं कि किसी घटना के घटित होने के लिये प्राथमिक भाव के साथ सहायक भावों की युति आवश्यक होती है। साधारणतः प्राथमिक भाव PS/STL द्वारा तथा सहायक भाव SL द्वारा दर्शाया जाता है। किसी घटना के घटित होने के लिये प्राथमिक भाव के साथ कौन सा सहायक भाव कारक होगा इसका निर्णय तार्किक रूप से करना चाहिये। छठे भाव से संबंधित कुछ संभावित घटनाओं के भाव संयोगों का व्याख्यान तार्किक रूप से नीचे दिये जा रहे हैं।

रोग :

छठा भाव रोग का भाव है। इस भाव की युति 8वें या 12वें भाव से होने पर असाध्य रोग, शल्य चिकित्सा आदि की पूर्ण संभावना बनेंगी। स्मरण रहे कि जातक के रोगी होने की संभावना लग्न तथा 6ठे, दोनों भावों के SSL द्वारा दर्शाया जाना आवश्यक है।

6th SSL	PS/ STL	SL	SSL	फल
योग (1)	1	6	1 या 6	साधारण रोग
योग (2)	6	1	1 या 6	साधारण रोग
योग (3)	1, 6	6, 8, 12	6 या 8 या 12	असाध्य रोग, शल्य चिकित्सा।
योग (4)	6, 8, 12	1, बाधकेश	6 या 8 या 12	असाध्य रोग, शल्य चिकित्सा
योग (5)	1, 6, 8	5, 9, 11	5 या 9	रोग का ठीक होना
योग (6)	1, 5, 9, 11	1, 5, 9, 11	5, 9 या 11	उत्तम स्वास्थ्य, निरोगी काया।
योग (7)	1, 6, 8, 12	1, 5, 6, 8, 12	5, 9 या 11	रोग का अंततः ठीक होना।

विशेष :

छठे भाव के SSL को यदि स्वाबलंबन (PS) प्राप्त हो तो ऐसे में दोनों ग्रहों (6ठे भाव का SSL तथा SSL के STL) की उपस्थिति निरायन भाव चलित या कुण्डली के 6ठे भाव में होने पर जातक को रोग संभावित है। यदि 6ठे भाव के SSL को स्वाबलंबन (PS) प्राप्त ना हो तो ऐसे में रोग हेतु SSL के STL की उपस्थिति निरायन भाव चलित या कुण्डली के 6ठे भाव में होना आवश्यक है। इसी क्रम में 6ठे भाव के SSL का SL (निरायन भाव चलित में PS होकर एवं कुण्डली) जिन जिन भावों में उपस्थित होगा उसी भाव जनित अंगों में रोग से जातक पीड़ित होगा। मान ले 6ठे भाव के SSL का SL (निरायन भाव चलित एवं कुण्डली) 1 से 12 सभी भावों में गया हो तो तो क्या सभी अंगों में रोग होगा ?? नहीं ! यहाँ SL द्वारा दर्शाये गये भावों के SSL द्वारा भी रोग को दर्शाया जाना आवश्यक है। अर्थात जिस भाव का SSL अपने PS/STL द्वारा रोग भाव (6ठा) में जाये एवं अपने SL द्वारा रोग को समर्थन प्राप्त करे उसी भाव से संबंधित अंगों में रोग संभावित होगा। जातक को कौन सा या कैसा रोग संभावित है इसका अनुमान राशि, नक्षत्र एवं ग्रह से लगाते हैं। इसे एक उदाहरण से समझने का प्रयास करेंगे। मान लें 6ठे भाव का SSL ग्रह अपने PS/STL (यहाँ नक्षत्र द्वारा रोग दर्शाने की बात हो रही है) द्वारा एक साथ कई रोग दर्शाये जैसे गुर्दे से संबंधित रोग (7वाँ भाव), टी.बी (4था भाव), स्वाँस संबंधी रोग (3रा भाव), स्पाइनल संबंधी रोग (10वाँ भाव) इत्यादि। ऐसी स्थिति में SSL ग्रह का जो नक्षत्र स्वामी ग्रह है उसे रोग से संबंधित भावों में जाना आवश्यक है साथ ही साथ SL द्वारा समर्थन मिलना आवश्यक है। यदि किसी जातक को गुर्दे से संबंधित रोग हो परंतु उप नक्षत्र स्वामी 7वें भाव में ना जाकर 4थे भाव में या 3रे भाव में या फिर 10वें भाव में हो तो अब गुर्दा, छाती

या स्वाँस नली या रीढ़ की हड्डी में तो नहीं हो सकता है ना ? अतः गुर्दे के रोग के लिये उप नक्षत्र स्वामी का 7वे भाव में जाना आवश्यक है पुनः यहाँ 7वे भाव के SSL ग्रह को भी अपने PS/STL द्वारा रोग के भाव में जाना भी आवश्यक है तभी गुर्दा रोग संभावित होगा। 6ठे भाव के SSL के नक्षत्र स्वामी द्वारा दर्शाये गये रोग से संबंधित भाव या भावों के SSL ग्रह को भी अपने PS/STL द्वारा रोग के भाव या भावों में जाना आवश्यक है। अन्यथा नक्षत्र द्वारा दर्शाया गया रोग नहीं होगा। नक्षत्रों द्वारा विभिन्न रोगों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है –

नक्षत्र एवं रोग :

अश्विनी नक्षत्र :

बुखार, सिर दर्द, दिमागी बुखार, ललाट पर चोट, लकवा, सिर में ट्यूमर, उच्च रक्त चाप, बुद्धिभ्रम, विक्षिप्तता (मिर्गी) कुल मिला कर सिर से संबंधित रोग/परेशानी संभावित है। नक्षत्र अंग अधिकार – पाँव व पाँव का ऊपरी भाग, नक्षत्र देवता – अश्विनी कुमार।

भरणी नक्षत्र :

नज़ला, जुकाम, कफ, अंधापन, अति कामुकता, गुप्त रोग, पेट संबंधित रोग। नक्षत्र अंग अधिकार – पाँव के तलवे, नक्षत्र देवता – यम।

कृतिका नक्षत्र :

हैज़ा, मलेरिया, चेचक, दिमागी बुखार, चक्कर आना, हृदय रोग, आँखों के रोग, रक्तचाप, अनिंद्रा तथा घुटने एवं ज़ोडों का दर्द, गर्दन में रोग, टॉनसिल्स, कफ, मुख रोग, फोडा, फुंसी, निचला जबड़ा, पाएरिया अथवा दन्त रोग। नक्षत्र अंग अधिकार – शिर, नक्षत्र देवता – अग्नि।

रोहिणी नक्षत्र :

सर्दी जुकाम, गर्दन एवं पाँव संबंधित रोग, टॉनसिल्स, छाती में सुजन, सिर दर्द, सिर पर चोट के कारण रोग अथवा कष्ट, महिलाओ को महावारी संबंधी रोग, गुप्त रोग, जलिये रोग तथा जोड़ों का दर्द। नक्षत्र अंग अधिकार – मस्तक (ललाट), नक्षत्र देवता – ब्रह्मा जी।

मृगशिरा नक्षत्र :

मुख रोग, सर्दी, खाँसी, डिप्थेरिया, कब्ज़, पोलीपस, कण्ठ रोग, नेत्र विकार, गला, कंधा, बाजू, रक्त विकार, बात, कप, पित्त, गुप्तांग एवं त्वचा रोग। नक्षत्र अंग अधिकार – भौंह, नक्षत्र देवता – चंद्रमा।

आर्द्रा नक्षत्र :

गला, कंधा, बाजू संबंधित कष्ट या रोग, तेज बुखार, मानसिक तनाव, एवं विक्षिप्तता, वायु विकार, सर्दी–खांसी, कफ, सुखी खाँसी तथा कान संबंधित रोग। नक्षत्र अंग अधिकार – आँखें, नक्षत्र देवता – शिव भगवान।

पुनर्वसु नक्षत्र :

स्वाँश नली में सुजन, टी.बी, पाचन संबंधित रोग, जलोदेर रोग, गुर्दा, पेट से संबंधित रोग, तीव्र बुखार, छाती संबंधित रोग, कफ, द्न्त रोग (पायेरिया), हाइपेप्सिय, एंज़ाइम डेफिसेंसी, नक्षत्र अंग अधिकार – नाक, नक्षत्र देवता – आदित्य/सूर्य।

पुष्य नक्षत्र :

फेफड़ों का कैंसर, टी.बी, स्थमा, गैसट्रिक अल्सर, चर्बी रोग, पिलिय, पथरी, तपेदिक, विटामिन सी की कमी, एक्ज़ीमा, पाचन एवं पेट संबंधित

रोग, छाती में अंदरूनी चोट, नक्षत्र अंग अधिकार – मुख, नक्षत्र देवता – बृहस्पति।

आश्लेषा नक्षत्र :

लीवर रोग, पाचन रोग, पिलिया, पथरी, एलर्ज़ी, सर्दी–खाँसी, हिस्टीरिया, दंत रोग, फूड प्वाइज़न, गैस संबंधित रोग, जाँडिस, जलोदर रोग, अपाचन, नक्षत्र अंग अधिकार – कान, नक्षत्र देवता – नाग।

मघा नक्षत्र :

हृदय रोग, रीढ़ या मेरुदंड संबंधित रोग, शरीर के आधे अंग में पीड़ा, शिर में पीड़ा, गुर्दा रोग, मानसिक एवं शारीरिक रोग, धड़कन संबंधी रोग, मिर्गी या मुर्छा रोग, नक्षत्र अंग अधिकार – होठ, नक्षत्र देवता – अर्यमन नामक पित्तर देवता।

पुर्वाफाल्गुनी नक्षत्र :

हृदय रोग, बी.पी., स्पाइनल (रीढ़) कोर्ड संबंधित रोग, स्थमा, सिर दर्द, पसलियों में दर्द, स्त्री या पुरुष के जननांगो में पीड़ा, गर्भपात, नाड़ी रोग, थैलेसिमियाँ या अनिमिया, हाईड्रेमिया। नक्षत्र अंग अधिकार – दाहिनी भुजा, नक्षत्र देवता – भग।

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र :

कंधों में कष्ट, पीठ दर्द, सिर दर्द, मियादी बुखार, त्वचा रोग, नेत्र रोग, उच्च रक्त चाप, मानसिक उग्रता, हृदय रोग, एसिडिटी, पेट में विकार, रीढ़ संबंधित रोग, लीवर अमोयेबिक डिसेंट्री, सुखा रोग, हैज़ा, अतिसार रोग, अपेंडिसाइटिस। नक्षत्र अंग अधिकार – बाँई भुजा, नक्षत्र देवता – अर्यमा (सूर्य देव के पुजारी)।

हस्त नक्षत्र :

गैस्ट्रिक ट्रबल, डिसेंट्री, हिस्टिरिया, एमोइबिक डिसेंट्री, अफरा, पेट दर्द, पाचन विकार, आंतो में विकार, त्वचा रोग, अतिसार, सुखा रोग, विटामिन बी की कमी, मियादी बुखार, हाथों या बाजुओं में शक्ति हीनता, पथरी मधुमेह, किडनी–मूत्र दोष, फेफड़ों एवं स्वांश संबंधित रोग। नक्षत्र अंग अधिकार – ऊंगलियाँ, नक्षत्र देवता – सूर्य।

चित्रा नक्षत्र :

अल्सर, पित्त दोष, शीघ्र क्रोधित होना, उदर विकार, गर्भाशय–विकार, दिमागी बुखार (हेड फीवर), पोलियुरिया, गैस्ट्रिक, हर्निया, शुगर (डायिटीज़), किडनी रोग, पथरी, नक्षत्र अंग अधिकार – गर्दन, नक्षत्र देवता – विश्वकर्मा।

स्वाति नक्षत्र :

अण्डकोष एवं किडनी विकार, बहुमूत्र रोग, अपेंडिसाइटिस, पोलियुरिया, पथरी, खुज़ली, कोढ़, एग्ज़िमा, ल्यूकोडर्मा, ब्राइट्स रोग, त्वचा रोग, छाती–पीठ रोग, गर्भाशय रोग, अफारा, गठिया रोग। नक्षत्र अंग अधिकार – छाती, नक्षत्र देवता – पवन।

विशाखा नक्षत्र :

बहुमूत्र रोग, डायबटीज़, किडनी, त्वचा रोग, उच्च रक्त चाप, लो बी.पी. , हिस्टिरिया, शारीरिक– मानसिक–हृदय पीड़ा, गुर्दे में पीड़ा, पाचन रोग, रेनल एब्सेंस, श्वेत प्रदर, पौरुष ग्रन्थी वृद्धि, शुक्राणु न्युनता, गुप्त रोग भय, मासिकधर्म में अनियमितता, पाइल्स रोग, नक्षत्र अंग अधिकार – हृदय, नक्षत्र देवता – इन्द्राग्नि।

अनुराधा नक्षत्र :

नाक से खून आना, मासिक धर्म में अनियमितता, कफ, पाइल्स, एनिमिक, पेट रोग, तीव्र बुखार, गठिया, वात-पित्त जनित दीर्घकालीन रोग, दुर्घटना में चोट आदि से कष्ट, मलाशय (रेक्टम) रोग, जननांग संबंधी रोग, नक्षत्र अंग अधिकार - पेट, नक्षत्र देवता - सूर्य।

ज्येष्ठा नक्षत्र :

वात-पित्त रोग, व्याकुलता, गुप्तांगो में रोग, आँतों में कष्ट या विकार, अतिकामुकता, कंधों में दर्द, रक्त विकार, दाद, खुज़ली, त्वचा रोग, बबासीर, गर्भाशय रोग, पाइल्स, फिस्तुला, नक्षत्र अंग अधिकार - अमायश, नक्षत्र देवता - ईन्द्र।

मूल नक्षत्र :

नितम्ब रोग, नाड़ी (नस) दौर्बल्य, हृदय रोग, इंसोम्निया, पक्षाघात, हाई-लो बी.पी, गर्भाशय रोग, कोख, कमर, जांघो एवं घुटनो में रोग, गठिया, पेट गैस, मुख रोग, क्रोध-उत्तेज़ना, त्वचा रोग, फोडा-फुंसी। नक्षत्र अंग अधिकार - बाँई कुक्षि, नक्षत्र देवता - नैर्ऋति।

पुर्वाषाढ़ नक्षत्र :

लेप्रोसी, फेफड़ों में रोग, डायबटीज़, सर्दी-कफ, हृदय विकार, रक्त दोष, रीढ़ की हड्डी में रोग, मूत्राशय, पथरी, धातु क्षीणता, चर्बी रोग, लीवर एवं गुप्त रोग, नक्षत्र अंग अधिकार - पीठ, नक्षत्र देवता - जल।

उत्तराषाढ़ नक्षत्र :

लेप्रोसी, लकवा (पैरालिसिस), पित विकार, सिर दर्द, हृदय रोग, अतिसार, रीढ़ की हड्डी में रोग, उच्च रक्त चाप, जलीय रोग, अपचन, चर्म एवं

नेत्र रोग, टाइफाइड, गठिया, पाचान रोग, श्वाँस रोग, नसों के रोग। नक्षत्र अंग अधिकार – रीढ, नक्षत्र देवता – विश्व देव।

श्रवण नक्षत्र :

श्वेत प्रदर रोग, एक्ज़ीमा, एलर्ज़ी, मंदाग्नि, कमर दर्द, स्नायु दौर्बल्य, पथरी, पिलिया, त्वचा रोग, पाचन दौर्बल्य, नेत्र विकार, अनिंद्रा, उन्माद रोग, कैल्शियम की कमी, रक्त विकार, सर्दी–कफ, वातशूल, नक्षत्र अंग अधिकार – कमर।

धनिष्ठा नक्षत्र :

घुटनों एवं जोड़ों में दर्द/रोग, सूजन, मासिक धर्म में अनियमितता या गडबड़ी, हृदय रोग, सर्दी, एसिडिटी, सुखी खाँसी, बलगम, पेट–विकार, दॉतों के रोग, नेत्र विकार, दाद–दिनाई, स्नायु दौर्बल्य, चिड़्चिडापन, मिर्गी, उच्च अथवा लो – बी.पी, पीलिया, पथरी एवं गुप्त रोग, रक्त विकार, पैरों–एडियों में फ्रैक्चर तथा लीवर संबंधित रोग, नक्षत्र अंग अधिकार – गुदा द्वार, नक्षत्र देवता – वसु।

शतभिषा नक्षत्र :

मतिभ्रम, अनिन्द्रा, विभिन्न प्रकार के रक्त चाप, पीलिया, गैस्ट्रिक, पथरी, जोड़ों का दर्द, खाज़, खुज़ली, चर्म रोग, पक्षाघात, शिर–नेत्र रोग, पैरों के रोग, नक्षत्र अंग अधिकार – दाहिनी जाँघ, नक्षत्र देवता – वरुण।

पुर्वाभाद्रपद नक्षत्र :

गैस्ट्रिक अल्सर, हर्नियाँ, पैरो–अंगूठों में रोग–कष्ट, मस्तिष्क एवं नेत्र पीड़ा, हृदय रोग, घुटनों एवं पाँव में सुजन, शारीरिक स्थुलता, पथरी, पीलिय, मुर्छा, हिस्टिरिया, नक्षत्र अंग अधिकार – बाँई जाँघ।

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र :

पक्षाघात, ड्रौप्सी, पेट के निचले भाग में अल्सर, पाचन या कब्ज़ियत रोग, पाईल्स, दुर्बलता, पथरी, हाथ-पाँव सुन्न होना, पसीना आना, चर्म रोग, अनियमित रक्त चाप, मेरु दण्ड रोग, दंत क्षय, नक्षत्र अंग अधिकार - पिंडलियाँ, नक्षत्र देवता- अहिर्बुधन्य।

रेवती नक्षत्र :

बहरापन, पेट में अल्सर, पैर एवं अंगूठों में असमानता, नाड़ी कंपंन, वात-कफ, दाद-खुज़ली, चर्म रोग, खाँसी कर्ण शूल, अतड़ियों के रोग, उदर-विकार, नशे की लत के कारण बिमारी, अम्लपित्त, एलर्ज़ी एवं अनिंन्द्रा, नक्षत्र अंग अधिकार - घुटने, नक्षत्र देवता - पूषा।

भाव एवं रोग :

प्रथम भाव :

सिर से संबंधित रोग जैसे - सिर दर्द, अधकपारी, विस्माण (भूलने की विमारी), मतिभ्रम, उन्नमाद रोग, दिमागी बुखार, मिर्गी, सिर में गुल्म या गिल्टी, पागलपन, मानसिक रोग।

द्वितीय भाव :

नेत्र रोग, वाणी दोष, जिह्वा एवं दंत रोग, गला एवं नाक में रोग जैसे - गूँगापन अथवा ध्राण क्षिर्णता, टॉन्सिल्स, नाखून।

तृतीय भाव :

कार्ण (कान) रोग जैसे बहरापन, बाजू, कंधें, स्वाँस नली से संबंधित रोग, मानसिक रोग, भोजन नलिका, स्वप्न दोष इत्यादि।

चतुर्थ भाव :

छाती, फेफड़ा, दिल, डायफ्राम, वक्षस्थल एवं उनकी रक्त वाहिनियाँ।

पंचम भाव :

पेट, अमाशय, पित्त की थैली, तिल्ली, यकृत, नाभि, गर्भ, पाचन अंग जैसे – अग्नाशय, पक्वाशय।

षष्ट भाव :

छोटी आँत, डायबटीज़, आंत्रपेशी, अपेंडिक्स, गुर्दा, ऊपरी मूत्र प्रणाली, घाव, पागलपन, बलगम रोग (टी.बी), गिल्टियाँ, छाले, अमाशय रोग, अल्सर, हर्नियाँ।

सप्तम भाव :

बड़ी आँत, निचला मूत्र भाग, मूत्र नली, किडनी, गर्भाशय, अंडाश, टेस्टीकल्स, प्रोस्ट्रेट ग्लॉड्स, शुक्राणु, वेनेरियल डीजिज़, नपुंसकता, ठंडापन, बाँझपन, मासिक धर्म में अनियमितता।

अष्टम भाव :

जननांग, गुदा द्वार (रेक्टम), स्कोरटम, पाइल्स, फिस्टुला, ट्यूमर, अल्सर, अण्डकोष, दीर्घकालीन रोग, मानसिक रोग।

नवम भाव :

कुल्हा, जांघ एवं जांघों की रक्त वाहनियाँ, पछाघात, नितम्ब (हिप), मोटापा, साटिका, सुजन, ब्रॉकाईटिस।

दशम भाव :

घुटने, घुटनों के ज़ोड़, रीढ़ की हड्डी एवं जुड़ी हुई नसें, पीठ दर्द।

एकादश भाव :

पैर (घुटनों से नीचे का भाग), बायाँ कान, रक्त संचार पद्धति (घुटने से पीछे का निचला भाग हृदय की भाँति रक्त संचार में सहायक होता है)।

द्वादश भाव :

पाँव, पाँव के तलवे, बाँई आँख, एड़ी, स्नायु व्यवस्था, अनिंद्रा, मांनसिक असंतुलन, अपूर्ण अंग।

राशि एवं रोग :

मेष राशि :

शिर, दिमाग एवं दिमाग की नसें, सिर दर्द, चेचक, कोमा, मुर्छा, सूजन।

वृष राशि :

पाइल्स, फिस्टुल, टॉन्सिल्स, गुंगापन, गले से संबंधित रोग, डिफ्थेरिया, मासिक धर्म में अनियमितता, नासिका रोग, स्वाँस रोग, गर्दन रोग (सरवाइकल)।

मिथुन राशि :

थाइराइड, रीढ़ संबंधित रोग, स्वर ग्रंथि रोग, भुजा एवं कंधों में कष्ट, नाड़ी रोग, गर्भाशय (फिलोपिंस ट्युब) स्वाँस नली से संबंधित रोग, किडनी से जुड़ी नसों में कष्ट।

कर्क राशि :

हृदय रोग (दिल से संबंधित रोग), गर्भाशय रोग, दिमागी रोग, नेत्र विकार, पेट रोग, यकृत (जिगर या लीवर) रोग, उदर या अमाशयिक

संबंधित रोग, अपचन, बलगम, जलोदर रोग, हिस्टेरिया, हाइपोकोंड्रिया, वक्ष स्थल रोग, पीलिया, पित्त रोग, कार्सिनोमा।

सिंह राशि :

दिल संबंधित रोग या कष्ट, रीढ़ से संबंधित रोग, रक्त चाप, चक्कर आना, मुर्छा रोग, रक्त की कमी, कोलेस्ट्रोल।

कन्या राशि :

पेट का निचला भाग, जिगर के निचले भाग में रोग, पाचन अंगों में गडबड़ी, बड़ी आँत, पीलिया, आंत्र-ज्वर, हैज़ा, अपेंडिसाइटिस, डाईरिया।

तुला राशि :

किडनी, मूत्र संबंधी रोग, पोलियुरिया, गर्भाशय रोग, कमर दर्द, गठिया रोग, फंगस रोग, चर्म रोग, रक्त संबंधी रोग जैसे - रक्त की कमी, रतौंधी इत्यादि।

वृश्चिक राशि :

पाइल्स, फिस्टुला, रेक्टम (गुदा द्वार), ब्लाडर-स्टोन, अनियमित मासिक-धर्म, नितम्ब रोग, यकृत में पथरी, अण्डकोष एवं नितम्ब रोग, फफून्दी संक्रमण।

धनु राशि :

गठिया रोग, साइटिका, नशों में रोग, कॉलर-बोन फ्रैक्चर, पेल्विक ऑपरेशन, जाँघों में कष्ट।

मकर राशि :

बाल झडना, चर्म रोग, जोड़ों का दर्द, ऐडी एवं घुटनों से संबंधित परेशानी, पेट, गुर्दा रोग, मस्तिक रोग, हृदय रोग, गठिया रोग, रक्त संबंधी रोग।

कुम्भ राशि :

पैरों में कष्ट (घुटनों से नीचे), वाम – कंधा, कान एवं आँख आदि में रोग जैसे – रेटिना, मोतियाबिंद इत्यादि, रीढ़ की हड्डी में रोग अथवा कष्ट, जलोदर रोग, टखनों में कष्ट, रक्त संचार पद्धति (घुटने से पीछे का निचला भाग हृदय की भाँति रक्त संचार में सहायक होता है), थाइरॉइड, पैरॉथाइरॉइड, टॉक्सिमिया–कॉलोन।

मीन राशि :

ऐड़ी, तलवा, अंगूठे, गठिया, कब्ज़, जलोदर रोग, यकृत संबंधित रोग जैसे – पीलिया, सिरॉसिस, रक्त एवं फेफड़ों के रोग, हॉइपो इनसुलिनिस्म, मुख्य नसों से संबंधित रोग, हर्नियाँ। अस्तु!

परीक्षा एवं प्रतियोगिताओं में सफलता/असफलता :

आधुनिक युग प्रतियोगिताओ का युग है। अतः सिमित साधनों की प्राप्ति हेतु प्रतियोगिता एवं प्रतिस्पर्धा का होना तय है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र जैसे – शिक्षा, नौकरी, व्यापार, खेल, अभिनय, लेखन इत्यादि में ख्याति एवं सफलता हेतु एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ प्रतियोगिता एवं प्रतिस्पर्धा को जन्म देती है। प्रतियोगिता एवं प्रतिस्पर्धा से संबंधित कुछ संभावित प्रश्न दिये जा रहे हैं –

- क्या मैं परीक्षा में सफलता प्राप्त करूंगा ?
- क्या मुझे साक्षात्कार में सफलता प्राप्त होगी ?
- क्या मै इस खेल में विजयी हो पाऊंगा ? इत्यादि।

इन सभी प्रश्नों के ऊत्तर ज्योतिषिये आधार पर सफलता पूर्वक दिये जा सकते हैं। इसी संदर्भ में नीचे कुछ समीकरण दिये जा रहे हैं।

6th SSL	**PS/STL**	**SL**	**फल**
समीकरण (1)	6	11	सफलता
समीकरण (2)	3	6, 11	लिखित परीक्षा में सफलता
समीकरण (3)	3	5, 8, 12 6, 8, 12 या 8, 12	असफलता
समीकरण (4)	3 या 6	6, 11 एवं 5, 12	सफलता या असफलता SSL पर निर्भर करेगा

ऊपर दिये गये समीकरण में 6ठे भाव की युति 11वें भाव से हो तो कार्य सिद्धि हो। 3रे भाव की युति भाव 6, 11 से हो तो जातक उक्त भाव जनित सभी कार्यों में सफलता प्राप्त करेगा जैसे – लिखित परीक्षा, छोटी यात्रा, ट्रेडिंग इत्यादि। इसके विपरीत भाव 5, 12 / 8, 12 से होने पर असफल रहेगा। इसी क्रम में 6^{th} SSL के PS/STL द्वारा किसी भाव को दर्शाया जाना एवं SL द्वारा लग्न एवं उक्त भाव (PS/STL द्वारा दर्शाये गये भाव) से अनुकूल भावों में जाना, उस भाव जनित कार्यों में सफलता को दर्शायेगा। इसके विपरीत प्रतिकूल भावों में जाना असफलता देगा।

किसी भी भाव के SSL के SSL का निर्णय अंतिम होता है। समीकरण (4) में यदि SSL 6, 11 दर्शाये तो अंततः सफलता अन्यथा असफलता प्राप्त होगी।

व्यापार-व्यवसाय में सफलता - असफलता :

जातक के जीवन में व्यापारिक अथवा व्यवसायिक स्थिति कैसी रहेगी ? क्या जातक अपने व्यवसायिक जीवन में सफलता प्राप्त करेगा ? अथवा उसका व्यापारिक जीवन अस्थिर या असफल रहेगा ? ऐसे सभी प्रश्नों के उत्तर हेतु कुंडली में प्रथम भाव के साथ साथ 6ठे भाव के SSL द्वारा भी जातक के व्यापारिक एवं व्यवसायिक स्थितियों का अवलोकन करना आवश्यक हैं। यदि प्रथम एवं 6ठे भावों के SSL धन (2) तथा सफलता (6, 10, 11) दर्शायें तो जातक निःसंदेह धन, मान, यश तथा सफलता प्राप्त करेगा। इसके विपरीत यदि प्रथम एवं 6ठे भावों के SSL असफलताओं (5, 8, 12 / 6, 8, 12 / 5, 12) वाले भाव दर्शाये तो जातक का व्यापारिक अथवा व्यवसायिक जीवन असफल रहता है। इसी क्रम में यदि सफलता एवं असफलताओं वाले भावों की युति हो तो जातक को मिले-जुले परिणाम प्राप्त होंगे। नीचे व्यापार - व्यवसाय से संबंधित कुछ समीकरण दिये जा रहे हैं।

6^{th} SSL	PS / STL	SL	SSL	फल
समीकरण (1)	2, 10	6, 11	2 या 6 या 11	व्यापारिक-व्यवसायिक सफलता
समीकरण (2)	6 या 7	10	6 या 7 या 10	व्यापारिक-व्यवसायिक सफलता
समीकरण (3)	10+ (अन्य भाव)	2, 11	2 या 11	भाव संबंधित व्यवसाय से लाभ

समीकरण (4)	2, 10	5, 8, 12/6, 8, 12	5 या 8 या 12	हानि एवं व्यापारिक असफलता
समीकरण (5)	6	5, 12	5 या 12	व्यवसायिक असफलता
समीकरण (6)	5, 8, 12/6, 8, 12	5, 9	5 या 9 या 8	आजीवन व्यवसायिक असफलता
समीकरण (7)	6, 10+5 8, 12	6, 11+5 12	6, 11	अंततः सफलता
समीकरण (8)	6, 10+5 8, 12	6, 11+5 12	5, 12	अंततः असफलता

समीकरण (1) में 6^{th} SSL के PS / STL द्वारा भाव 2 (धन) तथा 10 (व्यापार-व्यवसाय) दर्शाये गये है तथा SL द्वारा 6, 11 (सफलता) दर्शाया जाना व्यापार-व्यवसाय में धन लाभ एवं सफलता का द्योत्तक है। समीकरण (2) में 6ठा भाव नौकरी तथा 7वाँ भाव व्यापार को दर्शाता है (परंतु ऐसा नहीं कि भाव 6 केवल व्यवसाय तथा भाव 7 केवल व्यापार को दर्शाता है वास्तव में भाव 6 या 7 व्यापार एवं व्यवसाय दोनों को दर्शाते हैं) तथा SL द्वारा 10वाँ (कर्म) भाव व्यवसाय का प्रारंभिक/नैसर्गिक भाव है। समीकरण (3) में 10वें भाव के साथ अन्य भावों [जैसे - 2 (धन, रत्न), 3 (संचार, लेखन, पत्रकारिता), 4 (वाहन, अचल संपत्ति, उत्पादन), 5 (भोजनालय, अभिनय, शेयर), 6, 7 (नौकरी/व्यापार), 8 (बीमा), 9 (उच्च शिक्षण संस्थान, आयात-निर्यात), 11 (कीमती

वस्तुओं, कमर्शियल व्यापार या व्यवसाय) एवं 12वाँ भाव (विदेश, निवेश) इत्यादि से व्यापार व्यवसाय] की युति भाव संबंधित व्ययार-व्यवसाय दर्शाता है। समीकरण (4) में PS / STL द्वारा 2रा एवं 10वाँ भाव तथा SL द्वारा भाव 5, 8, 12/6, 8, 12 का दर्शाया जाना धन एवं व्यापार-व्यवसाय में हानि तथा असफलता का द्योत्तक है क्योंकि 5, 8, 12 एवं 6, 8, 12 धन (2) तथा व्यवसाय (10) दोनों के लिये प्रतिकूल भाव है। समीकरण (5) में PS / STL द्वारा 6ठा भाव तथा SL द्वारा भाव 5 (जो की 6ठे से 12वाँ है) एवं भाव 12 (जो कि लग्न से 12वाँ) दर्शाया गया है अत: असफलता को दर्शाता है। समीकरण (6) में प्राप्त सभी भाव धन एवं व्यापार-व्यवसाय से प्रतिकूल दर्शाये गये हैं। अत: ऐसे में जातक जीवन के आरंभ से अंत तक अपने व्यापार-व्यवसाय में असफल रहेगा। समीकरण (7) एवं (8) में 6th SSL के PS/STL/SL द्वारा सभी भाव एक समान दर्शाये गये है परंतु SSL के द्वारा 6, 11 सफलता एवं 5, 12 असफलता दर्शाता है।

कर्ज़ :

अपने कार्यों को पूरा करने हेतु दूसरों से लिया गया पैसा उधार अर्थात कर्ज़ है। छठा भाव कर्ज़ का भाव है। जब छठे भाव का संबंध 2रे एवं 11वें भाव से हो तो कर्ज़ से धन प्राप्ति की संभावना होती है।

6th SSL	PS/STL	SL	फल
समीकरण (1)	6	2, 11	कर्ज़ प्राप्ति के संयोग
समीकरण (2)	6, 2	2, 11+5, 8	कर्ज़ चुका पाने के संयोग

मुकद्दमा :

छठा भाव मुकद्दमा आदि का भाव है। जातक के जीवन में वाद-विवाद अर्थात मुकद्दमा संभावित है या नहीं इसका अवलोकन प्रथम एवं षष्ठ भाव के SSL के STL एवं SL के विभिन्न भावों में उपस्थितियों द्वारा करते है।

प्रथम भाव के SSL के नक्षत्र स्वामी का संबंध 6ठे भाव से हो तो वाद-विवाद अर्थात मुकद्दमा आदि संभावित है। प्रथम भाव के SSL के SL की उपस्थिति जिस-जिस भावों में होगी, वाद-विवाद अर्थात मुकद्दमा भी उसी भाव से संबंधित होगा। जैसे - प्रथम भाव से हो तो स्वयं के मान-सम्मान से। दूसरे भाव से हो तो धन, परिवार, बड़े मामा/मौसी से। तीसरे भाव से हो तो छोटे सहोदर, ससुर, कागज़ात एवं झुठे वायदों अथवा प्रचार से। चौथे भाव से हो तो माता, वाहन, जमीन-जायदाद से। पांचवे भाव से हो तो प्रथम संतान, शेयर या जुआ, खेल संबंधी मामलों के कारण। छठे भाव से हो तो कर्ज़, नौकरी, नौकरों से, चोरी से। सातवें भाव से हो तो पति या पत्नी अथवा वैवाहिक कारणों से, साझेदारी अथवा वैश्यावृती के कारण। आठवें भाव से हो तो बीमा से संबंधित मामलों से, पैतृक संपत्ति, लॉटरी अथवा उपहार में प्राप्त वस्तुओं के कारण, दुर्घटना आदि से, असामाजिक कार्यों के कारण। नवें भाव से हो तो पिता, छोटे साला या साली से, उच्च शिक्षण संस्थान से, आयात-निर्यात से, दूसरी पत्नी या पति से, अनैतिक संबंधों के कारण। दसवें भाव से हो तो व्यवसायिक कारणों से, पति या पत्नी के जमीन या चल अचल संपत्ति को लेकर। ग्यारहवें भाव से हो तो बड़े सहोदर से, मित्र से, छोटे चाचा से। बारहवें भाव से हो तो विदेश या गैर कानूनी कार्यों से। इसी क्रम में 6ठे भाव के SSL का नक्षत्र स्वामी जिस भाव से संबंधित होगा वाद-विवाद या मुकद्दमा भी उसी भाव से संबंधित होगा। यदि 6ठे भाव

के SSL का SL, नक्षत्र स्वामी के भावों का समर्थन करे अर्थात नक्षत्र स्वामी के भावों से 1, 2, 3, 5, 6, 9, 10 एवं 11वे हो तो मुकद्दमा प्रबलता से संभावित है इसके विपरीत यदि SL की उपस्थिति नक्षत्र स्वामी के भावों से 4, 7, 8 एवं 12वें हो तो मुकद्दमे की संभावना नहीं होगी। हाँ यहाँ एक बात स्मरण रखें यदि SL की उपस्थिति नक्षत्र स्वामी के भावों से 4, 7, 8 एवं 12वे तो हो परंतु वह भाव घटना का आवश्यक अथवा संबंधित या सहायक भाव है तो मुकद्दमे की संभावना बनी रहेगी।

मुकद्दमे से जुड़े कुछ संभावित प्रश्न :

- मुकद्दमे में हार होगी या जीत ?
- सज़ा के तौर पर कैद या जुर्माना ?

6^{th} SSL	PS/STL	SL	SSL	फल
समीकरण (1)	3	6, 11	3 या 6 या 11	मुकद्दमा करने का सही समय
समीकरण (2)	6	6, 11	6 या 11	मुकद्दमे में जीत
समीकरण (3)	6	5, 12	5 या 12	मुकद्दमे में हार
समीकरण (4)	6	5, 12+8	5 या 8 या 12	हार एवं जुर्माना
समीकरण (5)	6	5, 12+3, 8	3 या 12	हार एवं जे़ल/कैद

समीकरण (1) में मुकद्दमा करने का सही समय दर्शाया गया है। ऐसा ग्रह जो PS / STL के द्वारा 3रे भाव (लिखित आवेदन, सूचना) में हो तथा SL द्वारा 6, 11 (सफलता/विजय) भावों में जाये तथा ग्रह का SSL घटना के प्रारंभिक भाव के साथ साथ लग्न से भी अनुकूल भाव में हो अर्थात घटना को समर्थन दे रहा हो तो घटना के घटित होने की प्रबल संभावना होगी।

समीकरण (2) में ग्रहों की उपस्थिति PS / STL द्वारा 6ठे भाव में तथा SL की उपस्थिति 11 या 6, 11 भावों में दर्शाया जाना मुकद्दमा आदि में सफलता के संयोग है। यहाँ ध्यान से तर्क संगत विचार करें तो समझ पायेंगे कि 6ठा भाव ना सिर्फ मुकद्दमे का भाव है बल्कि 7वे (आपका शत्रु या प्रतिद्वंदी) का 12वाँ (जो की 7वें को परास्त करने का भाव भी है) भाव भी है।

समीकरण (3) में ग्रह की उपस्थिति PS / STL द्वारा 6ठे भाव में तथा SL द्वारा लग्न एवं 6ठे भाव से पराजय वाले भावों (5, 12 – जहाँ 5वाँ भाव 6ठे से 12वाँ है तथा 5, 12 भाव 7वें भाव का 6, 11 अर्थात शत्रु के विजय एवं आपके पराजय को दर्शाता है।) में जाना मुकद्दमे में हार को दर्शाता है।

समीकरण (4) में SL द्वारा भाव 5, 12 के साथ भाव 8 की उपस्थिति जुर्माने को दर्शाता है तथा समीकरण (5) में भाव 5, 12 के साथ भाव 3, 8वाँ (जहाँ 3रा भाव 4थे अर्थात घर से बाहर जाना, 8वाँ भाव दण्ड एवं अपमान एवं 12वाँ भाव जेल/कैद को दर्शाता है।) भाव जेल या कैद को दर्शाता है।

सेवक (नौकर या अधिनस्थ कर्मचारी) :

आज के युग में जहाँ सुख एवं सुविधा की प्राप्ति की होड़ लगी है एवं अपने कार्यों को पूरा करने (जैसे – घरेलू कार्य) हेतु नौकर रखने का प्रचलन बढ़ा है। नौकर या अधिनस्थ कर्मचारियों से संबंधित कुछ संभावित प्रश्नों की चर्चा करेंगे जैसे –

- नौकरों अथवा अधिनस्थ कर्मचारियों से लाभ या हानि ?
- नौकरों या अधिनस्थ कर्मचारियों द्वारा आरिष्ठ ?

नौकरों अथवा अधिनस्थ कर्मचारियों से लाभ या हानि :

6th SSL	PS/STL	SL	SSL	फल
समीकरण (1)	6 या 10	2, 11	2 या 10 या 11	अधिनस्थ/नौकर से लाभ
समीकरण (2)	2 या 10	5, 8, 12	5 या 8 या 12	अधिनस्थ/नौकर से हानि
समीकरण (3)	2 या 4	12	8 या 12	धन, वाहनादि संपत्ति की हानि

समीकरण (1) में 6जी SSL के PS / STL द्वारा 6ठा या 10वाँ भाव (जातक का व्यापार/व्यवसाय/कैरिअर) दर्शाये जाने से तात्पर्य है कि नौकर या अधिनस्थ कर्मचारी से आपका व्यापार–व्यवसाय प्रभावित है एवं SL द्वारा लग्न एवं 6ठे भाव से लाभ एवं अनुकूल भाव (2, 11) नौकरों अथवा अधिनस्थ कर्मचारी से लाभ को दर्शाता है। इसके विपरीत समीकरण (2) में SL द्वारा लग्न तथा भाव 2, 10 (धन एवं व्यवसाय)

से प्रतिकूल एवं हानि वाले भावों (5, 8, 12) का दर्शाया जाना नौकरों अथवा अधिनस्थ कर्मचारियों द्वारा हानि को दर्शाता है। समीकरण (3) में भाव 2 एवं 4 जातक के धन, स्वर्ण एवं वाहन, अचल संपत्ति को दर्शाता है तथा SL द्वारा भाव 12वाँ दर्शाये गये वस्तुओं की हानि या क्षति को दर्शाता है वहीं SSL द्वारा भी हानि एवं क्षति (8वाँ एवं 12वाँ भाव) दर्शाया गया है।

नौकरों या अधिनस्थ कर्मचारियों द्वारा आरिष्ठ :

6^{th} SSL	PS/STL	SL	SSL	फल
समीकरण (1)	1	8	मारक + बाधक	नौकर या अधिनस्थ से आरिष्ट या हत्या
समीकरण (1)	8	1, 12	8 या 12	नौकर या अधिनस्थ अपमान

6ठे भाव के SSL अपने PS / STL के द्वारा लग्न (प्रथम भाव) में जाये तथा SL द्वारा आरिष्ठ कारक भाव जैसे - 2, 7, 8, बाधकेश एवं 6ठे भाव के SSL के SSL द्वारा समर्थन प्राप्त हो रहा हो तो 6ठे भाव के अंतर्गत आने वाले सभी व्यक्ति जैसे - नौकर, अधिनस्थ कर्मचारी, छोटे मामा, मौसी यहाँ तक की पालतू जानवर भी जातक के घातक होंगे।

सप्तम भाव

कारकत्व :

व्यापार, स्वतंत्र व्यवसायिक इकाईयाँ, पति या पत्नी, विवाह एवं तलाक, साझेदारी, संभोग, शुक्राणु (वीर्य), सामाजिक संबंध, अंतर्राष्ट्रिय संबंध, बैंक तथा यात्रा में परिवर्तन।

विशेष :

सातवाँ भाव अत्यंत महत्वपूर्ण भाव है। इस भाव से संबंधित फलादेश करते समय सहायक भावों का ध्यान रखना भी आवश्यक है अन्यथा फल कथन में भारी चूक हो सकती है। स्पष्ट रूप से कहें तो आप जो कुछ भी करते है 7वाँ भाव वहाँ आपका प्रतिद्वंदी के रूप में कार्य करता है। घटनाओं के लिये प्राथमिक, सहायक तथा संबंधित भावों का चयन भी लग्न के साथ साथ सप्तम भाव (आपके तात्कालिक प्रतिद्वंदी या साझेदार या यूं कहे कि वो व्यक्ति जिसके साथ आप व्यवहार या व्यापार कर रहे हैं।) को ध्यान में रख कर करते हैं।

उदाहरण स्वरूप व्यापार में लाभ या हानि की बात करें तो कुछ बातों पर रोशनी डालनी आवश्यक है, जैसे :- यदि किसी जातक को व्यापार में लाभ हुआ है तो निश्चय ही किसी को हानि हुई होगी या किसी ने व्यय किया होगा। यहाँ 7वे भाव अर्थात आपके प्रतिद्वंदी को धन की हानि हुई है। लाभ के लिये संयोग हैं - 2, 6, 11 जहाँ 2 (धन) 6, 11 सफलता एवं विजय का सूचक है। 7वें भाव से 2, 6, 11 क्रमशः 8, 12, 5वाँ

भाव है जो की हानि एवं असफलता का सूचक है। इसी क्रम में दशानाथ द्वारा 5, 8, 12 दर्शाये जा रहे हों तो आपके हानि एवं विफलता का सूचक है। आपको हानि होना किसी और को (7वाँ भाव अर्थात आपके प्रतिद्वंदी को) लाभ होना दर्शाता है। यहाँ लग्न से 5, 8, 12 सातवें भाव का 2, 6, 11वाँ भाव है जो कि उसके लाभ एवं विजय का सूचक है। तात्पर्य यह है कि किसी भी घटना से संबंधित भावों का चयन करते समय प्रथम भाव एवं सप्तम भाव का ध्यान रखना आवश्यक है। अस्तु!

सप्तम भाव से संबंधित कुछ संभावित प्रश्न :

- क्या जातक के जीवन में विवाह के संयोग है ?
- विवाह समय पर होगा या विलंम्ब से ?
- वैवाहिक जीवन सुखमय होगा या वैचारिक मतभेद रहेगा ?
- क्या तलाक अथवा वैवाहिक जीवन में वाद-विवाद या मुकद्दमा संभावित है ?
- क्या दूसरी शादी होगी ?
- विवाह एवं अनैतिक संबंध।
- क्या प्रेम विवाह होगा ?
- जीवन साथी का स्वास्थ्य, आयु, शिक्षा, धन, व्यापार-व्यवसाय कैसा होगा ?
- कुण्डली मिलान विधि इत्यादि।

जातक के जीवन में विवाह के संयोग है अथवा नहीं इसका विश्लेषण प्रथम भाव एवं सप्तम भाव के SSL से करते हैं। विवाह का प्राथमिक भाव सप्तम है तथा सहायक भाव पंचम एवं एकादश हैं। कुछ एक मत

के अनुसार दूसरा भाव विवाह का सहायक भाव है। इससे पूर्व कि विवाह के संयोग एवं अन्य समीकारणों की बात की जाए, विवाह से संबंधित अन्य सहायक भावों की चर्चा करना चहुंगा। जैसे - दूसरा भाव, चतुर्थ भाव, पंचम भाव, सप्तम भाव, एकादश एवं द्वादश भाव इत्यादि।

दूसरा भाव : यह भाव स्वयं के परिवार का भाव है अर्थात पति-पत्नी एवं बच्चों का भाव है। विवाह के पश्चात परिवार में सदस्यों की बढ़ोत्तरी के लिये दूसरे भाव को लिया जाना गलत नहीं है परंतु ध्यान रहे दूसरा भाव 7वें से 8वाँ होने से **आरिष्ठ** कारक भी है।

चौथा भाव : यह भाव गृह सुख का भाव है। परंतु यह भाव पंचम भाव का 12वाँ भाव होने से प्रेम एवं आकर्षण को समाप्त कर जातक के स्वभाव को रुखा कर देगा। संभव है कि इस कारण चौथा भाव विवाह में वैचारिक मतभेद एवं गृह कलह का कारण हो।

पंचम भाव : पंचम भाव प्रेम एवं आकर्षण का भाव है। अत: विवाह का प्रबल सहायक भाव है।

सप्तम भाव : स्वयं विवाह का नैसर्गिक भाव है।

एकादश भाव : यह भाव इच्छा पूर्ति का भाव है अत: किसी भी भाव/घटना का सहायक भाव हो सकता है।

द्वादश भाव : शैया सुख का भाव है अत: वैवाहिक जीवन में इस भाव का महत्वपूर्ण स्थान है।

विवाह संयोग :

जातक के जीवन में विवाह की प्रतिज्ञा या आश्वासन है या नहीं इसका विचार प्रथम भाव एवं सप्तम भाव से किया जाता है। दोनों ही भाव विवाह से संबंधित संयोगों को दर्शाने चाहिये। यदि किसी एक भाव ने भी

विवाह को नकार दिया तो जातक आजीवन अविवाहित ही रहेगा। नीचे विवाह एवं वैवाहिक जीवन से संबंधित कुछ संभावित समीकरण दिये जा रहे हैं।

7^{th} SSL	PS/STL	SL	SSL	फल
समीकरण (1)	7	5, 11	5 या 11	विवाह के संयोग प्रतिज्ञा में है
समीकरण (2)	11	5, 7	5 या 7 या 11	विवाह के संयोग प्रतिज्ञा में है
समीकरण (3)	7	5, 11	5, 7, 11	शीघ्र एवं सुखी वैवाहिक जीवन
समीकरण (4)	5, 6, 7, 11	5, 11+ 4, 10	5 या 7 या 11	विवाह में विलम्ब एवं वैचारिक मतभेद।
समीकरण (5)	7	5, 11	5 या 11	सुखी वैवाहिक जीवन
समीकरण (6)	7	4, 6, 10+5, 11	4, 6, 7	कलह, क्लेश युक्त वैवाहिक जीवन
समीकरण (7)	7	4, 6, 7, 10, 11, 12	6, 12	तलाक, संबंध-विच्छेद

समीकरण (8)	7	4, 6, 7, 10, 12	5, 11	कलहयुक्त वैवाहिक जीवन परंतु तलाक नहीं
समीकरण (9)	4, 6, 10, 12	6, 12	6	अविवाहित जीवन
समीकरण (10)	3	6, 8, 12	8 या 12	मुकद्दमा

समीकरण (1), (2), (3) एवं (5) शीघ्र एवं सुखी वैवाहिक जीवन को दर्शाता है। इन सभी समीकरणों में विवाह के सभी अनुकूल एवं सहायक भावों को दर्शाया गया है तथा इन सभी में विवाह से संबंधित प्रतिकूल भावों का सर्वथा अभाव है अतः शीघ्र एवं सुखी वैवाहिक जीवन कहा गया है।

समीकरण (4) में PS/STL द्वारा भाव 5, 6, 7 एवं 11 तथा SL द्वारा भाव 5, 11 के साथ 4, 10 का दर्शाया जाना वैवाहिक जीवन में वैचारिक मतभेद तथा कलह को दर्शाता है। जहाँ भाव 4, 6, 10 क्रमशः सुखी वैवाहिक जीवन के भावों 5, 7, 11 के प्रतिकूल भाव है अतः ऐसे समीकरण संयोग विवाह में विलम्ब एवं कलह युक्त वैवाहिक जीवन दर्शाते है।

समीकरण (6) में भी SL द्वारा 7वे भाव के प्रतिकूल भाव वैवाहिक जीवन में विसंगतियाँ उत्तपन्न करेंगे। यहाँ तलाक की बात नहीं करेंगे क्योंकि तलाक के लिये भाव 6 के साथ भाव 12 की उपस्थिति आवश्यक है।

समीकरण (7) में SL स्तर पर 7, 11 के साथ 4, 6, 10, 12 की उपस्थिति वैवाहिक कलह एवं वैचारिक मतभेद को दर्शाता है। इस समीकरण में SSL द्वारा भाव 6, 12 की उपस्थिति 7वें भाव से संबंध विच्छेद का कारक है अतः ऐसे संयोग तलाक को दर्शाऐंगे।

समीकरण (8) में PS/STL एवं SL द्वारा 7वें (विवाह) के प्रतिकूल भावों को दर्शाया गया है जहाँ 6 एवं 12 भाव भी उपस्थित है परंतु यहाँ तलाक नहीं हो पायेगा क्योंकि SSL द्वारा 5, 11 भावों को दर्शाया गया है जो की विवाह के समर्थन (भाव 5, 11 सातवे भाव के समर्थन एवं 6, 12 के नकारात्मक भाव हैं) वाले भाव हैं। हम सभी जानते हैं कि SSL का निर्णय अंतिम होता है।

समीकरण (9) में 7वे भाव के SSL द्वारा अपने ही भाव से सभी प्रतिकूल एवं नकारात्मक भाव दर्शाये गये है एवं पूरे समीकरण में 7वे भाव की उपस्थिति है ही नहीं। साथ ही साथ SSL स्तर पर केवल एवं केवल 6ठा भाव दर्शाया गया है जो कि 7वे भाव के फल को सीधे-सीधे नकार रहा है। यदि ऐसे समीकरण में 7वें भाव की उपस्थिति PS/STL स्तर पर होती तो भी विवाह की संभावना नहीं होती क्योंकि SSL का निर्णय अंतिम होता है हम सभी भली भाँति जानते हैं।

समीकरण (10) में PS/STL द्वारा 3रा भाव तथा SL द्वारा 6, 8, 12 मुकद्दमे एवं वाद-विवाद को दर्शाता है। चुकी 7वे भाव के SSL के PS/STL एवं SL द्वारा 3, 6, 8, 12 दर्शाया जा रहा है जो कि पति या पत्नी के द्वारा मुकद्दमा आदि का सूचक है।

संयोग - दूसरी शादी :

जातक के जीवन में दूसरी शादी का विचार लग्न (प्रथम भाव), 7वें एवं 9वें भाव के SSL से करते हैं। प्रथम भाव के SSL का संबंध 7वे एवं 9वे (प्रत्येक भाव से 3रा भाव उस भाव का विविध भाव होता है अर्थात

उस जैसा ही कारक भाव होता है।) भाव से होना आवश्यक है। इसी क्रम में 7वे भाव के SSL का संबंध 9वे भाव से होना चाहिये। पुनः 9वे भाव के SSL का संबंध 7वे भाव से होना चहिये। ध्यान रहे प्रथम भाव, 7वें एवं 9वें भाव के SSL का संबंध उक्त भावों से होने पर आवश्यक नहीं कि दूसरी शादी अवश्य होगी। फिर भी यह संयोग आवश्यक हैं। इसे एक समीकरण के द्वारा समझने का प्रयास करते हैं –

SSL	PS/STL	SL	SSL	फल
प्रथम भाव	7, 9	5, 11	7 या 9 या 11	दूसरा विवाह संभावित
सातवाँ भाव	9	5, 11	5 या 7 या 9 या 11	दूसरा विवाह संभावित
नवम भाव	7	5, 11	7 या 9 या 11	दूसरा विवाह संभावित

ऊपर दिये गये समीकरण ध्यान से देखें तो प्रथम भाव, सप्तम भाव एवं नवम भाव के SSL अपने-अपने PS/STL द्वारा दूसरी शादी के प्रारंभिक भाव (9वाँ भाव) में गये हैं तथा SL द्वारा समर्थन प्राप्त कर रहे हैं। प्रथम भाव से प्रथम विवाह भाव 7वाँ है एवं दूसरा विवाह भाव 9वाँ है अतः प्रथम भाव के SSL का अपने PS/STL द्वारा दोनों भावों से युक्त होना अनिवार्य है तथा SL द्वारा विवाह के सहायक भावों में जाना भी आवश्यक है। 7वें भाव के SSL का भी अपने PS/STL द्वारा दूसरे विवाह के प्रारंभिक भाव (9वाँ) में तथा SL द्वारा सहायक भाव में (5, 11) आना आवश्यक है। पुनः दूसरे विवाह का विविध भाव अर्थात 9वे भाव के SSL का संबंध अपने PS/STL द्वारा 7वें भाव में तथा SL द्वारा 5वें एवं 11वें भाव में आना दूसरे विवाह की संभावना को दर्शाता हैं।

विवाह एवं अनैतिक संबंध :

नवम भाव दूसरा विवाह अथवा अनैतिक संबंधों का भाव है। जातक के अनैतिक संबंधों का अनुमान या अवलोकन प्रथम भाव, तृतीय भाव, पंचम भाव, सप्तम भाव एवं नवम भाव से करते है -

- प्रथम भाव के SSL का संबंध (अपने PS/STL द्वारा) 9वें भाव से तथा SL संबंध 5, 8, 12/ 7, 12 / 7, 8, 12 आदि भावों से होना अनैतिक संबंधों को दर्शाता है। ऐसा संयोग केवल अनैतिक संबंधों का अनुमान मात्र है फिर भी अनैतिक संबंध के लिये यह एक आवश्यक संयोग है।
- पंचम भाव एवं सप्तम भाव के SSL का संबंध उसके PS/STL द्वारा 9वें भाव से तथा SL द्वारा 5, 8, 12 / 7, 12/ 7, 8, 12 आदि भावों से होना जातक का अनैतिक संबंधों की तरफ रुझान को दर्शाता है।
- SL द्वारा 5, 8, 12 / 7, 8, 12 / 7, 12 के संयोग शारीरिक संबंधों का द्योत्तक है वहीं केवल 5, 11 सच्चे प्रेम को दर्शाते हैं।

देश, काल एवं पात्र को ध्यान में रखते हुये अनैतिक संबंधों की चर्चा करें तो कहेंगे भारत वर्ष या गाँव-देहात अथवा पिछड़े रुढ़िवादि परंपराओं वाले क्षेत्रों में प्रेम संबंध अथवा अनैतिक संबंधों के लिये साहस की आवश्यकता पड़ेगी। अतः ऐसे में जातक के 3रे भाव के SSL का उसके PS/STL द्वारा 9वें भाव से तथा SL द्वारा 5, 8, 12/ 7, 12 / 7, 8, 12 आदि भावों से होना अनिवार्य है। इसी क्रम में यदि 1ले, 3रे, 5वें, 7वे या 9वे भाव के SSL ग्रह शनि, मंगल या शुक्र जैसे ग्रह हों तो संभावनायें प्रबलतर होंगी।

संयोग - प्रेम विवाह :

प्रेम विवाह के लिये प्रथम भाव, पंचम भाव एवं सप्तम भाव के SSL का संबंध आपस में होना आवश्यक है। नीचे दिये गये समीकरण प्रेम विवाह में सहायक हैं :

SSL	PS/STL	SL	SSL	फल
1st SSL	5, 7	11	5 या 7 या 11	प्रेम विवाह के संयोग
5th SSL	7	11	7 या 11	प्रेम विवाह के संयोग
7th SSL	5, 11	7	5 या 7 या 11	प्रेम विवाह के संयोग

ऊपर दिये गये समीकरण में प्रथम भाव के SSL के PS/STL द्वारा भाव 5 (प्रेम) तथा भाव 7 (विवाह) में उपस्थिति एवं SL द्वारा भाव 11 (इच्छा पूर्ति) दर्शाया जाना लग्न द्वारा प्रेम विवाह के संकेत देता है। पंचम भाव के SSL के PS/STL द्वारा 7वें भाव एवं SL द्वारा 11वाँ भाव दर्शाया जाना भी जातक का प्रेम विवाह की तरफ रुझान को दर्शाता है। इसी क्रम में विवाह का कारक भाव 7जी SSL के PS/STL द्वारा 5, 11वाँ भाव एवं SL द्वारा 7वाँ भाव प्रेम विवाह की पुष्टी करता है। पुनः याद दिलाना चहुंगा कि यदि बात प्रेम विवाह की चल रही हो और जातक किसी ऐसे देश, स्थान अथवा परिवेश में रहता हो जहाँ प्रेम विवाह की स्वीकृति में संदेह हो तो ऐसे में तृतीय (साहस) भाव का अवलोकन भी करना आवश्यक है।

यदि ऊपर दिये गये समीकारणों में भाव 4, 6 की उपस्थिति हो तो प्रेम विवाह असफल अथवा बाधित होगा क्योंकि 4था भाव 5वें का 12वाँ है तथा 6ठा भाव 7वें का 12 है। यदि प्रथम, पंचम एवं सप्तम भावों के SSL के SSL द्वारा केवल और केवल भाव 4, 6 दर्शाये जायें तो प्रेम विवाह नहीं हो पायेगा। ऐसे में प्रेम विवाह होने के लिये भाव 4, 6 की अनुपस्थिति आवश्यक है अथवा इन भावों के साथ-साथ भाव 5, 7 का होना अति आवश्यक है।

जीवन साथी का स्वास्थ्य, आयु, शिक्षा, धन, व्यापार-व्यवसाय कैसा होगा?:

जिस प्रकार प्रथम भाव से स्वास्थ्य, आयु, शिक्षा, धन एवं व्यापार-व्यवसाय की स्थितियों का आंकलन करते हैं ठीक उसी प्रकार सप्तम भाव को लग्न मान कर जीवन साथी के स्वास्थ्य, आयु, शिक्षा, धन एवं व्यापार-व्यवसाय की स्थितियों का अनुमान अथवा गणना करें।

सप्तम भाव के :

(क) आयु भाव - 7, 9, 2। (ख) मारक भाव - 7, 2 तथा 8, 1 (ग) स्वास्थ्य भाव - 7, 11, 5 (घ) रोग भाव - 12, 2, 6 (ङ) प्रारंभिक शिक्षा भाव - 10 (च) उच्च शिक्षा भाव - 3 (छ) शिक्षा में सफलता वाले भाव - 7, 10, 3 तथा 5, 8, 9, 11 (ज) शिक्षा में असफलता वाले भाव - 9, 2, 6 (झ) धन कारक भाव - 7, 8, 10, 12, 4, 5 (अ) धन हानि वाले भाव - 7, 11, 2, 3 (ट) व्यापार-व्यवसाय के सहायक भाव - 7, 12, 5/ 7, 8, 12 / 5, 12 / 8, 5/ 8, 12।

विवाह से पूर्व संभावित पति-पत्नी की योग्यता जैसे - शिक्षा, व्यापार-व्यवसाय, आर्थिक स्थिति के साथ साथ उनके स्वास्थ्य, आयु,

आचरण, वैवाहिक जीवन आदि का अनुमान लगाना आवश्यक है। नीचे ऐसे ही कुछ संभावित पहलुओं पर एक संक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है–

समीकरण (1)	**7th SSL**	**PS/ STL**	**SL**	**SSL**	**फल**
समीकरण (2)	2, 7, 9 SSL	3, 5, 7, 11	3, 5, 7, 11	5 या 7 या 11	पूर्ण आयु, उत्तम स्वास्थ्य
समीकरण (3)	2, 7, 9 SSL	7, 2	1, 8 + बाधकेश	2 या 8	अल्पायु
समीकरण (4)	2, 7, 9 SSL	5, 7, 11 + 7, 2	5, 7, 11 +1, 8	5, 11 +1, 8	मध्यम आयु
समीकरण (5)	7th SSL	12 या 2	7, 2, 12	2 या 12	असाध्य रोग
समीकरण (6)	2 या 12 SSL	7	2, 12, 6	2 या 12	असाध्य रोग
समीकरण (7)	3, 10, 7th SSL	3, 10	5, 8, 9, 11	5 या 11	शिक्षा में सफलता
समीकरण (8)	3, 10, 7th SSL	3, 10	2, 6, 9	2 या 6 या 9	शिक्षा में असफलता
समीकरण (9)	4, 8, 7th SSL	4या 8	5, 7, 8, 12	5 या 8 या 12	धन, व्यापार, व्यवसाय में सफलता
समीकरण (10)	7th SSL	1	8 + बाधकेश	8 या बाधकेश	जीवन साथी द्वारा हत्या

समीकरण (1) से (10) तक दिये गये विभिन्न संयोग जीवन साथी के चयन अथवा कुण्डली मिलान में सहायक है। पाठकों से अनुरोध है कि ऐसे सभी समीकरण अथवा संयोगों को पढ़ते समय दो बातों का ध्यान अवश्य रखें –

1) यदि किसी भाव का SSL अपने PS/STL द्वारा अपने भाव से अनुकूल भावों में गया हो एवं SL द्वारा उसे समर्थन मिल रहा हो साथ ही साथ SSL भी सहायक हो तो निश्चय ही उस भाव जनित सभी फल जातक के लिये अनुकूल होंगे।

2) यदि किसी भाव का SSL अपने PS/STL द्वारा अपने भाव से प्रतिकूल भावों में गया हो एवं SL एवं SSL भी प्रतिकूल भावों का समर्थन कर रहे हों तो निश्चय ही उस भाव जनित सभी फल जातक के लिये अशुभ एवं प्रतिकूल होंगे।

मिले-जुले भावों की उपस्थिति में मिश्रित फलों की प्राप्ति होगी। ऐसी स्थिति पाठकश्रेष्ठ स्वयं अपनी बुद्धिमता से फलादेश करें।

कुण्डली मिलान एवं शंका :

विवाह से पूर्व कुण्डली मिलान की प्रथा है हमारे यहाँ परंतु ज्यादातर खाना पूर्ति ही की जाती है। माता-पिता अपने बच्चों की कुण्डलियाँ अपनी इच्छा से मिलवाने की चेष्टा करते हैं एवं कुछ ब्राह्मण एवं ज्योतिषि ऐसा करने में उनकी सहायता करते भी हैं। उनके गुण मिलाने की पद्धति भी कुछ ऐसी है कि क्या कहिये ? अधिकांश ब्राह्मण एवं ज्योतिषि चंद्र राशि एवं चंद्र नक्षत्र से कुण्डलियों का मिलान करते हैं – अब जरा ध्यान से सोचें चंद्रमा एक राशि पर लगभग सवा दो दिन एवं एक नक्षत्र पर लगभग 24 घण्टे गोचर करता है। हम सभी जानते हैं कि आज प्रति क्षण जन्म दर है अर्थात एक राशि की गोचर अवधि में लगभग 194400 एवं

एक नक्षत्र की गोचर अवधि में लगभग 86400 बच्चों का जन्म संभावित है। गुण मिलाने की इस विधि को अष्ट्कूट मिलान कहते है अर्थात इसे 8 भागों (1. वर्ण, 2. वश्य, 3. तारा, 4. योनि, 5. ग्रहमैत्री, 6. गणमैत्री, 7. भकुट तथा 8. नाड़ी - ये आठ कूट हैं।) में बाँट कर मिलान का विचार करते है। कुल 36 गुण होते है तथा इनमे से 16 गुण मिलने पर जिसमे नाड़ी का मिलना अनिवार्य माना गया है कुण्डली मिलान ठीक माना जाता है। अब ध्यान से देखे तो पता चलता है कि चंद्रमा के एक नक्षत्र के गोचर अवधि में 86400 बच्चों का होना संभावित है इसे यदि 8 भागों में विभाजित करे तो प्रत्येक भाग में 10800 बच्चों की संभावना होगी। यह मिलान जिसमे 0.36% अर्थात सर्वाधिक कम अंशों (वर्ण कूट को 36 गुणों में मात्र 1 अंक दिया गया है) के हिसाब से भी 311.04 बच्चों का एक वर्ग बनता है इससे कम का मिलान संभव ही नही। तात्पर्य यह है कि इस विधि से एक वर के साथ एक वधू का मिलान नहीं किया जा रहा बल्कि 311.04 वर के साथ 311.04 वधूओं का मिलान किया जाता है- यह कैसा मिलान है ?? चलो मान भी लें कि गुण मिलान हो गया फिर मिलान के पश्चात तलाक, वैचारिक मतभेद, वाद-विवाद एवं संतान का ना होना जैसी वैवाहिक विसंगतियाँ क्यों ??

मेरे विचार से कुण्डली मिलाने का अधार वर एवं कन्या के स्वभाव, आयु, स्वास्थ्य, शिक्षा, व्यापार-व्यवसाय, आर्थिक स्थिति, वैवाहिक जीवन की स्थितियों जैसे - सुखी वैवाहिक जीवन या तलाक अथवा कलह युक्त वैवाहिक जीवन, संतान की संभावना अथवा बाँझपन, सामाजिक प्रतिष्ठा आदि से करना चाहिये। यदि वर एवं कन्या दोनों ही स्वस्थ हों, शिक्षित हों, उनका व्यापार-व्यवसाय संतोषजनक हो, वैवाहिक सुख से भरपूर हो तथा संतान लाभ संभावित हो तो और क्या चाहिये ?? कहने से तात्पर्य यही है कि वर एवं वधु की कुण्डलियों में ऐसी संभावनायें ढूंढना ही

कुण्डली मिलान का वास्तविक अर्थ है ना कि गुण मिलान को आधार मान कर मिलान करना।

कुण्डली मिलान की दो प्रमुख एवं विश्वसनिय विधियों का उल्लेख करूंगा ताकि ज्योतिष सीखने वाले विद्यार्थि ज्यादा से ज्यादा लोगों का भला कर सकें।

मिलान विधि :

1) वर-वधू की आपसी शादी की संभावनाएं एवं

2) वर एवं वधू का चुनाव।

3) वर वधू के प्रथम, पंचम, सप्तम भाव के SSL का विचार एक दूसरे की कुण्डली में कैसे करें ?।

प्रथम विधि में कुछ ऐसे संयोगों का अवलोकन करते हैं जिससे वर-वधू के एक दूसरे से विवाह की संभावनाओं का अनुमान लगाया जाता है। निश्चित या निर्धारित संयोगों के अभाव में विवाह का होना या तो असंभव होगा अथवा निश्चय ही वैवाहिक विसंगतियाँ उत्पन्न होंगी। पाठकों से अनुरोध है कि प्रथम विधि के विफल होने पर विवाह हेतु अपना मत कदापि ना दें।

प्रथम मिलान विधि :

1) वर-वधू की आपसी शादी की संभावनाएं

वर एवं वधू की कुण्डली से चंद्र नक्षत्र स्वामी एवं 7वें भाव के SSL ग्रह नोट कर लें।

वर की कुण्डली के चंद्र नक्षत्र स्वामी ग्रह को (वधू की कुण्डली मे) वधू के 7वें भाव के SSL का STL या SL या SSL होना चाहिये। या

वधू के 7वें भाव का SSL ग्रह (वधू की कुण्डली मे) वर के चंद्र नक्षत्र स्वामी ग्रह का STL या SL या SSL होना चाहिये। या

दोनों एक ही ग्रह होंने चाहियें अर्थात वर का चंद्र नक्षत्र स्वामी एवं वधू के 7वें भाव का SSL एक ही ग्रह होना चाहिये। (मान ले वर की कुण्डली में चंद्र नक्षत्र स्वामी ग्रह सूर्य है तो वधू की कुण्डली में भी 7वें भाव का SSL ग्रह सूर्य होना चाहिये)।

वर की कुण्डली के 7वे भाव के SSL ग्रह की उपस्थिति (वधू की कुण्डली मे) वधू के चंद्र नक्षत्र स्वामी ग्रह का STL या SL या SSL के रूप में होना चाहिये। या

वधू की कुण्डली में चंद्र नक्षत्र स्वामी ग्रह (वधू की ही कुण्डली मे) वर के 7वे भाव के SSL ग्रह का STL या SL या SSL होना चाहिये। या

दोनों एक ही ग्रह होंने चाहियें अर्थात वर की कुण्डली में 7वे भाव का SSL ग्रह एवं वधू के चंद्र नक्षत्र का स्वामी ग्रह एक ही ग्रह होना चाहिये। (मान ले वर की कुण्डली में 7वें भाव का SSL ग्रह सूर्य है तो वधू की कुण्डली में चंद्र नक्षत्र का स्वामी ग्रह भी सूर्य ही होना चाहिये)।

इसी क्रम में जिस प्रकार वर की कुण्डली के चंद्र नक्षत्र स्वामी एवं 7वे भाव के SSL ग्रह का मिलान वधू की कुण्डली में क्रमशः 7वे भाव के SSL ग्रह एवं चंद्र नक्षत्र स्वामी ग्रह के साथ

किया गया है ठीक उसी प्रकार वधू के चंद्र नक्षत्र स्वामी एवं 7वें भाव के SSL ग्रह का मिलान वर की कुण्डली में क्रमशः 7वे भाव के SSL ग्रह एवं चंद्र नक्षत्र स्वामी के साथ करें।

ऊपर दिये गये मिलान विधि को एक उदाहरण द्वारा समझने का प्रयास करें –

वर : चंद्र नक्षत्र स्वामी – गुरु एवं 7वें भाव का SSL – शनि।

वधू : चंद्र नक्षत्र स्वामी – मंगल एवं 7वें भाव के SSL – बुध।

मान ले वधू की कुण्डली में :

ग्रह	**RL**	**STL**	**SL**	**SSL**
7th SSL बुध	–	शनि	मंगल	गुरु
STL मंगल	–	मंगल	शनि	बुध

7वें भाव का SSL (बुध) – शनि के नक्षत्र में मंगल के SL में तथा गुरु के SSL में है। अतः वर की कुण्डली में चंद्र नक्षत्र स्वामी ग्रह गुरु, वधू की कुण्डली के 7वें भाव के SSL (बुध) का SSL होने एवं वर की कुण्डली में 7वें भाव का SSL – शनि, वधू की कुण्डली के चंद्र नक्षत्र स्वामी मंगल का SL होने से विवाह की संभावना बनाता है। ठीक इसी प्रकार बधू की कुण्डली के चंद्र नक्षत्र स्वामी एवं 7वे SSL ग्रह को क्रमशः वर की कुण्डली के 7वे भाव के SSL ग्रह एवं चंद्र नक्षत्र से मिलायें। यदि चारो ग्रह मिल जायें तो विवाह की संभावना होगी यदि इन चारों में से 3 या 3 से कम का मिलान विवाह के होने में संदेह या विसंगतियों को दर्शाता है।

2) वर एवं वधू का चुनाव

वर के लिये वधू का अथवा वधू के लिये वर का चुनाव कैसे करें? वर–वधू की आयु, स्वास्थ्य, शिक्षा, रोज़गार, वैवाहिक सुख, वैवाहिक तनाव, तलाक एवं संतान संयोग अथवा संतानहीनता का विचार संबंधित भावों के SSL द्वारा करें। जैसे –

- प्रथम भाव, तृतीय भाव एवं अष्टम भाव से वर या वधू की आयु का अनुमान लगायें।
- वर वधू के स्वास्थ्य का विचार प्रथम भाव, षष्ट भाव एवं अष्टम भाव से करें।
- वर वधू की शिक्षा का विचार प्रथम, चतुर्थ भाव एवं नवम भाव से करें।
- वैवाहिक जीवन में सुख–दु:ख, कलह, क्लेश, वाद–विवाद अथवा तलाक़ आदि का विचार प्रथम भाव एवं सप्तम भाव से करें।
- संतान से संबंधित अनुमान हेतु प्रथम भाव एवं पंचम भाव से विचार करें।
- व्यापारिक अथवा व्यवसायिक जीवन का विचार प्रथम भाव, षष्ट भाव एवं दशम भाव से करें एवं
- आर्थिक स्थिति का विचार द्वितीय भाव से करे।

पाठकगण इस पुस्तक के प्रथम भाव से द्वादश भाव तक दिये गये जीवन के विभिन्न घटनाओं के समीकारणों का अध्ययन ठीक से करें ताकि आप वर वधू की आयु, रोग, शिक्षा, व्यापार–व्यवसाय,

रोजगार, आर्थिक स्थिति, वैवाहिक जीवन एवं संतान आदि से संबंधित अनुमान ठीक से लगाया सके।

3) **वर वधू के प्रथम, पंचम, सप्तम भाव के SSL का विचार**

वर या वधू की कुण्डली में प्रथम भाव के SSL ग्रह यदि एक दूसरे की कुण्डली में 4, 6, 10 एवं 12वें भाव दर्शायें तो विवाह के होने में संदेह है। ऐसे में यदि विवाह हो जाये तो आपसी कलह, वाद-विवाद, वैचारिक मतभेद तथा तलाक की स्थिति उत्तपन्न होगी।

वर की कुण्डली में प्रथम भाव एवं सप्तम भाव के SSL ग्रह स्वयं तथा वधू की कुण्डली में 1, 5, 7, 11 आदि सभी अनुकूल भावों में गया हो तो तथा 7, 8, 12 / 6, 8, 12 / 8, 1, 12 आदि भावों से मुक्त हो तो ऐसा वर, वधू के लिये योग्य होता है। स्मरण रहे - भाव 1, 5, 7, 11 प्यार, स्नेह तथा परिवारिक सुख देने वाला होगा। इसके विपरीत 7, 8, 12 / 6, 8, 12 / 4, 6, 10 / 8, 1, 12 आदि भाव कलह, क्लेश, तलाक अथवा वधू के लिये आरिष्ठकारक होगे। इसी क्रम में वधू की कुण्डली के प्रथम एवं सप्तम भाव के SSL ग्रह का विचार वर की कुण्डली में करें।

वर की कुण्डली के 5वे भाव के SSL ग्रह का विचार वधू की कुण्डली में करे। यदि ऐसा ग्रह स्वयं तथा वधू की कुण्डली में 2, 5, 11 जैसे भावों में गया हो तो संतान सुख की पूर्ण संभावना होगी। प्रेम एवं देखभाल के साथ साथ दोनों के दाम्पत्य जीवन आनंदमय एवं सुखमय होगे। इसी क्रम में यदि 5वे भाव के SSL ग्रह स्वयं एवं वधू की कुण्डली में 1, 4, 10 आदि भावों में गया हो तो संतान का बाधित होना या विलंम्ब से होने की संभावना रहेगी साथ ही साथ वर का स्वभाव या व्यवहार वधू के प्रति रूखा

एवं तनावपूर्ण रहेगा। इसी प्रकार वधू की कुण्डली के पंचम भाव के SSL ग्रह का विचार वर की कुण्डली में करें।

संभावित दिशा एवं जीवन साथी :

प्रायः देखने में आता है कि माता-पिता जिज्ञासा वश अपने संतान के संभावित पति या पत्नी की दिशा के बारे में प्रश्न पूछते हैं। बच्चे की शादी किस दिशा में होगी अर्थात होने वाले पति या पत्नी किस दिशा में होंगे ? इस प्रश्न के उत्तर में मैं इतना ही कहुंगा कि 7वे भाव के SSL का नक्षत्र स्वामी जिस दिशा का स्वामी होगा एवं निरायण भाव चलित कुण्डली के जिस भाव में बैठा होगा उस भाव जनित दिशा में विवाह होने की संभावना होगी। पाठकगण ध्यान दें 7वे भाव के SSL का नक्षत्र स्वामी ग्रह केवल संभावित जीवन साथी के दिशा के बारे में ही संकेत दे सकता है। विवाह के समय जीवन साथी किस दिशा में होगा इसका अनुमान लगाना कठिन है। नीचे संभावित जीवन साथी के दिशा से संभावित कुछ अन्य सूत्र -

- यदि 7वे भाव के SSL का नक्षत्र स्वामी ग्रह की दिशा एवं जिस भाव में नक्षत्र स्वामी बैठा है वो भाव अलग अलग दिशा दर्शायें तो 7वे भाव के SL के नक्षत्र स्वामी ग्रह एवं भाव से दिशा का अनुमान लगायें।
- इसके अतिरिक्त 7वे भाव के SSL एवं SL के नक्षत्र स्वामी की उपस्थिति निरायन भाव चलित एवं कुण्डली के जिन-जिन भावों में हो उनका विचार भी करें।
- 7वे भाव के SSL का नक्षत्र स्वामी जिस भाव में हो उस भाव से भी संभावित जीवन साथी के होने का अनुमान लगायें जैसे -

तृतीय एवं चतुर्थ भाव में हो तो पडोस से, नवम भाव में हो तो दूसरे राज्य से, दशम भाव में हो तो व्यापार या व्यवसाय स्थान से एवं द्वादश स्थान में हो तो विदेश से इत्यादि।

– कुण्डली के सभी 12 भावों की दिशायें :

प्रथम भाव – पूर्व दिशा	द्वितीय भाव – पूर्व-पूर्व-उत्तर दिशा
तृतीय भाव – उत्तर-उत्तर-पूर्व दिशा	चतुर्थ भाव – उत्तर दिशा
पंचम भाव – उत्तर-उत्तर-पश्चिम दिशा	षष्ट भाव – पश्चिम-पश्चिम-उत्तर दिशा
सप्तम भाव – पश्चिम दिशा	अष्टम भाव – पश्चिम-पश्चिम-दक्षिण दिशा
नवम भाव– दक्षिण-दक्षिण-पश्चिम दिशा	दशम भाव – दक्षिण दिशा
एकादश भाव – दक्षिण-दक्षिण-पूर्व दिशा	द्वादश भाव – पूर्व-पूर्व-दक्षिण दिशा

ग्रह एवं दिशा :

सूर्य – पूर्व दिशा	चंद्रमा – पश्चिम-उत्तर
मंगल एवं राहु – दक्षिण	बुध – उत्तर
गुरु – उत्तर-पूर्व	शुक्र – दक्षिण-पूर्व
शनि – पश्चिम	केतु – उत्तर

अष्टम भाव

कारकत्व :

आयु, मृत्यु, आत्महत्या, दुर्घटना, दुर्भाग्य, असाध्य रोग, अपमान, लोक निंदा, दु:ख, दुर्गति, दरिद्रता, मानसिक तनाव, निराशा, उदासी, गुप्त एवं रहस्यमय बातें, कानूनी प्रक्रिया, राज्य भय, लूट, अपराध, बाधा, मिथ्या आरोप, वाद-विवाद, मुकद्दमा, युद्ध, दहेज़, अचानक लाभ-हानि, उपहार, पैत्रिक संपत्ति, लॉटरी, बुचड़ खाना, प्राकृतिक आपदा जैसे - भुकंम्प, आगजनी, बाढ इत्यादि।

अष्टम भाव आरिष्ठ, बाधा, असमाजिक कार्य, मानसिक तनाव, राज्य भय, प्राक्रितिक आपदा तथा अचानक लाभ-हानि, पैत्रिक संपत्ति के साथ-साथ बिना परिश्रम के धन लाभ एवं सौभाग्य का भी भाव है। नीचे आठवें भाव से संबंधित कुछ संभावित घटनाओं के बारे में नैसर्गिक एवं सहायक-संबंधित आवश्यक भावों का तार्किक विवरण दिया जा रहा है ताकि आप भविष्य में ऐसे सभी प्रश्नों के उत्तर दे पाने में सक्षम हो सकें-

- पूर्णायु योग
- मृत्यु, आत्महत्या एवं दुर्घटना संयोग,
- असाध्य रोग
- अपमान, लोक निंदा,
- मानसिक तनाव, चिंता तथा
- मुकद्दमा अथवा राज्य भय।

- पैतृक संपति, दहेज़ एवं अचानक लाभ या हानि,
- गुम हुई वस्तु की प्राप्ति।

समीकरण	**8th SSL**	**PS/ STL**	**SL**	**SSL**	**फल**
1.	8th SSL	1, 3, 5, 9, 11	5, 9, 11	5 या 9 11	पूर्णायु
2.	8th SSL	1, 8	2, 7 + बाधकेश	2 या 7	अल्पायु एवं मृत्यु संयोग
3.	1+8th SSL	8 या 1, 8	1, 2, 7, 8, 12 या 2, 7 + बाधकेश	8 या 7 या बाधकेश	आत्महत्या
4.	8th SSL	4	8, 12	8 या 12	वाहन से दुर्घटना
5.	8th SSL	1	6, 8, 12	6 या 8 या 12	असाध्य रोग
6.	8th SSL	8	1, 12	8 या 12	अपमान, लोक निंदा
7.	8th SSL	1, 3	8	8	मानसिक तनाव, चिंता
8.	8th SSL	6	3, 8, 12	8 या 12	मुकद्दमा, राज्य भय
9.	8th SSL	8	2, 11	2 या 11	दहेज़ या अचानक लाभ

10.	8^{th} SSL	8	5, 12	5 या 8 या 12	बलात्कार
11.	8^{th} SSL	8	4, 11	4 या 11	उत्तराधिकार स्वरूप संपत्ति की प्राप्ति
12.	8^{th} SSL	8	2, 6, 11	6 या 11	खोई वस्तु/ धन की प्राप्ति

कुण्डली का 8वाँ भाव आयु का भाव है। यदि 8वे SSL ग्रह अपने PS/STL एवं SL के द्वारा सभी आयु कारक भाव से युक्त हो तथा मारक एवं बाधक भावों से मुक्त हो तो जातक की आयु लम्बी होती है जैसा कि समीकरण (1) में दर्शाया गया है। इसके विपरीत 8वे SSL ग्रह अपने PS/STL एवं SL के द्वारा सभी मारक एवं बाधक भावों में हो तो जातक अल्पायु होता है। पाठकगण आयु गणना के लिये प्रथम एवं तृतीय भाव के SSL का भी विचार अवश्य करें क्योंकि प्रथम, तृतीय एव अष्टम इन तीनो भाव के सम्मिलित संयोग से आयु की गणना करनी चाहिये। समीकरण (2) में दिये गये संयोग अल्पायु के द्योत्तक हैं।

समीकरण (3) में दिये गये संयोग आत्मा हत्या के सूचक हैं। यदि प्रथम एवं अष्टम भाव के SSL ग्रह अपने PS/STL द्वारा 8वाँ भाव एवं SL के द्वारा 1, 2, 7, 12वाँ भाव या PS/STL द्वारा 1, 8वाँ भाव एवं SL के द्वारा 2, 7 के साथ बाधक भाव में हों तो जातक के आत्म-हत्या करने के संकेत देते है। स्पष्ट है कि एक तो 8वाँ भाव आयु एवं आरिष्ठ का कारक भाव है साथ ही सभी मारक एवं बाधक भावों से युक्त हो जाये तो मृत्यु का संकेत देना तर्क संगत है यहाँ भाव 1 का उपस्थित होना मृत्यु के लिये प्रथम भाव अर्थात स्वयं के कारण संभावित होना है इसी लिये आत्म-हत्या कहा गया है।

समीकरण (4) में 8^{th} SSL ग्रह अपने PS/STL के द्वारा 4थे भाव में तथा SL द्वारा 8, 12वें भाव में वाहन या चौपाये जानवर से दुर्घटना को दर्शाता है क्योंकि 4था भाव वाहन आदि का द्योत्तक है। इस समीकरण में दो-तीन बातें और जोड़ना चहुंगा, पहला यह कि यदि भाव 8, 12 के साथ भाव 6ठा भी हो तो चोंटें गंभीर रूप से लगेंगी। दूसरा यदि 8वें के साथ 12वाँ भाव ना हो तो जातक को चिकित्सालय जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी क्योंकि 12वाँ भाव चिकित्सालय का भाव है। तीसरी एवं अंतिम बात यदि दुर्घटना के संयोग में मारक एवं बाधक भाव युक्त हो जायें तो मृत्यु की संभावना रहेगी। मृत्यु होगी या नहीं इसका निर्णय आयु गणना एवं दशा से करें।

समीकरण (5) में 8^{th} SSL ग्रह अपने PS/STL द्वारा प्रथम भाव अर्थात शरीर की उपस्थिति तथा SL द्वारा गंभीर रोग (6, 8, 12वाँ भाव) दर्शा रहा है। इस समीकरण में रोग मुक्ति के भाव (5, 11) का अभाव है इसी लिये असाध्य रोग कहा गया है। इस समीकरण में यदि 8वे SSL का SSL भाव 5, 11 दर्शा दे तो रोग अवश्य ठीक होगा।

विशेष :

प्रथम भाव के SSL अपने PS/STL द्वारा 8वें भाव में जाये तो जातक को असाध्य रोग की संभावना रहेगी ऐसे में प्रथम भाव के SSL अपने SL द्वारा जिन-जिन भावों में जायेगा उसी भाव से संबंधित अंगों में रोग संभावित होगा। भाव संबंधित अंगों का विवरण अध्याय "षष्ट भाव" में दिया गया है। इसी क्रम में एक बात और बताना चहुंगा 8वे SSL ग्रह अपने PS/STL द्वारा जिन-जिन भावों में जायेगा रोग उन्हीं अंगों में संभावित होगा। अब आप आसानी से उस भाव पर ध्यान केंद्रित करे जो भाव लग्न एवं अष्टम भाव के SSL के PS/STL द्वारा दर्शाया गया है अर्थात ऐसा भाव जो लग्न एवं अष्टम दोनों भावों के SSL के PS/STL

द्वारा दर्शाया गया है भाव हों। 8th SSL का SL यदि PS/STL द्वारा प्राप्त भाव से 4, 7, 8 या 12वाँ हो तो उस भाव जनित रोग की संभावना नहीं होगी परंतु SL द्वारा समर्थन मिलने पर उस भाव जनित रोग होने की संभावना प्रबल होगी।

समीकरण (6) में 8th SSL अपने PS/STL द्वारा 8वाँ भाव जो की अपमान या लोक निंदा का भाव है एवं SL द्वारा 1, 12वाँ भाव दर्शा रहा है जहाँ 1ला भाव जातक के मान सम्मान लिये एवं 12वाँ भाव पहले अर्थात मान-सम्मान के व्यय के लिये।

समीकरण (7) में 8th SSL अपने PS/STL द्वारा 1ला एवं 3रा भाव एवं SL 8वाँ भाव दर्शा रहा है। यह संयोग मानसिक तनाव एवं उद्वेग को दर्शाता है क्योंकि 8वाँ भाव जहाँ तनाव का भाव है वहीं 3रा भाव मानसिकता का कारक भाव है। अतः इनकी युति मानसिक तनाव का सूचक है।

समीकरण (8) में 8th SSL अपने PS/STL द्वारा 6ठा भाव दर्शा रहा है (जो की वाद-विवाद का भाव है साथ ही 8वाँ भाव स्वयं में अशुभ एवं आरिष्ठ भाव है) एवं SL द्वारा 3, 8, 12वें भाव में गया है जहाँ 3रा भाव प्राथमिक विवाद की सूचना (एफ.आई.आर।) के लिये, 8वाँ भाव राज्य पक्ष से परेशानी तथा 12वाँ भाव कारावास के लिये। आप समझ गये होंगे कि ऐसे ग्रह संयोग जब दशा में हों तो क्या फल होना चहिये। यहाँ 8वे SSL के SSL की भूमिका विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिये, यदि ऐसे समीकरण में SSL द्वारा 6, 11 या 3, 6, 11 जैसे भाव दर्शाये जा रहे हों तो जातक अंततः समस्त परेशानियों से मुक्त हो जाता है।

समीकरण (9), (11) एवं (12) में 8वे भाव की उपस्थिति जो कि 7वें के धन का भाव है एवं SL द्वारा प्रथम भाव के सभी लाभ भाव (2,

6, 11) का दर्शाया जाना क्रमशः दहेज़, अचानक लाभ / पैतृक संपत्ति का लाभ एवं खोई हुई वस्तु की पुनः प्राप्ति के संयोग को दर्शाते है।

समीकरण (10) एक ऐसा संयोग है जो कि अपराध की श्रेणी में आता है। यहाँ भावों के कारकत्व को समझना अत्यंत आवश्यक है। 8वाँ भाव अपराध का भाव होने के साथ-साथ गुप्तांगो का भी भाव है। 5वाँ एवं 12वाँ एक तरफ जातक के पराजित होने का भाव है तो दूसरी तरफ 7वे (बलात्कारी) भाव का क्रमशः ईच्छपूर्ति एवं 6ठा भाव है अर्थात कार्यो की सिद्धि का द्योत्तक है वहीं स्वयं 12वाँ भाव सहवास एवं शैया सुख का भाव भी है।

अष्टम भाव एवं व्यवसाय :

समीकरण	8^{th} SSL	PS/ STL	SL	SSL	फल
(13)	8^{th} SSL	8, 10	2, 6, 10	6 या 8 या 10	शल्य चिकित्सक या वैज्ञानिक, बीमा ऐजेंट, पुरातत्व विभाग
(14)	8^{th} SSL	6, 10	2, 6, 10, 11	6 या 10	औषधि चिकित्सक
(15)	8^{th} SSL	2, 10	6, 10,	2 या 6 या 10	दंत चिकित्सक अथवा कान, नाक एवं गला चिकित्सक।

अष्टम भाव बीमा, विज्ञान, खोज एवं शल्य चिकित्सा का भाव है। यदि 8th SSL अपने PS/STL द्वारा 10वाँ भाव एवं SL द्वारा अर्थ वाले (2, 6, 10, 11) भाव दर्शाये तो जातक शल्य चिकित्सक, वैज्ञानिक, दुर्लभ वस्तुओं एवं बीमा से संबंधित कार्य कर सकता है। नीचे अष्टम भाव से संबंधित कुछ संभावित समीकरण दिये जा रहे हैं –

समीकरण (13) में 8th SSL अपने PS/STL द्वारा 8वें एवं 10वे भाव दर्शाने के कारण 8वें भाव जनित व्यवसाय को दर्शाता है। 8वाँ भाव शल्य चिकित्सा का भाव है अतः शल्य चिकित्सक कहा, इसके साथ 8वाँ भाव खोज, शोध, तथा पुरातत्व का भाव है अतः वैज्ञानिक कहा, 8वाँ भाव दुर्घटना के पश्चात सहायतार्थ व्यवसाय का भाव है अतः बीमा ऐजेंट कहा, इसी क्रम में 8th SSL अपने PS/STL द्वारा 10वे भाव के साथ जो भी भाव दर्शाये एवं SL द्वारा 2, 6, 10, 11 वे जैसे भावों में जाये तो जातक PS/STL द्वारा प्राप्त भावों के कारकत्वों से संबंधित व्यापार-व्यवसाय कर सकता है।

अष्टम भाव एवं लाभ हानि :

अष्टम भाव 7वें अर्थात आपके प्रतिद्वंदी का 2रा अर्थात धन स्थान है। यदि 8th SSL अपने PS/STL द्वारा 8वें या 2रे भाव में जाये तो स्पष्ट है की बात धन की हो रही है। वो धन चाहे आपका हो या आपके प्रतिद्वंदी का, कहने का तात्पर्य यह है की दॉव पर तो धन ही लगा है। यदि दॉव पर धन लगा है तो अब प्रश्न या उठता है कि ऐसे समीकरण में लाभ किसे होगा ? नीचे लाभ तथा हानि से संबंधित कुछ समीकरण दिये गये है –

समीकरण	8th SSL	PS/ STL	SL	SSL	फल
1	8th SSL	8	2, 11	2 या 11	अचानक धन लाभ
2	8th SSL	2	5, 12	5 या 12	अचानक धन हानि
3	8th SSL	5	2, 11	2 या 11	शेयर, सट्टा, जुआ से लाभ
4	8th SSL	5	8, 12	8 या 12	शेयर, सट्टा, जुआ से हानि

8th SSL अपने PS/STL द्वारा 8वाँ भाव (अपने प्रतिद्वंदी का 2रा अर्थात धन भाव) दर्शाये तथा SL द्वारा लग्न से लाभ भाव अर्थात 2, 11 भावों में जाये तो ऐसे संयोग लाभदायक हैं। इसी क्रम में समीकरण (2) एवं (4) में भाव 5, 12/8, 12 का दर्शाया जाना क्रमशः धन एवं शेयर, सट्टा आदि में हानि को दर्शाता है क्योंकि 5, 12 भाव 7वे से क्रमशः 11वाँ एवं 6ठा (सफलता वाले भाव दर्शाता है) है। समीकरण 3 में PS/STL द्वारा 5वाँ भाव (शेयर, सट्ट, जुआ इत्यादि) एवं SL द्वारा लाभ भाव 2, 11 दर्शाया जाना शेयर, सट्ट, जुआ इत्यादि से लाभ को दर्शाता है।

अष्टम भाव एवं मृत्यु :

लग्न से 64वाँ नवाँश आरिष्ट कारक होता है जहाँ अष्टमेश जातक के मृत्यु का कारण एवं स्थान की संभावना को दर्शाता है। नक्षत्र ज्योतिष (कस्पल इंटरलिंक्स एण्ड सब सब थ्योरी) से मृत्यु का कारण या अनुमान अष्टम भाव की राशि, 8th SSL के नक्षत्र स्वामी एवं नक्षत्र

स्वामी के विभिन्न भावों में उपस्थित से लगाते हैं। नीचे राशियों, ग्रहों एवं भावों द्वारा मृत्यु के कारणों एवं स्थानों को दर्शाया गया है ताकि पाठकों को फलादेश करते समय सहुलियत हो।

राशि तत्व	राशियाँ
अग्नि तत्व राशियाँ	मेष, सिंह, धनु।
वायु तत्व राशियाँ	मिथुन, तुला, कुम्भ।
पृथ्वी तत्व राशियाँ	वृष, कन्याँ, मकर।
जलीय तत्व राशियाँ	कर्क, वृश्चिक, मीन।

अष्टम भाव में अग्नि तत्व राशि होने पर हिंसा, उपद्रव, विस्फोट, आगजनी आदि से मृत्यु की संभवाना होगी। वायु तत्व राशि होने पर ऊँचाई से गीरने से या वायु यान से, दम घुटने से मृत्यु की संभावना होगी। पृथ्वी तत्व राशि होने पर प्राकृतिक आपदा जैसे – भूकम्प, भूस्खलन, विध्वंश, तोड़–फोड़ के कारण, वाहन, मशीन आदि से इसी क्रम में जलीय तत्व राशि के अष्टम भाव में होने पर बाढ़ अथवा नदी में डूबने से, जलीय रोग – जैसे न्युमोनियाँ, टी. बी, ठंढ आदि से मृत्यु की संभावना रहेगी।

मृत्यु का कारण एवं ग्रह :

8th SSL ग्रह	मृत्यु का कारण
सूर्य	राज्य दण्ड के कारण, आग से, दुर्घटना से, पित्त रोग के कारण, हृदय रोग, रक्त विकार से, पेट रोग से, हड्डी टूटने से।

चंद्रमा	जलीय रोग से, डायरिया, अनीमियाँ, गर्भाशय रोग से, टी. बी से, फेफड़ों के रोग से, सार्वजनिक स्थल पर, डूबने से, भीड़ मे, भगदड़ में।
मंगल	दुर्घटना, युद्ध, झगड़े मे, शस्त्र से, बिज़ली से, अत्यधिक रक्त स्त्राव से, शल्य चिकित्सा के दौरान, ट्यूमर आदि से।
बुध	अस्थमा, गर्भपात के दौरान, उँचाई से, न्युरोलोजिकल डिसआडर, वर्टिगो, ल्युकोडर्मा।
गुरु	ट्यूमर, डॉयबटीज़, लीवर संबंधित रोग, ड्रॉप्सी, मोटापे के कारण, फिल्गॉनॉटिक, थ्रॉम्बोसिस, लिमफटिक एण्ड सर्कुलेट्रिक कॉनजक्सन,
शुक्र	गुप्त रोग, गुर्दा रोग, डॉयबटीज़, वी. डी.
शनि	पछाघात, पेट संबंधी रोग, भूख से, अपाचन के कारण उत्तपन्न रोग से, कैद मे, कैंसर आदि से,
राहु	दीर्घकालीन रोग से, अतड़ियों के रोग से, अल्सर से, हृदय संबंधित रोग।
केतु	कैंसर, पछघात, दुर्घटना, मुर्छा रोग।

मृत्यु स्थान एवं भाव :

8th SSL का नक्षत्र स्वामी कुण्डली के जिस भाव में बैठा होगा मृत्यु उसी दिशा एवं भाव संबंधित स्थान पर होने की संभावना होगी।

प्रथम भाव – पूर्व दिशा एवं स्वयं के घर पर	द्वितीय भाव – पूर्व–पूर्व–उत्तर दिशा
तृतीय भाव – उत्तर–उत्तर–पूर्व दिशा एवं यात्रा में अथवा घर के पास पड़ोस में	चतुर्थ भाव – उत्तर दिशा एवं स्वयं के घर पर।
पंचम भाव –उत्तर–उत्तर–पश्चिम दिशा एवं अपने संतान के घर या उत्तसव पर	षष्ट भाव – पश्चिम–पश्चिम–उत्तर दिशा
सप्तम भाव – पश्चिम दिशा	अष्टम भाव – पश्चिम–पश्चिम–दक्षिण दिशा
नवम भाव– दक्षिण–दक्षिण–पश्चिम दिशा एवं अज्ञात या दूसरे राज्य मे	दशम भाव – दक्षिण दिशा एवं व्यवसाय स्थल पर अथवा ससुराल में
एकादश भाव – दक्षिण–दक्षिण–पूर्व दिशा एवं मित्र या बड़े भाई–बहन के घर	द्वादश भाव – पूर्व्–पूर्व–दक्षिण दिशा एवं विदेश में।

यदि 8^{th} SSL का नक्षत्र स्वामी कुण्डली के 6ठे या 8वें भाव में बैठा हो तो जातक की मृत्यु शत्रु या रोग या जहर आदि से होने की संभावना होगी। यदि 2, 7 भाव में बैठा हो तो स्वभाविक मृत्यु होगी। मृत्यु के संदर्भ में 8^{th} SSL का नक्षत्र स्वामी की उपस्थिति किस भाव में है, किस राशि में है ? इसका आंकलन एवं सार्थक प्रयास करने पर मृत्यु संबंधित बातों का अनुमान लगाया जा सकता है।

नवम भाव

कारकत्व :

नवम भाव से जातक का भाग्य, पिता, दूसरा विवाह, तीसरी संतान, अनैतिक संबंध, धर्म, धर्म में आस्था, मंदीर, तीर्थ स्थल, पुण्य, नैतिक कर्म, न्यायालय, कानून, लम्बी यात्रा, उच्च शिक्षा, विज्ञान, विश्वविद्यालय, दर्शन शास्त्र इत्यादि का विचार करते है।

नवम भाव से संबंधित कुछ संभावित प्रश्न एवं समीकरण :

- पिता की आयु एवं स्वास्थ्य
- उच्च शिक्षा
- दूसरा विवाह
- लम्बी यात्रा

पिता की आयु एवं स्वास्थ्य :

पिता की आयु गणना हेतु 9वें, 11वें एवं 4थे भाव से विचार करते हैं जो कि नवम भाव से क्रमशः 1ला, 3रा एवं 8वाँ भाव है। पिता की आयु गणना ठीक उसी प्रकार करें जैसे लग्न से किसी जातक की आयु का विचार करते हैं। इसी क्रम में पिता के स्वास्थ्य का विचार 2रे, 4थे एवं 8वें भाव से करते हैं जो कि 9वें भाव से क्रमशः 6ठा, 8वाँ एवं 12वाँ भाव है। नीचे पिता की आयु एवं स्वास्थ्य से संबंधित कुछ संभावित समीकरण दिये जा रहे हैं –

SSL	PS/STL	SL	SSL	फल
9, 11, 4	9, 1	5, 7	1 या 5 या 7	पूर्णायु योग
9, 11, 4	9, 4	10, 3, बाधकेश	3 या 4 या बाधकेश	अल्पायु योग
9, 11, 4	9, 1, 4	5, 7, 10, 3+बाधकेश	1, 5, 3, 4	मध्यम आयु

ऊपर दिये गये तीनों समीकारणों को ध्यान से पढ़ने पर स्पष्ट ज्ञात होता है कि आयु के सहायक भाव (नवम भाव से) – 1ला भाव (जो कि नवम से पंचम है), 5वाँ (नवम से नवम है) भाव एवं 7वाँ (नवम से 11वाँ है) भाव है। प्रथम समीकरण में 9वें, 11वें तथा 4थे भाव के SSL अपने PS/STL एवं SL/SSL द्वारा आयु के सभी सहायक भावों में होने से पिता दीर्घायु होंगें। इसी क्रम में दूसरे समीकरण में 9वें, 11वें तथा 4थे भाव के SSL अपने PS/STL एवं SL/SSL द्वारा आयु के सभी मारक भावों में जाने से पिता को आरिष्ट अर्थात अल्पायु बनायेगा। तीसरे समीकरण में आयु कारक एवं मारक दोनों भावों में होने से पिता के मध्यम आयु को दर्शाता है।

पिता के रोग अथवा स्वास्थ्य हेतु 9वाँ, 2रा एवं 4थे भाव का विचार करेंगे जहाँ 9वाँ, नवम से भाव प्रथम भाव है, 2रा भाव 6ठा भाव है तथा 4था भाव नवम भाव से 8वाँ भाव है। आप जानते है कि जातक के रोग अथवा स्वास्थ्य का विचार भाव 1, 6 एवं 8वें से किया जाता है। अतः पिता के स्वास्थ्य विचार हेतु 9वें, 2रे एवं 4थे भाव का विचार करेंगे।

SSL/ (समीकरण)	PS/ STL	SL	SSL	फल
9 भाव (1)	2	9	9 या 2	साधारण रोग
9 भाव (2)	4	2, 9	2 या 4 या 9	असाध्य रोग
2 या 4 भाव (3)	2 या 4 या 9	1, 5 एवं 7	1, 5, 7, 11	रोग का ठीक होना
9 भाव (4)	1 या 5 या 7	1 या 5 या 7 या 9	1 या 5 या 9	निरोगी काया

ऊपर दिये गये समीकरण (1) में नवम भाव (पिता का लग्न भाव) का SSL अपने PS/STL द्वारा 2रे (9वें से 2रा भाव अर्थात 6ठा भाव जो कि रोग कारक है) तथा SL द्वारा 9वें भाव (पिता का लग्न भाव) में गया है। अतः पिता को रोग दर्शा रहा है।

समीकरण (2) में नवम भाव का SSL अपने PS/STL द्वारा 4था (नवम से आठवाँ भाव) तथा SL द्वारा 2रा (नवम भाव से 6ठा अर्थात रोग भाव) एवं 9वाँ (पिता का लग्न भाव) भाव दर्शाने से पिता को गंभीर एवं असाध्य रोग संभावित है। इस समीकरण में कही भी (PS/STL, SL एवं SSL स्तर पर) रोग मुक्ति (1, 7) के भाव दर्शाये नहीं गये हैं साथ ही साथ भाव 2 एवं 4 की युति नवम भाव से है इस लिये असाध्य रोग कहा गया है।

समीकरण (3) में 2रे एवं 4थे भाव के SSL के PS/STL द्वारा 2, 4 एवं 9वाँ भाव दर्शाये जाने से पिता के रोगी होने की संभावना प्रबल है परंतु SL एवं SSL द्वारा 1ला, 5वाँ, 7वाँ एवं 11वाँ भाव दर्शाये जाने से

2रे एवं 4थे भाव का फल स्वत: समाप्त हो रहे हैं अत: पिता निरोगी होंगे।

समीकरण (4) में 9वे भाव का SSL अपने PS/STL एवं SL एवं SSL द्वारा भाव 1 (नवम से पंचम भाव), 5 (नवम से नवम), 7 (नवम से एकादश) एवं 9 (नवम से नवम अर्थात पिता का लग्न भाव) दर्शाने से जातक के पिता आजीवन स्वस्थ रहेंगे। कारण स्पष्ट है। 5वाँ भाव रोग भाव (6ठे भाव) का 12वाँ होने से रोग को समाप्त करेगा दूसरे शब्दों में समझें तो किसी भी भाव से 1, 5, 9 एवं 11वाँ भाव आयु एवं स्वास्थ्य वर्धक माने गये हैं।

उच्च शिक्षा :

नवम भाव उच्च शिक्षा का भाव है। जातक अपने जीवन में उच्च शिक्षा प्राप्त करेगा या नहीं इसका अवलोकन प्रथम भाव, चतुर्थ भाव एवं नवम भाव के SSL से करते हैं। यदि प्रथम भाव का SSL अपने PS/STL द्वारा 4थे (प्रारंभिक शिक्षा) एवं 9वे (उच्च शिक्षा) भाव में जाये तथा SL/SSL द्वारा 4थे एवं 9वें भाव से अनुकूल भावों में हों तो समझें लग्न के द्वारा प्रारंभिक एवं उच्च शिक्षा की प्रतिज्ञा अथवा आश्वासन है। अब 4थे भाव के SSL का संबंध PS/STL द्वारा 4थे एवं 9वे भाव से होना चाहिये तथा SL/SSL द्वारा सहयोग भी प्राप्त होना चाहिये। यदि लग्न एवं 4थे भाव के SSL प्रारंभिक शिक्षा में सफलता ना दिला पायेगे तो उच्च शिक्षा का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

उच्च शिक्षा में सफलता हेतु नवम भाव से अन्य भावों के बारे में विचार करेंगे जो उच्च शिक्षा में सहायक है तथा उन भावों की भी चर्चा करेंगे जो उच्च शिक्षा में बाधक एवं प्रतिकूल हैं –

प्रथम भाव – यह भाव किसी भी घटना अथवा संयोग का अभिन्न भाव है।

द्वितीय भाव – यह भाव ज्ञान का भाव है अतः शिक्षा का सहायक भाव है।

तृतीय भाव – यह भाव शिक्षा हेतु विषय चयन, यादाश्त एवं रुझान का भाव होने से शिक्षा संबंधी भाव है।

चतुर्थ भाव – यह भाव नवम भाव से 8वाँ होने के कारण उच्च शिक्षा में बाधक है परंतु अभियंता संबंधी शिक्षा हेतु आवश्यक भाव है।

पंचम भाव – यह भाव बुद्धि का भाव है अतः शिक्षा में सहायक भाव है।

षष्ट भाव – यह भाव चिकित्सा संबंधी शिक्षा का सहायक भाव है।

सप्तम भाव – यह भाव उच्च शिक्षा में सफलता दिलाने में सहायक है क्योंकि नवम से एकादश भाव है।

अष्टम भाव – शल्य चिकित्सा या पुरातत्व, विज्ञान या पी.एच.डी की पढ़ाई करें तो सहायक अन्यथा उच्च शिक्षा में पूर्ण बाधक।

एकादश भाव – यह भाव सफलता एवं अन्य सभी कार्यों में सहायक है।

ऐसे दो या दो से अधिक भाव जो लग्न एवं शिक्षा भाव से (4, 7, 8 एवं 12वे हो जैसे – 3, 8 एवं 12वाँ भाव) प्रतिकूल हो, शिक्षा में बाधा कारक होंगे। इसके अतिरिक्त वे भाव जिनका शिक्षा भाव से किसी भी प्रकार से अनुकूल संबंध होंगे सफलता दायक होंगे।

विषय चयन :

जातक का रुझान किस विषय में है इसका अनुमान 3रे भाव के SSL के नक्षत्र तथा नक्षत्र स्वामी के विभिन्न भावों में उपस्थिति से करनी चाहिये। विषय के चुनाव की विधि विस्तार से दी जा रही है। पाठकों से अनुरोध है कि नीचे दिये गये क्रमबद्ध तरीकों से बारंबार प्रयास करते रहे ताकि भविष्य में विषय के चुनाव में कठिनाई ना हो।

1. सर्वप्रथम कुण्डली में शिक्षा के संयोगों का विशलेषण करे कि शिक्षा किस स्तर तक आश्वासित है ? शिक्षा के दो स्तर हैं

   अ) प्राथमिक शिक्षा तथा

   ब) उच्च शिक्षा।

2. शिक्षा के विषय चयन के लिये तृतीय भाव के SSL के नक्षत्र द्वारा दर्शाये गये विषयों (नक्षत्रों द्वारा विषय चयन तीसरे अध्याय में दिया गया है) में से किसी एक विषय का चयन करते हैं। अब समस्या सामने आती है कि एक नक्षत्र द्वारा कई विषयों को दर्शाया गया होता है। ऐसे में किस विषय का चयन किया जाये ?

3. नक्षत्र द्वारा दर्शाये गये विषयों के चयन में नक्षत्र स्वामी ग्रह की भूमिका विशेष होती है। मान लें तृतीय भाव का SSL एक ऐसे नक्षत्र पर है जो अपने कारकत्व द्वारा वाणिज्य, अर्थशास्त्र, पत्रकारिता, ई.एन.टी डॉक्टर तथा अभियंता की शिक्षा को दर्शाता हो तो ऐसे में जातक किस विषय से संबंधित पढ़ाई करेगा ? यहाँ नक्षत्र स्वामी ग्रह की भूमिका का उल्लेख़ विशेष रूप से करना चाहुंगा। यदि ऐसे में नक्षत्र स्वामी ग्रह की उपस्थिति 2रे एवं 11वे भाव में हो तो जातक वाणिज्य या अर्थशास्त्र से संबंधित पढ़ाई करेगा

क्योंकि 2रा भाव अर्थ या वाणिज्य का भाव है तथा 11वाँ भाव इच्छा पूर्ति का भाव है या तृतीय भाव के SSL ग्रह का नक्षत्र जिस विषय को दर्शाये उसका (SSL का) नक्षत्र स्वामी तथा उप नक्षत्र स्वामी मिल कर शिक्षा से संबंधित उन सभी सहायक भावों को दर्शायें तो जातक का रुझान स्पष्ट रूप से ज्ञात किया जा सकता है। पुनः यदि ई.एन.टी की शिक्षा दर्शाये तो नक्षत्र स्वामी एवं उप नक्षत्र स्वामी 3 (गला, नाक, कान), 6ठा भाव चिकित्सा को तथा 8वाँ भाव शल्य चिकित्सा को दर्शाता है, इसी क्रम में यदि नक्षत्र स्वामी 3रे और 11 भाव में या नक्षत्र द्वारा 3रा भाव तथा उप नक्षत्र द्वारा 11वे भाव में जाने से पत्रकारिता की शिक्षा की संभावना बनेगी। अभियंता की शिक्षा के लिये नक्षत्र स्वामी द्वारा 4, 10वे भाव में जाना आवश्यक है क्योंकि ये भाव अभियंता को दर्शाते हैं। आपकी सुविधा के लिये निचे विभिन्न भावों द्वारा विभिन्न विषयों को दर्शाया गया है।

भाव एवं विषय :

प्राथमिक भाव	**सहायक भाव**	**विषय**
2	11	गणित, वाणिज्य, अर्थशास्त्र, ध्वनि संबंधित
2, 6	11	दंत चिकित्सक
6 या 8	5, 7, 11	चिकित्सक अथवा शल्य चिकित्सक
3	9, 11	पत्रकारिता अथवा सूचना संबंधी, कम्प्यूटर शिक्षा

3, 6 या 8	11	कान, नाक एवं गला के चिकित्सक/शल्य चिकित्सक
6 या 9	11	कानून संबंधित शिक्षा
4, 10	11	अभियंता संबंधी शिक्षा
3, 8	11	कम्प्यूटर अभियंता संबंधित शिक्षा
5, 6	11	कला संबंधी शिक्षा, स्त्री रोग संबंधी शिक्षा
7	11	व्यापारिक संबंधी (Management)
9	11	कानून संबंधि, दर्शन शास्त्र, धार्मिक शिक्षा
12	3, 11	विदेशी भाषा, शोध संबंधी शिक्षा।

ऊपर दिये गये संयोग भाव जनित शिक्षा को दर्शाते हैं। इसके अतिरिक्त सैकड़ों संयोग संभावित हैं। विषयादि की संक्षिप्त चर्चा एक उदाहरण दे कर करना उपर्युक्त होगा। 9वें भाव के SSL यदि अपने PS/STL द्वारा 2रा भाव दर्शाये तो जातक गणित, वाणिज्य, अर्थशास्त्र अथवा ध्वनि संबंधित शिक्षा की ओर इशारा करेंगे क्योंकि 2रा भाव इन सभी का कारक भाव है। इसके अतिरिक्त 2रा भाव शिक्षा से संबंधित जिस-जिस क्षेत्रों की ओर इशारा करेंगे जातक का उन्हीं विषयों को लेकर शिक्षा प्राप्त करना संभावित है। इसी संदर्भ में स्पष्ट करना चहुंगा कि नवम भाव के SSL के साथ साथ संबंधित भाव (2रा) भी शिक्षा के लिये भी अनुकूल या सहायक होना चाहिये अन्यथा उस भाव जनित शिक्षा प्राप्त कर पाना कठिन होगा। तृतीय भाव कम्प्यूटर, पत्रकारिता अथवा सूचना संबंधी शिक्षा का कारक भाव है। इसकी युति यदि नवम भाव से हो तो तीसरे भाव से संबंधित सभी शैक्षणिक विषयों की शिक्षा संभावित है। इसी क्रम

में दिये गये भावों से संबंधित विषय का चयन पूरी सावधानी से करना चाहिये। इसके अलावा नीचे दिये गये कुछ छोटी–छोटी अन्य महत्वपूर्ण बातों को भी ध्यान में रखें तो विषय चयन में अच्छी सफलता मिलेगी।

विषय के चुनाव के लिए अन्य किन–किन भावों के SSL का अध्ययन करना चाहिये ? नीचे दिये गये विधि से क्रमानुसार अवलोकन करें –

- प्रथम भाव के SSL का संबंध 4थे एवं 9वें भाव से होना आवश्यक है साथ ही साथ अनुकूल एवं शिक्षा के लिये सहायक भी होना चाहिये।
- 4थे एवं 9वें भाव के SSL के नक्षत्र स्वामी (STL) जिस विषय को दर्शायें एवं जिस भाव (निरायन भाव चलित) में हों उस भाव के SSL ग्रह भी उस विषय को दर्शाने चाहिये। तात्पर्य यह कि यदि ऐसा भाव उस विषय को जब तक समर्थन नहीं देगा तब तक जातक उस विषय में सफलता प्राप्त कर ही नहीं सकता।
- तृतीय भाव के SSL जन्म कुण्डली के जिस नक्षत्र पर हो उस नक्षत्र के कारक विषय का चुनाव करना चाहिये साथ ही उस नक्षत्र का स्वामी ग्रह अपने स्वभावनुसार जिस विषय की ओर इशारा करे उसे भी ध्यान में रखें। अब अंतिम क्रम में नक्षत्र स्वामी निरायन भाव चलित कुण्डली के जिस भाव में बैठा हो उस भाव जनित विषय भी ध्यान में रखें लें।
- विषय चयन के अंतिम चरण में नवम भाव एवं तीसरे भाव के SSL के STL द्वारा दर्शाये गये सभी विषयों में जो विषय एक जैसे हों, वही विषय चुने यदि विषय चयन के समय दशा स्वामी (जिस समय विषय का चुनाव किया जा रहा हो) ग्रह भी ऐसे ही विषय को दर्शायें।

दूसरा विवाह :

जातक के जीवन में दूसरा विवाह संभावित है या नहीं ? क्या जातक तलाक के बाद दूसरा विवाह करेगा? क्या जातक ऐसे समुदाय या जाति से है कि बिना तलाक के एक से ज्यादा विवाह कर सकता है? क्या जातक या जातिका विधवा अथवा विधुर होने के पश्चात दूसरा विवाह करेगा ? ऐसे सभी प्रश्नों के उत्तर हेतु जातक/जातिका की कुण्डली में नीचे दिये गये क्रम से अवलोकन कर अपना मत दें –

1. प्रथम भाव के SSL अपने PS/STL एवं SL/SSL द्वारा 7वे एवं 9वे भाव से संबंधित हो अथवा विवाह के साथ–साथ तलाक के संयोग भी दर्शाने चाहियें।
2. सप्तम भाव के SSL अपने PS/STL एवं SL/SSL द्वारा विवाह संयोग के साथ–साथ संबंध विच्छेद भी दर्शायें तथा 9वे भाव से भी संबंधित हो।
3. इसी क्रम में 9वे भाव के SSL अपने PS/STL एवं SL/SSL द्वारा 7वे भाव से युक्त हो कर दूसरे विवाह में सहायक हो।

नीचे दूसरे विवाह से संबंधित क्रम बद्ध समीकरण दर्शाये जा रहे हैं –

SSL/ (समीकरण)	**PS/ STL**	**SL**	**SSL**	**फल**
SSL (प्रथम भाव)	7, 9	5, 11, 6, 12	6, 12	विवाह एवं तलाक दोनों संभावित

SSL (सप्तम भाव)	7, 9	5, 6, 11	6, 12	तलाक एवं दूसरा विवाह संभावित
SSL (नवम भाव)	7	5, 11	7 या 5 या 11	दूसरा विवाह संयोग

ऊपर दिये गये समीकरण में प्रथम भाव के SSL अपने PS/STL द्वारा 7वे (प्रथम विवाह) भाव के साथ-साथ 9वें (दूसरा विवाह) भाव से युक्त है तथा SL/SSL द्वारा विवाह में सहायक (5, 11) एवं तलाक (6, 12) वाले दोनों भावों में होने से विवाह एवं तलाक दोनों ही संभावनायें बना रहा है। अंतिम निर्णय के लिये SSL द्वारा प्राप्त भाव (6, 12) स्पष्ट रूप से तलाक दर्शा रहा है।

दूसरे समीकरण में लग्न की ही भॉति सप्तम भाव के SSL का भी अपने PS/STL द्वारा 7वे एवं 9वें भाव से युति आवश्यक है तथा SL/SSL द्वारा विवाह के संयोग के साथ-साथ 6ठा भाव का दर्शाया जाना विवाह में विछोह या विसंगती को दर्शाता है। अंतिम निर्णय के लिये SSL द्वारा प्राप्त भाव (6, 12) स्पष्ट रूप से तलाक दर्शा रहा है। ज्ञात रहे की हमारे देश में मुख्य रूप से हिंदुओ में बिना तलाक के दूसरा विवाह कानूनन अपराध है। दूसरे विवाह की संभावना अन्य कारणों से भी संभावित है जैसे - पति या पत्नी की मृत्यु के ऊपरांत इत्यादि।

तीसरे समीकरण में नवम भाव के SSL अपने PS/STL द्वारा 7वें भाव एवं SL/SSL द्वारा समर्थन (5, 11) वाले भावों में जाने से दूसरे विवाह की संभावना निर्मित करता है। पाठकगण सदैव स्मरण रखें कि जब बात ऐसी घटना की हो जिसके घटित होने के लिये दो या दो से अधिक भावों

की सहमति या सहयोग आवश्यक हो तो ऐसी स्थिति में क्रमबद्ध तरीके से अवलोकन करने के पश्चात ही फलादेश करना चाहिये।

लम्बी यात्रा :

यात्रा से संबंधित तीन भाव माने गये हैं –

- 3रा (छोटी यात्रा)
- 9वाँ (दूर अर्थात राज्य या जिले से बाहर) तथा
- 12वाँ (विदेश या अज्ञात स्थान)।

दिये गये तीनों भावों के साथ अन्य भावों की युति यात्रा के उद्देश्य दर्शाऐंगे। यात्रा से संबंधित कुछ संयोग एवं समीकरण नीचे दिये जा रहे हैं –

SSL/ (समीकरण)	**PS/ STL**	**SL**	**SSL**	**फल**
SSL (3रा भाव)	4	9, 11	9 या 11	लम्बी यात्रा
SSL (9वाँ भाव)	3	12	3 या 12	विदेश यात्रा
SSL (12वाँ भाव)	3	9	3 या 9 या 12	लम्बी या विदेश यात्रा

ऊपर दिये गये समीकरण की विवेचना में बस इतना ही कहुंगा कि जब किसी भाव के SSL ग्रह अपने PS/STL एवं SL द्वारा यात्रा के भावों से युक्त होते हैं तो यात्रा के उद्देश्य को दर्शाते हैं। मान लें प्रथम भाव का

SSL ग्रह अपने PS/STL द्वारा चतुर्थ या नवम भाव दर्शाये तथा SL अपना सहयोग 3, 9 एवं 12वें भाव द्वारा करे तो संभव है कि जातक शिक्षा हेतु विदेश जाये। इसी क्रम में यदि प्रथम भाव का SSL ग्रह अपने PS/STL द्वारा 7वें भाव को एवं SL द्वारा भाव 5, 11 के साथ 9वें एवं 12वें भावों में जाये तो जातक के विदेश यात्रा का करण विवाह से संबंधित है। अस्तु!

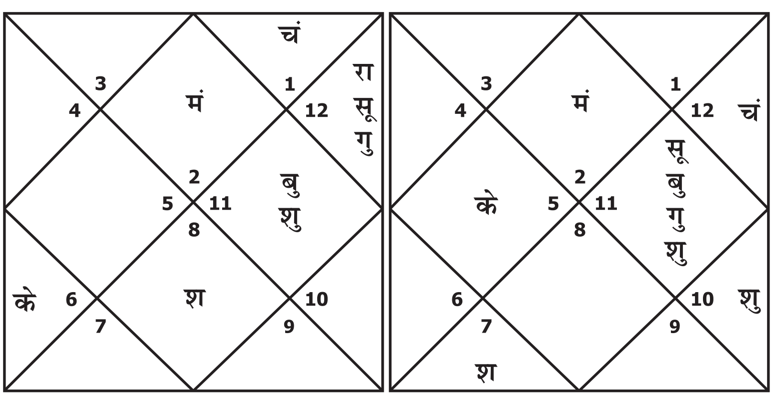
उच्च शिक्षा

उदाहरण एवं अभ्यास संख्या – 2

नाम – उदाहरण संख्या – 2, दिनांक – 31.03.1987, समय – 09:57:07, स्थान – कोडर्मा (झारखण्ड)।

शिक्षा के उत्तम संयोग :

शिक्षा भाव – 4 एवं 9, शिक्षा के सहायक भाव – 1, 2, 3, 4, 5, 7, 9 एवं 11; शिक्षा में बाधक भाव – 3, 8, 12 / 4, 8, 12;



ग्रह तालिका

ग्रह	राशि	D-M-S	RL	STL	SL	SSL	PS
सूर्य	मीन	16-15-16	गुरू	शनि	गुरू	चंद्र	
चंद्र	मेष	06-41-46	मंगल	केतु	राहू	बुध	PS
मंगल	वृष	02-37-20	शुक्र	सूर्य	गरू	चंद्र	PS
बुध	कुम्भ	18-54-15	शनि	राहू	चंद्र	बुध	PS
गुरू	मीन	13-09-21	गुरू	शनि	राहू	राहू	PS
शुक्र	कुम्भ	09-18-58	शनि	राहू	गुरू	बुध	PS
शनि	वृश्चिक	27-29-07	मंगल	बुध	गुरू	चंद्र	
राहू	मीन	17-49-26	गुरू	बुध	बुध	राहू	PS
केतु	कन्या	17-49-26	बुध	चंद्र	बुध	बुध	PS

भाव तालिका

भाव	राशि	D-M-S	RL	STL	SL	SSL	Arc%
I	वृष	28-35-09	शुक्र	मंगल	शनि	केतु	51.72
II	मिथुन	22-31-39	बुध	गुरू	शनि	केतु	94.49
III	कर्क	17-00-28	चंद्र	बुध	बुध	केतु	66.71
IV	सिंह	15-06-27	सूर्य	शुक्र	शुक्र	शनि	98.96
V	कन्या	18-24-51	बुध	चंद्र	बुध	शुक्र	82.19
VI	तुला	24-33-52	शुक्र	गुरू	बुध	शुक्र	94.61
VII	वृश्चिक	28-35-09	मंगल	बुध	शनि	केतु	51.72
VIII	धनु	22-31-39	गुरू	शुक्र	शनि	केतु	04.27
IX	मकर	17-00-28	शनि	चंद्र	शनि	चंद्र	72.31
X	कुम्भ	15-06-27	शनि	राहू	केतु	शनि	96.28
XI	मीन	18-24-51	गुरू	बुध	बुध	शनि	52.77
XII	मेष	24-33-52	मंगल	शुक्र	बुध	शुक्र	59.31

इस जातक की कुण्डली में शिक्षा के उत्तम योग है। जातक एक इंजीनियर है। उसने कंमप्युटर प्रोग्रामिंग में अच्छे ग्रेड से अपनी पढ़ाई पूरी की। आज अमेरिका में एक उच्च संस्थान में अच्छे पद पर कार्यरत है।

विश्लेषण :

प्रथम भाव का SSL केतु (PS) है तथा केतु बुध (PS) की राशि एवं चंद्र के नक्षत्र में है। बुध का नक्षत्र स्वामी राहु है एवं चंद्र का नक्षत्र स्वामी स्वयं केतु है। अतः केतु, बुध एवं चंद्र की उपस्थिति भाव तालिका में शिक्षा से संबंधित सभी सहायक भावों [4 (प्रारंभिक शिक्षा), 9 (उच्च शिक्षा), 2 (ज्ञान भाव), 5 (बुद्धि भाव), 7 (9वें भाव से 11वाँ भाव) तथा 11वें (इच्छा पूर्ति भाव)] में जाने से तथा केतु के SL/SSL (बुध) द्वारा शिक्षा के सभी समर्थन (2, 3, 5, 6, 7, 10, 11 एवं 12वे) वाले भावों में होने से लग्न द्वारा उच्च शिक्षा की पूर्ण संभावना दर्शायी गयी है।

प्रारंभिक शिक्षा अर्थात चतुर्थ भाव का SSL (शनि) - बुध के नक्षत्र (STL) में है (जहाँ बुध भाव तालिका में 2, 3, 5, 6, 7, 10, 11 एवं 12वें भाव में है), गुरु के उप नक्षत्र (SL) में (जहाँ गुरु 2, 6, 8, 10 एवं 11वे भाव में है) एवं चंद्र के उप-उप नक्षत्र (SSL) में (जहाँ चंद्र 3, 5, 9 एवं 11वें भाव में है) है अतः जातक अपने प्रारंभिक शिक्षा में पूर्णतः सफलता प्राप्त की क्योंकि 4थे भाव का SSL अपने STL के द्वारा शिक्षा से संबंधित सभी सहायक भावों में गया है तथा गुरु (SL) एवं चंद्र (SSL) की उपस्थिति क्रमशः 2, 6, 11 एवं 3, 5, 9, 11वें भावों में होने के कारण शिक्षा में विशेष सफलता दिला पाने में सहायक है।

उच्च शिक्षा अर्थात नवम भाव का SSL स्वयं चंद्रमा है जो केतु के नक्षत्र में है अतः केतु अपना, बुध एवं चंद्रमा का फल देगा अर्थात कुल मिला कर चंद्रमा 3, 5, 9 एवं 11वें भाव का, केतु 1, 2, 3, 4, 7, 8 एवं 10वें भाव का तथा बुध 2, 3, 5, 6, 7, 10, 11 एवं 12वें भाव का फल देगा। कुल मिलाकर PS/STL स्तर पर अच्छे एवं बुरे, सहायक एवं बाधक दोनों भावों की युति है। चंद्रमा का SL राहु है जो केवल 10वें भाव में है। राहु बुध के STL में होने से 2, 3, 5, 6, 7, 10, 11 एवं 12वें भाव का एवं गुरु की राशि पर होने के कारण 2, 6, 8, 10 एवं 11वे भाव का फल देगा। कुल मिला कर पुनः यहां अच्छे एवं बुरे, सहायक एवं बाधक दोनों भावों की युति है इस कारण शिक्षा में अन्य कारणों से बाधायें तो आयी परंतु चंद्रमा का SSL बुध है जहां बुध 2, 3, 5, 6, 7, 10, 11 एवं 12वें भाव में होने के कारण जातक अतः अपने उच्च शिक्षा में पूर्णतः सफल रहा।

दशम भाव

दशम भाव कर्म, व्यापार–व्यवसाय द्वारा प्राप्त मान सम्मान का द्योत्तक हैं। दशवें भाव से व्यापार, व्यवसाय, उन्नति, मान प्रतिष्ठा, स्थाई (सरकारी नौकरी) रोजगार, राज नेता, भौतिक वस्तुओं की प्राप्ति का विचार करते हैं।

दशम भाव से अनुकूल भाव – 1, 2, 3, 4, 6, 7, 10, 11

दशम भाव से प्रतिकूल भाव – 5, 8, 12/6, 8, 12/7, 8, 12/5, 8/6, 8/5, 9, 12/5, 12/8, 12/5, 9/3, 8, 12

दशम भाव की युति यदि अनुकूल भावों से हो तो जातक अपने व्यापार–व्यवसाय में सफलता तथा धन, मान, यश, पद एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करता है इसके विपरीत दो या दो से अधिक प्रतिकूल भावों से युति हो तो जातक अपने व्यापार–व्यवसाय में हानि, बाधा, अवनति अथवा असफलता प्राप्त करता है। दशम भाव से संबंधित कुछ संभावित प्रश्न एवं समीकरण नीचे दिये जा रहे हैं ताकि दशवें भाव से संबंधित विभिन्न घटनाओं को ठीक से समझा जा सके –

- जातक के जीवन में व्यापार–व्यवसाय की स्थिति कैसी होगी ?
- क्या जातक का व्यापार–व्यवसाय सुदृढ़ होगा या जातक बिना व्यवसाय के जीवन व्यतीत करेगा?
- क्या जातक का व्यापरिक जीवन उथल–पुथल वाला होगा ?
- क्या जातक अपना व्यापार–व्यवसाय परिवर्तन करेगा ?

- जातक दूसरे व्यापार–व्यवसाय में सफलता प्राप्त करेगा या असफल रहेगा ?
- नये व्यापार–व्यवसाय हेतु स्थान परिवर्तन जातक के लिये अनुकूल होंगे या प्रतिकूल ?
- नौकरी या व्यवसाय में वाद–विवाद एवं दण्ड।

जातक के जीवन में उसके व्यापार या व्यवसाय की स्थिति कैसी रहेगी इसका विचार 1ले, 6ठे एवं 10वे भाव के SSL के PS/STL एवं SL/SSL की (भाव कुण्डली तथा जन्म कुण्डली मे) विभिन्न भावों में उपस्थिति के अनुसार करते हैं। नीचे जातक के व्यापार–व्यवसाय से संबंधित कुछ सरल समीकरण दिये जा रहे हैं –

10^{th} SSL	**PS/STL**	**SL**	**SSL**	**फल**
10^{th} SSL	10	2, 6, 11	2 या 10 या 11	व्यापार–व्यवसाय में सफलता
10^{th} SSL	2, 6, 10, 11	2, 6, 10, 11	6 या 10 या 11	सुदृढ़ एवं सफल व्यापार
10^{th} SSL	10	5, 8, 12	5 या 8 या 12	व्यापार में हानि एवं असफलता
10^{th} SSL	5, 8, 9, 12	6, 8, 12	5 या 8 या 12	बिना व्यवसायिक जीवन के
10^{th} SSL	2, 6, 8, 9	10, 11 एवं 5, 12	2, 10 एवं 5, 8	उथल–पुथल व्यवसायिक जीवन

ऊपर दिये गये सभी छः समीकारणों में व्यापार-व्यवसाय से संबंधित संभावनाओं को दर्शाया गया है। प्रथम समीकरण में 10th SSL के PS/STL द्वारा 10वाँ भाव एवं SL द्वारा 2, 6 एवं 11वाँ भाव दर्शाया गया है जहाँ 10th SSL का SSL सफलता एवं व्यापारिक लाभ को समर्थन दे रहा है। यह एक अच्छा ग्रह संयोग है। दूसरे समीकरण में 10th SSL के PS/STL एवं SL/SSL द्वारा सभी धन लाभ एवं सफलता वाले भावों की उपस्थिति सुदृढ़ व्यापारिक-व्यवसायिक स्थिति को दर्शाते हैं।

तीसरे समीकरण में 10th SSL के PS/STL द्वारा 10वाँ भाव एवं SL द्वारा भाव 5, 8, 12 का दर्शाया जाना व्यापार-व्यवसाय में असफलता तथा हानि को दर्शाता है। भाव 5, 8, 12 किस प्रकार व्यापार-व्यवसाय में हानि या असफलता देते हैं इसे समझना भी आवश्यक है। नीचे ऐसे ही कुछ भावों के संयोगों का उल्लेख दिया जा रहा है।

भाव संयोग शुभ-अशुभ :

कुण्डली में ग्रहों द्वारा प्राप्त भावों का विचार सदैव, लग्न एवं सप्तम भाव से करना चाहिये। जो भाव संयोग, लग्न से अनुकूल एवं सहायक होते हैं वो सप्तम भाव के प्रतिकूल होंगे इसके विपरीत जो भाव संयोग, लग्न से प्रतिकूल होते हैं वो सप्तम (आपके प्रतिद्वंदी) के लिये अनुकूल होंगे। ऊपर दिये गये प्रथम समीकरण में 10th SSL के PS/STL द्वारा 10वाँ भाव एवं SL द्वारा 2, 6 एवं 11वाँ भाव दर्शाया गया है जो की लग्न से अनुकूल, सफलता एवं धन दायक भाव हैं अतः सप्तम (आपके प्रतिद्वंदी) भाव के लिये प्रतिकूल हैं। कैसे ?? सर्व प्रथम 2, 6, 11 भाव संयोग लेते हैं। सप्तम भाव से 2रा भाव 8वाँ, 6ठा भाव 12वाँ तथा 11वाँ भाव 5वाँ होता है। अर्थात लग्न से 2, 6, 11वाँ भाव, सप्तम भाव अर्थात आपके शत्रु या प्रतिद्वंदी का क्रमशः 8, 12 तथा 5वाँ भाव है जो की

सप्तम (शत्रु) के असफलता एवं हानि का भाव है। इसी क्रम में लग्न से 5, 8, 12 भाव संयोग सप्तम भाव का क्रमशः 11, 2 एवं 6ठा भाव है जो की लग्न का प्रतिकूल एवं हानि भाव संयोग है। लग्न से 6ठा, 8वाँ एवं 12वाँ भाव प्रतिकूल है क्योंकि लग्न से तीनों त्रिक भाव हैं। ज्ञात रहे 8वाँ एवं 12वाँ भाव सप्तम से 2रा (धन) तथा 6ठा (लग्न से 12वाँ होने से लग्न के पराजय का भाव है एवं 7वें से 6ठा होने से 7वें के विजय का द्योत्तक है) भाव है। वास्तव में लग्न एवं 10वे भाव का संयोग 6, 8 एवं 12वें भाव से होना व्यापार-व्यवसाय में असफलता का सूचक है। विषय से हट कर बात करें तो लग्न के साथ 6, 8 एवं 12वें भाव का संयोग असाध्य रोग देता। 3रे भाव से इन भावों (6, 8, 12) का संयोग कैद (जेल), सरकारी या गैर सरकारी विवाद का कारक है। 4थे भाव के साथ वाहन आदि से दुर्घटना का कारक है। इत्यादि।

पांचवें समीकरण में 10^{th} SSL के PS/STL एवं SL के द्वारा क्रमशः 5, 8, 9 एवं 12वाँ भाव तथा 6, 8, 12 भावों का दर्शाया जाना, जातक को बिना व्यवसायिक जीवन के होना दर्शाता है। पुनः एक नियम का स्मरण करेंगे यदि किसी भाव का SSL अपने PS/STL द्वारा अपने स्वयं के भाव से सर्वथा विपरीत भावों में चाला जाये एवं SL द्वारा समर्थन प्राप्त करे तो उस भाव का फल स्वतः समाप्त हो जाता है। यहाँ 10^{th} SSL के PS/STL एवं SL के द्वारा क्रमशः 5, 8, 9 एवं 12वाँ भाव तथा 6, 8, 12 भावों में जाने से जातक का व्यापारिक अथवा व्यवसायिक जीवन आरंभ से ही नहीं (बाधित) होगा क्योंकि 10वें भाव से 5वाँ, 8वाँ एवं 12वाँ कैसे प्रतिकूल होता है अब आप जानते हैं। इसी क्रम में 9वाँ भाव 10वें भाव से 12वाँ होने के कारण 10वें भाव का फल पूर्ण रूप से समाप्त कर पाने में सक्षम है। इसे 10^{th} SSL की प्रतिज्ञां समझें जैसा की आरंभ में ही बताया जा चुका है।

अंतिम समीकरण में 10th SSL के PS/STL एवं SL के द्वारा अनुकूल एवं प्रतिकूल दोनों भावों की उपस्थिति होने से जातक के व्यापार–व्यवसाय में उथल–पुथल संभावित है।

व्यापार–व्यवसाय में अनुकूल/प्रतिकूल संयोग :

जातक के जीवन में कई बार ऐसी स्थितियाँ उत्पन्न होतीं हैं जिसके कारण व्यापार–व्यवसाय में परिवर्तन करना पड़ता है। यहाँ पुनः कुछ प्रश्न उठ खड़े होते हैं जैसे – व्यापार परिवर्तन अनुकूल होगा या प्रतिकूल ? नया व्यवसाय देश में या विदेश में ? ऐसे सभी प्रश्नों के उत्तर हेतु 6ठे (नौकरी) अथवा 10वें भाव के SSL का अध्ययन करना चाहिये। इसे निचे दिये गये समीकरण द्वारा समझने का प्रयास करेंगे –

10th SSL	**PS/STL**	**SL**	**SSL**	**फल**
10th SSL (1)	3 या 12	2, 6, 11	2 या 6 या 11	व्यवसाय परिवर्तन उन्नति एवं धनदायक
6th SSL (2)	5, 10	2, 12	2, 6, 10, 11	व्यवसाय परिवर्तन उन्नति एवं धनदायक
10th SSL (3)	3, 9, 10	2, 6, 11+12	3, 10+12	परिवर्तन विदेश में उन्नति के साथ

10th SSL (4)	6, 10	5, 6, 9	10, 8, 12	व्यवसाय परिवर्तन अवनति एवं दण्डयुक्त
10th SSL (5)	6 या 10	3, 8, 12	8, 9 या 12	दण्डयुक्त बर्खास्तगी
10th SSL (6)	10	8, 9	8 या 9	दण्डयुक्त बर्खास्तगी
10th SSL (7)	10	5, 8	10	व्यापार-व्यवसाय में बाधा

समीकरण (1) में 10th SSL के PS/STL द्वारा 3रा (स्थान परिवर्तन का सूचक है) भाव या 12वाँ (12वाँ भाव 10वें भाव का विविध भाव होने से दूसरा व्यवसाय है अर्थात व्यवसाय परिवर्तन का सूचक हैं) भाव एवं SL द्वारा 2रा (धन), 6ठा एवं 11वाँ (सफलता एवं ईच्छपूर्ति) भाव का दर्शाया जाना व्यवसाय परिवर्तन में सफलता एवं धन लाभ का द्योत्तक है। जहाँ 10th SSL के SSL द्वारा भी प्रारंभिक भाव को समर्थन देना आवश्यक है।

समीकरण (2) में 6th SSL के PS/STL के द्वारा 3रा (स्थान परिवर्तन का सूचक है), 5वाँ (6ठे भाव का 12वाँ भाव है अर्थात वर्तमान नौकरी का छूटना दर्शाता है) एवं 10वाँ भाव (व्यवसाय) तथा SL/SSL द्वारा 2रा (धन) एवं 12वाँ (व्यवसाय परिवर्तन) भाव / 2रा (धन), 6, 10, 11वाँ (सफलता एवं मान सम्मान) भाव दर्शाये गये हैं अतः ऐसे भाव संयोग व्यवसाय परिवर्तन से धन लाभ एवं सफलता दर्शातें हैं।

समीकरण (3) में PS/STL स्तर पर 10वें भाव के साथ 3, 9 तथा SL स्तर पर भाव 2, 6, 11 के साथ 12वाँ भाव दर्शाया गया है। भाव संयोग 3, 9, 12 विदेश गमन को दर्शाता है। SSL स्तर पर भी 10वें, 3रे एवं 12वाँ भाव विदेश में उन्नत्ति के साथ व्यवसाय परिवर्तन को दर्शाता है।

समीकरण (4) में 10th SSL के PS/STL द्वारा भाव 6, 10 तथा SL/SSL द्वारा क्रमशः भाव 5, 6, 9 तथा 10, 8, 12 का दर्शाया जाना जातक के व्यवसाय (नौकरी) में दण्ड को दर्शाता है। इन भावों के साथ द्वारा भाव 6 एवं 10 की उपस्थिति से नौकरी के बचे रहने के संकेत हैं।

समीकरण (5) एवं (6) में PS/STL के द्वारा भाव 6 एवं 10 दर्शाये गये हैं एवं SL/SSL द्वारा 6ठे एवं 10वें से सभी प्रतिकूल भावों में उपस्थिति नौकरी से दण्ड फलस्वरूप बर्खास्तगी हैं।

सेवा निवृत्ति संयोग :

जीवन में एक समय ऐसा भी आता है जब जातक को अपनी नौकरी से अवकाश अर्थात निवृत्ति लेनी पडती है। कई बार जातक स्वयं अपनी इच्छा से नौकरी से अवकाश लेता है। ऐसे ही कुछ समीकरण नीचे दिये जा रहे हैं –

10th SSL	**PS/STL**	**SL**	**SSL**	**फल**
10th SSL	8, 10	5, 9	5 या 9	सेवा निवृत्ति समय पर
10th SSL	10	1, 5, 9	5 या 9	असमय स्वेच्छा से निवृत्ति

व्यापार या व्यवसाय का चुनाव :

व्यापार या व्यवसाय का सही चुनाव जीवन में स्थिरता एवं समृद्धि देता है। जीविका हेतु व्यापार या व्यवसाय का चुनाव किस आधार पर करें ? क्या नौकरी करना ठीक होगा या व्यापार एक अच्छा विकल्प होगा ? आशय यह कि धन, मान यश तथा प्रतिष्ठा किस प्रकार प्राप्त होगा ? मेरे मतानुसार व्यवसाय के चुनाव का आधार होना चाहिये –

- कुण्डली में 6ठे भाव से नौकरी तथा 7वें भाव से व्यापार का विचार करते हैं। परंतु आवश्यक नहीं कि 6ठे भाव से केवल व्यवसाय अर्थात नौकरी का ही विचार किया जाना चहिये।

- यदि कुण्डली में द्वितीय भाव, षष्ट भाव एवं दशम भाव के SSL अपने PS/STL एवं SL/SSL द्वारा 2रे (धन) भाव, 6ठे भाव, 7वें भाव तथा 10वें भाव से संबंधित सभी अनुकूल भावों में हों तो जातक को अपने रुझान के अनुसार व्यापार या व्यवसाय करना चहिये।

- यदि जातक की कुण्डली में द्वितीय भाव, षष्ट भाव एवं दशम भाव के SSL अपने PS/STL एवं SL/SSL द्वारा 2रे (धन) भाव, 6ठे भाव, 7वें भाव तथा 10वें भाव से संबंधित धन हानि या उथल पुथल वाले (5, 8, 12 या 6, 8, 12 + 2, 6 या 10 या 11) भावों में हों तो जातक को अपने जीवन में नौकरी आदि का विचार करना चाहिये ताकि आय / वेतन निरंतर प्राप्त होता रहे।

नीचे व्यापार–व्यवसाय के चयन से संबंधित कुछ संयोग दर्शाये जा रहे हैं–

10^{th} SSL	**PS/STL**	**SL**	**SSL**	**फल**
10^{th} SSL	10+3	2, 6, 11	6 या 10 या 11	ट्रेडिंग, प्रिंटिंग, कम्प्यूटर, सूचना या पत्रकारिता संबंधी व्यवसाय
10^{th} SSL	10+4	2, 6, 11	6 या 10 या 11	चल-अचल, फैक्ट्री या शिक्षक
10^{th} SSL	10+4	2, 6, 11 . 3	3 या 6 या 10	परिवहन व क्रय-विक्रय से व्यवसाय
10^{th} SSL	10+5	3+2, 6, 11	3 या 6 या 10	होटल, कला, खेल संबंधी व्यवसाय
10^{th} SSL	10+6	2, 6, 11	6 या 10 या 11	दवा या चिकित्सा, कानून व्यवसाय
10^{th} SSL	7, 10	2, 6, 11	7 या 11	बैंक या स्वतंत्र व्यवसाय
10^{th} SSL	10+8	2, 6, 11	6 या 8 या 10	शल्य चिकित्सक,

				बीमा, साइंस्टीस्ट या एंटीक वस्तुओं का व्यवसाय
10^{th} SSL	10+9	2, 6, 11	6, 10 या 11	प्रोफेसर, जज, राज्य नेता
10^{th} SSL	10 + 11	2, 6, 11	6 या 10 या 11	कमर्शियल व्यवसाय
10^{th} SSL	10+12	2, 6, 11	6 या 10 या 12	जेलर, आयात-निर्यात, चिकित्सालय व्यवसाय।

ऊपर दिये गये सभी समीकारणों में 10^{th} SSL के PS/STL द्वारा 10वें भाव के साथ-साथ 1 से सभी 12 भावों की युति दर्शायी गयी है जो कि उस भाव से संबंधित व्यापार या व्यवसाय की संभावनाएं दर्शाते हैं। इसी क्रम में 1 से 12 भावों के SSL के PS/STL द्वारा भाव 10वाँ या 6ठा दर्शाया जाना भी अपने-अपने भाव से संबंधित व्यापार अथवा व्यवसाय को दर्शायेंगे। जिस भाव के SSL के PS/STL एवं SL/SSL द्वारा लाभ दर्शाया जा रहा हो उस भाव से संबंधित व्यापार या व्यवसाय करना चाहिये इसके विपरीत जिस भाव के SSL के PS/STL एवं SL/SSL हानि या प्रतिकूल संयोग वाले भाव में हों उस भाव से संबंधित व्यापार या व्यवसाय असफलता, प्रतिकूल एवं हानिप्रद होंगें।

विशेष :

जातक किस भाव से संबंधित व्यापार या व्यवसाय करेगा इसका विश्लेषण करना एक अत्यंत महत्वपूर्ण बात है। पाठकों से अनुरोध है कि निचे दिये गये क्रम से विश्लेषण करें ताकि भाव एवं नक्षत्र से संबंधित व्यापार या व्यवसाय निर्धारण में सफलता मिल सके -

सर्व प्रथम जातक की कुण्डली में व्यापार-व्यवसाय से संबंधित संभावनाए (जो प्रथम भाव, 6ठे भाव, सातवें भाव एवं 10वे भाव के SSL ने किया है) देखें। यदि जातक की कुण्डली में व्यापार व्यवसाय की प्रतिज्ञां हो तो नीचे दिये गये क्रमबद्ध तरीकों से विश्लेषण करें -

1. 1 से 12 भावों के उन SSL ग्रहों का चयन करें, जो अपने PS/STL द्वारा 10वें भाव में गया हो तथा SL/SSL द्वारा अर्थ वाले (2, 3, 4, 6, 10 एवं 11) भावों से समर्थन दे रहा हो।

2. ऐसे भाव के SSL ग्रह जो अपने PS/STL द्वारा 10वें भाव में गये ही ना हों उस भाव से संबंधित व्यापार व्यवसाय की संभावना नहीं होगी।

3. ऐसे भाव का SSL जो अपने PS/STL द्वारा 10वें भाव में गया हो तथा इसी क्रम में 10वें भाव का SSL भी अपने PS/STL द्वारा उस भाव में चला जाये, तो उस भाव जनित व्यापार या व्यवसाय संभावित है बशर्ते SL/SSL द्वारा अर्थ वाले (2, 3, 4, 6, 10 वं 11) भावों से समर्थन प्राप्त हो रहा हो। उदाहरण के लिये मान लें 5वें भाव का SSL अपने PS/STL द्वारा 10वे भाव में गया हो तथा 10वे भाव का SSL भी अपने PS/STL द्वारा 5वे भाव से संबंध बनाये तो जातक 5वें भाव से संबंधित व्यापार या व्यवसाय (जैसे - होटल, अभिनय, कला, खेल इत्यादि से) कर

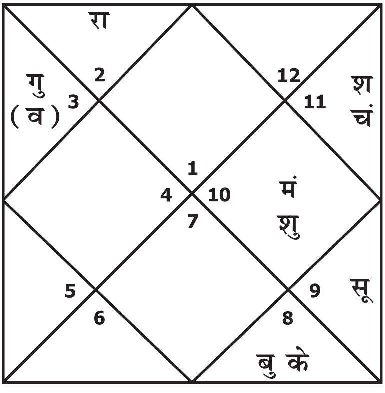
सकता है। ऐसे व्यापार व्यवसाय में सफलता हेतु आवश्यक है कि SL/SSL द्वारा समर्थन मिल रहा हो।

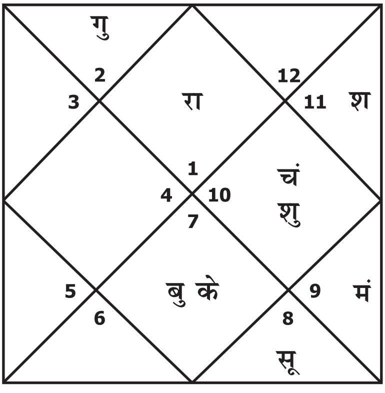
4. जातक को कब कौन सा व्यापार-व्यवसाय करना चाहिये यह दशानाथ पर निर्भर करता है।

उदाहरण एवं अभ्यास - संख्या 3

नीचे बॉलिवुड के एक सुपर स्टार सलमान खान की कुण्डली दी जा रही है। आइए जाने कैसे एवं कौन से ग्रह दिलाते हैं धन, मान, यश, पद तथा प्रतिष्ठा ? आम लोगों की कुण्डलियों से कैसे भिन्न होतीं है विशिष्ट लोगों की कुण्डलियां ? ऐसे कौन से ग्रह संयोग इन्हें आम आदमी से विशेष व्यक्ति बना देते हैं ? कैसे पढ़ें विशिष्ट व्यक्तियों की जन्म कुण्डलियां ? इस कुण्डली में आप जानेंगें ग्रहों के डी.एन.ए. में क्या है तथा कैसे पढ़ते हैं ऐसी कुण्डलियाँ ?

नाम : सलमान खान, दिनांक - 27-12-1965, समय - 14 : 30 : 47, स्थान - इंदौर।





ग्रह तालिका

ग्रह	राशि	D-M-S	RL	STL	SL	SSL	PS
सूर्य	धनु	12-01-47	गुरू	केतु	बुध	शुक्र	PS
चंद्र	कुम्भ	01-33-03	शनि	मंगल	बुध	गुरू	
मंगल	मकर	09-52-14	शनि	सूर्य	शुक्र	केतु	
बुध	वृश्चिक	20-59-45	मंगल	बुध	शुक्र	शनि	PS
गुरू	मिथुन	01-39-12	बुध	मंगल	बुध	शनि	PS
शुक्र	मकर	18-46-34	शनि	चंद्र	बुध	मंगल	PS
शनि	कुम्भ	18-42-27	शनि	राहू	चंद्र	शनि	
राहू	वृष	10-51-11	शुक्र	चंद्र	चंद्र	केतु	
केतु	वृश्चिक	10-51-11	मंगल	शनि	सूर्य	केतु	

भाव तालिका

भाव	राशि	D-M-S	RL	STL	SL	SSL	Arc%
I	मेष	23-00-06	मंगल	शुक्र	शनि	सूर्य	04.32
II	वृष	21-17-21	शुक्र	चंद्र	शुक्र	राहू	14.53
III	मिथुर्न	15-56-20	बुध	राहू	शुक्र	मंगल	38.66
IV	कर्क	11-01-12	चंद्र	शनि	चंद्र	चंद्र	21.65
V	सिंह	09-59-19	सूर्य	केतु	शनि	केतु	17.75
VI	कन्या	14-57-01	बुध	चंद्र	गुरू	शुक्र	63.21
VII	तुला	23-00-06	शुक्र	गुरू	शनि	चंद्र	05.75
VIII	वृश्चिक	21-17-21	मंगल	बुध	शुक्र	बुध	56.56
IX	धनु	15-56-20	गुरू	शुक्र	सूर्य	शनि	63.27
X	मकर	11-01-12	शनि	चंद्र	चंद्र	शुक्र	80.82
XI	कुम्भ	09-59-19	शनि	राहू	गुरू	चंद्र	42.25
XII	मीन	14-57-01	गुरू	शनि	गुरू	गुरू	25.89

जब हम बात करते है किसी विशिष्ट व्यक्ति की तो सर्वप्रथम ध्यान उनकी उपलब्धियों पर जाता है। ऐसी क्या विशेषता होती है कुण्डलियों में जिनके चलते जातक प्रसिद्ध प्राप्त कर लेता है ?।

विश्लेषण :

यह जातक बॉलीवूड का एक प्रसिद्ध नायक है। अभिनय के क्षेत्र में इन्होंने अपना सिक्का जमाया है। कई चलचित्रों में इन्होंने सराहनीय अभिनय किया है तथा करोड़ों रूपये कमायें हैं। आइये जाने कैसे विश्लेषण करते हैं विशिष्ट कुण्डलियां ?

प्रथम भाव का SSL ग्रह सूर्य है एवं सूर्य केतु के STL (नक्षत्र), बुध के SL (उप नक्षत्र) एवं शुक्र के SSL (उप-उप नक्षत्र) में है। अब जरा ध्यान से सूर्य द्वारा प्राप्त भावों के कारकत्वों को समझें। सूर्य को PS प्राप्त है अतः सूर्य अपने नक्षत्र स्वामी की तरह अपने भावों का भी फल देगा। सूर्य प्रथम भाव का SSL है, पंचम भाव का RL, निरायन भाव कुण्डली के अष्टम भाव में बैठा है तथा नवम भाव का SL है। इस प्रकार सूर्य 1ले, 5वें, 8वें एवं 9वें भाव का फल दे रहा है जहां 5वाँ भाव कला तथा अभिनय का कारक भाव है। सूर्य, केतु के नक्षत्र में तथा केतु 5वें भाव का ही SSL है एवं 5वें तथा 7वें भाव में उपस्थित है। यह बात ध्यान देने योग्य है। प्रथम भाव अर्थात कर्ता (जातक) का नक्षत्र स्वामी (ग्रह अपना फल अपने नक्षत्र स्वामी से देते हैं) केतु कला एवं अभिनय के कारक भाव का SSL है अर्थात जातक के डी.एन.ए. में अभिनय एवं कला है। इसके अलावा केतु अपने RL (मंगल) एवं STL (शनि) का फल भी देगा जहां दोनों ग्रह 1, 5, 9, 10 एवं 11वें जैसे भावों में हैं। सूर्य का SL (बुध) है जो 3, 6, 7 एवं 8वें भाव में गया है। यहां 8वाँ भाव 5वे के लिये थोड़ा बाधक है परंतु सूर्य का SSL शुक्र है जो

व्यापार-व्यवसाय 6ठे एवं 10वें भाव का SSL है एवं सफलता के सभी अनुकूल 1, 2, 3, 6, 7, 8, 9 एवं 10वें भाव में है।

प्रथम भाव ने यदि कला से संबंधित सफलता को दर्शाया है तो आवश्यक है कि कला एवं अभिनय का कारक भाव (पंचम भाव) भी कला से सफलता को दर्शाये यही नियम है। अब 5वे भाव का अवलोकन करें। 5वें भाव का SSL केतु है तथा केतु, शनि के STL में है। शनि पांचवे से पांचवे अर्थात नवम भाव का SSL जहां कला एवं कला से सभी सहायक (1, 4, 5, 7, 9, 10, 11 एवं 12वें) भावों में होने से जातक को कला के क्षेत्र में सफल एवं अग्रणी होने को दर्शाता है। यहां केतु अपने STL (शनि) के STL (राहु) एवं RL के STL (सूर्य) का फल भी देगा। ध्यान रहे केतु एवं केतु के राशि स्वामी को PS प्राप्त नहीं है अतः दोनों यहां अपना अपना फल नहीं दे पायेंगे। कुल मिला कर केतु - शनि, सूर्य एवं राहु का फल प्रबलता से दे पाने में सक्षम है। [यहां राहु अपने RL एवं STL का फल भी देगा परंतु हम यहां केवल संबंधित एवं सहायक भावों को ही लेंगे] पुनः ध्यान दें केतु का SL सूर्य है जो 1, 5, 8 एवं 9वें भाव का फल दे रहा है तथा SSL स्वयं केतु ही है। अतः केतु भी अभिनय एवं कला से संबंधित पूर्ण सफलता से पाने में सहायक है। उनकी चर्चित फिल्म (मैने प्यार किया) जो 29-12-1989 को रिलीज हुई जब गुरु-शनि-शुक्र की दशा चल रही थी जहां शुक्र 6, 10वे भाव (व्यापार/व्यवसाय) का SSL है।

एक विशेष बात बताना चहुंगा कि इस जातक के जन्म समय संशोधन (BTR) के पश्चात एक क्षण नीचे तथा 10 क्षण ऊपर करने पर जातक का संबंध कला के क्षेत्र पूर्णतः समाप्त हो जाता है। यही इस विधा की खूबसूरती है।

विवाह संयोग :

जातक के जीवन में विवाह की संभावना या प्रतिज्ञा है या नहीं ? विवाह शीघ्र होगा या विलंब से ? आइये इस कुण्डली के प्रथम एवं सप्तम भाव के SSL द्वारा विवाह की स्थितियों का अवलोकन करे।

प्रथम भाव का SSL सूर्य को स्वाबलंबन (PS) प्राप्त है अतः सूर्य 1, 5, 8, एवं 9वें भाव का फल देगा। सूर्य केतु के नक्षत्र में है अतः सूर्य – केतु, शनि एवं मंगल का फल देगा। कुल मिला कर सूर्य विवाह के सभी (नैसर्गिक भाव – 7 एवं सहायक भाव – 5, 11) अनुकूल भावों में है परंतु सूर्य का SL बुध (3, 6, 8) भावों में गया है जहां 6ठा भाव विवाह का नकारात्मक भाव है। सूर्य का SSL शुक्र है जो 1, 2, 3, 6, 7, 8, 9 एवं 10वे भाव में होने से विवाह (यदि SSL द्वारा भाव 6ठा एवं 7वाँ दोनों दर्शायें जायें तो ऐसे में 7वें भाव का फल खारिज़ नहीं होगा) विलंब से ही सही परंतु संभावित तो है।

विशेष :

शुक्र इस कुण्डली में 6ठे एवं 10वें भाव का SSL है जो कि विवाह का सर्वथा प्रतिकूल भाव है। शुक्र के डी.एन.ए. में विवाह को नकारने की प्रवृति है। फिर ऐसे संयोग विवाह कैसे होने देंगे ? ऐसे संयोग से जातक का विवाह तभी संभव है जब जातक अपने से छोटे सह महिला कलाकार से विवाह करे। स्मरण रहे 6ठा भाव नौकर/सहपाठी आदि का भाव है।

सप्तम भाव का SSL (चंद्रमा), मंगल के नक्षत्र में होने से भाव 1, 3, 8 एवं 9वें भाव मे, SL (बुध) द्वारा – 3, 6, 7, 8वें भाव में तथा SSL (गुरु) द्वारा – 1, 2, 3, 6, 7, 8, 9 एवं 10वें भाव में है। यहां मंगल द्वारा 5 या 7 या 11वें भाव में ना जाना विलंब का कारक है क्योंकि फल तो नक्षत्र स्वामी के भावों से प्राप्त होता है। हाँ प्रथम भाव में जाना स्वयं

के प्रयास से विवाह अवश्य संभावित है। SL (बुध) का 7वें भाव में होना विवाह की संभावना विलंब से ही सही दर्शा तो रहा है। चंद्रमा का SSL (गुरु) - 2, 6, 7, 9.11 एवं 12वे भाव में होने से तलाक (6, 12) की संभावना भी निर्मित कर रहा है। कुल मिलाकर जहां विवाह की संभावना एक तरफ अत्यंत निर्बल है वहीं स्पष्ट है कि जातक के विवाह में विलंब है। ज्ञात हो कि जातक कई बार प्रेम विवाह कर पाने में असफल रह चुका है। इस पुस्तक के लिखे जाने तक जातक 50 वर्ष का हो चुका है एवं अभी तक अविवाहित है।

व्यापार-व्यवसाय एवं धन संयोग :

जातक का व्यापारिक एवं व्यवसायिक जीवन कैसा होगा ? यदि जातक अपने व्यवसाय में सफल है तो निश्चय ही उसकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। ऐसे सभी संयोगों एवं संभावनाओं को समझना अत्यंत सरल है। कुण्डली का विश्लेषण करने की एक विधि होती है आप केवल उन्हीं बातों का ध्यान रखें। जैसे -

व्यापार-व्यवसाय एवं आर्थिक भावों (2, 4, 6, 7, 10, 11 इत्यादि) के SSL जब आपस में ही यदि एक दूसरे के STL, SL एवं SSL बनते हैं तथा उनकी उपस्थिति भी जब आर्थिक भावों (2, 4, 6, 7, 10, 11 इत्यादि) में होती है तो जातक के व्यापार-व्यवसाय को चार चाँद लग जाते हैं। इसी क्रम में जब व्यापार-व्यवसाय एवं आर्थिक भावों के SSL अपने STL, SL एवं SSL के द्वारा 5, 8, 12/ 6, 8, 12/ 7, 8, 12/ 5, 8, 9 आदि भावों में हों तो व्यापारिक-व्यवसायिक क्षति होती है। इसी क्रम में बताना चहुंगा कि यदि व्यापार-व्यवसाय एवं आर्थिक भावों (2, 4, 6, 7, 10, 11 इत्यादि) के SSL का STL, SL एवं SSL 5, 8, 12/ 6, 8, 12/ 7, 8, 12/ 5, 8, 9 आदि भावों के ही SSL हो तो

जातक का व्यापारिक–व्यवसायिक अथवा आर्थिक स्थिति निश्चय ही दैनीय होगी क्योंकि ऐसे भावों के SSL के डी.एन.ए. में तो व्यापार–व्यवसाय तथा धन को नाश करने की पूर्ण क्षमता होती है।

आईये जानते हैं कि इस सुपर स्टार की कुण्डली में धन के संयोग कैसे हैं –

धन भाव का SSL राहु है जो कि चंद्रमा के नक्षत्र में है। चंद्रमा 4थे, 7वें एवं 11वें भाव का SSL है। ध्यान रहे 4था भाव संपत्ति का भाव है, 7वाँ भाव व्यापार का भाव है तथा 11वाँ भाव इच्छापूर्ति का भाव है तथा चंद्रमा की उपस्थिति 2रे, 4थे, 6ठे, 7वें, 10वें एवं 11वें भावों में होने से विशेष धन लाभ को दर्शाता है। राहु अपने नक्षत्र स्वामी के नक्षत्र स्वामी का एवं अपने राशि स्वामी तथा राशि स्वामी के नक्षत्र स्वामी का भी फल देगा (यहाँ राहु को स्वाबलंबन प्राप्त नहीं है अतः राहु के भावों का फल नहीं लिया गया है) अर्थात इन भावों के अतिरिक्त राहु – मंगल एवं शुक्र के भावों (1, 3, 8. 1, 2, 3, 6, 7, 8, 9 एवं 10) का फल भी देगा जहाँ भाव 1, 8 एवं 9वाँ भाव धन के हानि तथा व्यय को दर्शाते हैं। फिर भी यहाँ चंद्रमा द्वारा प्राप्त भावों की ही प्रधानता रहेगी।

राहु का SL पुनः चंद्रमा ही है अतः राहु के SSL (केतु) द्वारा प्राप्त भावों से राहु का (चंद्रमा, शुक्र एवं मंगल द्वारा प्राप्त भावों का फल) फल जानेंगे। केतु की उपस्थिति 5वें एवं 7वें भाव में, केतु के नक्षत्र स्वामी (शनि) की उपस्थिति 1, 4, 5, 7, 9, 10, 11 एवं 12वें भावों में तथा केतु के राशि स्वामी (मंगल) की उपस्थिति 1, 3 एवं 8वें भाव में है। ध्यान रहे भाव 1, 5, 8 एवं 9 धन के अत्यधिक व्यय/हानि के सूचक हैं तथा भाव 4, 710 एवं 11 धन लाभ के सूचक हैं। आप सभी जानते हैं कि इस जातक के जीवन में कई ऐसे केस चल रहे हैं जहाँ धन का अप्रत्याशित व्यय अथवा हानि होना निश्चित है।

विवाद एवं कोर्ट केस :

इस जातक के जीवन में कई कोर्ट केस चल रहे हैं। हिट एण्ड रन केस तथा काले हिरण को मारने का केस आज तक चल रहा है। आईये विश्लेषण करें संबंधित भावों का –

- प्रथम भाव का SSL ग्रह सूर्य अपने PS द्वारा 1, 8 (केवल संबंधित भाव दिये जा रहे हैं), STL केतु द्वारा 12वें भाव में है। जहाँ सूर्य निरायन भाव चलित कुण्डली के 8वें भाव में होने से 8वें भाव का अप्रत्यक्ष रूप से SSL है।
- सूर्य अपने SL (बुध) के द्वारा 3, 6, 7 एवं 8वें भाव में है। जहाँ बुध 8वें भाव का ही SSL है।
- सूर्य का SSL ग्रह शुक्र है जो 6ठे भाव का SSL ग्रह है एवं 1, 3, 6 एवं 8वें भाव में उपस्थित है।
- तृतीय भाव का SSL ग्रह मंगल – सूर्य के नक्षत्र में (जहाँ सूर्य 1, 8 भावों में है) तथा शुक्र के SL में है जहाँ शुक्र 6ठे भाव का SSL होकर 1, 6, 8 जैसे भावों में है।
- आठवें भाव का SSL (बुध) स्वयं के नक्षत्र में है तथा 3, 6, 7, 8 जैसे भावों को दर्शा रहा है। बुध – शुक्र के SL में है एवं शुक्र 1, 3, 6 एवं 8वें भाव को दर्शा रहा है।
- बारहवें भाव का SSL ग्रह गुरु है जो कि मंगल के नक्षत्र में है जो कि तीसरे भाव का SSL ग्रह है एवं 1, 3, 8 में है साथ ही साथ बुध के SL में है तथा 3, 6, 8 भावों को दर्शा रहा है।

आप सभी जानते हैं कि विवाद, केस, मुकद्दमा एवं जेल आदि के लिये 1ले, 3रे, 6ठे, 8वें एवं 12वें भावों के SSL से विचार करते हैं। यदि ऐसे ग्रह अपने STL, SL एवं SSL के द्वारा 1, 3, 6, 8 एवं 12 जैसे भावों को दर्शायें तो ऐसी घटनायें अवश्य घटित होतीं है।

एकादश भाव

एकादश भाव इच्छा पूर्ति का भाव है। इस भाव से बड़े सहोदर के स्वास्थ्य, आयु तथा अन्य सभी घटनाओं के बारे में ज्ञात करते हैं। इसके अलावा मित्र, लाभ, आश्वासन, उच्च व्यावसायिक कार्यों के बारे में जानकारी इस भाव से करते हैं। नीचे एकादश भाव से संबंधित कुछ संभावित प्रश्नों के संभावित समीकरण आपके सहायतार्थ दिये जा रहे हैं।

- बड़े सहोदर की आयु एवं रोग विचार।
- मित्र सहायक, भरोसेमंद या घातक।
- कार्यों में सिद्धि
- मित्र से प्रेम, विवाह एवं शारीरिक संबंध।
- एकादश भाव के अन्य भावों से संबंध – अनुकूल या प्रतिकूल।

बड़े सहोदर – आयु एवं रोग विचार :

SSL	PS/STL	SL	SSL	फल
11, 1 एवं 6	11, 6	12, 5 + बाधकेश	6 या 5 या बाधकेश	बड़े भाई/बहन के अल्पायु संयोग।
11, 1 एवं 6	11, 3, 7, 9	3 या 7 या 11	3 या 7 या 9	बड़े भाई/बहन के दीर्घायु संयोग।
11, 4 एवं 6	4 या 6	11 + बाधकेश	4 या 6 या बाधकेश	बड़े भाई/बहन के रोग संयोग।

बड़े भाई अथवा बहन की आयु गणना एकादश भाव से प्रथम, तृतीय एवं अष्टम भाव अर्थात 11वे, 1ले एवं 6ठे भाव से करनी चाहिये। इस भाव से संबंधित जातक के आयु वृद्धि में सहायक भाव हैं – 3रा, 7वाँ एवं 9वाँ जो कि 11वें भाव से क्रमशः 5वाँ, 9वाँ एवं 11वें हैं। इसी क्रम में 11वें भाव से मारक भाव हैं – 12वाँ, 5वाँ एवं 6ठा जो कि 11वें भाव से क्रमशः 2रा, 7वाँ एवं 8वाँ भाव है जो कि मारक भाव कहलाते हैं। स्मरण रहे रोग अथवा मृत्यु में बाधकेश की भूमिका अवश्य होती है अतः मारक भावों के साथ बाधकेश की गणना अवश्य करें। किसी भी घटना के घटित होने के लिये ग्रह के नक्षत्र स्वामी का घटना से संबंधित भाव में जाना एवं SL (उप नक्षत्र स्वामी) तथा SSL (उप-उप नक्षत्र स्वामी) द्वारा घटना के संबंधित सहायक भावों को दर्शाना आवश्यक है। यदि ग्रह का SSL (उप-उप नक्षत्र स्वामी) घटना को नकार दे अर्थात घटना से संबंधित भाव से SSL की उपस्थिति 4, 7, 8 एवं 12वें हो तो घटना बाधित होगी या घटित नहीं होगी। ध्यान रहे 4, 7, 8वाँ भाव केवल बाधा एवं विलंब उत्पन्न करेंगे तथा 12वाँ भाव घटना को नकार देगा।

मित्र सहायक, भरोसेमंद या घातक

हमारे जीवन में माता-पिता, भाई-बहन, रिश्तेदार सहज ही प्राप्त होते हैं। हमे चुनने नहीं पड़ते परंतु मित्र हम स्वयं चुनते हैं अतः यह हमारी जिम्मेवारी होती है कि मित्रों का चुनाव सावधानी से करें। मित्र हमारे सुख-दुखः में साथ निभाते है अतः मित्र हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नीचे मित्रों से संबंधित कुछ संभावित समीकरण दिये जा रहे हैं –

11^{th} SSL	**PS/ STL**	**SL**	**SSL**	**फल**
11^{th}	1	5, 11	5 या 11	मित्र का आपसे भावनात्मक संबंध
11^{th}	2, 10	2, 6, 10, 11	2 या 11	मित्र द्वारा व्यापार में सफलता
11^{th}	2 या 10	5, 8, 12/6, 8, 12	5 या 8 या 12	मित्र के द्वारा हानि एवं असफलता
11^{th}	8	1, 12 + बाधकेश	2, 7, 8	मित्र द्वारा हत्या

ऊपर दिये गये पहले दो समीकरणों मित्र से सहयोग एवं लाभ वहीं अंतिम दो समीकारणों में मित्र द्वारा हानि एवं हत्या को दर्शाया गया है।

मित्र से प्रेम, विवाह या शारीरिक संबंध :

11^{th} SSL	**PS/ STL**	**SL**	**SSL**	**फल**
11^{th} SSL	1, 5	11	5 या 11	मित्र से प्रेम
11^{th} SSL	5	7, 11	5 या 7 या 11	मित्र से प्रेम विवाह
11^{th} SSL	7	5, 12	7 या 12	मित्र से शारीरिक संबंध

प्रथम समीकरण में 11^{th} SSL के PS/STL द्वारा 1ला एवं 5वाँ भाव मित्र के साथ प्रेम को दर्शाता है। वहीं दूसरे समीकरण में 11^{th} SSL के

PS/STL द्वारा 5वाँ भाव एवं SL द्वारा 7वाँ (विवाह), 11वाँ (इच्छापूर्ति) भाव मित्र से प्रेम विवाह को दर्शाता है। अंतिम समीकरण में भाव 7वा (संभोग) के साथ 5वाँ (प्रेम तथा मित्र का 7वाँ भाव) एवं 12वाँ (शैया सुख) भाव शारीरिक संबंधों को दर्शाता है। इसी क्रम में यदि 7वें भाव के साथ 5वाँ, 8वाँ एवं 12वाँ भाव आये तो संबंध वासनात्मक होगा।

एकादश भाव के SSL के PS/STL एवं SL द्वारा विभिन्न भावों से संबंधित संभावित समीकरण :

SSL	**PS/STL**	**SL**	**SSL**	**फल**
11^{th}	1	10	1 या 10	निजी प्रयास एवं सामर्थ से मान सम्मान
11^{th}	2	4, 6, 10, 11	2 या 6 या 10	जमीन, वाहन या ब्याज आदि से लाभ
11^{th}	3	10	3 या 10	विज्ञापन, पत्रकारिता या ट्रेडिंग
11^{th}	3	2	2	अनुबंधन या चेक्स से धन लाभ
11^{th}	3, 8	2, 11	2 या 3 या 11	बीमा अवधी की पूर्ति पर प्राप्त धन
11^{th}	8, 10	2, 6, 11	2 या 10 या 11	कीमती प्राचीन वस्तुओं से व्यवसायिक लाभ

11^{th}	4	9	4 या 9 या 11	उच्च शिक्षा में सफलता
11^{th}	4, 10	6, 11	4 या 6 या 10	उत्पादन, फैक्टरी व्यवसाय में सफलता
11^{th}	5	2	2	शेयर, सट्टा आदि से लाभ
11^{th}	5	8	8	प्रेम प्रसंग में बाधा
11^{th}	5	9	5 या 9	अनैतिक प्रेम संबंध
11^{th}	5, 10	2, 6, 10	5 या 10	होटल, कला, खेल व्यवसाय में सफलता
11^{th}	6	2	2	कर्ज़ या नौकरी से धन लाभ
11^{th}	6	5, 11	5 या 11	रोग मुक्ति
11^{th}	5, 6	7, 11	5 या 7 या 11	अधीनस्थ कर्मचारी या नौकर से विवाह
11^{th}	6	10, 11	6 या 10 या 11	स्थायी नौकरी
11^{th}	7	2, 11	2 या 11	पति, पत्नी या साझेदार से धन लाभ
11^{th}	7	6, 12	6 या 12	संबंध विच्छेद
11^{th}	7	6, 11	6 या 11	शत्रु पर विजय

11^{th}	8	2, 11	2 या 11	अचानक धन लाभ
11^{th}	8	3, 12	3 या 8 या 12	मित्र से वाद विवाद, कैद
11^{th}	8	3, 6, 12	6 या 8 या 12	मानसिक तनाव, कलह, झगड़े, विवाद
11^{th}	8	7, 11	7 या 11	अचानक विवाह
11^{th}	8	7, 12	7 या 12	वेश्यावृति, वासनायुक्त सहवास
11^{th}	8, 9	2, 11	2 या 11	पैत्रिक संपति लाभ
11^{th}	9	3, 6, 11	3 या 9 या 11	भेंट, वीजा, अनुबंध आदि में सफलता
11^{th}	9	7, 5, 11	7 या 5 या 11	दूसरा विवाह
11^{th}	9	5, 7, 11	9 या 7 या 11	उच्च शिक्षा में पूर्ण सफलता
11^{th}	9, 10	2, 6, 10, 11	9 या 6 या 10	मुखिया, नेता, एच. ओ. डी.
11^{th}	10	3, 6, 11	6 या 11	तबादला पदोन्नति के साथ
11^{th}	10	3, 8,	3 या 8	दण्डयुक्त या प्रतिकूल तबादला,

11th	4, 10	2, 6, 10	2 या 6 या 10	चल-अचल संसाधनों से व्यापारिक लाभ
11th	10, 8	2	2 या 10	घूस आदि से धन लाभ
11th	12	2, 6, 10, 11	6 या 10 या 11	विदेश या निवेश से लाभ या सफलता

ऊपर दिये गये सभी समीकारणों को ध्यान से पढ़ें। एकादश भाव का SSL अपने PS/STL द्वारा जिस भाव में गया होगा उसी भाव से इच्छापूर्ति की संभावना दर्शाता है बशर्ते 11वे SSL का SL और SSL, PS/STL द्वारा प्राप्त भाव या भावों से सहायक भावों में हों अर्थात उनका समर्थन करता हो। यदि 11वे SSL का SL और SSL, PS/STL द्वारा प्राप्त भाव या भावों से प्रतिकूल अर्थात 4थे, 7वें, 8वीं या 12वें गया हो तो सर्वथा प्रतिकूल फलों की प्राप्ति होगी।

द्वादश भाव

कारकत्व :

व्यय, निवेश, विदेश, हानि, दूसरा व्यवसाय, आर्थिक कठिनाई, कर्ज़ मुक्ति, षडयंत्र, कैद, मान हानि, शैया सुख, हॉस्पिटेलाईजेशन, डकैती या लूट-पाट, तस्करी, दंगा, दुर्भाग्य, मृत्यु एवं मोक्ष।

द्वादश भाव से संबंधित संभावित प्रश्न एवं समीकरण :

- व्यय अथवा निवेश से लाभ-हानि
- विदेश यात्रा या प्रवास
- कैद (जेल) एवं आरिष्ट
- मान हानि
- कर्ज़ मुक्ति
- खोई/गुम हुई वस्तु की प्राप्ति
- निर्यात व्यवसाय

ऊपर दिये गये द्वादश भाव से संबंधित प्रश्नों के अतिरिक्त भी कई और प्रश्न अथवा घटनायें संभावित है जिनका उल्लेख आप इसी अध्याय में पढ़ेंगे जैसे द्वादश भाव के अन्य भावों से संबंध एवं फल। किस प्रकार एक भाव की युति दूसरे भाव से होने पर फल प्रकट होते हैं ?। लग्न एवं भावों के आपसी संबंध किस प्रकार फलों में परिवर्तन करते हैं ? इत्यादि।

व्यय अथवा निवेश से लाभ-हानि :

द्वादश भाव निवेश तथा व्यय का भाव है। द्वादश भाव का SSL अपने PS/STL द्वारा जिस भाव से संबंध स्थापित करेगा उसी भाव से संबंधित निवेश को दर्शायेगा तथा अपने SL/SSL के द्वारा उक्त भावों से संबंधित अनुकूल या प्रतिकूल फल प्रदान करेगा। नीचे व्यय एवं निवेश से संबंधित कुछ संभावित समीकरण दिये जा रहे हैं -

SSL	**PS/ STL**	**SL**	**SSL**	**फल**
12^{th} SSL	2 या 4	6, 10, 11	2 या 10 या 11	धन या अचल संपत्ति के विवेश से लाभ
12^{th} SSL	2 या 4	5, 8, 12	5 या 8 या 12	व्यय या निवेश से हानि

ऊपर दिये गये समीकारणों में 12वें SSL के PS/STL द्वारा 2रे (धन) तथा 4थे (चल-अचल संपत्ति) भाव से युक्त होना इन पर निवेश एवं SL/SSL द्वारा 6, 10, 11वाँ भाव लाभ को दर्शाता है वहीं 5वाँ, 8वाँ एवं 12वाँ भाव हानि को दर्शाता है। जहाँ तक 2रे भाव का प्रश्न है, 2रे भाव से 6ठा, 10वाँ एवं 11वाँ भाव क्रमशः 5वाँ, 9वाँ एवं 10वाँ है जो की 2रे एवं लग्न का अनुकूल भाव है वहीं 5वाँ, 8वाँ एवं 12वाँ भाव 2रे भाव से प्रतिकूल है। इसी क्रम में लग्न से भी 8वाँ एवं 12वाँ भाव प्रतिकूल है। इसी क्रम में 4थे भाव से 5वाँ, 8वाँ, एवं 12वाँ भाव क्रमशः 2रा, 5वाँ एवं 9वाँ है फिर फल प्रतिकूल या हानिप्रद क्यों ? स्पष्ट है भाव 5, 8, 12 लग्न से प्रतिकूल होने के साथ-साथ 7वे (आपके प्रतिद्वंदी/शत्रु) का

11वाँ, 2रा एवं 6ठा भाव है जो की उसके सफलता का सूचक है। पाठकगण स्पष्ट रूप से समझें जो भाव लग्न से अनुकूल एवं 7वें भाव से प्रतिकूल है वह लग्न अर्थात जातक के लिये अच्छे एवं सफलता देंगे इसके विपरीत जो भाव लग्न से प्रतिकूल एवं 7वे भाव से अनुकूल है वे जातक के लिये असफलता दायक एवं प्रतिकूल होंगे।

विदेश यात्रा एवं प्रवास :

आधुनिक युग में विदेश गमन या प्रवास मान सम्मान का द्योत्तक है और हो भी क्यो ना ? कई पाश्चात्य एवं यूरोपीय देशों की आर्थिक स्थिति भारत की तुलना में 60 से भी अधिक गुणा सुदृढ़ है। यहां प्रश्न केवल मानसिकता का है।

SSL	**PS/ STL**	**SL**	**SSL**	**फल**
12th SSL	3, 9	12	9 या 12	विदेश यात्रा
4th SSL	3, 9	12	9 या 12	प्रवास

ऊपर दिये गये समीकरण में 12वें एवं 4थे भाव के SSL के द्वारा 3रा, 9वाँ एवं 12वाँ भाव विदेश गमन या प्रवास को दर्शाता है। आवश्यक नहीं है कि विदेश गमन या विदेश में प्रवास के लिये इन्हीं भावों से विचार करना है। 12वें भाव के SSL के PS/STL द्वारा 4था भाव एवं SL/ SSL द्वारा 3, 9, 12वाँ भाव का दर्शाया जाना भी विदेश गमन या प्रवास को दर्शायेगा।

कैद एवं आरिष्ट :

SSL	PS/ STL	SL	SSL	फल
1+12	12	3, 8	8 या 12	कैद
1+12	12 या 1	2, 7, 8 + बाधकेश	2 या 7 या 12	आरिष्ठ/मृत्यु

12वाँ भाव गुप्त गतिविधियों तथा षडयंत्रों का भाव है। ऐसा कार्य जो देश या कानून के विरोध में किया जाये गैर कानूनी है। प्रथम भाव के SSL के PS/STL द्वारा 12वाँ भाव एवं SL/SSL द्वारा 3रा एवं 8वाँ भाव दर्शाया जाना जेल या कैद को दर्शाता है वहीं PS/STL द्वारा 12वाँ या 1ला भाव एवं SL/SSL द्वारा 2, 7, 8वें भाव के साथ साथ बाधकेश का दर्शाया जाना गुप्त या षडयंत्र के कारण आरिष्ठ या मृत्यु को दर्शाता है।

मान हानि :

SSL	PS/ STL	SL	SSL	फल
12^{th} SSL	1	8	8 या 12	मान हानि
12^{th} SSL	8	1	8 या 12	मान हानि

ऊपर दिये गये समीकरण में 8वें भाव के साथ 1ले या 12वे भाव की युति मान हानि को दर्शाता है। जहाँ 1ला भाव स्वयं जातक है तथा 8वाँ

भाव दण्ड/मान–हानि एवं 12वाँ भाव लग्न से द्वादश होने से लग्न का व्यय भाव है।

कर्ज़ मुक्ति :

कर्ज़ अर्थात अपनी आवश्यकता की पूर्ति हेतु दूसरों से लिया गया धन/पैसा कर्ज़ है। लिये गये धन की वापसी कर्ज़ मुक्ति है। अब प्रश्न यह उठता है की लिये गये धन की वापसी जातक तब तक नहीं कर सकता जब तक धनार्जन के साधन नहीं बनेंगे। इसके लिये नीचे दिये गये समीकरण का अवलोकन करें –

SSL	PS/ STL	SL	SSL	फल
ग्रह	12	5, 8 . 2, 11	8 या 11	कर्ज़ मुक्ति

दिये गये समीकरण में 12वाँ भाव जातक का व्यय भाव है तथा 5वाँ भाव 7वे (कर्ज़ दाता) का 11वाँ अर्थात इच्छापूर्ति/लाभ का भाव है एवं 8वाँ (7वें का धन अर्थात 2रा) भाव है। यह समीकरण लिये गये कर्ज़ के भुगतान का है। यदि भाव 12वें के साथ भाव 5 एवं 8 है तो आवश्यक है कि जातक के लाभ के भाव भी साथ हों। तात्पर्य यह कि कर्ज़ चुका पाने में जातक सक्षम हो। यदि भाव 12+5, 8 के साथ 2रा भाव ना हो तो कर्ज़ चुका पाने में जातक असमर्थ हो सकता है।

खोई/गुम हुई वस्तु की प्राप्ति :

खोई हुई वस्तु किस भाव का कारक वस्तु है इसका ज्ञान होना आवश्यक है। नीचे कुछ ऐसे ही समीकरण दिये जा रहे हैं।

SSL	PS/ STL	SL	SSL	फल
12^{th} SSL	9	3, 6, 11	3 या 6 या 11	गुम हुई कागज़ात, प्रपत्र की प्राप्ति
12^{th} SSL	10	9, 4, 6, 11	4 या 6	गुम हुई वाहन या वस्तु की प्राप्ति
12^{th} SSL	12+ (भाव)	2, 6, 11	2 या 6, 11	गुम हुई वस्तु की प्राप्ति

ऊपर दिये गये समीकरण में 3रा एवं 9वाँ भाव लिखित प्रपत्र अर्थात सर्टिफिकेट, कागज़ात आदि को दर्शाता है जहाँ 9वाँ भाव उस व्यक्ति को जिसे गुम हुई कागज़ात प्राप्त हुई है या उस अज्ञात स्थान का जहाँ गुम हुई लिखित प्रपत्र है। पुनः SL एवं SSL द्वारा 3, 6, 11 का दर्शाया जाना उस वस्तु की प्राप्ति का संकेत है। दूसरे समीकरण में 12वे SSL के PS/STL द्वारा भाव 10वाँ एवं SL एवं SSL द्वारा 9, 4, 6, 11 दर्शाया जाना गुम हुई वाहन या वस्तु की पुनः प्राप्ति को दर्शाता है। ध्यान से समझें तो पता चलेगा कि SL एवं SSL द्वारा 9वें भाव को दर्शाया जाना PS/STL के 10वें का 12वाँ होने से वाहन या वस्तु का उस व्यक्ति के हाथ से वापस निकल जाने एवं 4, 6, 11 से उस वस्तु के पुनः प्राप्ति को दर्शाता है।

निर्यात व्यापार/व्यवसाय :

SSL	PS/ STL	SL	SSL	फल
12^{th} SSL	10, 12	2, 6, 10, 11	2 या 10 या 11	निर्यात व्यापार से लाभ
12^{th} SSL	4, 10	2, 6, 10, 11	2 या 4 या 11	उतपादन आदि निर्यात से व्यापार

ऊपर दिये गये प्रथम समीकरण में 12वें भाव के SSL के PS/STL द्वारा 12वें एवं 10वें भाव में उपस्थिति (जहाँ 12वाँ भाव निर्यात एवं 10वाँ भाव व्यापार का सूचक है) निर्यात के व्यापार को दर्शाता है तथा SL एवं SSL के द्वारा सभी लाभ वाले (2, 6, 10 एवं 11) भावों में जाना निर्यात के व्यापार से लाभ एवं सफलता का सूचक है। इसी क्रम में यदि SL एवं SSL के द्वारा प्रतिकूल भाव (5, 8, 12 / 6, 8, 12 / 5, 8 / 5, 12) दर्शाये जाते तो निशचय ही हानि होती। द्वितीय समीकरण में PS/STL द्वारा 12वें भाव के साथ 4था भाव चल-अचल संपत्ति, वाहन या फैक्टरी आदि से उत्पादित वस्तुओं से निर्यात को दर्शाता है। यहां SL एवं SSL की उपस्थिति अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि SL एवं SSL द्वारा 4थे एवं लग्न से अनुकूल भावों से संयोग हुआ तो लाभ एवं सफलता इसके विपरीत प्रतिकूल भावों से युति हुई तो हानि की संभावना होगी।

द्वादश भाव की युति अन्य भावों से :

प्रथम भाव :

12वे भाव के SSL के PS/STL द्वारा यदि प्रथम भाव दर्शाया जाये तो ऐसे में फल 12वे भाव के SSL के SL एवं SSL के भावों पर निर्भर करेगा। यदि प्राप्त भाव 10, 11 हो तो विदेश में मान सम्मान प्राप्त हो। 8वाँ भाव प्राप्त हो तो मान हानि या आत्महत्या की आशंका होगी। यदि 8वें भाव के साथ मारक और बाधक (2रा, 7वाँ एवं 8वाँ) भाव की युति भी हो तो जातक के आत्महत्या की संभावना प्रबल होगी। इसी क्रम में 8वें भाव के साथ 7वें भाव की युति भी हो तो पति को पत्नी से या पत्नी को पति से या साझेदार से आरिष्ठ या भय रहेगा।

द्वितीय भाव :

12वे भाव के SSL के PS/STL द्वारा यदि धन (2रा) भाव दर्शाया जाय तो ऐसे में फल 12वे भाव के SSL के SL एवं SSL के भावों पर निर्भर करेगा। यदि प्राप्त भाव 1, 5, 7, 8 या 9वाँ भाव हो तो फलस्वरूप धन की हानि होगी। ऐसे में फल क्रमशः इस प्रकार संभावित होगा –

1ला भाव – जातक स्वयं अपने अर्जित धन या अपने परिवार द्वारा संचित धन का व्यय करेगा।

5वाँ भाव – प्रेम प्रसंग या मौज़-मस्ति अथवा 5वें भाव के कारकत्वों पर व्यय/नष्ट करेगा।

7वाँ भाव – जीवन साथी, साझेदार या किसी अन्य के द्वारा धन जब्त किया जा सकता है।

8वाँ भाव – संचित धन जीवन साथी या अन्य किसी को देने से नष्ट हो।

9वाँ भाव – यह संयोग किसी अज्ञात कारणों से आर्थिक तंगी हो।

इसके विपरीत यदि 12वे भाव के SSL के SL एवं SSL के द्वारा सभी अच्छे भाव (2, 3, 4, 6, 10 या 11वाँ भाव) प्राप्त हो तो उन्हीं भाव जनित कारकों से जातक लाभ प्राप्त करेगा।

तृतीय भाव :

12वे भाव के SSL के PS/STL द्वारा यदि तीसरा भाव दर्शाया जाये एवं SL एवं SSL के द्वारा –

- 2रा भाव प्राप्त हो तो ट्रेडिंग, अनुबंधन आदि से धन लाभ संभावित होगा।
- 3रा भाव प्राप्त हो तो 3रे भाव के कारकों से कार्य सिद्धि।
- 4था भाव प्राप्त हो तो चल–अचल संपत्ति संबंधित कार्य संभावित होंगे। ऐसे में यदि 12वे भाव के SSL के SSL द्वारा 2, 11 जैसे भाव दर्शाये जायें तो चल–अचल संपत्ति का लाभ प्राप्त होगा इसके विपरीत 10, 5, 3 आदि भाव दर्शाये जायें तो चल–अचल संपत्ति की बिक्री हो।
- 7वाँ एवं 8वाँ भाव दर्शाया जाये तो 3रे भाव से संबंधित सभी समीकरण जातक के लिये असफलता, हानि एवं बाधाकारक होंगे।
- 10वें भाव से युक्त हो तो व्यवसाय परिवर्तन या व्यवसाय स्थान में परिवर्तन का द्योत्तक है। इसी क्रम में SSL द्वारा 6, 11 दर्शाया जाय तो परिवर्तन अनुकूल एवं 5, 8, 12 / 6, 8, 12 दर्शायें तो परिवर्तन प्रतिकूल होगा।

चतुर्थ भाव :

12वे भाव के SSL के PS/STL द्वारा यदि चौथा भाव दर्शाया जाये एवं SL एवं SSL के द्वारा -

- 2रा भाव दर्शाये तो जातक चल-अचल संपत्ति पर निवेश कर धन अर्जित करेगा।
- 3रा भाव दर्शाये तो चल-अचल संपत्ति का क्षय होगा। यदि 3रे भाव के साथ 7, 8, 12वाँ भाव हो तो संपत्ति दूसरों के द्वारा जब्त होगी। इसी क्रम में यदि 5वें एवं 10वें भावों को दर्शये तो निवेश हेतु जातक अपनी संपत्ति की बिक्री करेगा।
- 9वाँ एवं 11वाँ भाव दर्शाये तो निवेश हेतु संपत्ति का क्रय या विदेश में उच्च शिक्षा के संयोग संभावित होंगे।

पंचम भाव :

12वे भाव के SSL के PS/STL द्वारा यदि पंचम भाव दर्शाया जाये एवं SL एवं SSL के द्वारा -

- 1ला, 2रा एवं 7वाँ भाव दर्शाये तो जातक प्रेम प्रसंग अथवा शारीरिक संबंधों या अनैतिक संबंधों में लिप्त होगा।
- 8वे एवं 12वें भाव से युति होने पर शारीरिक या प्रेम संबंधों के कारण मान हानि संभावित होगा। इसी क्रम में यदि 3रे एवं 6ठे भाव की युति भी हो तो जातक विवाद, कलह, कानूनी धाराओं से भी पीड़ित होगा।

षष्ट भाव :

12वे भाव के SSL के PS/STL द्वारा यदि 6ठा भाव दर्शाया जाये तो ऐसे में SL/SSL के द्वारा जिस किसी भी भाव की युति होगी, 6ठे भाव के कारकत्व भी संभावित घटनाओं में सम्मिलित होंगें। जैसे –

- 12वे भाव के SSL के PS/STL द्वारा यदि 6ठा भाव एवं ऐसे में SL/SSL के द्वारा 1ला और 6ठा भाव दर्शाया जाये तो जातक को रोग या ऋण संबंधित मामले संभावित है।
- 12वे भाव के SSL के PS/STL द्वारा यदि 6ठा भाव एवं SL/SSL के द्वारा 2रा या 4था भाव दर्शाया जाये तो जातक कर्ज़ लेकर चल-अचल संपत्ति में निवेश करेगा।
- 12वे भाव के SSL के PS/STL द्वारा यदि 6ठा भाव एवं SL/SSL के द्वारा 8वाँ, 9वाँ एवं 12वाँ भाव दर्शाया जाये तो जातक ब्याज के कारण आर्थिक तंगी अथवा रोज़गार संबंधी परिवर्तन हेतु लिये गये कर्ज़ से परेशानियाँ उठायेगा।

सप्तम भाव :

12वे भाव के SSL के PS/STL द्वारा यदि 7वाँ भाव दर्शाया जाये तो ऐसे में 12वाँ भाव एवं 7वाँ भाव मिल कर प्रतिकूल फल प्रदान करेंगे। जैसा कि नियम है यदि किसी भाव का SSL अपने PS/STL द्वारा अपने ही भाव से 4थे, 7वें, 8वें या 12वे चला जाये तो फल प्रतिकूल होता है। ऐसे में SSL अपने SL/SSL के द्वारा जिस-जिस भाव को दर्शायेगा प्रतिकूल फल उसी भाव से प्राप्त होंगीं।

- 12वे भाव के SSL के PS/STL द्वारा यदि 7वाँ भाव एवं SL/SSL द्वारा 2रा या 5वाँ या 9वाँ भाव दर्शाया जाये तो ऐसे समीकरण व्यभिचार को भी दर्शाता है।
- 12वे भाव के SSL के PS/STL द्वारा यदि 7वाँ भाव एवं SL/SSL द्वारा 2, 8, 12वाँ भाव दर्शाया जाये तो निश्चय ही धन हानि संभावित है।

अष्टम भाव :

12वे भाव के SSL के PS/STL द्वारा यदि अष्टम भाव दर्शाया जाये तथा SL एवं SSL के द्वारा –

- यदि प्रथम भाव दर्शाया जाये तो मान–हानि हो।
- यदि दूसरा भाव दर्शाया जाये तो धन लाभ हो।
- यदि 3रा एवं 4था भाव दर्शाया जाये तो यात्रा में दुर्घटना संभावित है अथवा चल–अचल संपत्ति की हानि हो अथवा राज्य भय, जेल आदि की संभावना रहेगी।
- यदि 5वाँ या 7वाँ भाव दर्शाया जाये तो अचानक प्रेम प्रसंग या शारीरिक संबंधों के कारण तनाव, मान–हानि हो।
- यदि 1ला एवं 12वाँ भाव दर्शाया जाये तो जातक किसी षडयंत्र का शिकार हो सकता है।

नवम भाव :

12वे भाव के SSL के PS/STL द्वारा यदि नवम भाव दर्शाया जाये तथा SL एवं SSL के द्वारा –

- यदि 1ला एवं 3रा भाव दर्शाये तो जातक विज़ा, ग्रीन कार्ड आदि प्राप्त कर विदेश गमन करेगा।
- यदि 5वाँ एवं 7वाँ भाव दर्शाये तो जातक गुप्त रूप से प्रेम विवाह या शारीरिक संबंध बनाता है।

दशम भाव :

12वे भाव के SSL के PS/STL द्वारा यदि दशम भाव दर्शाया जाये तथा SL एवं SSL के द्वारा -

- यदि प्रथम भाव से युति हो तो व्यक्ति अपने व्यापार या व्यवसाय का मुखिया सदश्श्य होगा।
- यदि 2रे या 6ठे या 10वें भाव में हो तो जातक अपने व्यापार व्यवसाय में सफलता प्राप्त करेगा।
- यदि 5वे या 7वे या 9वें भाव में हो तो व्यापार-व्यवसाय में परिवर्तन संभावित है।

एकादश भाव :

12वे भाव के SSL के PS/STL द्वारा यदि एकादश भाव दर्शाया जाये तथा SL एवं SSL के द्वारा -

- यदि 11वें एवं 4थे भाव में जाये तो जेल से या हॉस्पिटल से घर वापसी हो।
- यदि 2रे भाव में हो तो धन लाभ, 4थे भाव में हो तो चल-अचल संपत्ति लाभ हो।
- यदि 5वे एवं 7वे भाव में हो तो महिला या पुरुष मित्र से शारीरिक संबंध हो।

जन्म समय शुद्धिकरण

वर्तमान समय मे प्रतिक्षण जन्म दर के हिसाब से जनसंख्या मे वृद्धि हो रही है। वास्तव मे इस प्रकार से जनसंख्या की वृद्धि होना एक विस्फोटक स्थिति है। इसे नियंत्रित करना अत्यंत आवश्यक है। इस जन्म दर ने एक तरफ विभिन्न देशों के लिये चिंता तथा विसंगतियाँ उत्तपन्न कर दी हैं तो वहीं इसका प्रभाव ज्योतिष पर भी पड़ा है। आज के समय मे सबसे ज्वलंत प्रश्न है कि जहाँ प्रतिक्षण जन्म दर है, जहाँ हर जातक एक दूसरे से भिन्न है, जहाँ जुड़वें बच्चे का हीं नहीं बल्कि एक हीं स्थान पर कुछ हीं क्षणों के अंतराल मे जन्मे बच्चों का भविष्य भी भिन्न भिन्न होता है वहाँ किस विधि से नवजात शिशुओं की कुण्डलियाँ बनाई जाए ? आप पढ़ चुके हैं कि **"कस्पल इंटर्लिंक्स एण्ड सब सब थ्योरी"** के अलावा अन्य कोई ऐसी विधा नहीं है जिसके माध्यम से प्रतिक्षण के हिसाब से कुण्डली बनाई जा सके।

नक्षत्र ज्योतिष अर्थात कस्पल इंटर्लिंक्स एण्ड सब सब थ्योरी, नक्षत्रों के विभाजन पर कार्य करती है यह विभाजन इतना शूक्ष्म होता है कि जन्म समय शोधन, क्षणों के हिसाब से किया जा सकता है। मैं प्रतिक्षण के हिसाब से कुण्डली निर्माण की आलोचना करने वालों से आग्रह करुंगा कि वो आयें एवं स्वयं इस विधा को जाने उसके पश्चात आलोचना करें। बिना इस विधा को जाने आलोचना करना व्यर्थ हैं। कहने से तात्पर्य यह कि बिना इस विधा को ठीक से जाने कोई कैसे इसकी आलोचना कर सकता है ? यदि करें भी तो अपनी आलोचना की सत्यता कैसे प्रमाणित करेंगे ? मैंने कई सारी ज्योतिषिय विधायें पढ़ीं हैं अत: मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि यह ज्योतिषिय विधा सर्वश्रेष्ठ है।

जन्म समय संशोधन विधि
(BTR – Birth Time Rectifications):

जन्म के वास्तविक समय को लेकर अलग अलग मान्यताऐं हैं। कुछ ज्योतिषि वर्ग बच्चे का जन्म माता के गर्भ से बाहर आने को मानते हैं तो कुछ जन्म के पश्चात पहली बार रोने को, तो कुछ बच्चे की नाड़ काटे जाने को। वास्तव मे नाड़ के काटे जाने के पश्चात जब नवजात शिशु प्रथम बार स्वयं से प्राणवायु अर्थात श्वांस (साँस) लेता है वही उसके जन्म का वास्तविक समय माना जाना चाहिये। कारण यह है कि एक शरीर मे दो आत्मायें नहीं रह सकतीं और यदि रह सकतीं हैं तो फिर निश्चय हीं शिशु गर्भ मे भी श्वांस लेता होगा फिर कौन सा जन्म समय सही माना जाये ???। इस मतभेद को यहीं विश्राम देते हुये जन्म समय शोधन की विधि विस्तार से समझा रहा हूं।

जन्म कुण्डली निर्माण से पुर्व जातक अथवा जातिका की जन्म तिथि, माह, वर्ष तथा सही सही अनुमानित जन्म समय के साथ-साथ शुद्ध (रेखांश-अक्षांश द्वारा) जन्म स्थान ले लें। आपको बताना चाहुंगा कि जन्म स्थान मे एक क्षण का अंतर जन्म कुण्डली के लग्न मे 15 क्षण का अंतर दे सकता है। इसी संदर्भ मे पुनः बताना चहुंगा कि प्रत्येक 12 भावों के SSL प्रति 10 क्षण के अंतराल मे बदल सकतें हैं। अतः आवश्यक है कि सभी विवरण सटीक लिया जाये। अब "नक्षत्र ज्योतिष साँफ्ट्वेअर" की सहायता से लिये गये विवरण द्वारा कुण्डली का निर्माण कर लें। कुण्डली निर्माण के पश्चात एक-एक करके नीचे दिये गये नियमानुसार जन्म समय संशोधन करें –

1. जन्म कुण्डली के प्रथम भाव का SSL ग्रह को चंद्र नक्षत्र स्वामी से मिलना चाहिये। इनको मिलाने की विधियाँ उदाहरण सहित नीचे दी जा रहीं हैं –

मान लें चंद्र नक्षत्र स्वामी ग्रह – शनि है एवं लग्न का SSL ग्रह गुरु है। अब गुरु का मिलान शनि कराना है। मिलान के लिये आवश्यक है कि गुरु, शनि का या तो नक्षत्र स्वामी या उप नक्षत्र स्वामी या उप उप नक्षत्र स्वामी बने अथवा शनि, गुरु का नक्षत्र स्वामी या उप नक्षत्र स्वामी या उप उप नक्षत्र स्वामी बने। यदि लग्न का SSL ग्रह चंद्र नक्षत्र स्वामी से उपर दिये गये तरीके से नहीं मिलता तो ऐसे मे लग्न का SSL ग्रह सही SSL ग्रह नहीं है अतः समय को अब एक एक क्षण करके उपर या नीचे करते हुए वो SSL ग्रह लाये जो चंद्र नक्षत्र स्वामी ग्रह से मेल खाता हो।

– नक्षत्र ज्योतिष (कस्पल इंटर्लिंक्स एण्ड सब सब थ्योरी) अपने आप मे अकेली ऐसी विधा है जिसमें स्त्री एवं पुरुष की कुण्डलियाँ अलग अलग तरह से बनाई जाती है। आप सभी जानते हैं कि राशियों की कुल संख्या 12 होतीं हैं। जिनमे 6 राशियाँ पुरुष जाति की एवं 6 राशियाँ स्त्री जाति की मानी गई हैं। जो राशि संख्या 2 से विभाजित नहीं होतीं हैं वो पुरुष (1, 3, 5, 7, 9, 11) राशियाँ हैं एवं जो विभाजित (2, 4, 6, 8, 10, 12) हो जातीं हैं वो स्त्री राशियाँ कहलातीं हैं। "नक्षत्र ज्योतिष साँफ्ट्वेअर" में प्रत्येक भाव मे पडने वाली राशियों में उनके उप उप नक्षत्र स्वामीयों की उपस्थितियों को दो-दो भागों मे विभाजित किया गया है जिसे "आर्क" कहते हैं। यदि लग्न मे स्त्री राशि हो तो प्रथम आर्क (अर्थात 0% से 50% तक) स्त्री के लिये एवं दुसरी आर्क (50% से 100% तक) पुरुषों के लिये रखते हैं। इसी क्रम मे यदि लग्न मे पुरुष राशि हो तो प्रथम आर्क (0% से 50% तक) पुरुषों के लिये तथा दुसरा आर्क (50% से 100% तक) स्त्रियों के लिये निर्धारित किया जाता है। अभी तक आपने लग्न के SSL ग्रह एवं

स्त्री अथवा पुरुष की कुण्डली मे लग्न की राशियों के अनुसार आर्क निर्धारित करना सीखा लिया है।

- अब स्वयं की कुण्डली के तृतीय (ठीक छोटा सहोदर) भाव, चतुर्थ (माता) भाव, पंचम (प्रथम संतान - पुत्र या पुत्री) भाव, नवम (पिता) भाव एवं एकादश (ठीक बड़े सहोदर) भाव के SSL ग्रहों से अपने भाव संबंधित स्वजनों की कुण्डलियों मे स्थित उनके चंद्र नक्षत्र स्वामी ग्रहों को ठीक उसी प्रकार मिलायें (अपनी कुण्डली मे) जैसे प्रथम भाव (लग्न) के SSL ग्रह को चंद्र नक्षत्र स्वामी ग्रह से मिलाया था।

- यहाँ एक बात ध्यान मे रखें कुण्डली मे आर्क (भाग) केवल और केवल स्वयं (जातक एवं जातिका के लिये) तथा प्रथम संतान के लिये निर्धारित करेंगे। इसी क्रम मे एक अत्यंत महत्वपूर्ण बात और बताना चहुंगा कि पुरुष की कुण्डली मे प्रथम संतान के लिंग निर्धारण के लिये पंचम भाव एवं स्त्री कि कुण्डली मे एकादश भाव से आर्क निर्धारित करते हैं। ज्ञात रहे कि संतान का लड़का या लड़की होना केवल और केवल पुरुषों पर निर्भर करता है। बाँयोलोजी की माने तो स्त्री के शरीर मे केवल एक्स क्रोमोसोम होता है एवं पुरुष के शरीर मे एक्स तथा वाई दोनों क्रोमोसोम होते हैं। संभोग के पश्चात स्त्री के एक्स क्रोमोसोम के साथ पुरुष के एक्स क्रोमोसोम के मिलने से लड़की एवं वाई क्रोमोसोम के मिलने से लड़का होता है। यही कारण है कि स्त्री की कुण्डली मे प्रथम संतान के लिंग निर्धारण के लिये एकादश (सातवें भाव से पंचम) भाव का विचार करते हैं।

- अब बारी है लग्न, सूर्य एवं चंद्रमा के सभी शासक ग्रहों की (लग्न, सूर्य एवं चंद्रमा जन्म कुण्डली मे जिस जिस राशि, नक्षत्र,

उप नक्षत्र एवं उप उप नक्षत्र पर बैठे हो इनके स्वामी ग्रह शासक ग्रह कहलाते हैं) जहाँ शासक ग्रहों को अपने PS/STL (स्वाबलंबन या नक्षत्र स्वामी) स्तर पर जन्म कुण्डली या निरायन भाव चलित कुण्डली के किसी एक– 1ले या 7वें या 10वें भाव मे उपस्थिति अनिवार्य है अर्थात निरायन भाव चलित या जन्म कुण्डली के प्रथम या सप्तम या दशम भाव मे RL (राशि स्वामी) होकर या STL (नक्षत्र स्वामी) होकर या SL (उप नक्षत्र स्वामी) होकर या SSL (उप उप नक्षत्र स्वामी) होकर उपस्थित होना अनिवार्य है। इसी प्रकार से शासक ग्रहों का अपने PS/STL (स्वाबलंबन या नक्षत्र स्वामी) द्वारा एवं SL (उप नक्षत्र स्वामी) द्वारा कम से कम दो भावों मे उपस्थिति अनिवार्य है। ध्यान रहे केवल SL (उप नक्षत्र स्वामी) द्वारा 2 या 3 भावों मे उपस्थिति मान्य नही होगी। यहाँ एक भाव मे शासक ग्रहों के स्वाबलंबन या नक्षत्र स्वामी द्वारा उपस्थिति अनिवार्य है।

– अंतिम नियमानुसार जन्म के समय चल रहे प्राणा स्वामी ग्रह को अपने PS/STL एवं SL द्वारा जन्म कुण्डली या निरायन भाव चलित कुण्डली अर्थात दोनों कुण्डलियों को मिला कर 1ले, 7वें या 10वें भावों मे या कम से कम दो भावों मे अवश्य उपस्थित होना चाहिये। इसी क्रम मे शासक ग्रह का नक्षत्र स्वामी एवं उप नक्षत्र स्वामी एक हीं ग्रह हो तो उप उप नक्षत्र स्वामी को उप नक्षत्र स्वामी के स्थान पर लिया जाता है।

सिद्धांत :

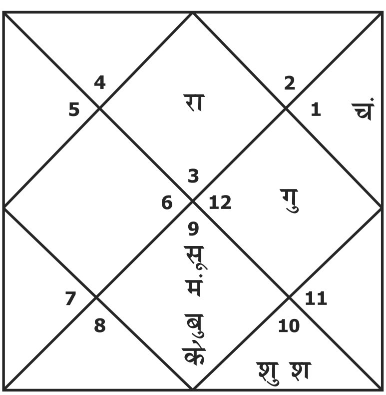
उपर दिये गये नियमों मे लग्न, सूर्य, चंद्रमा के शासक ग्रहों एवं जन्म के समय चल रहे प्राणा स्वामी ग्रह (अपने PS/STL एवं SL द्वारा) का

कुण्डली या निरायन भाव चलित कुण्डली के 1ले, 7वें या 10वें भावों मे से किसी दो भावों मे उपस्थिति अनिवार्य कही गयी है। इसका क्या कारण है ? 1ले, 7वें एवं 10वें भावों मे ही शासक ग्रहों की उपस्थिति क्यों अनिवार्य है ? उत्तर मे बस इतना समझना है कि आपका जन्म पिता को संतान लाभ दर्शाता है। संतान के जन्म के भाव संयोग हैं 5वाँ भाव – 2रा एवं 11वाँ भाव। आप पहले से जानते हैं। अब आप अपनी कुण्डली मे पिता के भाव (9वें) से 5वाँ, 2रा एवं 11वाँ भाव गिने। आप समझ जायेंगे कि 9वें भाव से 5 ख्र 2, 11वाँ भाव क्रमशः 1, 7 एवं 10वाँ भाव है। अस्तु !

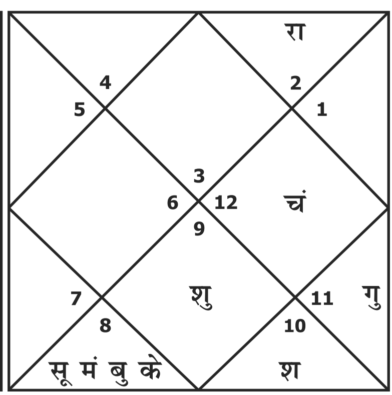
उदाहरण जन्म समय शुद्धिकरण :

नाम : उदाहरण संख्या 1। दिनाँक – 25.12.1963, समय – 18:59:26, स्थान – मान्सा, पंजाब।

राशि कुण्डली



भाव कुण्डली



ग्रह तालिका

ग्रह	राशि	D-M-S	RL	STL	SL	SSL	PS
सूर्य	धनु	09-41-01	गुरू	केतु	शनि	बुध	PS
चंद्र	मेष	02-11-03	मंगल	केतु	शुक्र	गुरू	PS
मंगल	धनु	22-06-05	गुरू	शुक्र	शनि	शनि	
बुध	धनु	27-19-38	गुरू	सूर्य	सूर्य	शुक्र	
गुरू	मीन	16-53-03	गुरू	बुध	बुध	बुध	PS
शुक्र	मकर	08-51-00	शनि	सूर्य	शुक्र	राहू	
शनि	मकर	26-26-14	शनि	मंगल	गुरू	शनि	PS
राहू	मिथुन	17-52-59	बुध	राहू	सूर्य	बुध	PS
केतु	धनु	17-52-59	गुरू	शुक्र	मंगल	शुक्र	

भाव तालिका

भाव	राशि	D-M-S	RL	STL	SL	SSL	Arc%
I	मिथुन	29-02-40	बुध	गुरू	सूर्य	गुरू	43.82
II	कर्क	21-42-33	चंद्र	बुध	सूर्य	राहू	25.90
III	सिंह	17-41-44	सूर्य	शुक्र	मंगल	शनि	78.40
IV	कन्या	18-42-09	बुध	चंद्र	बुध	चंद्र	87.41
V	तुला	23-32-21	शुक्र	गुरू	शनि	राहू	78.42
VI	वृश्चिक	27-57-42	मंगल	बुध	शनि	शनि	21.74
VII	धनु	29-02-40	गुरू	सूर्य	मंगल	शुक्र	42.90
VIII	मकर	21-42-33	शनि	चंद्र	शुक्र	गुरू	45.61
IX	कुंभ	17-41-44	शनि	राहू	सूर्य	गुरू	26.32
X	मीन	18-42-09	गुरू	बुध	केतु	शुक्र	78.28
XI	मेष	23-32-21	मंगल	शुक्र	शनि	राहू	43.33
XII	वृष	27-57-42	शुक्र	मंगल	शनि	शनि	21.74

जन्म समय शुद्धिकरण हेतु सर्वप्रथम

1) चंद्र नक्षत्र स्वामी को लग्न के उप उप नक्षत्र स्वामी से मिलाते हैं। आप देख सकते है कि जातक का चंद्र नक्षत्र स्वामी केतु है एवम लग्न का उप उप नक्षत्र स्वामी गुरु है। यहां गुरु, केतु का राशि स्वामी होने से गुरु का केतु से संबंध बना हुआ है। ध्यान रहे केवल राहु और केतु ही अपने राशि का फल देते है इस लिये गुरु का संबंध केतु से बना हुआ समझा जायेग। अन्य ग्रहों के साथ राशि स्वामी से साथ मिलान मान्य नहीं होगा।

2) यह कुण्डली एक पुरुष जातक की है अतः प्रथम भाव के उप उप नक्षत्र स्वामी (गुरु) का आर्क 50% के निचे रखा गया है क्योकि लग्न मे मिथुन राशि है जो कि एक पुरुष राशि है। यदि यह कुण्डली स्त्री की होती तो आर्क 50% के उपर रखा जाता। इसी क्रम मे लग्न की राशि यदि स्त्री होती तो स्त्री जातिका के लिये आर्क 50% के निचे रखा जाता इसके विपरीत पुरुष जातक के लिये आर्क 50% के उपर रखा जायेगा।

3) अब बारी है लग्न, सूर्य एवं चंद्रमा के सभी चारों अधिशासी ग्रहो की उपस्थिति भाव 1, 7 एवं 10 मे कराने की। प्रथम भाव के चारो अधिशासी ग्रह हैं बुध, गुरु, सूर्य, गुरु। जहां बुध को स्वाबलंबन प्राप्त नही है इस कारण बुध अपने नक्षत्र स्वामी सूर्य एवं अपने उप उप नक्षत्र स्वामी (जब किसी ग्रह का नक्षत्र स्वामी एवं उप नक्षत्र स्वामी कोइ एक ही ग्रह हो तो उप नक्षत्र स्वामी के स्थान पर उप उप नक्षत्र स्वामी लेना होता है।) शुक्र के द्वारा 1, 7 एवं 10वे भावों मे या किन्हीं दो भावों मे उपस्थित होना चाहिये। जहां किसी एक भाव मे नक्षत्र स्वामी द्वारा उपस्थिति अनिवार्य है।

आप देख सकते हैं कि सूर्य 1 (प्रथम) एवं 7 (सप्तम) भाव मे है तथा शुक्र 7 (सप्तम) एवं 10 (दशम) भाव मे उपस्थित है। अब गुरु को देखे गुरु स्वयं के नक्षत्र पर है तथा बुध के उप नक्षत्र पर है। जहां गुरु एवं बुध 1ले एवं 10वे भाव मे तथा गुरु 7वे भाव मे उपस्थित है। सूर्य प्रथम भाव का उप नक्षत्र स्वामी है जिसे स्वाबलंबन प्राप्त है तथा केतु के नक्षत्र मे। आप देख सकते हैं सूर्य तथा केतु भाव 1, 7 एवं 10 मे उपस्थित हैं। पाठकों से अनुरोध है कि वे स्वयं सूर्य एवं चंद्रमा के सभी चारों के चारों अधिसाशी ग्रहो की उपस्थिति भाव 1, 7 एवं 10 मे देखें।

4) जातक के जन्म के समय प्राणा स्वामी सूर्य थे अतः सूर्य की उपस्थिति भाव 1, 7, 10 मे आवश्यक है। आप देख सकते हैं कि सूर्य की उपस्थिति 1, 7, 10 मे हैं।

5) जहां तक लग्न के सभी अधिसाशी ग्रहो की उपस्थिति भाव 1, 7, 10 मे या किसी दो भावों मे अनिवार्य है उसी प्रकार आप 9वे भाव के सभी अधिसाशी ग्रहो की उपस्थिति भाव 3, 6 एवं 9 (जो कि पंचम भाव से क्रमशः 11, 2 एवं 5वाँ है) मे देख सकते हैं क्योकि आपके पिता भी आपके दादा जी की संतान हैं।

6) इसके पश्चात यदि आपके पास जातक से ठीक बड़े या ठीक छोटे सहोदर, माता, प्रथम संतान (पुत्र या पुत्री), पिता आदि के चंद्र नक्षत्र का विवरण हो तो कुण्डली मे संबंधित भावों के उप उप नक्षत्र स्वामीयों (जैसे 3रे भाव से छोटे सहोदर, 4थे से माता, 9वे से पिता तथा 11वे से बड़े सहोदर) के साथ ठीक उसी प्रकार मिलाये जैसे प्रथम भाव के उप उप नक्षत्र स्वामी के साथ चंद्र नक्षत्र स्वामी को मिलाया जाता है।

पुस्तक का उपयोग कैसे करें ?

इस पुस्तक मे एक से बारह सभी भावों से संबंधित संभावित प्रश्नों के उत्तर उनके समीकरणों के साथ दिये गये हैं। प्रथम भाव का महत्व सर्वाधिक माना गया है। यदि लग्न के उप उप नक्षत्र स्वामी किसी भाव के फल को नकार दे तो उस भाव से संबंधित उस फल की प्राप्ति नही होगी चाहे उस भाव का उप उप नक्षत्र स्वामी उस फल को दे पाने मे कितना भी समर्थ क्यों ना हो। इसी प्रकार से यदि किसी भाव का उप उप नक्षत्र स्वामी अपने भाव से संबंधित किसी एक फल को नकार दे तो अन्य किसी भाव के उप उप नक्षत्र स्वामी उस फल को दे पाने मे समर्थ होते हुये भी असमर्थ ही रहेंगे। इस पुस्तक मे दिये गये सभी भावों से संबंधित घटनाओं को ठीक से समझने एवं फलादेश हेतु नीचे दिये गये कुछ महत्वपूर्ण बातो का ध्यान रखते हुये फलादेश करें :

हमारे यहाँ प्रति क्षण शिशु जन्म दर है अत: कुण्डली द्वारा फलादेश करने से पुर्व जन्म समय संशोधन अति आवश्यक है अत: इस विधि से फलदेश हेतु जन्म समय संशोधन के नियमों को ध्यान से पढना एवं उपयोग करना सही फलादेश हेतु आवश्यक है।

जन्म कुण्डली निर्माण हेतु दिये गये स्थान का सही सही अक्षांश एवं रेखांश लेना अति आवश्यक है। ज्ञात रहे यदि अक्षांश एवं रेखांश मे एक क्षण (सेकेण्ड) का अंतर लग्न सहित अन्य भावों के विकलाओ मे पंद्रह (15 सेकेण्ड) क्षण का अंतर ला सकता है ऐसी स्थिती मे लग्न सहित सभी बारह भावों के उप उप नक्षत्र स्वामी बदल जायेगे। अत: जन्म स्थान का अक्षांश एवं रेखांश का सही सही लेना अनिवार्य है। इसके लिये आप गूगल अर्थ ऐप का उपयोग कर सकते हैं।

स्थान के सही सही रेखांश एवं अक्षांश के साथ साथ सही अयनांश का लिया जाना भी अति आवश्यक है। अपने लम्बे व्यवसायिक अनुभव से पाया है कि लाहिरी, के.पी न्यू एवं खुल्लर अयनांश बिल्कुल सही एवं शुद्ध है और मै अपने पाठकों को भी लाहिरी या के.पी या खुल्लर अयनांश से कुण्डली के निर्माण की सलाह देता हूं।

नक्षत्र ज्योतिष सिद्धांत एक अत्याधुनिक ज्योतिषीय विधा है। इस विधा मे प्रत्येक नक्षत्र को विशोंत्तरी दशा क्रम मे, ग्रहों की दशा अवधि के अनुसार नौ (9) अलग अलग असमान भागों मे विभक्त कर पुनः इन प्राप्त भागों को नौ (9) अलग अलग असमान भागों मे विभाजित किया गया है जिसे उप उप नक्षत्र की संज्ञा दी गयी है। इस उप उप नक्षत्र की अवधि नौ (9 सेकेण्ड) क्षण से लगभग पचासी (85 सेकेण्ड) क्षण तक की होती है।

जन्म समय शुद्धिकरण करते समय यदि जातक के माता, पिता तथा ठीक बड़े और ठीक छोटे भाई बहन एवं प्रथम संतान आदि के चंद्र नक्षत्र स्वामी का संबंध जातक के संबंधित भावों के उप उप नक्षत्र स्वामीयो से कराये जाने के पश्चात, प्राप्त संबंधित भावों के उप उप नक्षत्र स्वामीयों द्वारा घटनाओ के बारे मे सही सही भविष्य फल ज्ञात करने मे अच्छी सफलता मिलेगी। इस विधि से आप अनुवांशिक रूप से भी संबंध स्थापित करा पाते है जो कि अपने आप मे एक अदभुत बात है।

हम सभी जानते हैं कि हर एक भाव के अनेक कारकत्व होते है अतः एक भाव से संबंधित घटनायें भी अनेक होंगी। अतः घटनाओ को पढते समय ध्यान रखे कि प्रथम भाव या नैसर्गिक भाव के उप उप नक्षत्र स्वामी किस घटना की ओर ईशारा कर रहे हैं। यदि किसी भाव से संबंधित घटना जांचनी हो तो उस भाव के उप उप नक्षत्र स्वामी के साथ साथ प्रथम भाव के उप उप नक्षत्र स्वामी की भी जांच आवश्यक रूप से करनी चाहिये। यदि घटना के नैसर्गिक भाव अथवा प्रथम भाव के उप

उप नक्षत्र स्वामी किन्हीं दोनों मे से किसी एक ने भी उस घटना को नकार दिया तो घटना घटित नही होगी।

उप नक्षत्र स्वामी की स्थिति नक्षत्र स्वामी के भावधभावों से अनुकूल या प्रतिकूल है इसके साथ साथ सहायक (Supportive Cusp) एवं संबंधित (Relevant Cusp) भावों मे अंतर का ज्ञान भी पाठकों के लिये अत्यंत आवश्यक है। अन्यथा फलादेश मे भारी चूक होने की संभावना रहेगी।

- कुण्डली मे किसी घटना के घटित होने के लिये तीन बातों का होना आवश्यक है :

    1. कुण्डली मे घटना की प्रतिज्ञा या आश्वासन होना अनिवार्य है।
    2. जब संभावित घटना के लिये सहायक ग्रहों की दशाये चलें तथा
    3. ग्रहों का गोचर अनुकूल हो।

घटना की भविष्यवाणी कैसे करें ?

1. सर्वप्रथम महादशा से प्राणा स्वामी तक का चयन करें जो घटना के घटित होने मे प्रबल सहायक है।
2. घटना के लिये दशा नाथ का चयन कैसे करें ?

घटना के लिये सही दशानाथ का चयन अत्यंत आवश्यक है। ऐसा कोई एक नियम नही है जिससे किसी घटना के लिये दशानाथ पहले से निर्धारित किया गया हो। किसी एक घटना के लिये प्रत्येक कुण्डली मे अलग अलग दशानाथ के चयन करने की आवश्यकता पड़ती है। नीचे कुछ महत्वपूर्ण सूत्रों को श्रृंखलाबद्ध किया गया है।

- सर्व प्रथम पाठकगण घटना की संभावना, घटना के नैसर्गिक एवं प्रथम भाव के उप उप नक्षत्र स्वामी से देखे। यदि घटना के घटित होने की संभावना हो तो ही दशानाथ के चयन की आवश्यकता होगी अन्यथा नही।
- किसी घटना के घटित होने के लिये दशानाथ का चयन दो चरणों मे करेंगे। सर्वप्रथम घटना से संबंधित नैसर्गिक भाव के सभी चारों अधिशासी ग्रहों (राशि स्वामी, नक्षत्र स्वामी, उप एवं उप उप नक्षत्र स्वामी) को एक तरफ (खण्ड "अ") में तथा घटना को घटित कराने वाले सहायक या संबंधित भावों के सभी चारो अधिशासी ग्रहों (राशि स्वामी, नक्षत्र स्वामी, उप एवं उप उप नक्षत्र स्वामी) को दुसरी तरफ (खण्ड "ब") मे रखें।
- अब बारी बारी से प्राथमिक, सहायक एवं संबंधित भावों के सभी अधिशासी ग्रहों के PS/STL तथा SL एवं SSL के द्वारा जाँच करें कि वे घटना को घटित करा पाने मे सक्षम हैं कि नहीं। उदाहरण के लिये मान लें कोइ अधिशासी ग्रह अपने नक्षत्र स्वामी द्वारा 7वे भाव मे तथा उप एवं उप उप नक्षत्र स्वामी द्वारा 5वे तथा 11वें भाव मे गया हो तो ऐसा ग्रह विवाह करा पाने मे सहायक होगा। इसी प्रकार जो जो ग्रह घटना को घटित कराने मे सक्षम होंगे उनकी एक सूची बना लें।
- अब उन ग्रहों को भी देखें जो अन्य भावों के SSL है अथवा किसी भी भाव के भी SSL नहीं हैं अथवा निरायन भाव चलित कुण्डली मे घटना से संबंधित नैसर्गिक भाव मे बैठे हो तो ऐसे सभी ग्रह जो किसी भाव के SSL नही है परंतु स्वयं घटना के नैसर्गिक या सहायक भाव से संबंधित हैं तथा अपने PS/STL

तथा SL एवं SSL के द्वारा घटना को घटित करा पाने मे सक्षम हैं। उन्हे भी "खण्ड अ" की सूची मे रखें।

- ऐसे ग्रह जो घटना से संबंधित भावों के प्रतिकूल, बाधा कारक अथवा नाकारात्मक भावों के SSL हों और स्वयं घटना के नैसर्गिक भाव के अधिशासी ग्रह ना हों और यदि हों भी तो उनका PS ना हो। ऐसे मे चाहे घटना से संबंधित भावों के प्रतिकूल, बाधा कारक अथवा नाकारात्मक भावों के SSL ग्रह अपने PS/STL तथा SL एवं SSL के द्वारा बेशक उस घटना को दर्शा रहा हो तो भी घटना घटित करा पाने मे असमर्थ हीं रहेगा। एक उदाहरण द्वारा समझाने का प्रयास करुंगा। मान लें घटना विवाह से संबंधित है और 10वे या 6ठे भाव का SSL ग्रह जोकि विवाह अर्थात 7वें भाव का अधिशासी ग्रह नही है या है भी तो ऐसा SSL ग्रह PS नही है तथा अपने STL तथा SL एवं SSL के द्वारा 7, 5, 11 भावों को दर्शा रहा है जहाँ इसका STL तथा SL एवं SSL ग्रह 6ठे, 4थे या 10वे भाव का SSL होकर 7, 5, 11 जैसे भावों को दर्शा रहे हों तो क्या विवाह करा पाने मे सक्षम होंगे?? कदापि नहीं क्योकि इनके डी.एन.ए में तो व्यापार है क्योंकि यह तो 10वे भाव का SSL ग्रह है जो कि अपने STL तथा SL एवं SSL द्वारा चल अचल, वाहन, उत्तपादन तथा व्यापार से संबंधित बातों की ओर इशारा कर रहा है ना कि विवाह की तरफ।

ध्यान रहे... महादशा नाथ को घटना के घटित होने मे सहायक होना चाहिये अथवा कम से कम घटना को नकारना नही चहिये। जो ग्रह घटना को नकार रहे हों उस ग्रह को दशा क्रम मे ना लें।

भुक्ति नाथ आदि ग्रहों को घटना से संबंधित भावों के साथ प्रबलता से जुडा होना चाहिये अर्थातण्ण्वे सभी ग्रह घटना को घटित करा पाने मे सहायक होंगे, जो

1) घटना के नैसर्गिक एवं सहायक भावों के चाहे उप उप नक्षत्र स्वामी हों या

2) उप उप नक्षत्र स्वामी के नक्षत्र स्वामी या उप या उप उप नक्षत्र स्वामी हों या

3) घटना से संबंधित नैसर्गिक, सहायक या संबंधित भावों के राशि स्वामी, नक्षत्र स्वामी, उप या उप उप नक्षत्र स्वामी हो तथा अपने स्वाबलंबन, नक्षत्र स्वामी, उप या उप उप नक्षत्र स्वामी द्वारा घटना के घटित होने मे सहायक हों अथवा

4) ऐसे ग्रह जो किसी भाव के उप उप नक्षत्र स्वामी बेशक ना हों परंतु उनका नक्षत्र स्वामी एवं उप या उप उप नक्षत्र स्वामी घटना के नैसर्गिक अथवा सहायक भावों के या तो नक्षत्र, उप या उप उप नक्षत्र स्वामी हों तथा घटना के घटित कराने मे सहायक हों।

5) दशा नाथ एवं भुक्ति नाथ को घटना से संबंधित नैसर्गिक एवं सहायक भाव का अधिशासी ग्रह होना चाहिये चाहे दशा नाथ या भुक्ति नाथ को स्वाबलंबन की स्थिति प्राप्त हो या ना हो।

6) भुक्ति नाथ अपने स्वाबलंबन अथवा नक्षत्र स्वामी, उप (SL) एवं उप उप (SSL) नक्षत्र स्वामी द्वारा घटना के नैसर्गिक एवं सहायक भावो मे होना ही चाहिये। यदि कोइ ग्रह किसी घटना से संबंधित कारक भावो के साथ साथ बाधा कारक भावों मे भी गया हो घटना घटित तो हो सकती है परंतु विलम्ब से।

7) भुक्ति नाथ के उप (SL) अथवा उप उप (SSL) नक्षत्र स्वामी का घटना से संबंधित भाव के SSL ग्रह के साथ संबंध स्थापित करना चाहिये। मान ले घटना विवाह से संबंधित है तो ऐसे मे भुक्ति नाथ के SL या SSL का संबंध 7वे भाव के SSL ग्रह के साथ निम्न प्रकार से होना चाहिये :

7.1) भुक्ति नाथ का SL/SSL ग्रह और 7वे भाव का SSL ग्रह एक ही ग्रह हो या

7.2) भुक्ति नाथ का SL/SSL ग्रह 7वे भाव के SSL ग्रह का नक्षत्र स्वामी ग्रह हो या

7.3) भुक्ति नाथ का SL/SSL ग्रह वो अन्य ग्रह भी हो सकता है जिस (कुण्डली मे) ग्रह का नक्षत्र स्वामी ग्रह 7वे भाव के SSL ग्रह का नक्षत्र स्वामी हो या

7.4) भुक्ति नाथ का SL/SSL ग्रह वो ग्रह भी हो सकता है जो निरायन भाव चलित कुण्डली के 7वे भाव मे बैठा हो (ऐसा ग्रह भी 7वे भाव का उप उप स्वामी माना जायेगा) या

7.5) ऐसा ग्रह जो निरायन भाव चलित कुण्डली के 7वे भाव मे बैठा हो तथा वो भुक्ति नाथ का SL/SSL ग्रह हो या

7.6) कुण्डली मे अन्य कोइ ऐसा ग्रह किसका नक्षत्र स्वामी ग्रह, निरायन भाव चलित कुण्डली के 7वे भाव मे बैठे ग्रह का नक्षत्र स्वामी हो तथा ऐसा ग्रह भुक्ति नाथ का SL/SSL ग्रह हो। इसी क्रम मे घटना चाहे विवाह की हो या संतान की, दुर्घटना की हो या चल अचल संपत्ति से संबंधित हो

भुक्ति नाथ का तथा भुक्ति नाथ के SL/SSL ग्रह का संबंध इसी प्रकार से नैसर्गिक भावों के SSL ग्रह के साथ होना चाहिये। एक और महत्व पूर्ण बात यदि घटना मृत्यु से संबंधित हो तो दशा नाथ का संबंध भी उक्त तरिके से ही देखें। अस्तु!

ऐसे सभी ग्रह प्रबलता से घटना को घटित कर पाने मे सहायक होंगे जो घटना के नैसर्गिक अथवा सहायक भावों के राशि स्वामी, नक्षत्र स्वामी, उप या उप उप नक्षत्र स्वामी होकर अपने अपने PS/STL एवं SL/SSL द्वारा घटना को घटित कराने मे सहायक होंगे।

अब उन सभी ग्रहों की एक सूची बना ले जो घटना को घटित करा पाने मे सक्षम या सहायक हो। फिर देश, काल एवं पात्र के हिसाब से दशा निर्धारित करे। जैसे शहरों मे विवाह 24 से 30 वर्षों में मध्य अमूमन होता है। दुसरे शब्दों मे कहें तो दशा वो ले जो इन्हीं आयु मे विवाह दर्शा रहे हों। फिर उस स्थान के साथ प्राणा स्वामी तक की दशा आरंभ के समय के साथ एक तात्कालिक कुण्डली का निर्माण करे। मान लें घटना प्रथम संतान के जन्म की हो तो बनाई गयी कुण्डली मे प्रथम भाव के साथ साथ सूर्य एवं चंद्रमा के चारों अधिशासित ग्रह स्वामीयों (राशि, नक्षत्र, उप एवं उप उप नक्षत्र स्वामी) के स्वाबलंबन, नक्षत्र स्वामी एवं उप नक्षत्र स्वामीयों द्वारा कुण्डली के 5, 2 एवं 11वे भावों मे उपस्थिति अनिवार्य होगी। जब तक प्रथम भाव, सूर्य एवं चंद्रमा के द्वारा 5, 2, 11 भाव ना दर्शायें जायें तब तक समय आगे बढाते जायें। जिस समय सभी स्वामी ग्रहों द्वारा घटना से संबंधित सभी (5, 2, 11) भावों उपस्थित कुण्डली मे हो जाएगी प्रथम संतान के जन्म का समय भी वही होगा। इसके पश्चात कुण्डली के प्रथम भाव के उप उप नक्षत्र स्वामी के साथ चंद्र नक्षत्र स्वामी का संबंध स्थापित करे तत्पश्चात तृतीय भाव, चतुर्थ

भाव, पंचम, नवम भाव एवं एकादश भाव के उप उप नक्षत्र स्वामीयों के साथ क्रमशः अनुज, माता, प्रथम संतान, पिता एवं ज्येष्ठ सहोदर के चंद्र नक्षत्र स्वामीयों के साथ संबंध स्थापित करके देखें यदि मिलता हो तो आप इस कुण्डली को शुद्ध माने अन्यथा पुनः समय को आगे बढाते हुये इस प्रयोग को दोहराते चले जायें। इस प्रकार आप बच्चे के जन्म से पुर्व उसकी कुण्डली बना पाने मे सफल होंगे इसमे तनिक भी संदेह नही है। इसी प्रकार आप अन्य घटनाओं के घटित होने के समय का अनुमान लगा भी सकते है और फलादेश भी कर सकते हैं।

दशा एवं गोचर सिद्धांत :

- किसी घटना के घटित होने के लिये कुण्डली में उस घटना की प्रतिज्ञा या आश्वासन का होना आवश्यक है।
- घटना तभी घटित होगी जब ग्रहों की दशाऐं अनुकूल चलेंगी।
- जब गोचर अनुकूल होंगे।

उपर दिये गये घटना के घटित होने मे तब तक संदेह है जब तक घटना के समय गोचर अनुकूल ना हो। आपको गोचर के अनुकूल एवं प्रतिकूल होने का आसान सा तरिका समझाता हुं। कुण्डली मे सभी नौ ग्रहों को दो भागों मे बांट लीजिये। प्रथम भाग मे उन सभी ग्रहों को लें जो अपने स्वाबलंबन, नक्षत्र, उप एवं उप उप नक्षत्र स्वामीयों द्वारा घटना के घटित होने मे सहायक हो या कम से कम नकारते ना हो। दुसरे भाग मे आप उन ग्रहों को रखें जो संबंधित घटना को नकारने वाले हों। अब देखें घटना के घटित होने के समय सूर्य एवं चंद्र सहित जब सभी पांचों दशा नाथ ग्रह (महादशा नाथ, भुक्ति नाथ, अंतर दशा नाथ, शूक्ष्मा एवं प्राणा नाथ) एक साथ ऐसे ग्रहों की राशियों, नक्षत्रों, उप एवं उप उप नक्षत्रों पर गोचर

करने चाहिये जिनके स्वामी घटना को नकारते ना हों। जब सभी गोचर अनुकूल होंगे तो घटना के घटित होने की प्रबल संभावना होगी। अस्तु !

दशा फल सिद्धांत :

महादशा नाथ फलादेश सिद्धांत :

1. ऐसी घटना जो जातक के जीवन मे एक बार घटित होती है जैसे – जन्म अथवा मृत्यु उसके लिये महादशा का विचार मुख्य रूप से करना चाहिये। इसी क्रम मे एक मुख्य बात और बताना चहुंगा कि यदि महादशानाथ अपनी दशा मे जिस घटना को नकार देता है तो वह घटना उस ग्रह दशा अवधि मे घटित नहीं हो सकती चाहे दशा अवधि 6 वर्ष की हो या 20 वर्ष की। मान लें दशानाथ विवाह को नकार देता है एवं भुक्तिनाथ विवाह करा पाने मे सक्षम है तब भी ऐसे मे भुक्तिनाथ विवाह करा आने मे असमर्थ हीं रहेगा क्योंकि महा दशानाथ, भुक्तिनाथ से तथा भुक्तिनाथ, अंतर दशानाथ से एवं अंतर दशानाथ, शूक्ष्मा दशानाथ से एवं शूक्ष्मा, प्राणा दशानाथ से बलवान होता है।

2. किसी महत्वपूर्ण घटना के घटित होने के लिये भुक्तिनाथ का उस घटना के प्राथमिक एवं सहायक भावों के साथ प्रबलता से जुडा होना आवश्यक है अर्थात भुक्तिनाथ या तो घटना से संबंधित नैसर्गिक भाव या सहायक भाव का SSL ग्रह हो या निरायन भाव चलित कुण्डली मे घटना से संबंधित भाव मे बैठा हो या घटना से संबंधित भावों का शासित ग्रह हो कर अपने PS/STL तथा SL/SSL द्वारा उस घटना को घटित कर पाने मे सहायक हो।

3. कुण्डली मे विभिन्न घटनाओं के घटित होने के लिये उस प्राथमिक भाव के SSL द्वारा प्रतिज्ञा या आश्वासन का होना

आवश्यक है। मान लें कुण्डली मे रोग, विवाह एवं संतान का होना प्रतिज्ञा मे है या आश्वासित है। अब प्रश्न उठता है किन दशाओं मे ऐसी घटनाऐं घटित होंगी ? इसके लिये किन ग्रहों की दशाओं का चयन करना चाहिये ? नीचे कुछ सुत्र दिये जा रहे हैं। आपसे आग्रह है कि दशा नाथ ग्रहों के चयन मे पूरी सावधानी बरतें।

प्रथम घटना रोग से संबंधित लेते हैं। सर्वप्रथम कुण्डली मे देखें कि रोग का होना प्रतिज्ञा मे है या नही ? यदि प्रथम भाव एवं षष्ट भाव के SSL अपने PS/STL द्वारा 1, 6, 8, 12 जैसे रोग कारक भावों मे हों तथा SL/SSL द्वारा रोग को समर्थन दे रहे हों तो समझें जातक को रोग संभावित है। अब प्रश्न उठता है कि जातक को कब रोग संभावित है ? ज्ञात रहे रोग किसी भी आयु मे संभावित है। अब दशा का चयन करते हैं। ऐसे ग्रह जो 1, 6, 8, 12 भावों के SSL हों जो अपने PS/STL द्वारा 1, 6, 8, 12 जैसे रोग कारक भावों मे हों तथा उनके SL/SSL ग्रह रोग को समर्थन दे रहे हों तो समझें ऐसे ग्रहों की दशाओं मे रोग संभावित है। अब ऐसे हीं ग्रहों का दशा क्रम (महादशा–भुक्ति–अंतरा–शूक्ष्मा एवं प्राणा दशा) बनाएं जो या तो रोग के भावों के SSL हों या ऐसे दशानाथ ग्रहों का PS/STL रोग कारक भावों का या तो SSL हों या इन भावों के शासीत (RL/STL/SL/SSL) ग्रहों मे से एक हो। रोग की संभावनाओं के लिये क्रम बद्ध किये गये रोग दायक ग्रहों के मध्य दशाओं मे ऐसा कोइ ग्रह ना हो जो रोग को नकार रहा हो अन्यथा रोग से संबंधित घटना घटित नहीं होगी।

इसी क्रम मे विवाह के लिये सर्वप्रथम कुण्डली मे विवाह की प्रतिज्ञा देखें फिर विवाह के प्राथमिक भाव (7वाँ) एवं ऐसे सहायक भावों (5वाँ, 8वाँ, 11वाँ एवं 12वाँ) के SSL ग्रहों का

चयन करें जिनके PS/STL ना सिर्फ विवाह को समर्थन दे रहे हों बल्कि प्राथमिक अथवा सहायक भावों के या तो SSL हो या इन्हीं भावों के शासीत ग्रहों मे से एक हो। एक अन्य समीकरण से भी विवाह या ऐसी हीं कई घटनायें संभावित हैं। मान लें ऐसे ग्रह जो किसी भाव के SSL ग्रह ना हों परंतु इनका STL एवं SL ग्रह घटना से संबंधित प्राथमिक एवं सहायक भावों के SSL हों या शासीत ग्रहों मे से एक हों जो घटना को घटित करा पाने मे सक्षम है।

4. किसी घटना के घटित होने का समय निकालने के लिये भुक्ति नाथ से प्राणा स्वामी तक (जो घटना को घटित कर पाने मे सक्षम हों) के ग्रहों को निर्धारित कर लें। शूक्ष्मा एवं प्राणा स्वामी ग्रह घटना के संबंधित भावों के साथ प्रबलता से जुडे हुये होने चाहिये। मान लें घटना संतान के जन्म से जुडी हुई है। अब आपको संतान के जन्म का समय निकालना है। संतान का जन्म किसी ना किसी प्राणा स्वामी की दशा मे अवश्य होगा। अत: आपको ऐसा प्राणा स्वामी निर्धारित करना है जैसा उपर दशानाथ के चयन के लिये बताया गया है। प्राणा स्वामी ग्रह जिस दिन जिस समय आरंभ हो उस समय की कुण्डली शुद्ध स्थान के साथ बना लें तथा नीचे दिये गये तरीकों से बच्चे के जन्म का समय निकालने का प्रयास करें –

   – जिस समय (प्राणा स्वामी के आरंभ समय से) कुण्डली का निर्माण किया जाय उस समय लग्न के SSL ग्रह को चंद्र नक्षत्र स्वामी ग्रह से मिलायें ठीक वैसे ही जैसे कुण्डली के जन्म समय संशोधन के समय मिलाया था।

- अब माता, पिता एवं बड़े भाई या बहन (यदि ज्ञात हों तो) के चंद्र नक्षत्र स्वामी ग्रह को क्रमशः 4थे, 9वें एवं 11वें भाव के SSL ग्रह से ठीक वैसे हीं मिलाये जैसे कुण्डली के जन्म समय संशोधन के समय मिलाया जाता है।
- फिर लग्न, सूर्य एवं चंद्रमा के चारों शासीत (RL/STL/SL/SSL) ग्रहों को कुण्डली के 1, 7 एवं 10वें भावों मे ठीक उसी प्रकार उपस्थित करवाएं जैसे कुण्डली मे जन्म समय संशोधन के लिये मिलाया जाता है।
- अंतिम नियमानुसार निर्धारित किया गया प्राणा स्वामी ग्रह भी अपने PS/STL एवं SL द्वारा कुण्डली के 1, 7 एवं 10वें भाव मे जाना चाहिये।

जब तक उपर दिये गये सभी समीकरण नियमानुसार पूरे नहीं हो जाते तब तक बनाये गये कुण्डली के समय मे वृद्धि करते जायें। अंततः एक समय ऐसा आयेगा जब बच्चे के जन्म का शुद्ध समय स्वतः प्राप्त हो जायेगा।

गोचर सिद्धांत :

किसी भी घट्ना के घटित होने के लिये आवश्यक है कि दशा नाथ (महादशा-भुक्ति-अंतर-शूक्ष्मा एवं प्राणा स्वामी ग्रह) ग्रह उस घटना को घटित करने मे सहायक होने के साथ साथ गोचर मे भी अनुकूल हो ताकि घटना घटित हो सके। अब प्रश्न यह उठता है कि गोचर सिद्धांत है क्या ? इसे समझाने के लिये लम्बी चौडी विधियाँ बताई गयी है। मैं प्रयास करुंगा कि आपको सरल तरीके से गोचर के सिद्धांत समझा सकूं। इसके लिये नीचे दिये गये क्रमबद्ध तरीकों से करने का प्रयास करें -

- सर्वप्रथम जन्म कुण्डली मे संभावित घटनाओं की एक सूची बना लें।
- प्रत्येक घटना के सहायक ग्रहों के साथ साथ उन ग्रहों की भी एक सूची बना लें जो उस घटना को नकार रहे हों।
- जिस समय घटना घटित होने वाली हो उस समय सभी दशानाथ गोचर वश ऐसी राशि, नक्षत्र, उप नक्षत्र तथा उप उप नक्षत्र पर हों जिनके स्वामी ग्रह आपकी कुण्डली मे उस घटना को घटित करने मे या तो सहायक हो या कम से कम नकार ना रहे हों।
- इसी क्रम मे प्रकृति (चंद्रमा) एवं पुरुष (सूर्य) का गोचर संयोग अत्यंत आवश्यक है। कहने का तात्पर्य यह है कि जिस समय घटना घटित हो रही हो उस समय सूर्य एवं चंद्रमा गोचर वश ऐसे ही (RL/STL/SL/SSL) पर हों जिनके स्वामी ग्रह घटना को घटित कराने मे सहायक हो।
- जिस समय घटना घटित हो रही हो उस समय सूर्य प्राणा स्वामी ग्रह के नक्षत्र अथवा उप नक्षत्र पर हो एवं चंद्रामा प्राणा स्वामी ग्रह के नक्षत्र पर हो या प्राणा स्वामी ग्रह का जो नक्षत्र स्वामी ग्रह हो उसके नक्षत्र पर हो या कुण्डली के ऐसे ग्रह के नक्षत्र पर जिसका नक्षत्र स्वामी ग्रह, प्राणा स्वामी ग्रह का नक्षत्र स्वामी हो अथवा घटना से संबंधित भाव का उप उप नक्षत्र स्वामी हो। अब पुनः वही प्रक्रिया अपनायें जो जन्म समय शुद्धीकरण के लिये अपनाया था क्योंकि घटना का जन्म तभी होगा जब लग्न, सूर्य तथा चंद्रमा के सभी शासक ग्रह अपने PS/STL/SL/SSL द्वारा घटना से संबंधित नैसर्गिक, संबंधित एव सहायक भावों को दर्शायें। जैसे मान लें घटना विवाह से संबंधित हो तो लग्न, सूर्य तथा चंद्रमा के

सभी शासक ग्रह अपने अपने PS/STL/SL/SSL द्वारा 7वें भाव तथा 5वें तथा 11वें भावों मे अवश्य जाने चाहिये अर्थात विवाह को दर्शाने चाहिये। इसे क्रम बद्ध तरिके से कैसे करें इसका व्याख्यान दिया जा रहा है :

- **प्रथम चरण :** सर्वप्रथम विवाह के लिये दशानाथ ग्रहों को निर्धारित करे। अब जो प्राणा स्वामी ग्रह हों उसके आरंभ समय एवं घटना के स्थान की एक तात्कालिक कुण्डली का निर्माण कर लें।
- **द्वितीय चरण :** अब सभी दशानाथ का गोचर देखें। सभी दशानाथ ग्रह ऐसे ग्रहों की राशि, नक्षत्र, उप एवं उप उप नक्षत्र पर गोचर करने चाहियें जो आपकी कुण्डली मे विवाह के सुचक हों या कम से कम विवाह को नकारते ना हों। यदि पांचों दशानाथ मे से कोई एक भी दशानाथ ग्रह किसी ऐसे ग्रह की राशि, नक्षत्र, उप एवं उप उप नक्षत्र पर गोचर कर रहे हों जो विवाह को नकार रहा हो तो जब तक दशानाथ ऐसे ग्रह की राशि, नक्षत्र, उप एवं उप उप नक्षत्र से निकल नहीं जाता विवाह नही हो सकता।
- **तृतीय चरण :** अब सूर्य एवं चंद्रमा का गोचर भी इसी प्रकार देखें चाहे सूर्य या चंद्रमा दशानाथ हो या ना हों। अब यहां सूर्य का गोचर जिस राशि पर होगा वह राशि स्वामी आपकी कुण्डली मे विवाह दे पाने मे सक्षम है तो घटना उस माह मे घटित होगी क्योंकि सूर्य एक राशि पर एक माह तक गोचर करते हैं। अर्थात माह निर्धारित हो गया। फिर सूर्य का गोचर ऐसे नक्षत्र पर होना चाहिये जिसका स्वामी ग्रह आपकी कुण्डली मे विवाह दे सकता है। अब सूर्य का गोचर एक नक्षत्र पर लगभग सवा तेरह दिन रहता है इस प्रकार घटना सूर्य द्वारा उस माह के अब मात्र 13 दिनों के

मध्य घटित होगी। इसी क्रम मे जब सूर्य जिस ग्रह के उप नक्षत्र मे हो और यदि वो ग्रह आपकी कुण्डली मे विवाह दे रहा हो तो सूर्य का गोचर किसी ग्रह के उप नक्षत्र पर एक दिन के लिये होता है अर्थात दिन निर्धारित हो गया अंत मे सूर्य का गोचर जिस ग्रह के उप उप नक्षत्र पर हो वह कुछ घण्टे के लिये होगा। ठीक इसी प्रकार चंद्रमा का गोचर किसी राशि पर सवा दो दिन तथा किसी ग्रह के नक्षत्र पर एक दिन के लिये होता है। उप एव उप नक्षत्र कुछ घण्टो के लिये होता है। अर्थात आप सूर्य तथा चंद्रमा के गोचर द्वारा कुछ घण्टे के अंदर फलादेश कर पाते है, अब प्राणास्वामी के आरंभ समय एवं स्थान के हिसाब से जो कुण्डली बनाई गई है उसके चारों शासित ग्रह RL/STL/SL/SSL अपने अपने PS/STL/SL/SSL द्वारा घटना से संबंधित नैसर्गिक, संबंधित एव सहायक भावों मे जाने चाहिये। एक लग्न लगभग 2 घण्टे का होता है अर्थात आप इस प्रकार से घटना के घटने के लिये उस लग्न को स्थापित कर देते हैं जो घटना को घटित करा पाने मे सक्षम है। अब लग्न के SSL ग्रह को चंद्र नक्षत्र स्वामी से मिलाये। जिस समय अंतिम नियम पुरा होगा उसी समय घटना घटित होगी। अस्तु !

पाठकों से अनुरोध है कि किसी भी प्रकार से इस विधा को समझने में कठीनाई हो रही हो तो यू ट्यूब पर या गूगल + पर मुझे लाँग आँन करे। आप मुझे लाँग आँन करने के लिये सर्च करे skanil cil

क्रमशः

नक्षत्र ज्योतिष सॉफ्ट्वेअर

नक्षत्र ज्योतिष अर्थात कस्पल इंटरलिंक्स एण्ड सब सब थ्योरी एक अत्यंत आधुनिक ज्योतिषिय पद्धिति है। इसे सीखने अथवा फलादेश करने के लिये "नक्षत्र ज्योतिष सॉफ्ट्वेअर" आवश्यक है। जिसका मूल्य है मात्र रू 15000/– है। आप इस सॉफ्टवेयर को "नक्षत्र ज्योतिष अनुसंधान केंद्र" से प्राप्त कर सकते हैं। ज्योतिष सीखने के इच्छुक विद्यार्थी संपर्क करें –